

कथाकार

# कथाकार राहुल सांकृत्यायन

डॉ० रवेलचन्द आनन्द

एम०ए पीएच०डी०



शारदा प्रकाशन  
महरोली नई दिल्ली ११००३०

© डा० रवेल चंद आनंद

प्रथम सम्स्करण १९७३

मूल्य १८ रुपये

प्रकाशक शारदा प्रकाशन

महरीली नई दिल्ली-३०

मुद्रक अशोक प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली ६

---

Kathakār ahul Saakrityayan

(A Critical Study)

by

Dr Ravel Chand Anand

Price Rs 18 00

## दो शब्द

राहुल साह्रुत्यायन वतमान आज तथा भविष्य वल के कलाकृती एव ससृति सारणी हैं । अपन महामहम व्यक्तित्व एव विराट कृतित्व की दष्टि स व हिने साहित्य म अद्वितीय स्थान के अधिकारी हैं । उनका जीवन आन्तिमय था । निरन्तर सत्यावेपण गतिशीलता अनुसंधानप्रियता एव रुचिवाग्नि पर प्रहार उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विगपताएँ हैं । राहुल जी सबतोमुखी प्रतिभासम्पन्न प्रगतिशील साहित्यकार थ । बहु भाषाविद भाषाशास्त्री दानिक इतिहासकार पुरातत्त्ववेत्ता यायावर राजनीतिन बौद्ध-दानिक, साम्यवादी हिदी भाषा के अनय उगासक एव प्रातिम साहित्यकार महापण्डित राहुल जी का साहित्य—उपयागी एव सजनात्मक—विपुल एव विराट है । इम एक व्यक्ति न जितना बहुत कृतित्व प्रस्तुत किया वह किसी एक मस्था-द्वारा भी महज सम्भव नहीं है ।

राहुल जी की सजनात्मक साहित्य को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन उनकी कथा कृतियाँ हैं । महापण्डित राहुल शास्त्रीय उपयासकार न होकर दानिक उपयासकार माकमवादी एव बौद्ध इतिहासिक उपयासकार एव विब्यात्री उपयासकार ह । सिंह सनापति' मधुर स्वप्न 'जय योधय आदि इतिहासिक उपयासा म राहुल जी न इतिहासिक कथा का अपनी विचारधारा के अनुसूप रूपायित किया है । इन उपयासा म कल्पना की प्रपेक्षा तथ्या एव व्याख्याओं की प्रधानता है । बौद्ध दान एव इडात्मक भीतिकवाद के समन्वय का नवीमय राहुल जी की मौनिक कल्पना है । बार्मदी सदी के रूप म उद्धान कल्पात्मक उपयास प्रदान किया है । जीन क निण' आदि उनक राजनीतिक सामाजिक उपयासा का विगिष्ट विचारगत महत्त्व है । जनगायिन राहुल न हिदी कहानी को नवीन दिगाए प्रदान की है । बोल्पा स गगा' तथा कनका की रथा द्वारा राहुल जी न इतिहासिक कहानी का नई दष्टि प्रदान की है । इतिहास पुरातत्त्व समाजशास्त्र, ससृति सम्यता दान—समी को वष्य विषय बनाती मानव समाज क विकास क आठ सहस्र वर्षों क इतिहास का निरी रण एव विदतपण करन वाली राहुल की कथासष्टि हिदी के निण वरदान है ।

इस रचना म राहुल जी क व्यक्तित्व एव सजनात्मक साहित्य क सनिप्त परिषय क अनन्तर कथाकार राहुल की हिदी उपयास और हिदी कहानी के क्षेत्र म विगिष्ट उपनयिया का विवचन किया गया है ।

इस प्रयास म मुझे बहा तक सफनता मिली है इसका निणय पाठक हा पायेंग ।

—खेलचंद धानद

## अनुक्रम

पहला परिवर्त महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व और  
कृति व

५ ४४

(क) महापण्डित का व्यक्तित्व भव्य यत्ति व भाषावर  
राहुल राहुल एक राजनीतिक कायकता राहुल जी की  
धर्मदृष्टि, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन महामानव राहुल  
(ख) राहुल सांकृत्यायन का कृतित्व बहुमुखी प्रतिभा बहुमुखी  
कृतित्व प्रतिभा उभय एव साहित्य साधना राहुल साहित्य  
राहुल जी की प्रकाशित रचनाएँ राहुल जी की अप्रकाशित  
रचनाएँ राहुल जी का सजनात्मक साहित्य उपयोगी साहित्य  
सजनात्मक साहित्य (क) उपन्यास (ख) कहानी (ग)  
जीवनी अमर्याद सस्मरण (घ) भाषा साहित्य, (ङ) निबंध  
साहित्य सन्ध्या ।

दूसरा परिवर्त राहुल जी की कहानियाँ

४५—८४

कहानी का स्वरूप कहानी का वर्गीकरण राहुल जी की  
कहानियाँ (क) ऐतिहासिक कहानियाँ ऐतिहासिकता  
(ख) सामाजिक कहानियाँ राहुल जी की कहानियों की  
शिल्पविधि कथाशिल्प पात्र और चरित्र चित्रण संवाद  
वातावरण सृष्टि जीवन ज्ञान और उद्देश्य क्षी, मूल्यांकन  
एव स्थान सन्ध्या ।

तीसरा परिवर्त राहुल जी के उपन्यास

८५—१७४

राहुल जी के उपन्यासों का वर्गीकरण (क) सामाजिक उप  
न्यास (ख) ऐतिहासिक उपन्यास राहुल जी के ऐतिहासिक  
उपन्यासों में इतिहास और कल्पना राहुल जी की उपन्यासकता  
कथाशिल्प पात्र और चरित्र चित्रण संवाद देशकाल और  
वातावरण जीवन ज्ञान एवं उद्देश्य राहुल जी की प्रगति  
शीलता भाषा शैली सन्ध्या ।

चौथा परिवर्त राहुल जी के अनूदित उपन्यास

१७५—१८४

(क) अंग्रेजी से रूपान्तरित उपन्यास, (ख) ताजिक से  
अनूदित उपन्यास सन्ध्या ।

# महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

## (क) महापण्डित राहुल का व्यक्तित्व

‘पद्मभूषण अंतर्राष्ट्रीय युगपण्डित राहुल सांकृत्यायन न हिंदी भाषा और साहित्य का जितना कुछ लिया है उनका सायद ही किसी अनेक-‘शक्ति’ ने लिया हो। न बनाया हो। उनका साहित्य विपुल है, उनका व्यक्तित्व विराट और विविध। उन जसा अमृत एवं विलक्षण व्यक्तित्व रखने वाला साहित्यकार बिरले ही होते हैं। पण्डित रामगाविंद त्रिपाठी का शब्दों में, महापण्डित राहुल जी अपनी शाली के अद्वितीय पुरुष हैं। उनका साहस अनुपम था उनकी घम भावना विविध थी उनका व्यवहार अनुशासक था। उनका सामाजिक विचार अनोखा था और धाय-संस्कृति व प्रति उनकी दृष्टि अमूल्य थी। बर्हि साहित्य हिंदू आचार विचार हिंदू मन्थना भारतीय-इतिहास नागरी लिपि हिन्दी भाषा आदि के सम्बन्ध में उनका मनन बिलग और विवर्धन था। मतलब यह कि राहुल जी बलशेष के आकर थे। “वस्तुतः राहुल जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था उनकी अविवर्धनीय विविध थी। वह महामानव थे जिनका देश प्रेम हिन्दी निष्ठा में जीवित प्रवाह था गया था, जिनका स्नेह मृत्यु तन आप्यायित और अनृत बना रहा, जिनके पाण्डित्य की हिमाली व नीचे लात हृदय की निमरिणी निरन्तर भरती रही जिनकी ज्ञान की पूजना से अधिक ज्ञान की निरन्तरता की जिज्ञा थी, जिनकी विस्मृति भी निदछन ममता की धारा बन गई है, राहुल जी का व्यक्तित्व किसी विशेषण विशेष की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता। बौद्ध बन्धुनिष्ठ धायसमाजी, धायवर, इतिहासग दासनिष्ठ-यस्य विशेषण राहुल जी के व्यक्तित्व को प्राप्त करने में असमर्थ है। राहुल जी का व्यक्तित्व गत्यात्मक है सत्य था अनुमानितलु है। डॉ० सिधप्रसाद सिंह का यह कथन सत्य था या नहीं, मैंने सुझ नहीं पार करने के लिए नाव दी थी। पार हो जान पर उस सर पर उठा कर डाल के लिए नहीं। राहुल ने इस कथन की वास्तविकता को समझ ही नहीं अपना बावों में मली भाति उतार आ लिया था। उनकी नावें सत्य था, किन्तु जहाँ

उन नावा न बाहन नही, बाहक बनना चाह। राहुल ने उन्हें भटक कर एक तरफ फेंक दिया।<sup>३</sup> प्रस्तुत परिखत में राहुल जी के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विनिष्टताओं में युक्त विचक्षण विविधोमुखी एवं मत्प्राप्त 'यत्तिव' की भलक प्रस्तुत है।

### भय व्यक्तित्व

राहुल जी का बाह्य (शारीरिक) व्यक्तित्व अत्यंत भय एवं आकर्षक था। उन्हें शारीरिक संपत्ति—स्वस्थ तन और गौर वण—निसंग प्राप्त था। राहुल के शारीरिक गठन 'कामायनी' के मनु की स्मृति ला देता है—

उसी तपस्वी स तप्ये च

देवदारु दा चार खड्ड।

अथयव की दण मास पेशिया,

ऊजस्वित था बीय अपार।

स्फीत शिराए स्वस्थ रक्त का

होना था जिनमें सचार। (कामायनी पं० ३४)

राहुल जी के मित्रा एवं आलाचकों ने राहुल जी की शारीरिक संपत्ति के भय चित्रित किए हैं। गौर वण, उन्नत ललाट विशाल भूधराकार शरीर राहुल जी अनायास ही प्राचीन आर्यों का हम स्मरण दिलाते हैं।<sup>४</sup> 'लम्बा-बढ़ भरा गठा शरीर, गौर वण ऊँचा ललाट और प्रसन्न शांत मुख मुद्रा। उनके चेहरे में सबसे प्रभावपूर्ण उनकी दूर तक देखती आंख थी और सबसे आकर्षक उनके रक्तों को अपने में छिपाये स उनके होठ थे जिन पर मुस्कान निखरी ही रहती थी।<sup>५</sup> ऐसा था राहुल का शारीरिक 'यत्तिव'। रत्नाकर पाण्डेय के शब्दों में 'रत्नाकर के वक्ष-सा लम्बा चौड़ा शरीर बलान के रंग का गौर वण चंदन के लट्ठ सा विंगल मान सघन की चिनगारियाँ भरती आँखें चाणक्य का हृदय किन्नर का मन, कल्पना को यथाय म परिणत करने की प्रवृत्ति और धृति उनके व्यक्तित्व निर्माण के मूल स्तम्भ थे।<sup>६</sup> श्री भगवत्पाद उनकी बहू प्राचीन आर्यों जैसी मानते हैं छ फुट में निखलता हुआ ऊँचा-पूरा शरीर उन्नत ललाट प्रगाढ़ वण पुष्ट स्नायु—प्राधान्य आर्यों जैसी बहू देह—जिस दमकर विस्फोट प्राच्य विद्या विचारों से सत्व नवी की आत्मा के आग भगवान बुद्ध का चित्र खिच जाता था।<sup>७</sup> भगवत्पाद उपाध्याय की दृष्टि में उनका व्यक्तित्व स्तम्भ स उपमित किया जा सकता है।<sup>८</sup> डा० मत्पागुल ने उन्हें बोना का संस्कृति में विंगल मानव कहा है।<sup>९</sup> ठाकुर प्रसाद सिंह उन्हें बरगन का विंगल भूमता हुआ वक्ष मानते हैं और उनका भुवनमाहिता मुस्कान और पीठ पर हरेनिया का दवाव आज भी स्मरण करते हैं।<sup>१०</sup> अरुनींद्र कुमार विशालाकार के लिए उनका रूप का दशन पारसमणि था।<sup>११</sup> राहुल जी की गौर वण काया पर कभी मित्रा-सी वगभूपा सजी

और बन्नी यूरोप और रूम में रहने हुए देशकानानुकूल उन्होंने परिधान धारण किया— परन्तु श्वेत धोती कुत्ता और चादर के विनोद वषट्क व वहुत ही माहुर लगत थे । राहुल जी की विमाहिनी बाया की इस प्रकार अनक उपभाएँ हैं और अनेक विपण हैं और सभी सत्य एवं यथाथ हैं । उनकी बलिष्ठ एवं मनोहारिणी देह की सम्पत्ति मध्य एवं अपार है । वे आने वाले लोग के लिए किसी कल्पित कहाना के नायक प्रतीत होंगे—यह यथार्थ है । कुमारिल पत उह दीप्तिमान सान तथा बाधिवश-सा पवित्र कहने हैं<sup>१०</sup> ।

## मायावर राहुल

राहुल लवक पयटक अथवा पयटक लेखक थे ।<sup>११</sup> उनके व्यक्तित्व की सत्रम उमरती हुई विगिष्टता उनकी मायावरी यावृत्ति थी । घुमक्कड़ी राहुल के लिए जीवन का धर्म था और 'जयतु-जयतु घुमक्कड़ पन्था' उनकी उद्घोष था । घुमक्कड़ी धर्म का वे विश्व की सर्वश्रेष्ठ वस्तु मानते थे— मरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी । घुमक्कड़ी स बहुर व्यक्ति और समाज का को हितकारी नहीं हो सकता<sup>१२</sup> । 'इस घुमक्कड़ धर्म के प्रति प्रेम राहुल के मन में बचपन में मुनी नाना रामचरण पाटन की दक्षिण भारत की यात्रा-सम्बन्धी कथाओं से जागत हुआ<sup>१३</sup> । बचपन में यनोपवीत के समय चाचा के साथ बिध्याचल जात हुए केदार बनारस में ठहरा और चोरी ही याजार भाग कर बनारस गहर घुमकर पाँच-सात किताबें खरीद लाया—यही केदार (राहुल) की पहली यात्रा थी<sup>१४</sup> । केदारनाथ के मन में यात्रा प्रेम का जागन करने वाला दूसरा कारण था—नवाजिदा बाजिना की कहानी 'खुदराई का नतीजा' का प्रस्तुत गैर—

सर कर दुनिया की गाफिल जिल्गानी फिर बहा ?

जिदगी भर कुछ रही तो नीबवानी फिर बहा ?

राहुल जी स्वयं स्वीकारते हैं, 'इस गैर ने मेरे मन और भविष्य के जीवन पर बहुत गहरा असर डाला<sup>१५</sup> ।' इस घेरे से केदार प्रोत्साहित हुआ और घुमक्कड़ राज राहुल के रूप में विख्यात हुआ और इस घेरे को वे देश के सभी युवाओं को पानना चाहते हैं<sup>१६</sup> । घुमक्कड़ी राहुल के लिए किसी बड़े योग से कम मिद्विनायिनी नहीं है<sup>१७</sup> । इस याग की प्राप्ति के लिए भारी से भारी त्याग की आवश्यकता है—

यह मैं अवश्य कहूँगा कि यह दीक्षा बड़ी ल सकता है जिसमें बहुत भारी मात्रा में हर तरह का माहुर है—तो उस किसी की बात नहीं सुननी चाहिए, न माना व आँसू बहने की परवाह करने की चाहिए, न पिता के भय और उपाय दान की न भूत में विवाह साध अपनी पत्नी व रोने धोने की फिर करने चाहिए<sup>१८</sup> । राहुल स्वयं इस याग में दाँत हुए और उनके लिए बाधित त्याग लिया तथा आजीवन इसी याग में माधुर्य कर रहे ।

मायावर राहुल ने 'निस्त्रगुण्य पवि विचरत का विधि निषेध' गवरावाय



के इन शान्त का गुम्वाकय मानकर आजीवन घुमकण्डी घम को निभाया<sup>२१</sup>। घुमकण्डी उनके लिए कायरस अथवा ब्रह्मानन्द से किसी भी प्रकार कम नहीं थी<sup>२२</sup>। इस रस को प्राप्त करने के लिए राहुल आजीवन पिपासु रहे। दम वष की आयु में (१६०३ ई०) बनारस में चोरी ही शहर घूम आना १६०६ में निजामावाद में अपनी खाद्य सामग्री बचकर पुन बनारस की सर और १६०७ और १६०६ में बलकेश्वर घूम आना केदार की बचपन की यात्राएँ थी। इनसे उनके यायावरी-जीवन में प्रवेश का सवेत मिलता है<sup>२३</sup>। पर उनका नियमित यात्राया का आरम्भ सन १६१० की हिमालय यात्रा से होता है<sup>२४</sup>। उत्तराखण्ड की इस यात्रा के उपरांत सन १६१० से १६२१ ई० तक उन्होंने भारत के विभिन्न नगरों की यात्रा की। काशी, परसा, तिरमिगी तिरुपति काचीपुर, बंगलौर त्रिजयनगर, मय्यक्क उज्जैन, भद्रमनावाद, अयाध्या आगरा लाहौर कुम आदि स्थानों का भ्रमण किया<sup>२५</sup>। सन १६२६ में पुन हिमालय घूम आए<sup>२६</sup>। हिमालय की इस यात्रा में राहुल ने तिब्बत, बुगहर रियासत, सुन्मम कनम्, स्थिति आदि पर्वतीय स्थानों में विचरण किया।

सन १६२३ ई० से राहुल जी की विदेश यात्राया का आरम्भ होता है। व प्रथम बार सन् १६२३ में नेपाल गये। बौद्धधर्म के आकर्षण ने उन्हें सन् १६२७ में लका यात्रा के लिए प्रेरित किया और उन्नीस मास वही रहें।<sup>२७</sup> सन १६३० की दूसरी लका यात्रा में रामउदार राहुल साकृत्पायन के नाम से बौद्धधर्म में प्रव्रजित हुए।<sup>२८</sup> बौद्धधर्म के ग्रन्थों की खोज एवं ऐतिहासिक जानकारी राहुल को तिब्बत ले गई। राहुल ने तिब्बत की चार बार यात्रा की।<sup>२९</sup> अपनी यात्राया में व तिब्बत की यात्राओं को सर्वाधिक दुःख, रजिबुर और साथ ही सामंदायक मानते थे। पाश्चात्य सम्प्रदाय से अवगत होने के लिए राहुल जी ने सन १६३२ ई० में यूरोप यात्रा की। इस यात्रा में उन्होंने फ्रांस जर्मन तथा इंग्लण्ड के जीवन की देखा।<sup>३०</sup> बौद्ध धर्म एवं संस्कृत भाषा के पाश्चात्य विद्वानों से परिचय उनकी यूरोप यात्रा की मुख्य विशेषता थी। ऐसा प्रतीत होता है कि राहुल को यूरोप यात्रा में कोई आकर्षण प्रतीत नहीं हुआ। वे न तो फिर कभी यूरोप ही गये और न ही बौद्ध धर्म प्रचार के लिए अमेरिका जाना ही स्वीकार किया। तत्पश्चात् के बाद उन्हें सोवियत भूमि से विशेष प्रेम था। सन १६३४ ई० में वह पहली बार रूस गये<sup>३१</sup> और फिर तीन बार (१६३७ १६४६ १६६२) इस भूमि में विचरण किया।<sup>३२</sup> इस प्रकार लका तिब्बत रूस इंग्लण्ड जर्मन तथा नेपाल के अतिरिक्त अष्टाक्ष जापान कारिया मचूरिया ईरान और चीन की भूमि में विहार कर राहुल जी ने घुमकण्डी घम का परिचय दिया।<sup>३३</sup> राहुल जी सन १६०७ से १६६३ ई० तक निरन्तर घूमते रहे। अपने बर्बादिक दिना में कुछ वष ही वे मसूरी में एक स्थान पर बस कर रहे थे। उनकी इन यात्राया को देख कर पाश्चात्य और ह्यूनसाग की स्मृति हो आती है। व असाधारण घुमकण्डी थे— इस पथ के अद्वितीय पथिक थे किसी के अनन्तर व नहीं थे। प्रथम श्रेणी के घुमकण्डी के लक्षण जो उन्होंने घुमकण्डी यात्रा में बतलाये हैं, वे उन पर पूर्णरूपण दृष्टित होते

हैं।<sup>34</sup> समय भारतीय इतिहास में उन जैसा कृतविद्य और कमठ घुमक्कड़ आज तक नहीं हुआ। उनके पाँव का हीरे की जड़ीर बही भी स्थिर नहीं कर सकी। फेनी मुखर्जी के शब्दों में, 'वे भारत के महान यात्री और घुमक्कड़ थे। वे इतने गिना के इस जीवन की अवस्थान्त घुमक्कड़ी के बाद दूसरे लोक की यात्रा पर चले गये। वहाँ भी वे अपनी घुमक्कड़ी न छोड़ेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।'<sup>35</sup> वृत्तासपछी घुमक्कड़<sup>36</sup> राहुल के विषय में श्री शिवचन्द्र शर्मा के ये शब्द सच या सायब हैं। यायावर अपने बन सकते हैं, किन्तु उनके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे यायावरी-यावति को अपने नाम में तादात्म्य स्थापित कर सकें। राहुल जी जहाँ हात हैं, बिल्कुल धरया होकर होने हैं, फिर भारी तब की बात उनसे छिपी नहीं रहता। गहस्य छिद्र तब से अनमिन नहीं रहते। अपरिचिता के परिवार में भी पारिवारिक सदस्यता हासिल करने वाले ऐसे यायावर सोलहवीं स आठारहवीं शताब्दी तक चान, जमन, अमरिका और इंग्लंड में ही देखे जा सकते थे। बीमबी गताष्टी में विद्वत् में ऐसे बिरले यायावर राहुल ही हो सकते हैं, द्वितीयो नास्ति। उनका पय पथिक होना, तात्रिका की कृच्छ्र साधना है जो दूसरा के लिए श्रमिता को लाधना है अनुल्लस्य लध्य सहज ही नहीं बन पाता।<sup>37</sup>

राहुल की यायावरी उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को निर्मित करने वाला सब प्रमुख तत्त्व है। उनका यह व्यक्तित्व उनके यात्रा साहित्य में तो सबत्र प्रदीप्त हो ही रहा है, उनके उपयोगों एवं बहानियों में भी यह व्यक्तित्व मुखरित है। उनके क्या नायक प्रायः घुमक्कड़ हैं। उनकी क्याया के मूत्र यात्रा विवरणा में विकसित हैं। ऐसा लगता है कि जिन स्थानों का अपने उपयोगों में राहुल जी ने वगन किया है वे उनके देख-भरने हैं। इनके पाँव उस भूमि पर विचरण कर चुके हैं। यदि यह कहा जाय कि यात्रायात्रा ने ही राहुल जी को लेखक बनाया है तो प्रतिशयाविन न होगी।

### राहुल एक राजनीतिक कायकर्ता

राहुल जी के यायावरी व्यक्तित्व के साथ उनके राजनीतिक कायकर्ता का व्यक्तित्व विरोधामास भले ही लगता हो पर उनमें विरोध नहीं है। यदि यह कहा जाय कि उनकी यात्राएँ सोद्देश्य द्वारा करती थीं तो अनुचित न होगा। अपने घुमक्कड़ जीवन में समाचार-पत्र पढ़ना उनका नियमित काय था, जिसके माध्यम से वे देश विदेश की राजनीति से सुपरिचित रहते थे। गांधी जी के नेतृत्व में संचालित असहयोग के आंदोलन के समाचार ने राहुल जी में नवत्रेरणा जागत की। असहयोग आन्दोलन के तारे की ध्वनि ने घुमक्कड़ एवं धर्म प्रचारक राहुल के हृदय में सूफान उठा दिया और यह देशभक्त सनानी असहयोग आंदोलन में बूँत पड़ा। इस समय राहुल दक्षिण भारत में गुग प्रदेश में थे। यहाँ स लौटते हुए वे खण्डवा में एक गौशाला में ठहरे। यही उन्होंने प्रथम राजनीतिक व्याख्यान दिया। दक्षिण में राहुल छपरा पहुँचे—साधु वेश में। अपने राजनीति प्रवेश की सूचना उन्होंने जिला कांग्रेस कमेटी की दो जिसे लोग ने साधु की गुस्ताखी समझा पर रामउत्तर की तो काय करना था।<sup>38</sup>

वांग्रेस में प्रवेश पाकर राहुल ने अपना बाप अपने चिरपरिचित गाँव परमा से शुरू किया। एनमा में 'बन्ना महान् प्रचार एवं 'भादा' द्रव्य निषेध' का आयोजन में भाग लिया। छपरा का बाहु-पीडिता की सहायता की, स्वयं सबक मंगलिन विय और गिगा का प्रचार किया। परिणामतः अंग्रेज सरकार ने नयी बा जोर छ मास बक्सर जेल में बाट। राहुल जी ने राजनीति धन में अत्यधिक रुचि एवं अध्ययन साथ ही काम किया कि सन् १९२३ का चुनाव में बा छपरा जिला कांग्रेस का मंत्री बन गया। इसी वर्ष कांग्रेस में मतभेद उत्पन्न हुआ गया और उसका नतीजा यह बन गया— अखिलतन्त्रवादी और परिवर्तनवादी। परिवर्तनवादी दल कांग्रेस के कार्यक्रम में परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तन चाहता था। राहुल जी परिवर्तनवादी थे। कांग्रेस में मतभेद का कारण एक वर्ष बाद ही उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और बिहार चले गए। सन १९२३ ई० में बिहार प्रांतीय कांग्रेस की एक मावजनित्र सभा में भाषण दिया और बीरी बीरा वाण्ड में गरीब होने बाल देगमकना का श्रद्धाजलि अर्पित की। उनका इस भाषण के कारण उन्हें दो वर्ष का कारावास मिला। य दो वर्ष हजारीबाग जेल में व्यतीत हुए। जेल से बाहर आने पर उन्होंने छपरा जिले का दौरा किया और मीरगज के साम्प्रदायिक दंगा में मुसलमानों की जीवन रक्षा की। कांग्रेस का कार्यक्रम में निधनता के कारण सन् १९२७ ई० तक बा राजनीति कार्यक्रमों में भाग नहीं ले सके।

सन् १९३० में भारतीय रंगमंच पर महात्मा गाँधी के सत्याग्रह की विवेक पर्चा थी। राहुल जी इन दिनों सका में थे। यह इंग्लैंड में सत्याग्रह का समाचारों को पढ़ कर वे भारत लौट आए। इस समय बिहार के दंगा भूतना का गांधीवाद में निराशा हुआ चुकी थी। वे समाजवाद के आधार पर जन-जागृति चाहते थे। सन १९३२ में बिहार सोशलिस्ट पार्टी का स्थापना हुई और राहुल जी को इसका मंत्री चुना गया। गांधी दलिन समझौते का बाद सत्याग्रह आयोजन साधारण रूप धारण करने लगा और राहुल तीसरी लंबा-यात्रा पर चले गए और वहाँ से यूरोप।

यूरोप यात्रा में राहुल जी ने इंग्लैंड और दूसरे यूरोपीय देशों का जीवन का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। इस समय तक राहुल कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित हो चुके थे। लंदन में उनका अधिकतर समय माक्स लेनिन और स्तालिन के ग्रंथों का अध्ययन में व्यतीत हुआ। तत्पश्चात् सन १९३८ तक राहुल जी ने तिब्बत, लद्दाख, जापान कोरिया मंचूरिया ईरान तथा सोवियत भूमि की यात्रा की। इस प्रकार सन् १९२७ से १९३८ तक राहुल भारत की सक्रिय राजनीति में दूर रहे। परन्तु इस समय की उनकी यात्राओं एवं साम्यवादी विचारधारा ने उनकी भविष्य की राजनीतिक दृष्टि को आमूल परिवर्तित कर दिया था। बा सोवियत भूमि के साम्यवादी जीवन से अत्यधिक प्रभावित हो चुके थे। यह भूमि उन्हें साम्यवाद का मूल रूप प्रतीत होती थी। फलतः सन् १९३८ में राहुल जी ने जब भारतीय राजनीति में पुनः

प्रवर्ग किया तो वे पूण साम्यवादी बन चुके थे। सन ३८ के छपरा जिले में होने वाले किसान आन्दोलन में राहुल ने जमींदारों का विरोध किया जेल भी गया और अपने निम्नार्थ त्याग के कारण वे किसानों के सच्चे नेता बन गए।<sup>३६</sup> साम्यवाद में प्रवेश का राहुल जी एक नया जीवन का आरम्भ मानते थे।<sup>३७</sup> सन १९३६ में वर्धा में हुए कम्युनिस्ट पार्टी के अधिवेशन से राहुल जी प्रभावित हुए। इसी वर्ष बिहार कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई और राहुल जी इस पार्टी के सदस्य बन गए।<sup>३८</sup> और तब से आजीवन वे साम्यवादी ही रहे। यद्यपि पार्टी से वे अलग भी हुए मतभेदों के कारण, पर विचारों से वे सदैव साम्यवादी ही बने रहे।<sup>३९</sup>

देश विदेश की यात्राओं में राहुल जी का साम्यवाद में अद्विग विश्वास हा गया था। वे उनके लिए मानवतावाद का पर्याय था। वे मानव विराम के लिए सतत प्रयत्न साग साम्यवाद का ही मानते थे और भारत के योगदान के लिए उस प्रतिपाद समर्पण थे। साम्यवाद राहुल को अत्यन्त प्रिय था। वे लिखते हैं— मुझे व्यक्ति के अलग अलग जीवन की अपना समष्टि का समूहिक जीवन सदा ही अधिक पसंद रहा। राजनीतिक कार्यों में पड़ने के बाद तो मुझे और पता लगने लगा कि एक चला भाव नहीं फाड़ सकता। शक्ति के महाजन के लिए जयदस्त सुमगलित मना होनी चाहिए। मैं कम्युनिस्ट पार्टी का पूरी रूप में पाया।<sup>४०</sup> कांग्रेस की अपना माकसवादी साम्यवाद राहुल को इसलिए प्रिय था कि वह आर्थिक समता एवं आर्थिक स्वराज्य की मांग करता है और गरीबों एवं मजदूरों को दुष्सा एवं चिन्ताओं से मुक्त करता है। गांधीवाद और भूदान आन्दोलन को वे अनुपयोगी मानते थे। उनकी दृष्टि में अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय राजनीति में गांधीवादी रास्ता देश के आत्मपान का रास्ता है।<sup>४१</sup> और सभी कृष्ण-वर्णित सभी दमघाट स्थितियों को हटाने का एक ही माग है वह है जाल मवानी, साम्यवादी शान्ति।<sup>४२</sup>

राहुल जी के राजनीतिक व्यक्तित्व की मात्र विशिष्टताएँ हैं। यायावरी की अपने-उन्होंने राजनीति में पद माग लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि जब वे घुमकाड़ी से निवृत्त होत ग्रयवा परिस्थितियों की माग सुनते तो राजनीति में कूद पड़ते। इस तथ्य की ओर उन्होंने स्वयं संकेत किया है छपरा के मरे राजनीतिक सहकर्मी भद्र भी जब-तब मिलते और कभी-कभी कायस्थों में जान के लिए जार भी दन थे। किन्तु जान पता है मैं प्रकृत्या राजनीति के लिए नहीं बनाया गया—तो भी बतमान सामाजिक और राजनीतिक विधान से मैं सन्तुष्ट नहीं था, इसीलिए समय-समय पर मैं अपने का-का नही रख पाता था।<sup>४३</sup> राहुल जी ने यद्यपि सचिय रूप में राजनीति में भाग सन १९२१ २७ तथा सन १९३८ ४३ में लिया, तथापि अपने घुमकाड़ी जीवन में भी वे का-का की राजनीतिक समस्याओं का प्रति नागरिक रहे।

राजनीति के क्षेत्र में भी राहुल आतिशारी, प्रयोगशील एवं गतिशील रहे हैं। उन्होंने सन १९२१ में कांग्रेस में प्रवेश पाकर राजनीतिक जीवन आरम्भ किया।

सन् २२ मे वे कांग्रेस के परिवर्तनवादी गुट में सम्मिलित हुए। सन् ३२ में वे सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य बने। सन् १९३६ में वे माक्सवादी बने और आजीवन साम्यवादी रहे। इस प्रकार राहुल जी का राजनीतिक व्यक्तित्व मर्यादात्मक एवं सत्य के प्रयोग के व्यतीत हुआ। राहुल को माक्सवाद मानवतावाद के सर्वाधिक निकट लगा।<sup>४०</sup> इस प्रकार राहुल ने किसी राजनीतिक मत का अधानुकरण नहीं किया। वे जब किसी वाद अथवा मत में खोखलापन देखते, उसे छाड़ स्वतन्त्र भाव अपनाते। जब तक कोई राजनीतिक विचारधारा उन्हें बुद्धिग्राह्य प्रतीत नहीं होती थी, वे कभी उसका अनुसरण नहीं करते थे। उनके व्यक्तित्व की दो स्पष्टतम विशेषताएँ थी— सत्यावेषण और रुढ़िया के विरुद्ध संघर्ष। प्रगति की जिस जिस दिशा में रुढ़ियाँ दीवार बनीं राहुल जी उसे तोड़ते गये। ऐसी ही प्रक्रियाओं के शीघ्र राहुल जी के सबल व्यक्तित्व का निमाण एवं प्रगतिवादी चेतना का विनाश हुआ। राहुल सत्यजीवी थे, अनुभवा में उन्हें माक्सवाद तक पहुँचाया। सम्भवतः यही कारण है कि उनकी लेखनी सत्य की गाथा लिखते समय इतनी धारदार होनी गई है।<sup>४१</sup>

राजनीतिक ज्ञान के साथ वे सामाजिक जाति को भी भावपूर्ण मानते थे। उन्हें दुःख होता था जबकि तथ्यावधित राजनीति अपने आप को जातिपाति की सकीणता से मुक्त नहीं कर पाते थे और निजी स्वार्थों के लिए पेंतरा बदलते रहते थे।<sup>४२</sup> राहुल कृत्रिम एवं छूतछात के कट्टर विरोधी थे और राजनीतिर जीवन में इनके प्रवेश को घाप मानते थे।

राहुल जी की राजनीति उनके देश प्रेम एवं देश भक्ति की भावना से मुक्त व्यक्तित्व को मुखरित करती है। देश की स्वतन्त्रता उन्हें प्राणा से प्रिय थी। उनकी अमिलापा थी तुलसी माला फेंककर अब इन हाथों में लगवाऊँगा हथकड़ियाँ और गले में चद्राम की माला के बदले अगर मर सकूँ फाँसी का फाँस लगवा कर तो समझूँगा कि अपना जीवन धन हुआ। अब तक साधु बनकर भाँगता फिरता रहा था अपने लिए भोज और अब लड़ाई बनकर अपने देश की आजादी बसूल करने के लिए लड़ूँगा। लाखों-करोड़ों भूखा के मुँह में राटी डालने का संकल्प लेकर चल पड़ूँगा एक तूफान बन कर।<sup>४३</sup>

राहुल के साहित्यिक व्यक्तित्व को घुमकूँड़ी के अनन्तर प्रभावित करने वाला दूसरा सत्त्व राजनीति है। राजनीतिक विषय उनकी कृतियों में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सबत्र आये हैं। मेरे असहयोग के साथी में असहयोग आन्दोलन के उनके कुछ सहयोगियों का संस्मरण है। बाईसवीं सदी उनके माक्सवादी बनने से पूर्व की रचना है। उनका यह स्वप्न सोवियत जीवन में सानार होता हुआ दिखाई देता है। साम्यवाद ही क्या? दिमागी गुलामी, आज की राजनीति भाषों नहीं दुनिया को बदलो आदि रचनाओं में साम्यवाद सम्बन्धी अनेक विषयों पर चर्चा है। सिंह सेनापति जययोधेय भधुरस्वप्न जीने के लिए, बोल्शा के गंगा आदि कथाकृतियाँ में

उनके साम्यवादी विचार अत्यन्त स्पष्ट हैं। राहुन जी के साहित्य में इस प्रकार उनका राजनीतिक विचार सचित्र बिगड़ हुए हैं।

## राहुल जी की घम दृष्टि

राहुन मातृव्यायन का जन्म बण्णव परिवार में हुआ। इनका नाना रामगण पाठक बण्णव घम का अनुयायी थे, पर वे बट्टर बण्णव नहीं थे। उन्हें वेदार्थ का गरीब की स्वस्थ एवं पुष्ट बनाने का लिए माम मछली पका कर दान में बाँटी आपत्ति नहीं थी। राहुन दस वर्ष की अवस्था में अपने पिता के सम्पर्क में आए। उनका पिता गोवधन पाण्डे धार्मिक वृत्ति का व्यक्ति था। पूजा का बड़े नियमों के पालन के कारण वे 'पुजारी' नाम से पुकारे जाते थे। पर वे भी पुरानी परम्पराओं के अनुयायी नहीं थे। 'धाम धाक्य प्रमाणम्' उन्हें स्वीकार्य नहीं था। ब्राह्मण होने हुए भी वे चिन्ता चमार के 'गध का गधा तीर जलाने के लिए' में गए।<sup>१</sup> विचारों की यही स्वतन्त्रता राहुल के जीवन में आगे चल कर प्रस्फुटित हुई। बचपन में राहुल को नाना और पिता के धार्मिक मतभेदों का अनुभव हुआ। जिनमें रुडिवादितों का बड़ी भूमिका नहीं थी। राहुल जी के आरम्भिक धर्म-सम्बन्धी विचारों को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों में बाबा परमहंस उत्तरेय हैं। राहुन के पिता जी की परमहंस जी में आस्था थी। पिता का साथ वे भी परमहंस की कुटिया में जाते थे। इस कुटिया में बाबा हरिकरण दास जी रहते थे जिन्होंने राहुल को वेदांत का उपदेश दिया। राहुल १५-१६ वर्ष की आयु में पहले वेदान्ती बन गये थे। 'अथ मरण जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्म व मापर' का सूत्र की वृष्टि पर वे सच्चाई बनने की धुन में ब्रह्मनाथ की ओर भाग निकले। वेदांत और परमहंस के अतिरिक्त उन्हें सब कुछ भ्रमपूर्ण प्रतीत होता था। परन्तु गीष्म ही राहुन जी के विचारों में परिवर्तन आया। वे वेदांती से निवृत्त हुए और ब्रह्मनाथदास की तथा महिम्न-स्तोत्र का पारायण करने लगे। सन् १९११ में राहुन जी मन्त्र साधना की ओर आकृष्ट हुए। स्वामी पूर्णानन्द से उन्होंने मन्त्र साधना सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन किया और उनकी प्रेरणा से पूरे नियम के साथ आठ दिन तक दुगा के दानास मन्त्र-जप किया। पर जगदम्बा के दर्शन नहीं हुए और जीवन व्यर्थ समझ कर आत्महत्या की सोच ली और धतूरे के बीज खा लिए। मरते मरते बचे। इस मन्त्र-साधना की व्ययता को देख राहुन जी में परिवर्तन आया। अपनी इस अवस्था के विषय में वे लिखते हैं, "धार्मिक वायुमण्डल में उड़ने का साथ ठोस पृथ्वी पर भी पर रहना चाहिए। इधर भी मेरा ध्यान गया।"<sup>२</sup>

सन् १९१२ में राहुल जी परसामठ के महन्त लक्ष्मणदास के सम्पर्क में आए और पुनः बण्णव बन गये। ब्रह्मनाथ से वे 'रामउदारदास' बने। उनकी अधिकतर समय साधुओं की सी दिनचर्या में बीतता परन्तु यहाँ वे भ्रमन्तुष्ट नहीं रहते थे। परसामठ का निवास राहुल जी के लिए बौद्धिक अनुरूप था। उन्हें वहाँ

का सारा वातावरण सहायपूर्ण प्रतीत होता था।<sup>१३</sup> राहुल जी इस कूपमण्डूकता के वातावरण से भाग निरलना चाहते थे। सन् १९१४ में अयोध्या में राहुल जी आय समाज के संसर्ग में आए। आय समाज के मापणा में मूर्तिपूजा, बहुदेववाद आदि का खण्डन होता था। राहुल जी आय समाज की ओर आकृष्ट हुए—‘मैं अपने अस्तित्व में एक सर्वांग गडहिया से निबल कर विशाल जलाशय में जाने की एक वेदना को अनुभव कर रहा था।’<sup>१४</sup> सन् १९१५ में शिक्षा प्राप्ति के लिए राहुल जी आय मुसाफिर विद्यालय आगरा में प्रविष्ट हुए। इस विद्यालय में विद्यार्थियों को आय समाज के प्रचारक के रूप में तैयार किया जाता था। यहाँ उन्हें नए प्रकाश का अनुभव हुआ ‘वहाँ मेरे विचार बच्चों समान थे किन्तु यहाँ आय समाज में अपनी बुद्धि का ज्यादा स्वच्छन्द, ज्यादा अनुकूल परिस्थितियाँ मिल रही थी।’<sup>१५</sup> आय समाज को राहुल उन दिनों सावित्री धर्म समझने थे।<sup>१६</sup> उनका विश्वास था कि आय समाज ने प्राणा की आहुति देकर और पाजिता की सेवा करके अपने लिए आकषक इतिहास तैयार किया था।<sup>१७</sup> राहुल जी ने स्वामी दयानन्द के विषय में यहाँ तक कह दिया था—‘मैं दयानन्द के एक एक वाक्य का बदलाव मानता हूँ।’<sup>१८</sup> आय मुसाफिर विद्यालय आगरा से शिक्षा प्राप्त कर कुछ समय तक राहुल आय समाज के प्रचारक के रूप में कार्य करते रहे।

आय-समाज भी चिरकाल तक राहुल जी को आकृष्ट नहीं कर सका। कई वर्षों से महात्मा बुद्ध के प्रति उनका मन में धड़का जागृत हो चुकी थी। उनकी जीवनी के पठन तथा बौद्ध धर्म के तीर्थ-स्थानों के पर्यटन के उपरान्त बौद्ध धर्म के प्रति उनका अनुराग बल्लन लगा। परन्तु उनका ईश्वर के प्रति अग्नि विश्वास था।<sup>१९</sup> सन् १९२६ में राहुल लका गया। यहाँ के वातावरण ने उनके हृदय में बौद्ध धर्म के प्रति और अधिक अनुराग पैदा कर दिया। राहुल अभी तक ईश्वर अनैश्वर्य के अतल्ल दृष्ट में पड़े थे। अतल्ल वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे—‘ईश्वर और बुद्ध साथ नहीं रह सकते यह साफ हो गया और यह भी स्पष्ट मालूम होने लगा कि ईश्वर बल्ल काल्पनिक चीज है बुद्ध मयाय बनना है।’<sup>२०</sup> उनकी दृष्टि में बुद्ध मनुष्य की स्वतन्त्र बुद्धि का महत्त्व दल्ल बाल्ल था और मल्ल पर उनका विश्वास था। यहाँ से राहुल जी ने ईश्वरवाद को सदा के लिए त्याग दिया और बौद्ध धर्म के अनुयायी बनकर त्रिपिटकाबाय बन गये। सन् १९३० में राहुल जी ने बौद्ध धर्म में प्रत्या लता और रामजगल्ल से राहुल साहज्यायन बने। राहुल जी केवल बौद्ध भिक्षु ही नहीं बन, बौद्ध धर्म के प्रचारक भी बन गये। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए वे भदल्ल आनन्द कोमल्लायन के साथ यूरोप गये और लका तथा जिवन की कई यात्राएँ कीं। बौद्ध धर्म के प्रत्या की खाज्ज एक बौद्ध-ग्रन्थ के पारायण से राहुल जी बौद्ध धर्म के प्रमाण्ड पडित बन गये। रत्नाकर पाण्डेय के ज्ञान में बौद्ध साहित्य का महापण्डित ने बहुत कुछ दिया। स्वतन्त्रता के लिए सघषणील भारत में बौद्ध धर्म और साहित्य का पतन स्वामाविक था। ऐसे समय कुछ भिक्षुगण अपने भौतिक यन्त्रों से उसकी सुरक्षा में

सबलीन ये। यदि राहुन का श्रमणीय और नव्य भावनाया से ओतप्रोत भ्रान्तदर्शी व्यक्तित्व इस क्षेत्र में मशाल न जलाना तो बौद्ध साहित्य का विकास सम्भारहीन होकर भ्रान्त भी छितराया जाता और जन-जीवन में स्वतन्त्रता के उपरांत भी उसकी युगविधायिनी मूल्यगत स्थापना अमम्भव थी।<sup>११</sup> पण्डित रामगाविंद त्रिवेदी निरांत हैं— राहुन जी बौद्धों के श्रुतवाद क्षणिकवाद और विज्ञानवाद का इतना सरल निवचन करत थे कि साधारण जन की बुद्धि में भी निवचन का कुछ भ्रम समा जाता था। बौद्धों के पांच स्तंभों का विश्लेषण सुनकर लोगो का हृदय उत्सास में भर जाता था।<sup>१२</sup>

सन् १९३५ में राहुल जी के घम सम्बन्धी विचारों में पुनः परिवर्तन आया। बौद्धधर्म से भी उनकी विश्वास उठने लगा। बौद्धों का निर्वाण उह निरर्थक प्रतीत होने लगा। द्वितीय स्तंभ-भाषा में उनकी नास्तिकता की ओर भी दृष्टि कर दिया। ईश्वर और घम में अब उनकी किंचित भी विश्वास न रहा। अक्टूबर १९३६ में राहुल जी कम्युनिस्ट पार्टी के मदस्य बन और साथ ही पूर्णतया नास्तिक एवं मावस बाने भौतिकवाद के अनुयायी भी—जन्म मृत्यु ईश्वर घम के विचार से गुरुर। घम सम्बन्धी सभी बातें उह ध्वंस प्रतीत होत थे और ईश्वर की सम्भावना तक उह स्वीकार्य न थी।<sup>१३</sup> द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दशन उह सत्य प्रतीत होने लगा क्योंकि 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अपने का प्रचलित तत्त्वशास्त्र की बाटि में रखने के लिए तयार नहीं क्योंकि वह दिमागी वमरन की नहीं बल्कि प्रमाण को परम प्रमाण मानता है यही उसके लिए सत्य की सवश्रेष्ठ कसौटी है।<sup>१४</sup> इस प्रकार राहुल जी की घम दृष्टि अन्तर्गत भौतिकवाद पर आकर स्थिर हुई। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद उनके लिए अत्यन्त वगानिक था। वह जीवन और जगत से पलायनवादी भाव न होकर दुनिया को परिवर्तित करने का भाव था। जीवनपर्यन्त राहुल मार्क्सवादी भौतिकवाद में दृढ़ विश्वास बनाय रखे और उहने स्मृति-लोप एवं अनुषण की अवस्था में भी 'ईश्वर' का नाम अपने हाँठों पर नहीं आन दिया।

राहुल जी की घम दृष्टि की उपयुक्त विवेचना के अनन्तर हम यह सबत हैं कि उनकी घम दृष्टि भी गन्धर्वक एवं प्रगतिशील थी। उहने प्रत्यक्ष धार्मिक मत की उपयोगिता के निषेध पर रज कर परखा और उह प्रतीत होने लगा कि सत्पाकीपत घम जीवन की समन्याया का समाधान प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं। राहुल जी का यदि कोई घम था तो वह था मानवतावाद। परिणामतः व वगन्त गव, वणव मत आय समाज को लाघत हुए बौद्ध बन और बौद्ध घम के साथ भी उनका वहीं तब समझौता रहा जहाँ तक वह मानवतावादी था। अन्ततः भौतिकवाद में उह मानवतावाद के दान हुए। राहुल जी की घम-दृष्टि के निरन्तर विकास का परिचय उनके इन शब्दों से मिलता है—आय-समान के स्वतन्त्र विचारों के बाद मैं बुद्ध के पाग पहुँचा और उनका 'अनीश्वरवा', विचार स्वातन्त्र्यवाद, आर्थिक समतावाद में



बहुत प्रभावित हुआ। उसके बाद मात्स के विचारा को अपनाता मुझे विल्कुल स्वाभाविक-सा मालूम हुआ। मात्स को दुनिया और उसकी वस्तुआ की व्याख्या नहीं करनी थी बल्कि उन्हें बदलना था।<sup>१४</sup> इस प्रकार राहुल जी का धर्म किसी तथानुसृत धर्म का रूप नहीं है वह कृत-य, 'मानवतावाद एवं वैज्ञानिक भौतिकवाद का पर्यायवाची है।

राहुल जी की धर्म दृष्टि ने उनके साहित्य सृजन को भी प्रभावित किया है। अपने धार्मिक अनुभवों के आधार पर उन्होंने कई रचनाएँ हिन्दी साहित्य को प्रदान की हैं। महामानव बुद्ध 'बौद्ध दर्शन दर्शन दिग्दर्शन, दीप निकाय धार्मिक भौतिकवाद आदि ऐसी ही कृतियाँ हैं। इस क्षेत्र में राहुल जी आधुनिक हिन्दी साहित्य में निस्संदेह अग्रणी हैं।

### महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

त्रिपिटकाचार्य महापण्डित राहुल सांकृत्यायन बहुत विद्वान् थे। शशव से ही केदारनाथ में उत्कट ज्ञान पिपासा थी अदम्य महत्वाकांक्षा थी य विद्यावारिधि घनता ही नहीं चाहत थे, जगतीतल के समस्त विद्यासागरों को घोल कर पी जाना भी चाहत थे।<sup>१५</sup> आचार्य पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी राहुल जी की बहुज्ञता के विषय में लिखत हैं 'राहुल बहुश्रुत और बहुत थे। बौद्ध धर्म व दर्शन के विद्वान् थे। भारतीय इतिहास पुरातत्त्व भाषा विज्ञान लिपि विज्ञान खगोल विज्ञान मनोविज्ञान समाज विज्ञान कोष विज्ञान अग्नेयी संस्कृत, प्राकृत ईरानी, अरबी पाली हिन्दी आदि दर्जना भाषाभाषा विद्याभाषा और कलाभाषा के पण्डित थे। आपका बहुमुख ज्ञान विज्ञान का पाण्डित्य देख कर ही प्रसिद्ध पण्डिता ने आपको महापण्डित की उपाधि दी थी।<sup>१६</sup> इस प्रकार राहुल विश्वविख्यात असाधारण भारतीय विद्वान् हैं। व विषय की गहराई में जाकर नवलतम उपलब्धियों के सम्बन्ध में विचार कर तत्त्व दर्शन देने वाले प्रकाण्ड विद्वान् हैं।

राहुल जी अपने विशाल साहित्य निरुक्तन के स्वयं निर्माता शिल्पी थे। उनकी योजनाएँ अपनी थी और उन्हें पूर्ण करने के लिए उनमें अदम्य परिश्रम शक्ति थी। वे निरन्तर ज्ञान की सीमाओं को विस्तीर्ण करत रहे। उनमें ज्ञानार्जन के लिए विलक्षण कमठना एवं त्रिषाशीलता थी। श्री सतराम धी० ए० लिखत हैं 'राहुल जी में उत्कट ज्ञान पिपासा थी। ज्ञान वृद्धि के लिए वे कठोर-से कठोर परिश्रम करने में तनिक भी हिचकिचाते न थे। संस्कृत साहित्य का गम्भीर अध्ययन करने में उददेश्य से वे साधु बन गये।<sup>१७</sup> अन्त आनन्द कौसल्यायन भी राहुल जी के गुणों में उनकी प्रखर मेधा और स्वतन्त्र चिन्तन का विगिष्ट मानत हैं।<sup>१८</sup> श्री बनारसीदास चतुर्वेदी लिखते हैं 'राहुल जी में अनेक गुण हैं अदम्य परिश्रम शक्ति है अत्यन्त पौरुष है गम्भीर विद्वत्ता है—कुल मिलाकर हिन्दी जगत् में वे एक बेजोड़ आत्मी हैं और हम सब उन पर अभिमान कर सकते हैं।<sup>१९</sup> श्री अमृतराय उनकी कमठना के विषय

मे कहते हैं, राहुल तो एक स्वप्न का नाम है, एक गहरी सामाजिक दृष्टि का— और उसको चरित्राय करने वाली एक तजस्वी, एवाग्र, अनीय, हुलीली अनयक क्रियाशीलता का। जिनका काम इस आदमी ने अकेले किया है उतना नामद दस बीम मिलकर भी न कर सकते।—राहुल एक व्यक्ति नहीं हैं, जिस साधारण अर्थ में हम इस शब्द को ग्रहण करते हैं,—बल्कि एक मे अनेक व्यक्ति हैं।<sup>१०</sup> वस्तुतः राहुल के जीवन की सिद्धि उनकी कमठता एवं क्रियाशीलता है, यही उनका सबसे बड़ा मुद्दा है और यही उनकी विद्वता एवं पाण्डित्य उपरान्धि का मूल। डा० कमला साहू-यायन राहुल जी की कमठता के विषय में लिखती हैं 'मेरे पूरे स्वर्गीय राहुल जी अपने काम करने में जितने कमठ थे, उतने ही वे दूसरों से भी अपेक्षा रखते थे। उनमें आलस्य नाममात्र की भी नहीं था। आज के कार्य को कल के लिए छोड़ना सदा उनके स्वभाव के विरुद्ध था। वे अक्सर ये पंक्तियाँ दोहराया करते थे 'काम करे सो आज करे, आज करे सो अब' और उनका सारा जीवन इसी सिद्धांत पर अटल रहा।'<sup>११</sup> रत्नाकर पांडेय के शब्दों में उन्होंने कई तथा अनेक अवसरों पर ऐसे ऐसे महान् ग्रंथों की सृष्टि की, जिसे अनेक महत्त्वपूर्ण सस्याएँ कई वर्षों के श्रम से भी पूरा न कर पाती। राहुल जी द्वारा बाईस वर्षों पर सा कर निश्चित सलाया गया विशाल बौद्ध-साहित्य हमारे लोभ के लिए ऐतिहासिक धरोहर है।<sup>१२</sup> वस्तुतः महापण्डित राहुल में जिज्ञासु मेधा, सजग सक्रियता, असीम साहस एवं उदाम पीरप था जिसके बल पर उन्होंने अनयक 'नानाजन किया एक विपुल साहित्य साधना की।

महापण्डित राहुल में प्रकाण्ड पाण्डित्य के साथ पण्डितजन मुनम विनम्रता, कृतज्ञता एवं सरनता भी थी। उनमें अत्यधिक परिश्रम, सत्य के प्रति अडिग प्रेम और साहस के साथ व्यक्तिगत निश्छल उदारता भी थी। भगवत्परायण उपाध्याय के शब्दों में, 'श्री राहुल का व्यक्तित्व सरल और आकर्षक है, यद्यपि उनकी मेधा की गहराई बहुत है। उनका हृदय सबथा बाहरी तल पर है जिसे समझने में किसी का कभी धोखा नहीं हो सकता'<sup>१३</sup>।

महापण्डित राहुल कृतमता के साकार रूप थे। उनकी जीवन यात्रा में जा लाग उनके मानसिक सम्बल बल, जिन्हें उन्होंने माग दसन पाया, कुछ भी सीखा, उनके प्रति वे सदा विनयावन्त ही नहीं रहे, अनेकों का मोन उपकार भी उन्होंने किया था। जिस किसी से भी राहुल ने प्रेरणा प्राप्त की, उसके के विरुद्ध कृतज्ञ हो गये। इनमें से कई मनोविषयों का उन्होंने अपने श्रम समर्पित किया है। अपनी जीवन यात्रा तथा जिनका मैं कृतज्ञ मैं उन्होंने अपने बुजुर्गों, बंधुओं एवं मित्रों के ऐतिहासिक संस्मरण अंकित किए हैं। राहुल साहू-यायन कृतज्ञताज्ञापन की किताब महत्त्व देती है उन्हीं के शब्दों में पठनीय है 'जिनका मैं कृतज्ञ लिख कर मैं उम अक्षर स उद्घरण होना चाहता हूँ, जो इन बुजुर्गों, बंधुओं और मित्रों का मेरे ऊपर है।—

—इनमें सिर्फ वही नहीं हैं, जिनसे मैंने माग दशन पाया या कुछ सीखा, बल्कि ऐसे भी पुरष हैं जिनका सम्पर्क मेरे मानसिक सम्बल के रूप में जीवन यात्रा में सहायक हुआ। — वृत्त और वृत्तवती मनुष्य को सन्तुष्ट होना चाहिए। \* वस्तुतः राहुल विद्या विनय सम्पन्न महापण्डित थे। विस्तीर्ण ससार में पयटन कर यत्र तत्र विकीर्ण ज्ञान कणों को चुनना—यही राहुल का अखण्ड व्रत था। जहाँ से भी उन्हें यत्किंचित् मानोपलब्धि हुई उससे प्रति श्रद्धावन्त होकर उन्होंने वृत्तवती स्थापित की है।

अन्तर्राष्ट्रीय युगपण्डित राहुल ने विदेशों में ह्यूनसाय और फाह्यान की भाँति घूमकर केवल दशन का व्यामोह नहीं रखा, अपितु हिंदा प्राच्य भारतीय वाङ्मय, तिब्बती मस्कृत, भाषा विज्ञान आदि में महत्त्वपूर्ण प्रायास्य रहकर दो नव्यार ललितप्राङ्ग और लका में भारतीय ज्ञान की अजय सांस्कृतिक धारा का गुन्त्वस्त्रात भी यहाया। अपनी इस विद्वता और पाण्डित्य के कारण राहुल को भारतीय जनता से भारतीय विद्वत्जगत से बहुत प्यार मिला बहुत सम्मान मिला। भारत में बाहर विदेशी विद्वान भी राहुल जी का पाण्डित्य की प्रशंसा करते थे। लका में विद्यालकार विश्वविद्यालय ने इस भारतीय पण्डित को साहित्य चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित किया\*१। विद्यालयार विश्वविद्यालय के कुलपति किरिक्लुडुवे प्रसासार नामकपाद का कथन है राहुल जी हमारे विश्वविद्यालय की शोभा थे विद्यालकार का अलवार \* उन्होंने अपनी विद्वता, सरलता और सबसे बढकर अपनी विनम्रता से हम सब के मन का मोह लिया था\*२।

राहुल जी की प्रतिभा का क्षेत्र अत्यन्त विाद और बहुरगी था। उनका क्षेत्रन-पथ अत्यन्त बीहड एवं कठिन था। वस्तुतः वे अध्ययन और लेखन के बीहड पथ के महामाधिन थे। उन्होंने दशन इतिहास भाषा शास्त्र साम्यवाद, उपपास, कहानी एकाकी यात्रावणन, सस्मरण जावनी काय, निरर्थक सभी विषयों पर गम्भीरतापूर्वक लिखा। साथ ही अपने साहस और परिश्रम से रहस्यमयी इतिहासिक बहुमूल्य पाथियाँ और साहसिक यात्री की उज्ज्वल जीवन-गाथा छाड गये हैं।

राहुल जी ने विद्याल साहित्य रचना द्वारा अपने महापाण्डित्य का परिचय दिया है। उनका वृत्तित्व गुणात्मक एवं परिमाणात्मक बविध्य से युक्त है। उनकी प्रकाशित अप्रकाशित मौलिक व अनूदित रचनाओं की संख्या १५० से कम नहीं है। उनकी रचनाओं में विद्याओं की विविधता है साथ ही वे विषय-बविध्य भी लिए हुए हैं। मध्य एशिया का इतिहास उनके गहन इतिहास प्रेम का परिचायक है तो 'दशन हिन्दुजान' उनका गम्भीर एवं पाण्डित्यपूर्ण दार-ग्रन्थ है। आज की राजनीति तथा भागो नदी दुनिया का बदनी में साधारण गली एवं सरल भाषा में साम्यवाद का सन्ध है। पारिभाषिक कोष निमाण न द्वारा उन्होंने राग्वारी काम राज के लिए हिंदी के प्रयाग की नीव रखन का गणिहासिक काम किया। इसी प्रकार बाग्या से गंगा उनका कहानी-साहित्य का अनुपम स्तन है तो सिंह-मनापति, 'जय-योधय तथा

‘मधुरस्वप्न एतिहामिव’ उपन्यास का आदर्श है। देश विदेश की यात्राओं के विवरण उनके यात्रा साहित्य में मिलते हैं तो देश विदेश की महान विभूतियों का चित्रण उनकी जीवनी सम्बंधी रचनाओं में प्राप्त होता है। हिंदी काव्य धारा तथा दक्खिनी हिंदी काव्य धारा उनकी दो साहित्य के इतिहास से सम्बंधित महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। अभिप्राय यह कि महापण्डित राहुल का साहित्य विषय, गुण एवं परिमाण-सभी दृष्टियाँ से बहिष्कृत है। उससे हिंदी साहित्य के भंडार की महत्वपूर्ण बढि हुई है।

राहुल जी का बड़ा भाषाशास्त्र पर पूरा अधिकार था। डॉ० कमला साहूत्यायन के अनुसार, आरम्भ में वे ३६ भाषाएँ जानते थे। बाद में काम न पढ़ने से वे कितनी ही भाषाएँ भूल गये थे। १६ भाषाओं को वे भली प्रकार पढ़ते, लिखते व समझते थे<sup>५५</sup>। हिंदी भाषा के प्रति उनका अनन्य अनुराग था। रत्नाकर पाण्डेय के शब्दों में, ‘उनका धर्म हिंदी के अतिरिक्त कुछ नहीं था और उनका काम हिंदी धर्म की पूजा की और सदैव सतत उमूल रहा’<sup>५६</sup>। राहुल जी हिंदी के प्रति कभी कृतव्युत्त नहीं हुए। उन जस हिंदी में निष्ठावान समयों के बिरसे ही होते हैं। वे राष्ट्रीय भाषा हिंदी के लिए जिय और उसी के लिए उहने अपने को होम कर दिया। हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षपद से उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी के समर्थन में भाषण दिया<sup>५७</sup>। इसके लिए उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी की धारित नीति की भी चिंता नहीं की<sup>५८</sup>। उनकी हिंदी को कितनी देन है, इस विषय में पण्डित रामगोविंद त्रिवेदी का कथन ध्यातव्य है। उन्होंने अपने ज्ञान विज्ञान से हिंदी का जो भण्डार भरा है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदी के उद्धार और उनयन के लिए उन्होंने बड़े बड़े कष्ट उठाये। इसके लिए उन्होंने बने-बने की, निबिड कातारा की छात्र छात्र ढाली। वे छात्र-नीते, उठत-बठत बोलत-बतराते, सग हिन्दी के विकास की चिंता में रहते थे। वे चाहते थे कि हिंदी सर्वांगपूर्ण हो—वह सभी विषयों के धर्म का आगार बन जाय। — — — वस्तुतः राहुल जी जीत-जागते कोय थे<sup>५९</sup>।

राहुल जी महापण्डित थे। पर कभी उन्होंने सत्य की प्राप्ति का दावा नहीं किया था—केवल सत्य के समीपतम प्रदेश में पहुँचने का ही दावा करते थे। उनमें बचस्व था, विशिष्ट प्रज्ञा और प्रखर प्रतिभा थी, जिसने सारे हिन्दी ससार का आलोकित कर दिया था। उनके पाण्डित्य और विविष्ट शास्त्र का लाहा भारत लवा और तिब्बत व विद्वान् ही नहीं मानते थे किन्तु विद्वान् जान माना (लंदन) सिलवन लवा (परिस) स्नक्वोनो (नारवे), आरेल स्पाइन (इंग्लंड) एल० डी० बर्नेट (लंदन), जाज ग्रियसन (लंदन), जाज प्रोमलिये (कम्बोडिया), व० हमदा (टोक्विया) माडग म (बर्मा), आटास्पाइन (चेकोस्लावाकिया) आल्डेनवग (रूस), विन्नीटन (कनाडा) फ्रैंकलिन इजटन (अमेरिका), ज० बागल (हांगक), जी० तुमी (इटली) आदि विद्वान् भी मानते थे<sup>६०</sup>।

## महामानव राहुल

राहुल जी महापण्डित ही नहीं सच्चे भर्षों में महामानव भी थे। उनमें लोभ मोह एवं अहंकार का लेश भी न था। उनकी बातचीत का ढंग इतना सरल और सहज होता था कि अपरिचित भी चार छह वाक्या में ही उनसे आत्मीयता मान बैठता था। निरभिमानीता राहुल जी के प्रत्येक व्यवहार की सगिनी थी। दिखावा उन्हें न तो किसी व्यवहार में रुचिकर था न व्याख्यान तथा बातचीत के सद्भूम। पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी लिखते हैं उनकी बटनी की सर्वाधिक उल्लेखनीय कथा है राहुल जी के मन प्राणा को रस से परिप्लुत करने वाली विनोदप्रियता—  
—राहुल जी के लिए 'सम्पूर्ण जगत्वे नन्दनवनम्' था। वे जिस परिवार में ठहरते उसका एक सदस्य बन जाते थे। देश में ऐसे अनेक परिवार हैं जो समझते हैं कि राहुल जी हमारे थे, हमारे परिवार को और परिवार के बच्चों को सबसे अधिक मानते थे<sup>१</sup>।

राहुल जी को प्रकृति ने निमल मेधा, विलक्षण प्रतिभा, सहज विमोहिनी काया के साथ नवनीत सा मृदु हृदय प्रदान किया था। उनकी गम्भीर विवचना से विभासित छाँवा में बोधिसत्व की अनन्त कदना की छाया थी। राहुल जी में पीछे के साथ भावुकता एवं करुणा भी थी। हिमालय की तरह गम्भीर व्यक्तित्व वाले महापण्डित को भावुकता कभी-कभी परास्त कर देती थी। डा० कमला साहूरायन के शब्दों में बाहर से धीरे गम्भीर होने पर भी उनके हृदय में घसीम करुणा थी<sup>२</sup>। वस्तुतः राहुल लोकांतर-युक्ति थे। जहाँ सामाजिक क्रूरपतामो के प्रति वे अत्यधिक कठोर थे वहाँ व्यक्तिगत स्तर पर वे नुसुम से भी अधिक कोमल थे। जया व जेता के नाम लिखे उनके पत्रों में उनका करुण पितृ हृदय उमड़ता हुआ दिखाई देता है<sup>३</sup>।

मानव को सारे गुण देने की सत्कार रचयिता की प्रवृत्ति ही नहीं है। सब का गुणावली में वही न कहा कुछ कभी रह ही जाती है। इसीलिए तो वह मानव है। राहुल जी में भी कुछ कमियाँ थीं। अमरुष्य भ्रमण की वृत्ति तथा उसका अत्यधिक प्रचार बौद्ध दाशनिका के समक्ष श्वकराचार्य को कुछ मानने की प्रवृत्ति, गोस्वामी तुलसी को स्वयम्भू का अनुकर्त्ता मानने का पूर्वाग्रह विरक्तावस्था में रहस्य में परिणमन ति बत में एक तिबती युवती से प्रणय सम्बंध प्रथम परिणामों का परिणाम बौद्ध धर्म की तुलना में हिन्दू धर्म को नगण्य स्वीकारना आदि कुछ वृत्तियों की ओर संकेत किया जा सकता है पर राहुल जी के प्रभूत गुणों में उनकी ये दुर्बलताएँ सहज ही विलुप्त हो जाती हैं। फिर मुण और दोष परस्पर सापेक्ष होते हैं। एक की दृष्टि में जो दुर्ग्रह है दूसरे की दृष्टि में वही दानिश्चय का प्रमाण अतः ये कमियाँ राहुल जी के अपने मिहता के अनुसार गुण मान जा सकते हैं। पर इन्हें मानव-मुलम दुर्बलताएँ मानना ही उचित प्रतीत होता है।

राहुल जी महामानव थे और मानव को जीवन व जगत् का केन्द्र मानते थे।

उनका मानव अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है, अच्छे-बुरे कर्मों को चुनने के लिए स्वतंत्र है। वह वास्तविक जयन का मनुष्य है। वह वस्तुवादी है धीरे-धीरे दम्बता है भ्रमा से वह मुक्त है। राहुन जी स्वयं इसी आदमी के प्रतीक महा मानव थे।

राहुन जी सवतंत्र स्वतंत्र थे। पारिवारिक व सामाजिक बंधना से मुक्त होकर ही वे इनका गुरु काम करने में समर्थ हुए। वे विपुल बुद्धिवादी थे। बुद्धि ब्रह्म के वन पर उन्होंने हिंदा मसार में धूम मचा दी। वे स्वनिर्मित पुरुष थे ब्रह्म अपने अध्ययन साय से महापणित हो गये थे। आचार्य पणित रामभाविन त्रिवेदा न शब्दा म, वे विनम्र तप गाम्भीर्य की भूति थे। स्वाध्याय में लीन दात शान्त ऋषिकुमार थे और शयन प्रणयन में लघुव्यास थे। उनका प्रोज्ज्वल और प्रदीप्त मुखमण्डल ही कहता था कि सम्य, निष्ठ और अधिकारी विद्वान् थे। उनकी आराध्या गारदा थी, उसी की सेवा में निरन्तर रमण करत थे। वे दश की विशेषतः हिन्दी की विभूति थे। वे उच्चकोटि के मनुष्य थे—धर्मकारी पुरुष, ज्योति-पुजक<sup>१</sup>। निस्सन्देह वाणी, विचार और कर्म तीनों की विभूतियाँ से सम्पन्न राहुन का महाप्राण भान्तिकारी व्यक्तित्व विद्वत् में विरल है। अपनी प्रतिष्ठित कृति धूमकंड गात्र की इन पत्तियाँ में राहुन जी ने अपना व्यक्तित्व एक जीवन दशन ही उठेल लिया है—‘बिना अपने कतबर की भाग बड़ाया अपने जीवन समय में विश्व का कुछ देना और सदा के लिए ‘गुप्त में विलीन हो जाना, यह वस्तुना कितना के लिए अनाकपन मालूम होगी किन्तु कितने ही ऐसे भा विचारणीय हो सकते हैं, जो अपना काम करने के बाद बालू के पदचिह्न की भाँति विलीन हो जान के विचार से मयभीत नहों, बल्कि प्रसन्न ही होंगे।

## (ख) राहुन साहित्यायन का कृतित्व

### बहुमुखी प्रतिभा बहुमुखी कृतित्व

महापणित राहुन साहित्यायन की प्रतिभा बहुमुखी थी। भारतीय समाज के नमजाकरण में उनकी गेन अद्वितीय है। राहुन जी ने देश विदेश का भ्रमण किया, भारतीय राजनीति में भाग लिया धर्म-संस्थानों में घूम कर तथा संघर्षासिपा के प्रसाधों में रह कर सार तत्त्व की खोज करने लगे। इतने व्यस्त जीवन में भी उन्होंने विपुल साहित्य रचना की जो सभी अध्ययनार्थी एवं कर्मठ साहित्यकारों से ही सम्भव थी। इस लोके में वे अनन्य हैं। राहुन जी दर्जना भाषाएँ जानते थे। पाली, संस्कृत, तिब्बती भाषा शास्त्र, दान-शास्त्र इतिहास—जान की अनेक भाषाओं के प्रकाश अग्रिम भगपणित थे। राहुन जी ने ‘दो मी से अधिक शय निष्ठ जिनमें उन्होंने ज्ञान की परिधि का विस्तार किया। उन्होंने उरवाम निष्ठ, वस्तुनिष्ठ निष्ठा, भीम निष्ठ, नाटक निष्ठ। उन्होंने आत्मव्या निम्नी, जीवनियाँ लिखा, दान-सम्बन्धी

ग्रन्थ लिख इतिहास लिखे यात्रा गणन लिखे, राजनीति पर लिखा । उन्होंने गोध ग्रन्थ लिखे और हिन्दी व आदिनालीन माहि्य पर नया प्रकाश डाला । व प्रकाण्ट पण्डित थे और साथ ही कमयोगी भां थे । व दुनिया को समझना ही नहीं चाहत थे, वे दुनिया का बनना भी चाहत थे । वस्तुतः राहुल जी का रचना-काय बहद, अनेकमुखी एवं प्रेरणाप्रद है जिस देय आदर्यवर्तित रह जाना पड़ता है । श्री आदिय मित्र के गव्दा म, महापणित राहुल साहृत्यायन की साहित्यिक प्रतिभा का उभय, विकास और प्रसार स्वयं एवं ग्रन्थ का विषय है । भारतीय नवजागरण म साहित्यकारा का जो सहयोग रहा है उसम राहुल का साहित्य भ्रमणी रहा है । वस्तुतः उनका कृतित्व इतना विशाल इतना बहुमुखी और इतनी प्रेरणाभा से उदमन है कि उसकी तुलना गत शताब्दी व यूरोपीय विद्वकोपवादिया की प्रतिभा से की जा सकती है ।<sup>६०</sup> और श्री भवनीन्द्र कुमार विद्यालवार व शरणा म 'बहुमुखी प्रतिभा व घनी राहुल जी न ७० वष की आयु म जो कुछ लिया, वह पठ्ठा की दृष्टि स विपुल है गव्द गणना की दृष्टि से महान है और नया माग बनाने की दृष्टि स भदन्त है ।'<sup>६१</sup>

### प्रतिभा-उभेय एवं साहित्य साधना

साहित्य रचना के क्षेत्र म राहुल जी ने सन् १९२७ म पदार्पण किया । यद्यपि इससे पूर्व सन् १९१५ म उनका प्रथम हिन्दी लेख मेरठ के 'मास्तर पत्र म प्रकाशित हुआ था और यदावदा कुछ और भी लल हिन्दी-पत्रा मे प्रकाशित होते रहे, तथापि सन् १९२७ स ही उनका साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ माना जाना चाहिए । इस समय के लका मे थे और लका के सम्बन्ध मे उन्होंने धारावाहिक क्रम स लख लिखे जो सरस्वती (मासिक) विश्वामित्र (दैनिक) तथा मिलन (दैनिक) म छप थे । तब से उनकी लेखनी अविरात रूप से चलती रही और सन् १९६१ म गम्भीर रूप से रग्न हो जान पर ही उनकी लेखनी न विराम लिया । इस प्रकार राहुल जी की साहित्य साधना की अवधि चौतीस वष है और इस अवधि-परिधि म उन्होंने निरन्तर लिखा है । राहुल जी योजनाबद्ध होकर लिखते थे । राहुल जी की लेखन प्रक्रिया तथा साहित्य साधना के विषय म प्रकाणचन्द्र गुप्त का कहना है घड़ी देनकर वे काम शुरू करते थे और घड़ी दखकर ही खरम करत थे । माना किसी दपतर के काम की तरह लिखन का काम समय बाध कर करते थे ।<sup>६२</sup> इस प्रकार राहुल जी न निरन्तर योजनाबद्ध होकर लिखा और हिन्दी संस्कृत एवं तिज्जती भाषाभा म अनक रचनाभा को प्रस्तुत किया ।

### राहुल-साहित्य

राहुल जी का साहित्य परिमाण और गुण लोना दृष्टिया से विपुल है । राहुल जी ने कुल जितनी रचनाएँ लिखी अथवा उनकी संख्या जितनी है इस विषय म मतव्य नहीं । कतिपय विद्वान उनकी सरया ६०० तक कहते हैं ।<sup>६३</sup> अधिकतर विद्वान उनकी रचनाभा की सरया दस सौ स तीन सौ तक बताते हैं । राहुल जी की रचनाभा

की सख्या के विषय में इतना बड़ा मतभेद होने का कारण राहुल जी का निरन्तर लेखन काय था और वह भी हिन्दी, संस्कृत प्राकृत निम्बरी भाजपुरी आदि विभिन्न भाषाओं में। इसमें अतिरिक्त उनकी रचनाओं में प्रकाशित विभिन्न ४ जिहाने अनुमानतः राहुल जी की पुस्तक की सूची पुम्नरा में आवरण-पत्र पर दी है, जिसमें सख्या की अनुाधिकता होना स्वाभाविक था। श्रीमती कमला साहृत्पायन में गाना से भी इस मत की पुष्टि होती है 'कुछ थढ़ानु लेख' उनमें प्रया की सख्या तीन सौ सखडा तर लिख दत हैं। राहुल जी की संपन-गति बहानाकार प्रया का प्रणयन और विषय विविधता का दलत हुए उनकी प्रय-सख्या के बार में बहता वा भ्रम हाना स्वाभाविक हा है। दूसरा की क्या बहूँ आत्र त पहेले मुझ में ही यदि कोई राहुल जी के प्रया की ठाव-ठीक सख्या पूछता तो मर लिए भी बताना आसान न होना। ६४

### राहुल जी की प्रकाशित रचनाएँ

राहुल जी की प्रकाशित रचनाओं की विविध सूचियाँ प्राप्त हैं जिनमें से कुछ उल्लेखनीय सूचियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

(१) 'बहुरंगी मधुपुरी' (कहानी-संग्रह) के आवरण-पत्र में पिछनी और छपी सूची।

(२) 'उपमा' (अगस्त १९६३) के अंतगत छपी सूची।

(३) 'गानपीठ' (नवम्बर, १९६३) में प्रकाशित सूची।

(४) 'हिन्दी में उच्चतर साहित्य' पर आधारित सूची।

(५) डॉ० प्रमाणकर मिश्र द्वारा प्रस्तुत सूची।

(६) श्रीमती कमला साहृत्पायन द्वारा प्रस्तुत 'राहुल साहित्य शीपन' (सम्मेलन पत्रिका, 'ग' १८८७ में प्रकाशित) सूची।

उपयुक्त सूचियाँ का तुलनात्मक विवरण इन पत्तियाँ में प्रस्तुत है—

(१) 'बहुरंगी मधुपुरी' के आवरण-पत्र पर प्रकाशित सूची<sup>६४</sup>—इस सूची में राहुल जी के यात्रा दल-दलन साम्बबान, राजनीति विज्ञान साहित्य इतिहास, उपयास, कहानी, जीवनी बौद्ध धर्म, भोजपुरी नाटक, संस्कृत तिबती काग आदि से सम्बधित १०४ प्रया की सख्या गिनाई गई है। इसमें राहुल जी की १८५४ तर की प्रय सख्या आ पार्द है। इस पुस्तक की प्रकाशिका स्वय कमला जी हैं। इसमें नेपाल और हिमाचल प्रदेश के नाम भी हैं जो अभी तक अप्रकाशित हैं। दूसरे इस सूची में राहुल के आठ छोटे-छोटे नाटका को आठ पुम्नकों माना गया है जयकि व दो रचनाओं के रूप में प्रकाशित हैं।

(२) 'उपमा' (राहुल-स्मृति विनेषाक) के अंतगत छपी सूची<sup>६५</sup>—इस सूची में भी उक्त विषया से सम्बद्ध राहुल जी की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं की



संख्या १३४ दी गई है। इसमें प्रकाशित पुस्तकें १२६ हैं। नाटकों की संख्या यहाँ भी आठ ही गिनाई गई है और उन्हें आठ पुस्तकें माना गया है।

(३) ज्ञानपीठ में प्रकाशित सूची<sup>६०</sup>—इस सूची में पुस्तकों की संख्या १२५ है। इसमें नेपाल तथा हिमाचल प्रदेश का प्रकाशित दिवाया गया है। मेरी जीवन यात्रा (पहले तीन भाग), सोवियत भूमि (दो भाग) 'मध्य एशिया का इतिहास' (दो भाग)—इन्हें तीन पुस्तकें न गिनाकर सात पुस्तकें गिनाया गया है। इस सूची में सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि इसमें सप्तमिन्तु और त्रिवेणी का दो पृथक् पुस्तकें गिनाया गया है, जबकि यह एक ही शीर्षकवाला एक ही पुस्तक है दो पृथक् नाम हैं। इस प्रकार ११७ रचनाओं का ही १२५ गिनाया गया है। कुछ रचनाएँ जिनके 'आदू का मुक्त' जो नाम थे 'सूत्रकार की मौत' तथा 'गादी' उस सूची में नहीं हैं।

(४) हिंदी में उच्चतर साहित्य पर आधारित सूची<sup>६१</sup>—इसमें राहुल जी की कुल ८८ रचनाओं के नाम हैं। यह सूची स्वल्प तो है ही साथ ही त्रुटिपूर्ण है। इसमें कुछ रचनाओं के नाम दो-दो बार हैं जिनमें 'विश्व की रूप रेखा' 'रूस में पश्चिमी मास' तथा 'दार्जीलिंग परिचय'। सोवियत भूमि तथा मेरी जीवन यात्रा के दो-दो भागों का पृथक् पुस्तक के रूप में गिना गया है। हिमाचल प्रदेश की भी प्रकाशित दिवाया गया है। बस्तुतः इसमें राहुल जी की प्रकाशित रचनाएँ ८१ ही रह जाती हैं।

(५) डा० प्रभाकर मिश्र द्वारा प्रस्तुत सूची<sup>६२</sup>—डा० प्रभाकर मिश्र ने राहुल जी के प्रकाशित ग्रंथों की संख्या १२६ मानी है। यह ग्रंथ संख्या उपमा में प्रकाशित तथा कमला जी द्वारा उद्धृष्ट दी गई सूचनाओं के आधार पर है। परन्तु इसमें सन् १९६७ तक की उनकी सभी प्रकाशित रचनाओं का समावेश नहीं हुआ। साथ ही किताबें मट्टन इनाहावा द्वारा प्रकाशित बीर चंद्र सिंह गढ़वाली (१९५७) जो राहुल जी की जीवनी रचनाओं में प्रमुख है का भी उल्लेख नहीं। 'रूस' अतिरिक्त कई रचनाओं के लेखन काल भी अशुद्ध हैं। रामराज्य और मार्क्सवाद की भी गणना नहीं हुई। पाठायन (भाग ३) तथा संस्कृत पाठमाला की दो-दो के स्थान पर आठ पुस्तकें माना गया है।

(६) श्रीमती कमला साहूत्यायन द्वारा प्रस्तुत सूची<sup>६३</sup>—कमला साहूत्यायन द्वारा प्रस्तुत यह सूची सर्वाधिक प्रामाणिक एवं उल्लेख्य है। इसमें राहुल जी की रचनाओं की संख्या १२६ दी गई है। इस सूची की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं—  
जैसे—

(१) जिन ग्रंथों के अनेक भाग हैं उन्हें एक ही ग्रंथ माना गया है।

(२) अथ विद्वानों के सहयोग से सम्पन्न ग्रंथों का नाम भी नहीं गिनाया गया।

(३) विभिन्न पुस्तकों के अथ भाषाओं में अनुवादों का भी उल्लेख है।

(४) अप्रकाशित ग्रंथ जिनकी पाण्डुलिपियाँ कमला जी के पास हैं उनकी

गणना भी इसमें है।

इस प्रकार 'राहुल साहित्य सूची' में उन्होंने उन्हीं ग्रन्थों का समावेश किया है जिनका समावेश स्वयं राहुल जी पसन्द करते। कमला जी ने अनुसार राहुल साहित्य के प्रकाशित पृष्ठ १०,००० हैं।<sup>१२</sup> कमला साहित्यायन द्वारा प्रस्तुत सूची सर्वाधिक प्रामाणिक होत हुए भी सव्या निर्दोष नहीं। इसमें कुछ पुस्तकों के प्रकाशकों का लिखिका को जान नहीं जैसे धीरान आदि का। इसी प्रकार कुछ पुस्तकों का वर्गीकरण उनके विषय के अनुकूल नहीं।

### राहुल जी की अप्रकाशित रचनाएँ

राहुल जी की उपयुक्त प्रकाशित रचनाओं के अतिरिक्त उनका अप्रकाशित साहित्य भी है। इन रचनाओं को पाण्डुलिपियाँ श्रीमती कमला साहित्यायन के पास हैं। गानपीठ पत्रिका,<sup>१३</sup> उपमा<sup>१४</sup> सम्मेलन पत्रिका,<sup>१५</sup> में समय-समय पर उन्होंने राहुल जी की अप्रकाशित रचनाओं का उल्लेख किया है—

(१) तिब्बती-संस्कृत-कोश। (२) हिमाचल प्रदेश। (३) नेपाल। (४) तिब्बती हिन्दी-कोश (यत्रस्य साहित्य प्रकाशनी)। (५) पालि काव्यधारा। (६) ब्राह्मणों की पुरा ऋषा (सम्मेलन-पत्रिका में प्रकाशित)। (७) राहुल जी द्वारा जया और जेता के नाम लिखे गये पत्र।<sup>१६</sup> (८) पाच बीड़ दार्शनिक एवं बौद्ध साहित्य (यत्रस्य)।<sup>१७</sup> (९) निबन्ध सबलन (हिन्दी) (घाठ-खण्ड) अनुमानित।<sup>१८</sup> (१०) राहुल पत्रावली (दो खण्ड)।<sup>१९</sup> (११) संस्कृत निबन्ध (पुष्कल) एक संग्रह।<sup>२०</sup> (१२) फुटबल अग्रेजी निबन्ध एक संग्रह।<sup>२१</sup>

### राहुल जी का सजनात्मक साहित्य

राहुल जी के सजनात्मक साहित्य पर विचार करने से पूर्व साहित्य के स्वरूप पर विचार करना अपरिहार्य है। साहित्य की परिभाषा एवं उसके स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए भारतीय एवं पाश्चात्य मनापिया एवं समालोचना में समाप्त विचार किया है। साहित्य अपने व्युत्पत्तिमूलक रूप में सहित-यन् प्रत्यय से बना है अतः साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत सहभाव अर्थात् साथ होना। इस प्रकार साहित्य शब्द-मात्र का नाम 'साहित्य' है। साहित्य की यह परिभाषा अत्यन्त व्यापक है और इसमें अनुप्य की सारी बोधन और भावन चेतना समाविष्ट हो जाती है तथा समस्त अर्थ समूह साहित्य के अन्तर्गत आ जाते हैं।<sup>२२</sup> अतः 'वाचक' अर्थ में साहित्य समस्त वाच्य का प्रतीक है, समस्त सचित ज्ञानराशि का समावेश उसमें हो जाता है। साहित्य अपने दस व्यापक अर्थ में अग्रेजी के लिटरचर शब्द का पर्यायवाची है। 'वाच्य' और 'शास्त्र' दोनों शब्द अन्तर्गत आ जाते हैं। वाच्य रसात्मक होता है और 'शास्त्र' ज्ञान प्रधान। प्राचीन भाषाओं ने जिसे वाच्य और 'शास्त्र' कहा है उसे प्राधुनिक भाषाओं में कमाल ललित साहित्य या सजनात्मक साहित्य और उपयोगी साहित्य का संज्ञा प्राप्त है। डी० विन्मी के अनुसार यह है 'लिटरचर शास्त्र'।

पावर' एव लिटरेचर आफ नौजेज कहा जा सकता है। एक (शास्त्र) का उद्देश्य सिखाना है दूसरे (काव्य) का उद्देश्य प्रभावित करना है।<sup>११३</sup> सजनात्मक साहित्य (ललित साहित्य) में 'साहित्य की व सभी काटियाँ आएँगी जिनमें बाधपत्र उतना प्रधान नहीं जितना भावपक्ष, अर्थात् जिनमें बुद्धि की अपेक्षा हृदय को स्पष्ट करने की सामर्थ्य अधिक है।'<sup>११४</sup> आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी सजनात्मक साहित्य (रचनात्मक साहित्य) की प्रमुख विशेषता लोकांतर ज्ञान के मानते हैं। वे लिखते हैं 'ये पुस्तकें हम सुख दुःख की व्यक्तिगत सकीर्णता और दुनियावी भगडा से ऊपर ले जाती हैं और सम्पूर्ण मनुष्य जाति के—और भी आगे बढ़कर प्राणिमात्र के दुःख शोक राग विराग आह्लाद धामाद का समझन की सहानुभूतिमय दृष्टि देती है। वे पाठक के हृदय की कोमल और संवेदनशील बनाती हैं कि वह अपने क्षत्र स्वाय का भूलकर प्राणिमात्र के दुःख सुख को अपना समझने लगता है—सारी दुनिया के साथ भारतीयता का अनुभव करने लगता है। इससे पाठक को एक प्रकार का ऐसा भ्रान्त मिलता है जो स्वायगत दुःख सुख से ऊपर की चीज है। शास्त्रकार न इसी को लोकोत्तर भ्रान्त कहा है।'<sup>११५</sup> इस प्रकार सजनात्मक साहित्य में मनुष्य की केवल बौद्धिक तुष्टि तथा ज्ञान प्राप्ति की इच्छा को पूरा करने वाली पुस्तक को ग्रहण नहीं किया जाता बल्कि मनुष्य के जीवन को सरस मुन्की तथा सुदूर बनाए वाले साहित्य को ही लिया जाता है। गद्य और पद्य दोनों में ही सजनात्मक साहित्य की सृष्टि संभव है। शत है सजनात्मक तत्त्व की लालित्य एवं मौ-दर्शानिष्ठा की। काव्य, उपन्यास कहानी नाटक रेखाचित्र, वणनात्मक गद्य पद्य सजनात्मक साहित्य के ही अंग हैं। डा० रामकुमार वर्मा साहित्य की ललित दृष्टि के विषय में लिखते हैं—'कलात्मकता सौंदर्य से उठती है और साहित्य की उन समस्त दिशाओं में छा जाती है जिनका सम्बन्ध अन्तर्जगत् की कल्पना और भावना से है। यह वह ललित दृष्टि है जो वसन्त ऋतु की भाँति अप्रसर होती है, जिसमें काव्य नाटक कथा, उपन्यास विविध रंगों के पुष्पा की भाँति प्रस्फुटित हो उठते हैं। उनमें मनोभावों की सुरभि भाषा की तरंगों पर झूमती है और प्रतिक्षण भ्रान्त और सतोष की दिशा में प्रवाहित होती रहती है।'<sup>११६</sup> सजनात्मक अथवा ललित साहित्य में उपयोगिता का सबंध निषेध भी नहीं, यह निश्चित है कि ललित साहित्य में कलात्मकता सौंदर्यत्व कल्पनाविलास, भावना परिष्कार आदि का महत्त्व अधिक है और तत्त्वज्ञान इतिहास समाज शास्त्र और अन्य ज्ञानमूलक साहित्य-क्षेत्रों का बोध है।'<sup>११७</sup>

वाप्येतर वाङ्मय के रूप में जो भी उपलब्ध है उस शास्त्र या उपयोगी साहित्य' कहा जा सकता है। सिद्धान्त प्रतिपादन या वस्तु-परिचयन सम्बन्धी मानव की बौद्धिक तुष्टि के लिए लिखी गई सामग्री केवल मनुष्य की ज्ञान प्राप्ति का साधन है, वह उसके हृदय को रसप्लावित नहीं कर सकती। इसी कारण ज्ञान प्राप्ति के सम्पूर्ण विषय शास्त्र के अंतर्गत गृहीत किए जाते हैं।'<sup>११८</sup>

‘उपयोगी साहित्य’ के रूप में आज जो साहित्य प्राप्त होता है वह ‘शास्त्र’ की आत्मसात करता हुआ पर्याप्त आग बढ़ गया है, क्योंकि आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान के अनेक नये क्षेत्र प्रकाश में आए हैं। ‘उपयोगी साहित्य’ को आज हम (१) वैज्ञानिक साहित्य (२) तकनीकी साहित्य (३) मानवीय सम्बन्धों के साहित्य जैसे अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान राजनीति आदि (४) मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण (५) चिकित्सा शास्त्र (६) व्रीडा और आनन्द प्रमोद का साहित्य (७) साहित्य शास्त्र (८) दान (९) धर्म और (१०) विविध आदि अनेक वर्गों में रख सकते हैं।<sup>११४</sup> हिन्दी साहित्य कोण में आगे लिखा है—‘वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक’ एवं ‘वैज्ञानिक’ तकवादी तथा तथ्य प्रधान शक्तियों का उपयोगी साहित्य में विशेष महत्त्व है। भावनात्मक, कल्पना सूत्री और साहित्यमय (अलङ्कृत) शक्तियाँ उपयोगी साहित्य के क्षेत्र से बाहर हैं।<sup>११५</sup>

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जहाँ उपयोगी साहित्य का लक्ष्य सत्यज्ञान एवं बौद्धिक उद्घोष है, वहाँ विमुक्त साहित्य का सम्बन्ध रसानुभूति एवं कल्पनात्मक है। दोनों के क्षेत्र और प्रयोजन विभिन्न हैं। पाणिन्य और कवित्व दोनों भिन्न शक्तियों के प्रतिफल हैं और वे अनिवार्यतः अंतरावलम्बित नहीं हैं।<sup>११६</sup> डॉ० रामकुमार वर्मा के शब्दों में दोनों के अन्तर एवं महत्त्व को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है ‘ज्ञान विज्ञान में बुद्धि और तर्क है, कला और उसके सौंदर्य में कल्पना और भावना है। प्रथम स्थूल जगत से सम्बद्ध है द्वितीय सूक्ष्म जगत् से जिसमें मानव की स्फूर्ति और प्रेरणा प्राप्ति होती है और उसका जीवन अधिक संवेदनशील हो जाता है। प्रथम रूप हमारी सम्यता को प्रशस्त करता है, द्वितीय हमारी सत्सृष्टि को। किसी भी राष्ट्र के विकास में सम्यता और सत्सृष्टि दोनों ही अपेक्षित हैं। अतः राष्ट्र के साहित्य में उपयोगी और सलित दाना ही प्रकार के साहित्य की अपेक्षा है।<sup>११७</sup> कभी-कभी उपयोगी साहित्य में भी साहित्य और गली का चमत्कार मिलता है जैसे भारतीय-दान, स्मृति, अथ शास्त्र, काम शास्त्र, साहित्य शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थों में चिन्तन और मनन की गरिमा के साथ वाग्विदग्धता भी है। परन्तु इसे रचयिता की स्वभावगत विवशता ही स्वीकारा जा सकता है।<sup>११८</sup> अन्त में, यह भी भाव्य है कि सजनात्मक साहित्य के लिए उपयोगी साहित्य उपजीव्य है। जिस भाषा का उपयोग साहित्य समृद्ध नहीं, उसके सजनात्मक साहित्य का स्तर भी अधिक समुन्नत एवं व्यापक नहीं हो सकता। राहुल जी का हिन्दी साहित्य में इस दृष्टि से गौरवपूर्ण स्थान है क्योंकि उन्होंने उपयोगी एवं सजनात्मक दोनों प्रकार की रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि की है।

### उपयोगी साहित्य

साहित्य के ‘उपयोगी साहित्य’ तथा ‘सजनात्मक साहित्य’ इन दो विभागों का आधार पर राहुल जी का विज्ञान, समाज विज्ञान, राजनीति, दान, धर्म इतिहास,

साम्यवाद, भाषा-याकरण कोश तथा सम्पन्न सम्बन्धी रचनाएँ उपयोगी साहित्य के अन्तर्गत आती हैं। उपयोगी साहित्य के अन्तर्गत राहुल जी की रचनाएँ हैं —

(क) विज्ञान — (१) विश्व की रूपरेखा।

(ख) समाज विज्ञान — (१) मानव समाज।

(ग) राजनीति और साम्यवाद — (१) सोवियत यात्रा (२) राहुल जी का अपराध (३) आज की राजनीति (४) कम्युनिस्ट क्या चाहते हैं? (५) क्या करें? (६) चीन में कम्यून (७) सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास (८) रामराय और मार्क्सवाद।

(घ) धर्म — (१) बौद्ध धर्म (२) दशम दिग्दर्शन (३) बौद्ध दर्शन।

(ङ) धर्म — (अ) बौद्ध धर्म — (१) बुद्ध चर्या (२) धम्मपद (३) मज्झिमनिकाय, (४) विनयपिटक (५) दीर्घनिकाय (६) तिब्बत में बौद्ध धर्म, (७) बौद्ध संस्कृति (८) पाँच बौद्ध दार्शनिक एवं बौद्ध साहित्य (यन्त्रस्थ)।

(आ) इस्लाम धर्म — (१) इस्लाम धर्म की रूप रेखा।

(ब) वैश्व दर्शन — (१) सोवियत भूमि (२) सोवियत मध्य एशिया (३) दोर्जेलिङ्ग परिचय (४) कुमाऊँ (५) गन्धर्व (६) बीनसार (७) घाजमगर की पुराणिका, (८) हिमाचल प्रदेश (अप्रकाशित) (९) नेपाल (अप्रकाशित)।

(छ) कोश — (१) शासन शास्त्र काश (२) राष्ट्रभाषा कोश (३) तिब्बती हिन्दी कोश (यन्त्रस्थ) (४) तिब्बती संस्कृत कोश।

(ज) इतिहास — (१) हिन्दी काव्यधारा (अप्रकाशित), (२) दक्षिणी हिन्दी काव्य धारा, (३) आदि हिन्दी की कहानियाँ तथा गीतें (संकलन) (४) सरहपाद कृत दोहा काश (५) मध्य एशिया का इतिहास (दो भाग) (६) नृगवदिक आर्य (७) अन्वर (८) भारत में अंग्रेजी राज्य का संस्थापक (अनुवाद) (९) पालि साहित्य का इतिहास (१०) तुलसी रामायण संक्षेप (संकलन) (११) मूलकृतान्त (१२) संस्कृत काव्यधारा (१३) पालि काव्यधारा (अप्रकाशित)।

(झ) तिब्बती (भाषा-व्याकरण) — (१) तिब्बती बाल शिक्षा (२) पाठावली (१ २ ३) (३) तिब्बती व्याकरण।

(ञ) संस्कृत (टीका अनुवाद) — (१) संस्कृत पाठमाला (पाँच भाग) (२) अभिधर्म कोश (३) विज्ञप्तिमात्रता सिद्धि (४) प्रमाणवातिक स्ववति (५) हेतु विदु (६) सम्बन्ध-शरीक्षा, (७) निदान सूत्र (परिक्षा), (८) महापरिनिर्वाण सूत्र।

(ट) संस्कृत ताल पोथी सम्पादन — (१) वाद-न्याय (२) प्रमाण वातिक (३) अग्रह-गतक (४) विग्रह व्यावर्तनी, (५) प्रमाण वातिक भाष्य (६) प्रमाण वातिक वृत्ति (७) प्रमाण वातिक स्ववति टीका (८) विनय सूत्र।

(ठ) अनुवाद काय (उपन्यास) — (१) गतान की आख्या (२) विस्मृति के

गम म (३) जादू का मुक्क, (४) सोने की ढाल, (५) दासुदा (६) जो दास  
ये, (७) अनाथ, (८) अदीना (९) मूदखोर की मौत, (१०) शादी ।

### सजनात्मक साहित्य

सजनात्मक साहित्य के अन्तर्गत राहुल जी की मौलिक रचनाओं—उपयास कहानी, जीवनी यात्रा-साहित्य तथा निबंध समाविष्ट हैं । डा० प्रभाकर मिश्र ने राहुल जी के 'सलित-साहित्य' की परिधि में आने वाली रचनाओं की संख्या ३६ मानी है<sup>१४</sup> । ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने राहुल जी के निबंध-संग्रहों तथा कुछ जीवनीयों को सूचीपत्रों में प्रकाशित विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत पढ़कर उन्हें छाड़ दिया है । राहुल जी की निर्मलिलित ५१ रचनाएँ उनके सजनात्मक साहित्य के अन्तर्गत मानी जानी चाहिए । जिनमें ४६ हिन्दी में और २ भोजपुरी में हैं ।

(क) उपयास—(१) बार्डमबी सदी (सन १९२३-लेखन काल) (२) जीन के लिए (सन १९४०), (३) सिंह सेनापति (सन १९४४) (४) जय योधेय (सन १९४४), (५) भागा नहीं दुनिया को बदला (सन १९४४), (६) मधुर स्वप्न (सन १९४६), (७) राजस्थानी रनिवास (सन १९५३), (८) विस्मृता यात्री (सन १९५४), (९) दिवोदाम (सन १९६०) ।

(ख) कहानी—(१) सतमी के धप्पे (लेखन काल सन १९३५), (२) बोंगा से गंगा (सन् १९४४) (३) बहुरंगी मधुपुरी (सन १९५३), (४) बनला की कथा (सन् १९५५ ५६) ।

(ग) जीवनी आत्मकथा-संस्मरण—(१) मेरी जीवन-यात्रा (पाँच भाग), (२) सरदार पन्नीसिंह (सन १९५५) (३) नय भारत के नये नेता (दो भाग) (सन १९४७), (४) बचपन की स्मृतियाँ (सन १९५३) (५) अतीत में वर्तमान (केवल प्रथम खण्ड, सन १९५३) (६) स्तालिन (सन १९५४), (७) जनिन (सन् १९५४) (८) कालमात्र (सन् १९५६), भागो चे-नुग (सन १९५४), (१०) घुमक्कड़ स्वामी (सन् १९५६) (११) मेरे असहयोग के मायी (सन १९५६) (१२) जिनका मैं भूतन (सन १९५६), (१३) बीर चन्द्रसिंह गडवाही (सन १९५६) (१४) सिंहल घुमक्कड़ जयवर्धन (सन १९६०), (१५) कप्तान लाल (सन् १९६१), (१६) सिंहल के बीर पुरुष (सन् १९६१) (१७) महा मानव बुद्ध (सन् १९५६) ।

(घ) यात्रा-साहित्य—(१) मेरी लहान यात्रा (सन १९२६) (२) लका (सन् १९२६ २७) (३) मेरी यूरोप-यात्रा (सन् १९३२), (४) मेरी निवृत्त यात्रा (सन् १९३७) (५) यात्रा के पन्ने (सन् १९३६ ३६), (६) जापान (सन् १९३५), (७) ओरान (बचन द्वितीय भाग) (सन १९३५ ३६), (८) रूम में पञ्चमी भाग (सन् १९४४ ४७), (९) बिन्दर दश (सन १९६८), (१०) तिब्बत में सवा वष (सन् १९३१), (११) घुमक्कड़ गाम्त्र (सन् १९४८),

(१२) एशिया के दुगम भूखण्ड में (सन १९५६), (१३) चीन में क्या देखा ? (सन १९६०) ।

(ड) निम्न साहित्य—(१) साहित्य निबन्धावलि (सन १९४६), (२) पुरातत्त्व निबन्धावली (सन १९३६), (३) दिमागी गुलामी (सन १९३७), (४) तुम्हारी क्षय (सन १९३७) (५) आज की समस्याएँ (सन १९४४), (६) साम्यवाद ही क्यों ? (सन १९३४), (७) अतीत से वर्तमान (केवल द्वितीय खण्ड) (सन १९५३) ।

(च) भोजपुरी नाटक—(१) तीन नाटक (सन १९४२) (२) पाँच नाटक (सन १९४२) ।

निम्न पक्तियाँ में राहुल जी की उपयुक्त सजनात्मक कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है ।

(क) उपन्यास —

(१) बाईसवीं सदी — 'बाईसवीं सदी को हिंदी का प्रथम यूटापिया माना जा सकता है । इस कथाभास में लेखक का प्रतिपाद्य है साम्यवाद के बिना मानवता के विकास का कोई रास्ता नहीं है । लेखक का विश्वास है कि भारत भी साम्यवादी हो जाएगा । बाईसवीं सदी के साम्यवादी भारत के ग्रामा नगरी कृषि गोपालन उद्योग धंधा, यातायात, शिक्षा आदि का इसमें बहुत ही सुंदर चित्रण है । भावी भारत की सम्यता और सस्कृति की सजीव कल्पना इसमें है । साथ ही वर्तमान भारत की दयनीय दशा भी इसमें प्रतिबिम्बित है ।

(२) जीने के लिए—राहुल जी का यह राजनीतिक उपन्यास है । इस उपन्यास में बीसवीं शती के प्रारम्भ से लेकर सन १९३६ तक के भारत की राजनीतिक एवं सामाजिक अवस्था का अच्छा दिग्दर्शन हुआ है । प्रथम विश्व-युद्ध के उपरान्त भारतीयों द्वारा स्वायत्तता प्राप्त के लिए किये गये प्रयत्न आंदोलन तथा कृषक और जमींदारों के मध्य भूमि अधिकार सम्बन्धी झगड़ों को लेकर इस उपन्यास की रचना की गई है । लेखक का झुकाव स्पष्टतः साम्यवाद की ओर है ।

(३) सिंह सेनापति—सिंह सेनापति राहुल जी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है । सेनापति सिंह का कथा का केंद्र बिंदु मानकर लेखक ने आज से पच्चीस सौ वर्ष पहले के लिच्छवि गणराज्य के सामाजिक जीवन का प्रस्तुत किया है । यह युग स्वच्छन्दता का युग था । वीरता और विलासिता की रम्य कहानी इस उपन्यास में संकलित है ।

(४) जय यौधेय—जय यौधेय में राहुल जी गुप्त साम्राज्य की तुलना में यौधेय गण की प्रतिष्ठा स्थापित करते हैं । यह उपन्यास जय की आत्मकथा के रूप में ढाला गया है । यह उपन्यास सिंह सेनापति की अपेक्षा प्राचीन भारत की अधिक व्यापक भाका देता है । एक प्रकार से यह कथा जय की भारत यात्रा का वर्णन है ।

हिमवन्त से सिंहलदीप तक जय योधेय की यह विराट यात्रा राहुल के अपने जीवन का स्मरण दिलाती है। इस ऐतिहासिक कथा के माध्यम से राहुल जी पाठन को प्राधुनिक दिव्य दृष्टि भी प्रदान करना चाहते हैं।

(५) भागो नहीं दुनिया को बदलो—संवादात्मक शस्त्री में लिखा यह उपन्यास उपन्यास की प्रेरणा 'कथाभास' है। इसमें लेखक ने साम्यवाद के सिद्धान्तों का सरल भाषा में व्याख्यान किया है।

(६) मधुर स्वप्न—'मधुर स्वप्न' में राहुल प्राचीन ईरान का इतिहास कथा के रूप में उठाते हैं। लेखक ईरानी राजदरबार और वहाँ की सामाजिक रीति नीतियों का वर्णन गहरी अंतर्दृष्टि से करता है। इस उपन्यास का उद्देश्य भी प्राचीन ईरान के जीवन द्वारा मार्क्सवादी सिद्धान्तों का समर्थन करना है। मजदूरियों के साम्यवादी विचारों के माध्यम से राहुल जी ने अपने विचारों को मशहूर अभिव्यक्ति दी है।

(७) राजस्थानी रनिवास—इस ऐतिहासिक कथाकृति में राजस्थान की सात पढ़ों में रहने वाली रानिया और ठाकुरानिया की बेवसी, दुखगाया और वहाँ के पुरुषों की स्वेच्छाचारिता का वर्णन किया गया है। लेखक न यद्यपि इसे उपन्यास की सजा देना उचित नहीं समझता तथापि इसे 'कथाभास' तो माना ही जा सकता है। हतमांगिनी गौरी का वरुणापूज चित्राकन इसमें हुआ है।

(८) विस्मृत यात्री—विस्मृत यात्री राहुल जी का ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें छठी शताब्दी के भारत का चित्रण है। इसमें नरेन्द्रयश की यात्राओं एवं बौद्ध धर्म प्रसार सम्बन्धी गतिविधियों का अंकन है। नरेन्द्र यश राहुल जी की मार्क्सवादी विचारधारा का पोषक है। वह आर्थिक वैषम्य को समाप्त कर साम्यवादी समाज की स्थापना चाहता है। प्राकृतिक वातावरण का अंकन इस उपन्यास में सजीव बन पड़ा है।

(९) दिवोदास—'दिवोदास' सप्तसिंघु के १२१३वीं गति ई० पू० के ग्रामों के जीवन को लेकर लिखा गया ऐतिहासिक उपन्यास है। ऋग्वेदिन ऋचाएँ इस उपन्यास का आधार हैं। ऋग्वेदिन ग्रामों की सम्यक्ता का अंकन ही उपन्यास का लक्ष्य है। ग्रामों और असुरों के संघर्ष का कलात्मक चित्रण 'दिवोदास' की विशेषता है।

(१०) कहानी

(१) सतमी के बच्चे—'सतमी के बच्चे' राहुल जी का प्रथम कहानी-संग्रह है। इसमें दस कहानियाँ हैं—'सतमी के बच्चे', 'डीह बाबा', 'पाठन जी', 'पुजारी स्मृतिज्ञानकीर्ति', 'जसिरा राजबली', 'रामगोपाल', 'धुरविन', तथा 'दल सिंगार'। स्मृतिज्ञानकीर्ति के अतिरिक्त अन्य सभी कहानियाँ में राहुल जी ने समसामयिक समाज की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के पीढ़ीन व्यक्तियों के जीवन चित्र



प्रस्तुत निय हैं। इन कहानियाँ के प्रायः सभी पात्र उनका जीवन अनुभव में आए व्यक्ति हैं। अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण जीवन से सम्बद्ध हैं।

(२) बोल्ला से गगा—बोल्ला से गगा' राहुल की ऐतिहासिक कथाकृति है। इस संग्रह में बीस कहानियाँ हैं—निशा, निवा, अमृताश्व पुरुष, पुरुषान, अगिरा, सुदास प्रवाहण, वधूल मल्ल नागदत्त प्रभा सुपण योधेय, दुमुख चक्रपाणि, दावा नूरदीन, मुरया रेखा, मगत मगलसिंह, सफ़रतया सुमर। इस कथासंग्रह की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी ऐतिहासिकता है। सख्त के व्यापक दृष्टि-विस्तार ने आठ सहस्र वर्षों तक प्रसरित मानव जीवन के विकास का साक्षात्कार इन कहानियों के माध्यम से करवाया है। इनमें कहानीपन कम एवं ऐतिहासिकता अधिक है।

(३) बहुरंगी मधुपुरी—इस संग्रह में विलासपुरी मधुपुरी (मसूरी) से सम्बद्ध २१ कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ काल्पनिक न होकर वास्तविक जीवन के आधार पर लिखी गई हैं। कहानियों के शीर्षक हैं—बूढ़े साला, हाथ बुलाया, कुमार दुरजय, मेम साहब, महाप्रभु, पेड़ बाबा, ठाकुरजी, लिपिस्टिक, राय बहादुर, गुरुजी, मीनाक्षी, गोलू, रूपी, राउत, कमल सिंह, डोरा, बिसुन, सुलतान, मास्टरजी, चम्पा, तथा काठ के साहब। इस संग्रह की कहानियाँ में मसूरी के जीवन से सम्बन्धित सामाजिक आर्थिक धार्मिक आदि विविध पहलुओं का यथार्थ अंकन है। रूपी शीर्षक से इस संग्रह की नौ चुनी हुई कहानियाँ का पथक प्रकाशन भी हुआ है।

(४) बनला की कथा—बनला की कथा राहुल का चौथा कहानी-संग्रह है। डा० प्रभाशंकर मिश्र इस संग्रह को इतिहासात्मक नित्य संग्रह मानते हैं।<sup>१२४</sup> परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। इस कहानी संग्रह में इतिहास तत्त्व की प्रधानता अवश्य है जसा कि 'बाल्गा से गगा' में भी। परन्तु इसमें कथा कल्पना व चरित्र चित्रण को देवत हुए इसे कहानी संग्रह ही माना जाना अधिक समीचीन है। राहुल जी ने स्वयं भी इस संग्रह की कहानियों के शीर्षकों के साथ कहानी शब्द का प्रयोग किया है।<sup>१२५</sup> डा० महादेव साहा भी इसे कहानी संग्रह ही स्वीकारते हैं—बनला की कथा में जहाँ-तहाँ इतिहास का पुट है मगर वह ऐतिहासिक रचना नहीं है। बंगला अनुवाद के प्रकाशक ने इस बाल्गा से गगा (भाग २) के नाम से प्रकाशित किया है।<sup>१२६</sup> श्रीमती कमला साहू-त्याग ने भी इसे कहानी संग्रह ही माना है।<sup>१२७</sup> इस संग्रह में नौ कहानियाँ हैं—त्रिवणी, काशीग्राम, बड़ी रानी, देवपुत्र, कलाकार, सयद बाबा, नरमेघ, सन १७ तथा स्वराज्य। इन कथाओं में १३०० ई० पूर्व से लेकर १९५७ ई० तक का बनला के जनजीवन का इतिहास निहित है।

(ग) जीवनी आत्मकथा सस्मरण

(१) मेरी जीवन-यात्रा (पांच भाग)—आत्मन्यापरक साहित्य में राहुल द्वारा लिखित मेरी जीवन यात्रा एक महत्त्वपूर्ण कृति है। पांच भागों में लिखित इस

यात्रा में कुन पृष्ठ संख्या २८१४ है। 'भरी जीवन यात्रा' में राहुन के जीवन-वन के साथ उनके समामयिक जीवन और जगत की भिन भिन गिनियाँ और विविधताएँ प्रविष्ट हैं। वहीं राहुन अपने व्यक्ति-वृत्त को प्रस्तुत करते हैं वहीं साधारण यात्री की तरह गाथाएँ सुनाने हैं वहीं दार्शनिक की तरह प्रश्न पर प्रश्न उठाते हैं और वहीं महान् मायाशास्त्री व पुरातत्त्ववेत्ता की तरह इतिहास और वर्तमान की समस्याएँ प्रस्तुत करते हैं। लेखक इसमें बड़ी-से-बड़ी और छोटी-से-छोटी सभी वस्तुओं में परिचय करवाता चलता है, सबकुछ सहज भाव से। निवचन शब्दों के शब्दों में 'अपनी जीवन-यात्रा में वे स्वयं कम हैं दूसरे अधिक'। उनकी जीवन-यात्रा एक प्रकार से देश-विदेश के व्यक्तियों के समूह का, राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों से उत्पन्न वातावरण का वास्तविक विवरणोत्तर है।<sup>१२६</sup>

(२) सरदार पृथ्वीसिंह—सरदार पृथ्वीसिंह देश की स्वतंत्रता के निर्भीक सेनानी पृथ्वीसिंह का जीवन चरित्र है। देश की स्वतंत्रता के लिए सरदार ने मयकर कष्टों का सामना किया और लोमहृषक स्थितियों में भी उनकी अदम्य आत्मा ने पराजय स्वीकार नहीं की। सरदार पृथ्वीसिंह प्राति के पुजारी हैं। इस जीवनी में पृथ्वीसिंह के समय-समय के मानसिक उतार-चढ़ाव हैं, पर वे सचारी भाव हैं। स्थायी भाव है अदम्य उत्साह, जो जीवनीनायक में सबकुछ दिखाई देता है। सरदार पृथ्वीसिंह सपना के बीच भाव सत रहने वाले नाविक की कहानी है। जीवन-चरित्र के साथ-साथ बीसवीं शताब्दी के पूर्वाध की देश की राजनीतिक अवस्था का भी इसमें प्रबल हुआ है।

(३) नये भारत के नये नेता (दो भाग)—नये भारत के नये नेता लेखक का एक तरह से 'वाक्ता म गंगा' के साथ का ग्रन्थ है। जहाँ बोलता स गंगा का विस्तार आठ हजार वर्षों के विस्तृत काल में है वहाँ इस ग्रन्थ का क्षेत्र वर्तमान काल की विस्तृत भारत भूमि है। इस ग्रन्थ के जीवनी-नायक हैं—शेर बन्सीर शेर अम्बुल्ला कामरेड मृगुक, स० द० भारद्वाज, श्री निवास ग० सरदसई, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, श्रीपाद जमुन दास, कल्पनादेव जोशी, बकिम मुर्जो, पी० सुंदरम्बा, क० बैरलियन रामचन्द्र ब० मोरे डा० गंगाधर अधिकारी, डॉ० कृष्ण मुहम्मद अहमद, पूरनचन्द्र जोशी, साहूराव शा० वाटनीवाना मुहम्मद गाहिन, सयद जमालुद्दीन मुस्तारी, फजल्लाही कुतान, मुबारक सागर भानि। लेखक ने इन जीवनी-नायकों की देश की परिस्थितियों से सम्पर्क करके देखा है। ये जीवनीयाँ भारत की विविध समस्याओं एवं संघर्षों को साकार रूप में प्रस्तुत करती हैं। राहुन जी की इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि लेखक ने प्रत्येक जीवनी-नायक से सम्पर्क स्थापित करके अतदविषयक सामग्री का सचित किया है।

(४) बचपन का स्मृति—एक विधान की दृष्टि में निवचन कहानी तथा रेखा-चित्र की अनेक विशेषताओं से समन्वित 'बचपन की स्मृतियाँ' राहुन जी की एक

उत्तम सस्मरण कृति है। रचना दीपक की साधकता एवं प्रतिपाद्य विषय इसने प्रथम सस्मरण 'इतिहास' की प्रथम पंक्तियों से ही यक्त हैं— "जन्मभूमि सबको प्यारी होती है। मनुष्य बचपन में जिन जिन वस्तुओं के घनिष्ठ सम्पर्क में आता है वह उसके लिए सहज प्रिय हो जाती है।" इस रचना में राहुल जी के बाल्यकाल से सम्बन्धित ३५ सस्मरण हैं। इनमें उन्होंने पदहा एवं बनला में व्यतीत अपने बचपन की मधुर स्मृतियों को प्रस्तुत किया है। जन्मभूमि पदहा पितृभूमि बनला, शशव के मित्र जीड़ाएँ जीड़ा स्थल उद्यान, सरोवर, विद्यालय के सहपाठी शिक्षक, बचपन के प्रिय खाद्य तथा पेय प्रभावित करने वाले व्यक्ति और वस्तुएँ कीर्तुहलपूर्ण एवं विस्मयकारी घटनाएँ तथा कथाएँ—बचपन में सम्बन्धित इन सबके सस्मरण राहुल जी ने अंकित किए हैं। बाल्यकाल की इन रम्य स्मृतियों के साथ उन्होंने पदहा एवं बनला के इतिहास जन जीवन, भाषा, पर्व-त्योहार धर्म एवं समाज के विविध स्तर के लोगों की स्थिति आदि का भी चित्रण किया है।

(५) अतीत से वर्तमान— अतीत से वर्तमान पुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में चरित्र एवं सस्मरण हैं द्वितीय खण्ड में कला इतिहास और धर्म सम्बन्धी निबन्ध हैं और तृतीय खण्ड देश-दर्शन से सम्बन्धित है। प्रमुख चरित्र हैं—धुमककड़राज नरेन्द्रयश, धुमककड़ भट्ट दिवाकर आचार्य दीपकर श्री नान, महापयटक किन्थुप भदन्त बोधानन्द महास्थविर मौलवी महेशप्रसाद अक्षदामिक वर्तमानको नेपाली महाकवि देवकोटा किशोरीलाल बाजपेयी आदि। सस्मरणों में जयसवाल सस्मरण अत्यन्त रोचक बन पड़ा है। इस प्रकार इस पुस्तक में जिन जीवन चरित्रों को रखा गया है वे अतीत से वर्तमान तक के विस्तृत काल से सम्बन्धित हैं। लवक की रचित कं अनुकूल यह जीवनी-नायक धुमककड़ बौद्ध धर्म प्रचारक इतिहासज्ञ एवं समाज सुधारक है।

(६) काल मार्क्स लेनिन स्तालिन तथा माओ चे-तुंग—राहुल जी साम्यवाद का मानव जाति की सारी बीमारियों की एकमात्र रामबाण औषधि स्वीकारते हैं। इसीलिए उन्होंने हिन्दी के पाठकों को साम्यवाद के महान सत्त्वदर्शियों एवं पथ प्रदर्शकों कालमार्क्स लेनिन स्तालिन तथा माओ चे-तुंग की जीवनियों से परिचित करवाने के लिए इन चार जीवन चरित्रों को लिखा है। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी में एक अभाव की पूर्ति की है। इन जीवनियों में जीवनी-नायक की जीवन घटनाएँ मात्र ही नहीं हैं, प्रत्युत इन साम्यवादियों के सिद्धांत उनकी विचार धारा तथा उनके त्रिपराजलापा का विवाद एवं गम्भीर विवेचन है। राहुल जी ने ये जीवनी नायक नये समाज एवं नये मानवता के निर्माता हैं।

(१०) धुमककड़ स्वामी — धुमककड़ स्वामी राहुल जी द्वारा लिखित स्वामी हरिशरणानन्द का जीवन चरित्र है। इसमें राहुल ने पंजाब प्रायुर्वेदिक 'फार्मोसी' के संस्थापक स्वामी हरिशरणानन्द का जीवन-वृत्त प्रस्तुत किया है। स्वामी का व्यक्तित्व

भी सख्त की तरह गत्यात्मक है। व हरिदचन्द्र से हरिदास, हरिदास से हरिारण फिर हरिशरणानन्द बने और फिर पूरे नास्तिक। अन्त में ध्यायुर्वेद के क्षेत्र में अनेक वैज्ञानिक प्रयोग किए। राहुल की तरह धूमकवड़ी भी उन्हें प्रिय थी। राहुल उन्हें 'मया' कहते थे। धूमकवड़ स्वामी हरिारणानन्द का चरित्रावतन तथा सममामयित भारतीय आंदोलनों—विशेष रूप से जलियाँवाला बाग की घटनाएँ—'धूमकवड़ स्वामी' में अंकित हैं।

(११) मेरे असहयोग के साथी — भारतीय-स्वातन्त्र्य-समर में कितने ही लोगों ने तिल तिल करके अपने आपको मिटाया है किन्तु उनमें से कितने ही राहीदा के नाम विस्मृति के गहन भस्म में सदा के लिए विसीन हो चुके हैं। सन् १९२१ से १९२६ तक राहुल ने कांग्रेस की ओर से छपरा तथा उसके आस-पास के गाँवों में संगठन एवं प्रचार का कार्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन में यह राहुल की सक्रिय भूमिका थी। इसी समय जो अन्य लोग भी उसी प्रदेश में राष्ट्रीय ध्वज में आहुति डाल रहे थे ऐसी ही ३८ विभूतियाँ का परिचय मेरे असहयोग के साथी नामक पुस्तक में दिया गया है। पुस्तक की गली जीवनी-लेखन की न होकर स्मरणार्थक है। कुछ स्मरण-नायकों के नाम हैं—मथुरा बाबू, प० नगनारायण तिवारी, बाबू भधूमदन सिंह, बाबू रामनरेश सिंह, बाबू लक्ष्मीनारायण सिंह, बाबू हरिहर सिंह, प० श्रुतिदेव आभा, बाबू रामदत्ताराम राय, प० गिरिगोविंद तिवारी आदि। इन असहयोगी वीरों में से अधिकांश की आर्थिक स्थिति अत्यंत गौचनीय थी। उन्हें एक और दृष्टि से सतर्क करना पड़ता था दूसरी ओर राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लेना के अपना कर्तव्य मानते थे। देश की स्वतंत्र देशना उनका स्वप्न था, जिसकी पूर्ति के लिए उन्होंने कष्टों काटने के मार्ग को अपनाया। राहुल के शब्दों में 'सास कर उन लोगों को याद करते तो और भी मन में करुणा आती है, जिन्होंने अपनी जवानी के अनमोल धन देश की आजादी के लिए लड़ने में लगाया। उन्हें जीवन में कोई ऐसी कीर्ति नहीं मिली और हरिहर बाबू की तरह कितनी ही गुमनाम ममियाएँ हमारे देश के स्वतंत्रता-युद्ध में चुपचाप पड़ी। वे व्यर्थ नहीं गईं। उन्होंने उस आग को प्रवर्धित रखा जो अंत में सपना को देग में बाहर निकालने में सफल हुई।' <sup>१३२</sup>

(१२) जिनका मैं कृतज्ञ — जिनका मैं कृतज्ञ मैं उन ५५ व्यक्तियों के स्मरण हैं जिनसे राहुल जी ने मार्ग-दर्शन पाया या कुछ सीखा है। कुछ व्यक्ति तो उनके मानसिक सम्बन्ध के रूप में उनकी जीवन-यात्रा में सहायक हुए हैं। रामजीन मामा महादेव पण्डित, माधवा, सत्यनारायण बरिखल, प० सतराम, प० बरदेव चौधरी, प० भगवन्त घुषनाथ सिंह, भदंत भानंद कीर्तियायन आचार्य नरदत्त, डा० सत्य वेनु आदि के प्रति लेखक ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है। ये ५५ व्यक्ति विभिन्न दंगा के विभिन्न वर्गों के विभिन्न गिम्पा-स्तर के तथा विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं।

(१३) वीर चंद्रसिंह गढ़वाली—वीर चंद्रसिंह गढ़वाली राहुन जी द्वारा लिखित एक बहुत जीवनी है। सरदार पद्मोसिंह की तरह चंद्रसिंह गढ़वाली भी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में से हैं। चंद्रसिंह एक अदभुत सेनानी एवं जन नायक थे। लेकिन देश की परिस्थिति ने उन्हें अपनी क्षक्तियों के विनाश और उपयाम का अवसर नहीं दिया। पेशावर का विद्रोह देश की स्वतंत्रता-हेतु भारतीयों के विद्रोहों की एक शृंगार पदा करता है और वीर चंद्रसिंह इसी पेशावर विद्रोह का ध्वज थे वह एक प्रकार से आजाद हिंद फौज का बीज बाने वाले थे। वीर चंद्रसिंह गढ़वाली राहुन जी की सर्वाधिक सफल एवं सशक्त जीवनी है जो यथाथ तथ्या पर आधारित है। लेखक ने स्वयं गढ़वाली जी से जीवनी के लिए मामूली एकत्रित का है और उसे अपनी सशक्त भाषा एवं शान में प्रस्तुत किया है।

(१४) सिंहल घुमकण्ड जयवर्धन—गुमनाम साहसी यात्री सिंहल घुमकण्ड जयवर्धन की यह जीवनी १४८ पन्नों की है। जयवर्धन लंबा के एक पहाड़ी गाँव में पैदा हुए। वे जन्मजात घुमकण्ड थे। उनकी यात्राएँ स्वातंत्र्य सुवाय थीं। वे कथं निर्दोष घूमते रहे यद्यपि उनका घूमना अपने लिए साहस्य था। घूमने में उन्हें आनंद मिलता था। लहामा तथा तिब्बत के इस यायावार में कुछ बानें असाधारण हैं। वे निश्चित जीव हैं। रूप्य जोड़ने का विचार उन्हें कभी आया ही नहीं। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भिन्न भिन्न प्रवृत्ति के लोगों की प्रायः संख्या ने अपनी जीव नियों का नापक बनाया है। जयवर्धन भी उनमें से एक हैं।

(१५) कप्तान लाल—एक लघु पुस्तिका में कप्तान जसवंतचंद्र लाल का जीवन-वृत्त है। कप्तान लाल अंग्रेज सेना के सैनिक थे। रण रूप से भी वे अग्रज ही समेत थे। परंतु उनमें हिंदू संस्कार देश भक्ति जातीय और स्वाभिमान तथा निर्भीकता की भावनाएँ विद्यमान थीं, जिन्हें देखते ही इस जीवनी में विक्षेप रूप से अंकित किया है। 'कप्तान लाल सरल और सीधा-सादी भाषा में लिखी गई लघु जीवनी है। इसमें जीवनीनायक की चरित्रिक विशेषताओं के उदघाटन के साथ साथ दूसरे महापुरुष की घटनाओं का भी सजीव चित्रण हुआ है।

(१६) सिंहल के वीर — सिंहल के वीर राहुन जी की एक लघु रचना है। इसमें राहुन ने सिंहल में रहकर जिन भात महापुरुषों के जीवन का गहन अध्ययन किया था उन रोचक शरीर में प्रस्तुत किया है। सरदार पद्मोसिंह अथवा वीर चंद्रसिंह गढ़वाली की तरह यह एक बड़ी जीवनी नहीं, प्रत्युत सात लघु जीवन वृत्त है। सिंहल के ये भात वीर हैं—विजय (सिंहल का प्रथम वीर) महेन्द्र (सिंहल में बौद्ध धर्म का प्रचारक) दुष्ट ग्रामणी (सिंहल का अंग्रेज वीर) विजयदातु (सिंहल का प्राणवर्ती) महापराक्रमवाद् टिकरी मण्णार (पोनु गीत दलन कर्ता) तथा श्री मण्णार नायक। इस प्रकार सिंहल के वीरों में मान मित्र निर्मापिका के अस्तित्व अर्थन के साथ-साथ सिंहल का इतिहास भी चित्रित है। ई० पू० पाँचवीं शती

बीसवीं शती तक की राजनीतिक उथल-पुथल की भाँकी इस पुस्तक में प्राप्य है, जो इतिहासवेत्ता राहुल की निजी विशेषता है।

(१७) महात्मा बुद्ध—महात्मा बुद्ध के जीवन की भिन्न भिन्न घटनाओं पर इस पुस्तिका में प्रकाश डाला गया है। महात्मा बुद्ध की २५वीं शताब्दी के उपन्यास में लेखक के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का सङ्कलन 'महात्मा बुद्ध' में हुआ है। बुद्ध जनवाणी के सर्वप्रथम प्राथम्यदाता थे। उनके जीवन वाणी और दर्शन का दिग्दर्शन इस पुस्तक में है।

### (घ) यात्रा-साहित्य

(१) मेरी लद्दाख-यात्रा—राहुल जी की 'मेरी लद्दाख यात्रा' सन् १९३६ ई० में इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में लेखक ने अपनी लद्दाख यात्रा का सुन्दर वर्णन किया है। लेखक ने मरठ से यह यात्रा प्रारम्भ की है। पंजाब, मुलतान, डेरागाजीखाना, सीमान्त, पुँछराग्य, कश्मीर आदि के भ्रमण के उपरान्त लेखक जोड़ीला पार कर लद्दाख पहुँचता है। साहूल और कुल्लू का वर्णन भी इस रचना में है। राहुल जी ने यात्रा में आए स्थानों की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक-सुषमा वहाँ के लोगो की वेशभूषा, आचार-व्यवहार, सम्प्रदाय, भाषा तथा परम्पराओं का कलात्मक वर्णन किया है।

(२) लका—'लका' के कुछ अर्थ देश-देशानुसार सम्भव हैं और कुछ यात्रा-वर्णन के रूप में। अनुराधपुर, पोलन्नात्व (पुलस्त्यपुर), काण्डी आदि के वर्णन में लेखक की ऐतिहासिक प्रतिभा जागृत है। लका के इन नगरों से सम्बन्धित पुराने इतिहास को रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'कोलम्बो की सर' तथा 'समन्तकूट नीपक' के अन्तर्गत यात्रा-वर्णन हैं। इस पुस्तक का लका नाम से पूरक प्रकाशन किताब महल, इलाहाबाद से हुआ है। राहुल यात्रावली (भाग १) में भी यह रचना संगृहीत है।

(३) मेरी यूरोप-यात्रा—राहुल साहत्यायन की 'मेरी यूरोप-यात्रा' का प्रथम संस्करण सन् १९३५ में साहित्य सेवा सभ छपरा से प्रकाशित हुआ था। इसमें राहुल जी की १९३२ ई० की यूरोप-यात्रा का वर्णन है। कोलम्बो में राहुल जी भदन्त आग्निद कीमत्यायन के साथ यूरोप का प्रस्थान करते हैं। कोलम्बो से सागरीय यात्रा करते हुए वे यूरोप पहुँचते हैं। 'यूरोप की भाँकी लदन टावर' कम्ब्रिज 'ऑक्सफोर्ड वेरिस' तथा जर्मनी के रोचक वर्णन इस पुस्तिका में मिलते हैं।

(४) मेरी तिब्बत-यात्रा—मेरी तिब्बत-यात्रा सन् १९३७ में छात्रहितकारी पुस्तकमाला दारासङ्ग, प्रयाग में प्रकाशित हुई थी। इसमें १९६ पृष्ठ हैं। दायरी गली में निधी इस पुस्तक में स्थासा, चाङ्ग, सङ्ग, जैनम नेपाल आदि की यात्राओं का सुन्दर वर्णन है।

(५) यात्रा के पन्ने—'यात्रा के पन्ने' सन् १९५२ में साहित्य सन्त, देहरादून

स प्रकाशित हुई। इसमें ४४० पृष्ठ हैं। इस ग्रंथ में राहुल जी की तीसरी तिब्बत यात्रा का वर्णन है। नेपाल काठमाण्डू तथा तिब्बत की यात्राएँ इसमें सम्मिलित हैं। तिब्बत की यात्राएँ राहुल जी ने वहाँ के मठा में सुरक्षित पुस्तक, तालपत्रा आदि की खोज के लिए की हैं। इस पुस्तक में यात्राओं के साथ वे पत्र भी संग्रहीत हैं, जो उन्होंने भदन्त भानुदत्त को सत्यायन को लिखे थे। साथ ही 'राजस्थान विहार' शीपक के भन्तगत्त लेखक की राजस्थान के विभिन्न स्थानों की यात्राओं का वर्णन भी संकलित है।

(६) जापान—जापान का प्रकाशन छपरा के अच्युतानन्द सिंह ने किया। 'जापान में लेखक की सिंगापुर, हाड-काड, भाङ्-हैई कोबे, ताकयो कोयासान की यात्राओं का वर्णन है।

(७) श्रीरान—श्रीरान में दो भाग हैं—प्राचीन श्रीरान तथा नवीन श्रीरान। प्राचीन श्रीरान में लेखक ने ईरान के राजवंशों का इतिहास प्रस्तुत किया है और 'नवीन श्रीरान' में लेखक की सावित्र्य रूस से भारत लौटते हुए ईरान की यात्रा का वर्णन है। इसमें बाबू तहरान इस्फहान गीराज का वर्णन है।

(८) रूस में पञ्चीस मास—यात्रा-साहित्य सम्बन्धी ४१७ पृष्ठों की यह पुस्तक भालोक प्रकाशन बीकानेर से सन् १९५२ में प्रकाशित हुई थी। सन् १९६७ में राजकमल प्रकाशन से यह पुस्तक 'मेरी जीवन-यात्रा (३)' के नाम से प्रकाशित हुई है। राहुल जी की यह तीसरी रूस यात्रा थी जो १७ अगस्त १९४७ को समाप्त हुई थी। इस पुस्तक में ईरान, तेहरान रूस, सेनिनग्राद आदि की यात्राओं का वर्णन है।

(९) किन्नर देश—किन्नर देश में 'सबप्रथम इण्डिया पब्लिशिंग प्रयाग द्वारा सन् १९४८ में प्रकाशित हुई। सन् १९५६ में इसका दूसरा संस्करण किताब महल इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक की सन् १९४८ की मई अगस्त में की गई यात्रा का विवरण है साथ ही हिमालय के इस उपर्युक्त भाग का परिचय भी है। इस यात्रा में उन्होंने नवीन भारत के नव निर्माण की दृष्टि से वस्तुओं का वर्णन किया है। किन्नर प्रदेश की यात्रा के साथ वहाँ की भाषा के कुछ उद्धरण और लोकगीत भी इसमें संग्रहीत हैं।

(१०) तिब्बत में सया वष—महापण्डित राहुल जी की यह पुस्तक गारदा मंदिर दिल्ली से प्रथम बार सन् १९३३ में प्रकाशित हुई। 'राहुल यात्रावली (भाग १)' में भी यह यात्रा संकलित है। इसमें भारत के बौद्ध खण्डहरों, कनौज की गम्भा सारनाथ वसाली तुम्बिनी से लेकर नेपाल शीमर्ची ग्यांजी ल्हासा तक की यात्रा का वर्णन है। इसमें लेखक ने तिब्बत-यात्रा एवं बौद्ध धर्म-सम्बन्धी ग्रंथों की खोज का विवरण दिया है। यह लेखक की पहली तिब्बत-यात्रा है।

(११) धुमकट गास्त्र—'धुमकट गास्त्र' राहुल जी की अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना है। इस रचना का उद्देश्य युवकों में धुमकट की शक्ति का अकुर पदा करना मात्र ही

नहीं प्रत्युत जन्मजान अनुरा की पुष्टि, परिवर्द्धन तथा माय-ज्ञान भी हमका काम है। घुमक्कड़ी के लिए अनेक उपयोगी बातें हम ग्रन्थ में आई हैं। हम ग्रन्थ की रचना शास्त्र-पद्धति के रूप में हुई है, इसीलिए इसका नाम लेखक ने घुमक्कड़ शास्त्र रखा है। घुमक्कड़ी को लेखक दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु मानता है और हम धर्म का धनादि सनातन धर्म कहता है। घुमक्कड़ी रस राहुल के लिए वाच्य रस तथा ब्रह्मानन्द से किसी भी प्रकार कम नहीं।

(१२) एशिया के दुग्धमूलखंडों में— 'एशिया व ट्रान्स् मूगलान्ड में लेखक की १६३३ से १६३७ ई० तक की कुछ यात्राओं का संकलन है। हम पुस्तक में रास्ते की चार यात्राएँ हैं। पहली है सह्याय यात्रा जो 'मरी सह्याय यात्रा' के रूप में पृथक् प्रकाशित है। दूसरी यात्रा है तिब्बत की यात्रा। इसमें ल्हामो 'रान' मगर, जैतम् तथा नेपाल का वर्णन है। यह लेखक की सन् १६३४ में की गई दूसरी तिब्बत-यात्रा है। इसमें पत्र चाली का प्रयोग किया गया है। तीसरी यात्रा ईरान में सम्बन्धित है जो 'घोरान नामक पुस्तक' में अलग से प्रकाशित है। हम संग्रह में चौथी यात्रा अफगानिस्तान की है। यह यात्रा लेखक ने सन् १६३७ में की थी।

(१३) चीन में क्या देखा? — 'चीन में क्या देखा?' में सन् १६५८ की लेखक की चीन-यात्रा का वर्णन है। चीन-बीज-संघ के नियंत्रण पर लेखक ने चीन की यात्रा की। इस पुस्तक में रमून, पकिंग, मचूरिया, तुङ्ग ह्वान तथा मन्चू चीन की यात्रा का वर्णन है। साम्यवादी चीन की प्रगति से पाठक का परिचय करवाना लेखक का ध्येय प्रतीत होता है।



हिमालय परित्यज की भाँति कुमाऊँ में भी इस प्रदेश के भू भाग के परिचय के अतिरिक्त लेखक की मानसरोवर तथा दूसरी यात्रायात्रा का वर्णन है।

### (ड) निबंध साहित्य

(१) साहित्य निबंधावलि—साहित्य निबंधावलि में राहुल जी के हिंदी साहित्य, हिंदी भाषा एवं दश स्थान सम्बंधी १६ निबंध संग्रहीत हैं। अधिकतर निबंध भाषण के रूप में लिखे गए हैं। लेखक इन निबंधों में हिंदी के भविष्य के प्रति अत्यधिक आशावादी हैं — हिंदी अपने उस लक्ष्य पर पहुँच रही है जिसे इस गंगादी के प्रारम्भ के मनीषी दूर का स्वप्न समझते थे। वह स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी। हम अपने साहित्य को सब तरह के ज्ञान विज्ञान से समृद्ध करता है<sup>१३३</sup>। इन निबंधों में लेखक की विचारगत दृढ़ता एवं प्रौढ़ता दृश्यमान है।

(२) पुरातत्त्व निबंधावली—पुरातत्त्व निबंधावली में राहुल जी के पुरातत्त्व सम्बंधी १८ निबंधों का संकलन है। हिंदी में पुरातत्त्व-साहित्य की बड़ी आवश्यकता है। भारत के सच्चे इतिहास के निमाण के लिए पुरातत्त्व की सामग्री अत्यंत उपयोगी है। लेखक की यह रचना हिंदी में पुरातत्त्व-साहित्य के अभाव की पूर्ति का एक प्रयत्न है। राहुल जी के इस सफर के निबंध समय समय पर विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हुए थे। कुछ निबंधों के शीर्षक हैं—पुरातत्त्व काल निर्णय में ईंटें और गहराई जेतवन भाग्यही हिंदी का विकास तिबत में भारतीय साहित्य और कला आदि।

(३) दिमागी गुलामी—‘दिमागी गुलामी’ ८० पृष्ठों का एक लघु निबंध संग्रह है। इसमें राजनीतिक एवं शिक्षा सम्बंधी राहुल जी के विचार प्रस्तुत होते हैं। कुल निबंध दस हैं जिनके शीर्षक हैं—(१) दिमागी गुलामी (२) गांधीवाद, (३) हिन्दू मुस्लिम-समस्या (४) गिन्ना में अमूल परित्यक्त (५) नव निर्माण (६) जमींदारी नहीं चाहिए (७) किसानों का ध्यान (८) अछूतों को क्या चाहिए? (९) खेतिहर मजदूर तथा (१०) रूस में ठाई मांस। इन निबंधों में लेखक ने साम्यवादी ढंग में भारत की विविध समस्याओं पर विचार किया है। उनके विचार अत्यंत स्पष्ट एवं सुखरूप में प्रकट हुए हैं।

(४) तुम्हारी क्षय—तुम्हारी क्षय छपरा जेल में लिखी राहुल जी की एक लघु निबंध रचना है। भारतीय समाज की विविध कुरीतियाँ एवं उसके विकृतांगों का लेखक समूल क्षय चाहता है। भारतीय समाज के घम भगवान् ‘याम एवं शपक’ के कारण ही भारत की निधन जनता दरिद्रताग्रस्त है। इस अपर्याप्त समाज में सुखमय सामाजिक जीवन का विकास सम्भव नहीं। अतः इस समाज पर अत्यन्त पने दावा में राहुल जी ने प्रहार किया है। पुस्तक में छ विषय हैं—(१) तुम्हारे समाज की क्षय (२) तुम्हारे घम की क्षय (३) तुम्हारे भगवान् की क्षय (४) तुम्हारे सदाचार की क्षय (५) तुम्हारे अज्ञान की क्षय, (६) तुम्हारी जाति की क्षय।

भाव, विचार एवं भाषा की उग्रता इस पुस्तक की विशिष्टता है।

(५) भाज की समस्याएँ—‘भाज की समस्याएँ’ में राहुल जी के चार निबंध हैं—(१) पाकिस्तान की समस्या (२) मातृभाषावादी की समस्या (३) प्रगतिशीलता का प्रश्न (४) भाज का साहित्यकार। राहुल जी प्रगतिशील विचारक एवं कलाकार हैं। इस संग्रह के अंतिम तीन निबंधों में उनकी भाषागत एवं साहित्यगत प्रगतिशील विचारधारा का सुंदर निदर्शन हुआ है। प्रगतिशील साहित्यकार के विषय में उनका कथन है ‘साहित्यकार अपने वाक्यों में रस, अपने पदों में लालित्य अपनी उक्ति में मर्म सब कुछ ही नहीं प्रदान करता बल्कि वह भविष्य का भी संकेत करता है भविष्य के निर्माण में साक्षात् या उत्तराधिकारियों द्वारा हाथ बटाता है’<sup>१३४</sup>।

(६) साम्यवाद ही क्यों?—यह रचना राहुल जी ने ल्हासा में रहते हुए मई १९३४ में लिखी थी। इस साम्यवादी विचारों को समझने के लिए प्रवेगिका माना जा सकता है। पूँजीवाद की उत्पत्ति, ‘साम्यवाद क्यों पड़ा हुआ, क्या पीछे सोटा जा सकता है’, हमारे सामाजिक रोग और साम्यवाद’ आदि १२ निबंध इस पुस्तक में हैं।

इन निबंध-संग्रहों के अतिरिक्त ‘अतीत से वर्तमान’ के द्वितीय व तृतीय खण्ड में राहुल जी के इतिहास, कला, दर्शन व देश-दर्शन से सम्बंधित निबंध संगृहीत हैं। राहुल जी के अग्रवर्णित निबंधों के संग्रह भी कम में कम छाठ हैं जिनमें राहुल जी ने राजनीति दर्शन धर्म, भाषा साहित्य आदि विषयों पर विचार प्रकट किये हैं।

राहुल जी के भाजपुरी में लिखित ‘तीन नाटक’ तथा ‘पाँच नाटक’ भी उनके मर्मनात्मक साहित्य के अन्तर्गत लिए जा सकते हैं। इन नाटकों में भी राहुल जी की साम्यवादी विचारधारा प्रकट है। भाजपुरी में लिखित ‘तीन नाटक’ संग्रह के भाजपुरी भाषा प्रेम के सूचक हैं। इस भाषा द्वारा वे अपने मातृभाषा प्रदेश के लोगों में—जनसाधारण में—जागृति लाना चाहते हैं।

राहुल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के परिचय व उन्नयन यह संग्रह ही बढ़ा जा सकता है कि महाशक्ति राहुल साहू-भाष्यन विराट्-व्यक्ति-संगणक साहित्यकार हैं और उनका कृतित्व-समनात्मक एवं उपयोगी-बहन एवं अनवरमुनी है। द्वितीय साहित्य व इतिहास में उन जसा समर्थ एवं संगणक व्यक्तित्व महज मुलम नही। उनका प्रापवाक् व्यक्तित्व पद्य-परिभाषा, अमीम गान संगणक विज्ञान, राजनीति-महान् धन्य एवं अनवर दाना व दिग्गज महाशक्ति जातिधारा, समाज-मुपाय एवं महाभाष्य के रूप में जाना जाता है। उनका यह व्यक्तित्व उन कृतित्व में मर्मम अनुपूर है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मर्मज विनयता विविधता एवं विनयता दानीय है। उनका प्रेम महान् एवं उदात्त है। द्वितीय व अन्त में नन्दार को उहाने १२५ कृतियाँ स सम्पन्न एवं मर्मज बनाया है। बन्धु राहुल जी द्वितीय व मीरव है।

## सूचिका

- १ सम्मदन पत्रिका (भाग ३२) पृ० ३० ।
- २ धर्मयुग (१२ मई, १९६३) पृ० ८ ।
- ३ धर्मयुग (२६ मई १९६३) पृ० ४१ ।
- ४ भाज का हिंदी साहित्य प्रकाशक मुद्रित पृ० २१८ ।
- ५ धर्मयुग (१ अगस्त १९६३) पृ० १८ ।
- ६ स्वतंत्रता और साहित्य रत्नाकर पाठ्य पृ० १७७ ।
- ७ जपमा (अगस्त १९६३) पृ० ६६ ।
- ८ प्रताप (मार्च १०, हेमन्त) पृ० ६३ ।
- ९ भाषा (सामाजिक सितम्बर १९६४) पृ० ११ ।
- १० जपमा (अगस्त १९६३) पृ० ४६४८ ।
- ११ वही पृ० ८८ ।
- १२ भाजकल (सामाजिक मार्च १९६४) पृ० २ ।
- १३ नितमान (साप्ताहिक, पयटन विज्ञापक २१ अक्तूबर १९६९) पृ० ४५ ।
- १४ धूमककड शास्त्र राहुल साहूपायन पृ० १ ।
- १५ मेरी जीवन-यात्रा (१) पृ० २६ ।
- १६ वही पृ० २१ ।
- १७ वही पृ० ३२ ।
- १८ धूमककड शास्त्र पृ० ११ ।
- १९ वही, पृ० ७ ।
- २० २१ वही पृ० ११ ।
- २२ वही पृ० ३६ ।
- २३ मेरी जीवन यात्रा (१) पृ० २६, ३० ३३ ।
- २४ वही पृ० ६४ ।
- २५ मेरी जीवन-यात्रा (१) पृ० १२६ १३ १७४ १८४ १९३ २२५ २४१ २६० २६६ ।
- २६ वही पृ० ४४८ ४७१ ।
- २७ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० १६ ।
- २८ वही पृ० १०६ ।
- २९ वही पृ० २६ २२६ ३८३ ४८३ ।
- ३० वही पृ० १२७ से १७५ ।
- ३१ वही पृ० ३४६ ।
- ३२ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० ४४७ ४७२ तथा मेरी जीवन-यात्रा (३) ।
- ३३ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० १७६ २२८ ३ ६ ३३७ २३८ ३६३ ३८४ ।
- ३४ धूमककड शास्त्र पृ० २७ ३८ ४१ ५१ के आधार पर ।
- ३५ सरस्वती (दिमासिक, १९६६) पृ० ३३ ।
- ३६ मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ४६६ ।
- ३७ भाजोचना (अक्तूबर १९६७) पृ० १३७ १३८ ।
- ३८ मेरी जीवन-यात्रा (भाग १) पृ० ३८२ ८३ ।
- ३९ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० ३३५ ।
- ४० वही पृ० ५३६ ।

- ४१ मरी जीवन-यात्रा (२), पृ० २३८ ।  
 ४२ मरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ६२ ।  
 ४३ मरी जीवन-यात्रा (२) पृ० २३७ ।  
 ४४ मरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ६७ ।  
 ४५ मरी जीवन-यात्रा (२) पृ० ३४१ ।  
 ४६ मरी जीवन-यात्रा (२) पृ० २०६ ।  
 ४७ मरी जीवन-यात्रा (४) पृ० २ ।  
 ४८ उपमा (राहुल-स्मृति विषयार्थ) पृ० १६ ।  
 ४९ मरी जीवन-यात्रा (२) पृ० २०६ ।  
 ५० मरस्वनी (फरवरी १९६४) पृ० १५२ ।  
 ५१ तनमा के बच्चे राहुल साहसपावन पृ० ३६ ।  
 ५२ मेरी जीवन-यात्रा (१) पृ० १४१ ।  
 ५३ वही पृ० १७४ ।  
 ५४ वही पृ० २३६ ।  
 ५५ वही पृ० २४६ ।  
 ५६ वही पृ० २३६ ।  
 ५७ वही पृ० २६६ ।  
 ५८ वही पृ० २६७ ।  
 ५९ वही पृ० ४३३ ।  
 ६० मरी जीवन-यात्रा (२) पृ० ८ ।  
 ६१ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० १६९ ।  
 ६२ सम्मेलन पत्रिका (भाग २२) पृ० ३१ ।  
 ६३ वैज्ञानिक भीतिरक्षा राहुल साहसपावन पृ० ८२ ।  
 ६४ वही पृ० ६ ।  
 ६५ मरी जीवन-यात्रा (४), पृ० ४२ ।  
 ६६ सम्मेलन पत्रिका (भाग २२) पृ० ३० ।  
 ६७ वही पृ० ४२ ।  
 ६८ साप्ताहिक हिन्दुस्तान (६ मई १९६०) पृ० १३ ।  
 ६९ धर्मदूत (१४ जुलाई १९६३) पृ० ३१ ।  
 ७० रेखाचित्र-धी बलारपीणम बसुन्ती पृ० १८२ ।  
 ७१ उपमा पृ० ६६ ६७ ।  
 ७२ राहुल पारसी (मई १९६४) पृ० १२७ ।  
 ७३ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० १७७ ।  
 ७४ प्रदीप (मार्च ६) पृ० ६४ ।  
 ७५ दिनरा में हास पृ० प्रारम्भ ४ ।  
 ७६ राहुल साहसपावन पत्रिका भाग २२ साहित्य पृ० १०६ ।  
 ७७ धर्मदूत (१४ जुलाई १९६३) पृ० १६ ।  
 ७८ राहुल साहसपावन का बचपन पृ० ६७२ ।  
 ७९ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० १८६ ।  
 ८० मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ४ ६१ ।  
 ८१ वही पृ० २४ २५ ।  
 ८२ सम्मेलन-पत्रिका (भाग २२) पृ० ४६ ।  
 ८३ वही पृ० ४८ ।

- ८४ सम्मेलन-पत्रिका (भाग ५२) पृ० ३२ ।  
 ८५ उपमा (राहुल-स्मृति विशेषांक) पृ० २६ ।  
 ८६ वही पृ० २८ ।  
 ८७ सम्मेलन-पत्रिका (भाग ५२) पृ० ४६ ।  
 ८८ धुमकट शास्त्र पृ० १३३ १३४ ।  
 ८९ भाव का हिन्दी साहित्य प्रकाशक-द्र गणत पृ० २१६ ।  
 ९० उपमा (राहुल-स्मृति विशेषांक) पृ० ३७ ।  
 ९१ वही पृ० ८८ ।  
 ९२ भाव का हिन्दी साहित्य पृ० २१८ ।  
 ९३ उपमा (राहुल-स्मृति विशेषांक) पृ० ३८ ।  
 ९४ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५१) पृ० १६६ ।  
 ९५ बङ्गुरी मधुपुरी (संस्करण १९३४) आवरण पत्र ।  
 ९६ उपमा (अप्रस्त १९६३) पृ० १८० १८४ ।  
 ९७ ज्ञानपीठ (नवम्बर १९६३) पृ० १४ १६ ।  
 ९८ हिन्दी का उच्चतर साहित्य (विक्रमी सन २०१४) पृ० ४४८ तथा अन्य ।  
 ९९ राहुल साहसपायन का कथा-साहित्य पृ० ५५ ६० ।  
 १ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५१) पृ० १७१ १७२ ।  
 १ १ १०२ वही पृ० १६६ ।  
 १०३ ज्ञानपीठ (नवम्बर १९६३) पृ० ३५ ३७ ।  
 १ ४ उपमा (राहुल-स्मृति विशेषांक) पृ० १८३ १८४ ।  
 १ ५ सम्मेलन पत्रिका (वीथ-ज्येष्ठ शक १८८७) पृ० १६६ १७४ ।  
 १ ६ वही (भाग ५१) पृ० १७ ।  
 १०७ द्रष्टव्य परिशिष्ट ५ ।  
 १ ८ सम्मेलन-पत्रिका पृ० १७० ।  
 १०९ राहुल जी द्वारा अपने मित्रों तथा अन्य व्यक्तियों को लिखे गये पत्र ।  
 ११ १११ ज्ञानपीठ (नवम्बर १९६३) पृ० ५७ ।  
 ११२ हिन्दी साहित्य कोश-स डॉ० धीरेन्द्र वर्मा पृ० ८४६ ।  
 ११३ दि मैकिंग आफ लिटरेचर भार ए० स्टाण्डेन्स पृ० २२ पर उद्धृत ।  
 ११४ हिन्दी साहित्य कोश पृ० ६८२ ।  
 ११५ साहित्य-सङ्ग्रह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी पृ० २ ।  
 ११६ साहित्य-शास्त्र डा रामकुमार वर्मा पृ० १६ ।  
 ११७ हिन्दी साहित्य कोश पृ० ६८२ ।  
 ११८ साहित्य विवेचन-सोमचन्द्र सुमन पृ० २ ।  
 ११९ हिन्दी साहित्य कोश पृ० १५६ ।  
 १२ १२१ वही पृ० १६ ।  
 १२२ साहित्य शास्त्र पृ० २० ।  
 १२३ हिन्दी साहित्य काण्ड पृ० १६० ।  
 १२४ राहुल साहसपायन का कथा-साहित्य पृ० ६३ ।  
 १२५ वही पृ० ८१ ।  
 १२६ मेरी जीवन-यात्रा (५) पृ० ३६३ ६४ ।  
 १२७ १२८ द्रष्टव्य परिशिष्ट-५ ।  
 १२९ आलोचना (१९६७) पृ० १३७ ।  
 १३ नये भारत के नए नेता पृ० ४ ।  
 १३१ बचपन की स्मृतियाँ पृ० १ ।  
 १३२ मरे भ्रमहयोग के साथी पृ० २१ ।  
 १३३ साहित्य निबन्धावलि प्रकाशक ।  
 १३४ भाव की समस्याएँ पृ० ५६ ।

## दूसरा परिचय

### राहुल जी की कहानियाँ

#### कहानी का स्वरूप

कहानी आधुनिक हिंदी-साहित्य की विकासशील एवं लोकप्रिय गद्य विद्या है। इसलिए कहानी को निश्चित परिभाषा में बौध्दना एवं उसका स्वरूप निर्धारित करना सहज नहीं। भारतीय एवं पाश्चात्य ममालोचका एवं कहानीकारों ने इसका स्वरूप निर्धारण करने में प्रयास में इसकी कतिपय विशेषताओं का ही उल्लेख किया है। इससे कहानी के लिए एक मूल भाव एवं सझ की एकनिष्ठता आवश्यक मानते हैं<sup>१</sup>। एङ्गर एलिन को कहानी की रूपविधि की व्याख्या करते हुए उसकी आधुनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं। वे कहानी को संक्षिप्त, प्रभाववात्सादक एवं स्वयं-पूर्ण बतलाते हैं।<sup>२</sup> सर ह्यूबाल धोन की परिभाषा कुछ अधिक व्यापक है। वे लिखते हैं— कहानी में घटनाओं का विवरण इस प्रकार चित्रित किया जाना चाहिए कि एक आशाशील विकास दिखाई पड़े। इस विकास की प्रक्रिया सक्रियता होनी चाहिए। यह विकास इस प्रकार चित्रित किया जाना चाहिए कि वह हमारी जिज्ञासावृत्ति को स्थिर रखने हुए चरमबिन्दु का स्पष्ट कर एक सन्तोषजनक समाप्ति तक पहुँच जाए।<sup>३</sup>

हिंदी में बिद्वानों ने भी कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। जयशंकर प्रसाद कहानी को सौम्य की एक झलक का चित्रण और जमक द्वारा इसकी सृष्टि करना स्वीकारते हैं।<sup>४</sup> मुन्शी प्रेमचंद कहानी में संक्षिप्तता, आक्षेपक आरम्भ, प्रभावपूर्ण विकास एवं मुग्धकारी अन्त आवश्यक तत्त्व मानते हैं।<sup>५</sup> डॉ० स्वामसुन्दर दास निश्चित सत्ययुक्त नाटकीय आख्यान को कहानी कहते हैं।<sup>६</sup> डॉ० जगन्नाथ प्रसाद सभी कहानी को एक लघु गद्य रचना मानते हैं जिसमें एक सत्यता सवेदनशीलता एवं प्रभाववित्ति के गुणों का होना आवश्यक है।<sup>७</sup> भगवती चरण वर्मा कहानी की जीवन के किसी एक पहलू की मूर्ति मात्र मानते हैं जिसमें प्रभाव में तीव्रता रहती है।<sup>८</sup> डॉ० कृष्णलाल का मत है— आधुनिक कहानी साहित्य का एक विवक्षित कलात्मक रूप है जिसमें लेखक अपनी कल्पना शक्ति के सहारे कम-से-कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से कथानक चरित्र पाठ्यकरण दर्शन ध्वजा प्रभाव की सृष्टि करती है।<sup>९</sup> बाबू शुलाकराय जी कहानी की अन्तर्गत विषयताओं की समन्वित करते हुए इसकी परिभाषा अपेक्षाकृत अधिक विवेकपूर्णतात्मक एवं व्यापक रूप में देने हैं— छोटी कहानी एक स्वयं-पूर्ण रचना है जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केन्द्रित घटना अथवा घटनाओं के आवश्यक परन्तु कुछ-कुछ अप्रत्याशित दृश्य स उत्पन्न-जनन और मोड़ के माध्यमों से चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहलपूर्ण वर्णन हो।<sup>१०</sup>

उक्त मता एवं परिभाषाओं के आधार पर कहानी की समवित्त परिभाषा का रूप इस प्रकार निश्चित किया जा सकता है—आधुनिक कहानी एक ऐसी संक्षिप्त परन्तु स्वतः पूर्ण रचना है जिसका आधार किसी बानिज्य सत्य, मानव जीवन या समाज की कोई समस्या हो और जो बिना इधर उधर भटके अपने ध्येय पर पहुँच जाए और यदि उसमें कोई घटना वर्णित हो तो उसका चित्रण इकट्ठा और रसपूर्ण हो। कहानी के इस स्वरूप के आधार पर कहा जा सकता है कि आकार की लघुता, संवेदना की एकता प्रभावविविधता, सन्नियता एवं रसमयता उसके प्राणभूत तत्त्व हैं। वह हमारे जीवन के किसी विशिष्ट क्षण की ग्राम्यवस्तु है।

उपमास के समान कहानी के भी छ तत्त्व हैं, पर उनके स्वरूप में उनके आकार के अनुकूल अंतर होना स्वाभाविक है। उसका कथानक छोटा होता है उस में घटना प्रसंग और दृश्य तथा पात्र और उनका चरित्र चित्रण अत्यन्त सूक्ष्म और संक्षिप्त होता है। कहानी प्रस्तुत करने में लेखक के दृष्टिकोण से तथा कहानी का वातावरण अर्थात् समस्त कहानी में व्याप्त सामान्य मनोऽन्वेष से उसके शिल्प विधान में ऐसी एकता और प्रभावविविधता आ जाती है जो कहानी की निजी विशेषता है और उसके हृत्पात्मक व्यक्तित्व की पथकता प्रकट करती है।<sup>११</sup> कहानी के कथा वस्तु आदि तत्त्वा में से कहानीकार किसी एक या एकाधिक तत्त्वा पर बल दे सकता है फिर भी समस्त तत्त्वा का सामूहिक प्रभाव कहानी कला की मुख्य आत्मा है क्योंकि प्रत्येक तत्त्व अपने अपने स्थान पर विनिष्ट एवं मूल्यवान् है।<sup>१२</sup>

### कहानी का वर्गीकरण

कहानी जीवन का चित्र प्रस्तुत करती है अतः कहानी के विषय भी उतने ही हो सकते हैं जितने जीवन के पक्ष। डॉ० भगारथ मिश्र का कहना है—‘कहानी की विविधता की कोई सीमा नहीं। जीवन के विकास क्रम में संपत्ताएँ एवं संस्कृतियाँ के विकास एवं ह्रास के साथ साथ जिस प्रकार सामाजिक ढाँचा और नवीन समस्याएँ का उद्घाटन होता रहता है उसी प्रकार समाज एवं जीवन की विविध स्थितियों एवं घटनाओं के द्वारा कहानी के लिए विविध क्षेत्र भी खुलते रहते हैं।’<sup>१३</sup> फिर भी विद्वानों ने कहानी के विविध तत्त्वा एवं विषयों के आधार पर हिन्दी कहानी का वर्गीकरण किया है। तत्त्व की प्रधानता के आधार पर कहानी का वर्गीकरण इस प्रकार हो किया जा सकता है—(क) घटना प्रधान (ख) चरित्र प्रधान (ग) वातावरण प्रधान (घ) भाव प्रधान। परन्तु कुछ कहानियाँ ऐसा भी हैं जो इस वर्गीकरण में नहीं आती, जिससे कहानी कला की विकासशीलता एवं मौलिकता प्रकट होती है। प्रकृतवादी प्रतीकवादी और शक्तिवादी कहानियों के लिए इस वर्गीकरण में स्थान नहीं है। डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल ने इसीलिए इन्हें विविध कहानियाँ शीघ्र के अंतर्गत रखा है।

विषय की दृष्टि से कहानियाँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं यथा - ऐतिहासिक सामाजिक मनावधानिक मनोविरलेपणात्मक साहित्यिक, रोमान्सिक जासूसी आदि। परन्तु जसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि कहानी का सिल्व इतना तरल है और उस व विषय इतने विविध हैं कि वर्गों की वारा में उस आगद नहीं किया जा सकता। कहानी का जस-जस विवास होगा उसके मेदा की सख्या बढती जायगी।

आधुनिक हिन्दी कहानी अनेक रूपा एव विविध शलिया म विवसित होकर अनेक सोपानो को लांघ चुकी है। राहुल साहृत्यायन हिन्दी व यथायवादी कहानी सलक है। राहुल जी ने जन्म कहानी के क्षेत्र में पदापण किया तो प्रमचद जी की सामाजिक और जयशकर प्रसाद जी की ऐतिहासिक कहानियाँ की परम्परा उनक सम्मुख विद्यमान थी। राहुल जी ने दोनों प्रकार की कहानियाँ का सजन किया है, पर ऐतिहासिक कहानियाँ की परम्परा की तो असदिग्ध रूप से उन्होंने विकसित किया है। डा० सुवासचन्द्र सवसेना के शास्त्र म- भारतीय जीवन व बाहर के परि बेग से (राहुल जी ने) परिचित कराया हमारे सामने कहानी की रचना के आधार फलक की और विस्तृत किया, हमारे सामने भारतीय ग्रामीण जीवन के कुछ अछूत प्रगा का रखा पश्तीय विलासपुरिया के वपम्पूषण रूप की और उसक आधम म पलत सामाजिक रोगो स हमे अवगत कराया हमारे सामने आय जाति के विकास का एक रोचक कथामय इतिहास प्रस्तुत किया, जो मानवता के विकास को समझने म सहाक है। १४

राहुल जी के चार कहानी-सग्रह हैं—सतमी व बच्च बोल्पा से गंगा' 'बहुरंगी मधुपुरी तथा कनला की कथा। इनम प्रमद दस बीस इक्कीस तथा नौ कहानियाँ हैं। इस प्रकार राहुल जी की कुल कहानियाँ साठ हैं। विषय-वस्तु की दृष्टि से राहुल जी की कहानियाँ को दो भागा म विभक्त किया जा सकता है—

(क) ऐतिहासिक कहानियाँ।

(ख) सामाजिक कहानियाँ।

(क) ऐतिहासिक कहानियाँ

ऐतिहासिक कहानियाँ म इतिहास स कोई घटना ली जाती है और कहानी ने पात्र भी ऐतिहासिक ही हात हैं। वार्तालाप आदि शेष भाग लेखक का अपना होता है। श्री माहूनलाल जिन्नामु व शास्त्र म, वह कहानी जिमम इतिहास की तरह घटनाया की प्रमदता की आर ध्यान लिया जाता है ऐतिहासिक कहानियो के नाम स पुकारी जाती हैं। १५ मी कहानियो म कथानक की प्रभावोत्पादकता के लिए कल्पना का पुन अधिक रहता है। १६ आधुनिक ऐतिहासिक कहानियाँ इतिहास को यथाय वाणी रंग स ग्रहण करती है। इस दृष्टि से प्राचीनता के प्रति मोह, बाजीय और,



राष्ट्र प्रेम एवं आत्म-संस्कार की भावना से वर्तनीकार इन्हें के धार होता है। जो मानव-मायामो 'अमर' इन्हें कहानियों के रूप में है— ऐतिहासिक, 'उपनिषदिक' तथा 'आधुनिक'।<sup>११</sup> राष्ट्र की नई प्रकाश की ही ऐतिहासिक कहानियाँ मिली है। उनकी ऐतिहासिक कहानियों में धर्म व यथाप विचार व माप साम्यवादी आत्मों की स्थापना का प्रभाव है। राष्ट्र का ३१ ऐतिहासिक कहानियाँ का रचना की है। बाल्या म गंगा एवं वर्तनी का कथा व समस्त कहानियाँ तथा 'मनमो के बच्चे' से मकहीन स्मृतिमान कीति तथा 'डोरे बाबा' राष्ट्र की ही ऐतिहासिक कहानियाँ हैं। 'बाल्या म गंगा' म राष्ट्र का न प्राणीय आर्थों के बाल्या स गंगा नगी तथा व अधिमान का कहानियाँ व माध्यम स प्रस्तुत किया है। सह्या कर्षों का इतिहास इन कहानियाँ म पाठका व नया व सामन से निकलता है। 'कनैसा की कथा' म भी राष्ट्र की न ३०० वर्षों के विलत इतिहास पर दृष्टि डाली है। कनसा व जनजीवन को इन वर्षों व प्रसार म दखना कहानीकार की ऐतिहासिक प्रतिभा का परिचायक है। स्मृतिमान कीति एक भारतीय पण्डित की कथा है जो आठ प्रकाश में आकर संस्कृत प्रकाश का नाटिका म अनुवाद करता है। डोरे बाबा धीपक कहानी प्राचीन भारत का इतिहास की एक भाँकी प्रस्तुत करती है। इस प्रकार राष्ट्र की न अपनी ऐतिहासिक कहानियाँ द्वारा मानव जीवन की यात्रा वर्णित की है। वस्तुतः उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ विचारकर 'बोल्गा से गंगा' की कहानियाँ युगांतरकारी हैं। राष्ट्र की ही ऐतिहासिक कहानियाँ म इतिहास-तत्त्व का यथाप भवन हुआ है। यहाँ उनकी कहानियाँ म निहित इतिहास तत्त्व की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है।

### ऐतिहासिकता

राष्ट्र की ही कहानियों म इतिहास-तत्त्व की प्रधानता है। बाल्या से गंगा तथा कनैसा की कथा की ऐतिहासिकता की ओर राष्ट्र की न स्वयं संकेत किया है 'लेखक की एक एक कहानी के पीछे उस युग के सम्बन्ध की वह भारी सामग्री है जो दुनिया की कितनी मायामो तुलनात्मक भाषा विज्ञान, मिट्टी पत्थर ताम्बे पीतल लोहे पर सांकेतिक व लिखित साहित्य अथवा अलिखित गीता, कहानियाँ रीति रिवाज, टाटके-टोना म पाई जाती है।'<sup>१२</sup> डा० नगेन्द्र भी बोल्गा से गंगा की सब प्रमाण विचारता इसकी ऐतिहासिकता का ही मानते हैं। उनका कथन है—'इसकी सबसे बड़ी विशेषता है लेखक का व्यापक दृष्टि विस्तार जो ८००० वर्षों तक प्रसरित मानव जीवन के इतिहास का पूरी तरह साक्षात्कार कर उसको हमारे मानस व सामने प्रत्यक्ष कर सगा है। इस दृष्टि विस्तार को सहायता मिली है लेखक के 'व्यापक पाण्डित्य से। पुरातत्त्व मानव शास्त्र, समाज शास्त्र दशन साहित्य और इतिहास के विस्तृत पर्यालोचन के बिना यह सम्भव नहीं था।'<sup>१३</sup> अन्त आनंद कौसल्यायन ने 'बोल्गा से गंगा' की कहानियों म कहानीपन कम और ऐतिहासिकता का अधिक उमरा हुआ पाया है।<sup>१४</sup> राष्ट्र की ही स्वयं इन कहानियों को रीतक दम से लिखा इति

म मात्र माना म राई आपति नहा।" निम्न-राष्ट्र की कौ कहानियाँ म  
विश्व-मन्त्र का प्राधाय मित्र है उनकी कहानिया कौरी कल्पना नही हैं।

बोल्ना मे यथा की प्रथम चार कहानिया—निगा, दिवा धमृताख और  
पूत—प्रागनिहामिक हैं। उनकी कानाग्रधि रचक न २००० ई० पूव म २५०० ई०  
व मानी है। मन्त्र धान-द कोम-यायन न अनुसार, 'उन कहानिया म कल्पना का  
विषय है। लेकिन वह कवल कल्पना अथ कृति नही हैं। उन कहानिया म जा जो  
शक्ति की बातें हैं वह सब राष्ट्र जी के इन्द्र-यूरापी तथा इन्द्र ईगनी भाषा गाम्त्र  
विषय अध्ययन का परिणाम हैं। 'गंगाप्रमाण' मिथ 'निगा' क विषय म निम्न है—  
नेत्रम ने प्राकृति धकम्पा म मनुष्य का जैसा चित्रण किया है वह बहुत कुछ राष्ट्र  
का विचारधारा से मिलता है। 'पुष्प' कहानी म कृषि और पशुपालन क विषय  
में राष्ट्र जा के वर्णन एतिहासिक हैं। 'मध्य एशिया का इतिहास' म उनका कथन है—  
कृषि और पशुपालन के साथ सम्पत्ति का उत्पन्न बढ़ चला। अधिक हाथ क हानि  
पर अधिक काम तथा उमने अधिक सम्पत्ति के उत्पन्न का रास्ता निम्न आया था  
'मिथ' कविनिक सम्पत्ति के उत्पन्न और स्वामिक क बन पर जहाँ पुष्प समाज  
का नेता बन गया, वहाँ इस पितृ-सत्ता युग के युग म मुद्धों म पकड़ गये राष्ट्र का  
भारन की जगह दाय बनाकर जीवित रचन का अधिकार लिया गया। 'हन्  
कहानिया म मारी-सम्बन्धी राष्ट्र जी की धारणा भी एतिहासिक है और भगवन्-गण  
उपाध्याय द्वारा नारी-मारी की स्थिति के वर्णन स साम्य रखती है— मैं नारी  
हूँ पितृ सत्ता युग म पूव मान सत्ता युग की भारतीय नारी जिसने बना का सामन  
विषय बना था निम्न है। तत्र मैं निम्न नग्नावस्था म गिरि गिर्वरी पर कुत्तक  
मत्ता थी गुण गह्वर म शयन करती थी बन वडा का आपादमस्तक नाप लेती  
थी ताम्रमिका निया का अवगाहन करती थी। पुष्प मेरा दास था मेरे  
पद म उपार्जन आहार का आश्रित।' १२४

मन्त्र धान-द कोसल्यायन पुष्पान, 'अन्तरा, मुदात्त और प्रवाहन'  
कहानिया का प्रामाणिकता का आधार प्राचीन साहित्यिक रचनाओं का, ब्राह्मण,  
महाभारत पुराण और बौद्ध धर्म का 'अटल' नाम स प्रसिद्ध भाष्य का मानन  
है। १२५ 'मृग' सम्बन्धी वक्त ऋग्वेद म उपलब्ध है। उसकी वीरता, क्षमणीलता  
मार्ग क प्रसंग ऋग्वेद म प्राप्य है। १२६ 'बधु' मन्त्र का आधार बौद्ध-ग्रन्थ है।  
'मन्त्र' काव्य क 'मन्त्र' तथा 'मन्त्र' की हिन्दू पालिटी पर  
आधारित है। 'मन्त्र' कहानी का एतिहासिकता का प्रमाण अन्वेषण के काव्य  
विवरित तथा 'मो-दन्त' हैं। रीज डविडस का निगा 'बौद्ध भारत' भी  
इसी एतिहासिकता का मानती है। मुष्प योषय गुणवालीन कथा है त्रिमया  
आधार कानिष्ठक क ग्रन्थ है। 'मुष्प' कहानी बाण क 'हृदय' और  
'मन्त्र' पर आधारित है। 'मन्त्र' स मन्त्र पद तथा नरक म मन्त्र सात  
है। इस प्रकार 'मुष्प' मन्त्र म लहर 'मन्त्र' की कहानिया का आधार विविध

साहित्यिक रचनाएँ हैं। इन कहानियों में प्रतिपादित वातावरण—सामाजिक राज नीति—सांस्कृतिक आदि निस्संदेह प्राचीन साहित्यिक रचनाओं से समानता रखता है। हाँ, घटनाएँ सत्य की कल्पना-सृष्टि का प्रतीक हैं।

‘बोल्गा से गया’ की अंतिम छ कहानियाँ हैं—बाबा नूरदीन, सुरया रेखा भगत, भगलसिंह, सफ़्दर और मुमेर। ‘नूरदीन’ कहानी का सम्बन्ध विलजी वगैरे ग़ासक अलाउद्दीन के ग़ासनकाल से है इसमें वर्णित अलाउद्दीन की नीतियाँ इतिहास सम्मत हैं। सुरया भ सत्यक ने अक्बर की उदार नीति का इतिहासानुकूल चित्रण किया है। रणामगत में अंग्रेजी ग़ासन के अत्याचार का वर्णन है। भगलसिंह सफ़्दर और मुमेर क्रमशः १०५७ ई० ११०२ ई० और ११४२ ई० की भारत की राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करने वाली कहानियाँ हैं। इस प्रकार ‘बोल्गा से गया’ की २० कहानियाँ में प्राचीन काल (६००० ई० पूर्व) से लेकर सन ११४२ के आंदोलन तक की भारतीय सभ्यता तथा सम्यता के विकास क्रम का इतिहास प्रकट है। डा० नगेन्द्र के शब्दों में—‘इतने विस्तृत क्षेत्र-काल पर समग्र अधिकार रखने वाली दृष्टि हिंदी के एकाग्र विद्वान को ही प्राप्त होगी। और औरव की बात यह है कि वह कहीं भी उलझी नहीं है। मानव जीवन के विकास में पड़ने वाले भिन्न भिन्न सत्यानास पर ठहरती हुई बड़ी सफाई के साथ सन ११४२ पर आकर ही रुकी है।’<sup>१०</sup> बोल्गा से गया मानव जीवन के सामाजिक विकास का इतिहास है और महापण्डित राहुल साठ्गथायन की व्यापक ऐतिहासिक दृष्टि की परिधायिनी कृति है। आचार्य नन्दुलारे वाजपेयी लिखते हैं—‘हमारे प्राचीन साहित्य में मानवीय विकास क्रम को सूचित करने वाली अनेक कथाएँ और आख्यान हैं। इन्हीं को लेकर तथा इनके साथ मानव विकास सम्बन्धी आधुनिक धार्मिक विचारों को जोड़कर श्री भगवत्शरण उपाध्याय ने सवेरा सपन आदि कहानी पुस्तकें लिखी हैं। वे उद्भात विरक्त मानव के सम्मुख गतिमयी मानवता का इतिहास रखने का दावा करते हैं।’ श्री राहुल ने बोल्गा से गया में ६००० ई० पूर्व से लेकर ११४२ ई० तक के मानव समाज के ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रवाहों का चित्रण किया है।<sup>११</sup>

कृता होने पर भी ‘बोल्गा से गया’ के सभी सत्यांशों को प्रामाणिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता। ‘बोल्गा से गया’ में निम्नलिखित तथ्य सदिग्ध ही कहे जाएँ—

(१) ‘पुरुषान और अगिरा कहानियाँ में अमुर जाति का वर्णन है। परन्तु यह अमुर जाति कौन सी है—यह स्पष्ट नहीं। डा० भगवत्शरण उपाध्याय के अनुसार जो निम्नान्त विभिन्न जातियों का आपने मिलाकर एक कर दिया है एक के शरीर पर दूसरे का वस्त्र पहनाया है। इन दोनों जातियों में एक तो असीरिया के अमुर हैं दूसरे सिंधु काठे में बसने वाले द्रविड। इन दोनों के शरीर और चरित्र, सभ्यता और निवास स्थान की ऐसी खिचड़ी की गई है कि पुरातत्त्ववेत्ता को भी

उनको यथास्थान करने में साधारण कठिनाई न होगी।<sup>१८</sup> वस्तुतः दो विभिन्न अमुर जानिया का इस प्रकार मिला देना ऐतिहासिक अनौचित्य ही कहा जाना चाहिए।

(२) राहुल जी ने वाल्मीकि रामायण का रचना काल शुग वंश के शासन काल को माना है। परन्तु डा० नर्मद के शब्दों में 'आदि-नाय्य में सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण परम्परा के विरुद्ध उनके पास कोई प्रमाण नहीं है, केवल एक क्षीण अनुमान भर है—'कोई ताज्जुब नहीं, कवि वाल्मीकि शुग-वंश के आश्रित कवि हों जैसे कालिदास चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के, और शुग वंश की राजधानी की महिमा को बढ़ाने के लिए उद्धान जातकों के दशरथ की राजधानी वाराणसी से बदलकर सावंत या अयोध्या कर दी और राम के रूप में शुग-सम्राट पुष्पमित्र या अग्निमित्र की प्रशंसा की, जैसे ही जैसे कालिदास ने 'रघुवंश के रघु और कुमारसम्भव' के कुमार के नाम से पिता पुत्र चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य और कुमारगुप्त की।<sup>१९</sup> निस्सन्देह वाल्मीकि का शुग-वंश का सम्पादित कहना—यह भी अनुमान के आधार पर—इतिहास की वैज्ञानिक भूमिका का बलिदान करना है। डा० रामविलास गर्मा 'यग्यात्मक' गली में राहुल जी का इस अतिहासिकता की और मकेन करने हैं—'यह भी एक समाज शास्त्र है। राम शुग सम्राट के प्रतीक हैं और कुमार सम्भव के कुमार सम्राट कुमारगुप्त के। राहुल जी को चाहिए कि वह यह भी बता दें कि दशरथ, कौशल्या, सीता लक्ष्मण, भरत आदि सम्राट के सान्निधान में किस किस व्यक्ति के प्रतीक हैं और शुग सम्राट जिस सामंती गोपन के गुण राम में चित्रित हुए हैं तो गवर्ण में उसके विराधी क्या किसी गणराज्य के जननायक का चित्रण किया गया है।<sup>२०</sup>

(३) सुपण योधेम' कहानी में समुद्रगुप्त को हूणा को पराजित करने वाला कहा गया है।<sup>२१</sup> परन्तु यह तथ्य भी आशङ्क है क्योंकि हूणा को परास्त करने वाला कुमार स्कन्दगुप्त था।<sup>२२</sup>

(४) दुमुल कहानी में हयवधन के माई राज्यवधन की कायकुलाधिपति कहा गया है।<sup>२३</sup> परन्तु राज्यवधन स्याम्बीश्वर का राजा था न कि कनीजाधिपति। इसी प्रकार हयवधन अपने वंश की क्षत्रिय सान्निधान से सम्बद्ध करता है पर सान्निधान ब्राह्मण थे, क्षत्रिय नहीं और सान्निधानों का क्षत्रिय अथवा हय के पूर्व पुष्प मानना इतिहास को चुनौती देना है।<sup>२४</sup>

(५) कनीज के गहड़वाल राजा जयचन्द का चित्र प्रस्तुत करने समय देखते हैं कि यह नहीं किया। चित्र इस प्रकार है—'उनके मांस लटक चिड़क, अतिपुल्ल कपाल, गंगा जमुनी मूँछें, प्रसूता की तरह सम्बल स्तना, महाकुम्भ-मत्ता उदर, पृथुल कोमल मांस-मेदपूर्ण उर तथा पेण्डुली रोम-स्थूल बाहुओं की दन्तक मातारण तरुणी भी अथवा त्रिय बिना नहीं रहती किन्तु यहाँ उनका गरीब प्राण उमड़ने के हाथ था।<sup>२५</sup> परन्तु मुसलमान इतिहासकारों ने उसे अपमान के दौरे लट्टे करने वाला और ममर तब में वीरगति प्राप्त करते होते वीर के रूप में स्मरण किया है।<sup>२६</sup>

(६) अलाउद्दीन की लामदीन कहना और उसके राज्य में दूध की नदियाँ का वणन लेखक का अपना ऐतिहासिक दृष्टिकोण हो सकता है, क्योंकि इतिहास तो अलाउद्दीन को नश्वर 'गासक' के रूप में स्मरण करता है।<sup>३८</sup>

(७) 'सुरया' कहानी में सुरया (अबुलफजल की बटी) और कमल (टान्द मल का बेटा) का विवाह एक सुन्दर कल्पना है परन्तु अक्सर के 'गासनकाल' में इन दोनों का यूरोप भ्रमण किसी भी प्रकार संगत नहीं कहा जा सकता।

(८) डा० नगेन्द्र के अनुसार सत्य अधिक अविश्वसनीय राहुल जी का धर्म विषयक सिद्धांत है 'कि धर्म केवल परधन प्रपहारका को क्षाति से उपमाग करने का अवसर देने के लिए है। डा० नगेन्द्र सांग सत्यत हैं— यह भी माना जा सकता है कि विश्वामित्र वसिष्ठ आदि ऋषियों की ऋचाओं ने समसामयिक राजाओं को शक्ति-सचय में सहायता दी हो उन्होंने अपना स्वायत्त साधने के लिए ऐसा किया हो परन्तु वेद की सभी ऋचाओं के पीछे ऐसी ही कुत्सित प्रेरणा है, यह धारणा सबका मिथ्या है। इसी प्रकार प्रवाहण ने अपने शोषण कार्य को निर्विघ्न चलाते रहने के लिए उपनिषद रहस्य की उद्भावना की यह भी अमाय है।<sup>३९</sup> राहुल जी के हिंदू धर्म के प्रति इस प्रकार के विचार उनके बौद्ध धर्म के प्रति अत्यधिक भुकाव के कारण हैं। एक आश्चर्य की बात यह है कि धर्म का इतना धीरे विरोध करने वाले राहुल जी के सामने जब बौद्ध धर्म का प्रसंग आता है तो उनकी आलोचना सबका शिथिल पड़ जाती है।<sup>४०</sup> इस प्रकार बोल्गा से गंगा की कहानियाँ में ऐतिहासिकता सम्बन्धी सभी तथ्य माय नहीं इसका कारण लेखक के कुछ विशिष्ट दृष्टिकोण ही कहे जा सकते हैं। डा० सुबोधचन्द्र सक्सेना के 'गंगा' में— ऐतिहासिक दृष्टि से 'बोल्गा से गंगा' की अधिकांश कहानियाँ त्रुटिपूर्ण हैं वहीं वास्तविकता में उस प्रमित किया है और कही कालदूषण में आता है।<sup>४१</sup>

बोल्गा से गंगा के अनन्तर बनला की कथा राहुल जी की दूसरी ऐतिहासिक कृति है। राहुल जी ने इस संग्रह की कहानियाँ में सत्य प्रथा इतिहास परव को प्रधानता दी है। हर गाँव की आपसी रीति-रिवाज कथाएँ होती हैं जिनका बाल्यकल्पना और भी माहक बना देती है। हो सकता है मेरे लिये भी बनला की कथाएँ आकर्षक मान्य हों। पर सत्य कल्पना में भी अधिक सुन्दर होता है।<sup>४२</sup> प्राक्कथन में बनला की पुरातत्त्व सम्बन्धी सामग्री का भी उल्लेख है जिसमें रचना की ऐतिहासिकता स्पष्ट होती है।<sup>४३</sup> बोल्गा से गंगा की तरह ही बनला की कथा भी जन जीवन का इतिहास है। इन कथाओं में १३०० ई० पू० से लेकर १९५७ ई० तक बनला के जन-जीवन का इतिहास निहित है। यही इस पुस्तक की सर्वप्रमुख विशेषता है।

बनला की कथा की ऐतिहासिकता असंदिग्ध है। लेखक ने प्रत्येक कहानी के प्रारम्भ में उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया है। विशेषी (१३०० ई० पू०) में बनला के आसपास की भूमि का वणन है और सिराज, निपात तथा

दमित जाति का जीवन अंकित है। 'कान्तिधाम' में ७०० ई० पू० का बनला का स्तिष्ठान है, इस समय यह भूमि आर्यों के हाथ में थी। 'बड़ी रानी बहानी' में २५० ई० पू० के मौर्य युग के राजा की विजया नगरी का वर्णन है। इस कहानी का ऐतिहासिक आधार बड़ी (तालाव) की ईंट है। दक्षिण ३०० सन सी० के समय की सिन्धु नगरी और कणहट्ट (बनला) से सम्बन्धित है। अन्ततः बहानी में गुप्तकालीन सिन्धु का वर्णन है। गुप्तकाल का समय न केवल की दृष्टि से स्वर्ण-युग कहा है। समदरावा' में तुर्क के आग्राचार का वर्णन है। नरमय सेरगाह के समय की कथा है। सन १० में बनला में स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता का प्रभाव अंकित है। स्वराज्य' में लेखक आधुनिक बनला का चित्र प्रस्तुत करना है। बनला एक साधारण-सा ग्राम है पर इस गांव के पीछे कितना विस्तृत इतिहास छिपा है, उसे देख सकता राहुल जम मनोपों का हो काम है।

इस दा कहानी-मग्राह के अतिरिक्त सतमी के बच्चे समूह की 'डीह बाबा' तथा 'स्मृतिज्ञान कीति' कहानियाँ भी इतिहास तत्त्व मुख्य हैं। 'डीह बाबा' में भारत के प्राचीन इतिहास की भाँवी है। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा के शब्दों में—“इसमें भिन्न भिन्न जातियों का बाह्य ने आना, भारत में भर जाति तथा आर्यों का सम्पर्क तथा संघर्ष, जातियों का स्थान परिवर्तन और यवन शासकों द्वारा हिन्दू जातियों का धर्म परिवर्तन आदि विषयों की चर्चा हुई है।” स्मृति ज्ञानकीति में भारतीय पण्डितों की कथा है जो विद्वत् में जाना है और वहाँ अनेक संस्कृत ग्रन्थों का निष्कर्ष भी अनुवाद करता है।

राहुल जी की कहानियों की ऐतिहासिकता के विवेचन के उपरान्त यह कहना सबथा उपयुक्त है कि कुछ ऐतिहासिक श्रुतियाँ के हान हुए भी राहुल जी ने अतीत कहानियों में इतिहास-तत्त्व का सफलतापूर्वक निवाह किया है। मानव-जीवन के सामाजिक विकास का इतिहास प्रस्तुत कर उन्होंने कहानी को नये आयाम प्रदान किया है। स्वयं राहुल जी के शब्दों में, 'मानव आज जहाँ है वहाँ वह प्रारम्भ में ही नहीं पहुँच गया था, उसके लिए उसे बड़े बड़े संघर्षों से गुजरना पड़ा। मैं हरे हरे काल के समाज का प्रामाणिक चित्र चित्रित करने की कोशिश की है।’<sup>१</sup> वस्तुतः राहुल जी ने युग युग के प्रसिद्ध मानव जीवन की अनन्तता का आर-आर<sup>२</sup> भी कहा है। ठाकुरप्रसाद सिंह लिखते हैं—‘राहुल जी ने ऐतिहासिक कहानियों की श्रृंखला है, उनका इतिहास-ज्ञान वैज्ञानिक है।’ वाक्या में यथा का एक अर्थ है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।<sup>३</sup>

### (ए) सामाजिक कहानियाँ

सामाजिक कहानी का उपजीव्य समाज है। इसमें सम्पूर्ण समाज का रहस्य एवं स्वरूप छिपा रहता है और इससे पता हमारे समाज के, सामाजिक समस्याओं के प्रतिनिधित्व करने वाले होते हैं। राहुल जी ने ऐतिहासिक कहानियों के अतिरिक्त सामा-



पात्र और परिस्थितियाँ व चित्रण से कहानी का निर्माण करता है। फिर भी व्यापक रूप में बयानक का सहारा किसी-न किसी रूप में कहानीकार का अपनी कहानी में लेना ही पड़ता है। कहानी जीवन की एक भाँकी है। उसमें जीवन के किसी एक दृश्य का उद्घाटन होता है। इस प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कहानीकार पात्र के व्यक्तित्व के उस मध्यबिंदु को व्यंजित करता है, जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन चालित होता है। सारी बयावस्तु में केवल एक ही संवेदना रहती है। घटनाओं की प्रचुरता उसमें नहीं होती। घटनाओं के सञ्चालन के विषय में यह आवश्यक है कि वे परस्पर सम्बद्ध होनी चाहिए। समस्त घटनाएँ एक साथ बंधकर एक तारतम्य से ऊँचाई की ओर बढ़ती हैं और वहाँ पहुँचकर अपने सौंदर्य का प्रकाश सहसा ही बिखेर देती हैं। प्रासंगिक घटनाएँ कहानी का अग्रगण्य हैं।

राहुल जी की कहानियाँ में निश्चित एक अवबद्ध बयानक का प्रभाव है। क्या प्रवाह उनमें नहीं है। अनेक घटनाओं एवं प्रसंगा की योजना के कारण क्या की गति विच्छिन्न हो जाती है और कहानी का कहानीपन उनसे सुप्त हो जाता है। क्या प्रवाह को विराम लगाकर राहुल जी पात्रों के गुणों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक उदाहरण, प्रसंग एवं घटनाएँ प्रस्तुत करने लगते हैं। 'कुमार बुरजय' कहानी में कुमार के मधुपुरी के बिनासी जीवन के चित्रण के साथ ही भयंकर रियामनी राजाओं की भाँकी भी है। कुमार के पिता का वध और कुमार के कुत्ते पालने का व्यसन प्रमत्त कहानी में दो और तीन पृष्ठों में वर्णित है। इसी प्रकार 'पुजारी' कहानी में पुजारी की धार्मिक उदारता का उल्लेख करते हुए लगभग उस द्वारा किए गए 'चिनगी चमार के दाह-संस्कार' के प्रसंग को भी सम्मिलित करता है।<sup>११</sup>

पड़वाया कहानी में लगभग पड़वाया के वध पर बैठ साधना करने के प्रसंग में अपने मित्र धूमकंड स्वामी हरिहरगान्ध की कहानी सुनाने लगता है।<sup>१२</sup> इसी प्रकार 'मुनतान कहानी' के मुनिया का दंगल लेकर मियाँ और मुनिया की क्या कहानें लगती हैं और मधुपुरी के मुसलमानों की दगा में परिचित करवाने के लिए एक मुसलमान का पत्र भी उद्धृत करता है।<sup>१३</sup> तब प्रसंग राहुल जी की कहानियाँ के प्रवाह में बाधक सिद्ध हुए हैं और इनसे बयावस्तु में अवबद्धता का प्रभाव भा गया है।

एक भक्ते कहाना का आरम्भ धार्मिक भावधन होना आवश्यक है। पहला वाक्य पढ़ने ही में पाठक कहानी की ओर धनाग्रत हो जाय तो उस कहानी का आरम्भ सफल माना जायेगा। राहुल जी की अधिकांश कहानियाँ का आरम्भ इस कसौटी पर सग नहीं उतरता। 'शेह बाबा कहानी' कुन तरह पृष्ठों की है त्रिभुज से घाट पृष्ठ भूमि के हैं। इस प्रस्तावना भाग में केवल नर नाति के विराम तथा कर्तव्य के इतिहास को प्रस्तुत करता है।<sup>१४</sup> 'कनका की क्या' की सभी कहानियों की एक पीठिका के रूप में इतिहास का वर्णन है। 'बदुरगो मधुपुरी' की



प्रधिराग कहानियाँ के आरम्भ में भी लम्बी प्रस्तावना है। हाथ बुगगा कहानी के पहले ढाई पृष्ठों में मधुपुरी के सलानिया का वर्णन है।<sup>१८</sup> कुमार दुराग के आरम्भ में सामंतवाद सम्बन्धी भूमिका है।<sup>१९</sup> 'गुरुजी' कहानी के आरम्भ में मथिल पण्डितों के आचार व्यवहार से सम्बंधित लम्बी प्रस्तावना है।<sup>२०</sup> 'बोल्गा से गंगा' का भी कई कहानियाँ इस ढाँचे से मुक्त नहीं हैं।<sup>२१</sup> इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ का आरम्भ वर्णनात्मक चमत्कार, गूँथ और साधारण है। कहानी के कथानक का प्रस्तावना अक्सर विस्तृत है जिसमें घटनाक्रम और पात्रों की परिस्थिति का पूरा परिचय रहता है। यदि यह कहा जाए कि राहुल जी की कहानियाँ का आरम्भ निबन्धात्मक है तो असमीचीन न होगा। प्रत्येक माकड़ लिखते हैं य अपनी कहानियाँ भी निबन्धकार की तरह से लिखते हैं जबकि निबन्धात्मक भी कहानी जैसी सूत्रमयता रहती है।<sup>२२</sup> कनला की कथा की संन ५७ और स्वराज्य दीपक कहानियाँ में निबन्धात्मकता का तत्त्व अधिक है।

आरम्भ में ही नए कहानी के काल में भी राहुल जी ने सामाजिक राजनैतिक स्थितियों का विरोध व्यक्त किया है। सिद्धिचंद कहानी में विमर्श और शला के बीच समाज की स्थिति पर लम्बी बातचीत है।<sup>२३</sup> मुदास कहानी में राजतंत्र की हीनता और गणतंत्र की उत्कृष्टता से सम्बद्ध चार पृष्ठों का व्यापक विवाद है।<sup>२४</sup> मंगलसिंह कहानी में मंगलसिंह बगानिक आदिप्यारों के नाम ही गिनाता शुरू कर देता है।<sup>२५</sup> इस प्रकार राहुल जी की कई कहानियाँ में निबन्ध की भाँति होने लगती है। कहानी में भूमिका घातक है। आरम्भ से ही गति भर भर जात तक पहुँचना चाहिए। उसमें विषयान्तरता का स्थान नहीं होता। राहुल जी की अधिकांश कहानियाँ इसी दुबलता के कारण कथालिपि का सफल निबन्ध नहीं बन पाए।

राहुल जी की कुछ कहानियाँ का आरम्भ आकषक एवं जिज्ञासामूलक भी है। 'बोल्गा से गंगा' की कई कहानियाँ का आरम्भ प्रकृति चित्रण से हुआ है जो अत्यंत चित्रात्मक एवं सुंदर हैं। सभी कहानी भी इस दृष्टि से सुंदर हैं। इसकी प्रथम पंक्ति है—यह इस जीवन के लिए नहीं पड़ा हुई थी। कई बार इस दलदल से निकलने की कांतिश उमने की।<sup>२६</sup> इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ कथा आरम्भ की दृष्टि से विशेष आकर्षक नहीं। सभी तथा बोल्गा से गंगा की कुछ कहानियाँ इस का अर्थवाद अवश्य हैं जिनमें आकर्षण और लक्ष्य संकेत की विनिष्टता प्राप्य है।

राहुल जी की कहानियाँ में नाटकीयता का भी प्रायः अभाव है। कथानक में आरम्भ विकास चरमसीमा जैसी स्थितियों का अस्तित्व नहीं है। स्मृतिमानकीति में एक भारतीय पण्डित के जीवन की झंझटें हैं यहाँ विषय का वर्णन मात्र है।<sup>२७</sup> 'ठाकुर जी (बहुरंग मधुपुरी) रामगोपाल (सतमा के बच्चे) त्रिबणी (कनला की कथा) आदि में कथा के आरम्भ विकास संधि चरमसीमा आदि की कहीं स्थिति नहीं है। कहानी की समाप्ति चरमसीमा पर हो जानी चाहिए किन्तु

गढ़न जी ऐसा नहीं करते। प्रभा राहुल जी की सर्वोत्कृष्ट कहानी मानी जाती है इस कहानी की परिसमाप्ति प्रभा की मृत्यु के साथ हो जानी चाहिए, परन्तु तत्त्वक अश्वघोष ने नेप जीवन की घटनाएँ उपसंहार के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ घटनाश्रया का स्थूल एवं विनाश वणन मान हैं। वे घटनाश्रया का विवरण और पाना का इतिवृत्त प्रस्तुत करती हैं।

राहुल जी की कहानियाँ सुखान्त एवं दुःखान्त दोनों प्रकार की हैं। सुखान्त की अपेक्षा दुःखान्त कहानियाँ अधिक मासिक है। 'सतमी के बच्चे' की अपेक्षा कहानियाँ हृदय को कर्णा में द्रवित करने वाली है। इस महत्त्व की अपेक्षा कहानियाँ यथा सतमी के बच्चे, डीह बाबा पाठक जी राजवनी, दार्शनिक आदि कर्णाम्ब हैं साथ ही हृदय में निराशा और विषाद के स्थान पर आशा और विद्रोह की भावना जगल करने वाली है। 'बोल्गा में गया सगह की मुरमा', 'मगनसिंह और भुमर दुःखान्त हैं। 'नन्दा की कथा' में 'कत्ताकार' का मृत कामगिर है। इसी प्रकार 'बट्टरगी मधुपुरी में डारा और 'बम्पा' दुःखान्त हैं। ये दुःखान्त कहानियाँ पाठक को कर्णाभिमत करने में समर्थ हैं।

कथा शिल्प की दृष्टि में राहुल जी के अधिकांश प्रयत्न अमफल हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ निबन्ध सी लगती हैं। कथा कहने का ढंग इनमें अविकसित है, कथात्मक गति मोटा और कौतूहल का अभाव है। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में—विशेष रूप में 'मुदाम और साधारणतः 'नागदत्त' तथा 'भुरमा को छोड़कर शेष कोई भी प्रसंग कहानी के गौरव का अधिकारी नहीं है। उनमें घटनाश्रया या मनोवृत्तियाँ के उत्थान-पतन का संवया अभाव है—चरमस्थिति का वही भी पता नहीं है।<sup>१८</sup> डॉ० नगेन्द्र के 'बोल्गा में गया' के लिए कह गये हैं कि 'उनकी सभी कहानियाँ के लिए उपयुक्त है।

इतना होने हुए भी राहुल जी की कहानियाँ में राचकता का तत्त्व मिलता है। 'हाथ बुटापा में प्रभो-बाला का अपने बुटापे को छिपाने के लिए शृंगार रचना का प्रसंग कुमार दुरजय' में सादराम का अकन, ठाकुर जी में ठाकुर की तपस्या का वणन कलाभार कहानी तथा सतमी के बच्चे की कहानियाँ में व्याज कर्णा राहुल जी की कहानियाँ में मासिकता एवं रोचकता लाने वाले प्रसंग हैं। बोल्गा में गया की कहानियाँ की राचकता के विषय में डॉ० नगेन्द्र लिखते हैं—राहुल जी ने स्थान-स्थान पर मानवीय तत्त्व का आराधन करके इन कथाश्रया में रक्त और मांस भरने का प्रयत्न किया है जिसे वे हृदयग्राही हो गई है। हाँ, यह अत्यन्त मानना पड़गा कि एतिहासिक तथ्या में रक्त भरने का राहुल जी के पास केवल एक ही साधन है सबसे निम्न प्रयोग बार-बार दुहराया गया है। प्रत्येक युग के जीवन-नाटक के सूत्रधार रूप में बोद्ध प्रेमी प्रेमिका ही रसमय पर अवतरित होते हैं और कहानी के मध्य में उनकी प्रगाढ़ प्रेम श्रीहार्द, विनायक चुम्बना की बोझाएँ और अन्त में किसी

न किसी रूप में, उनका अनन्त जीवन में लय हो जाना घटना चक्र में रस-संचार करता है।<sup>११</sup> सबसे बड़े अनिश्चित राहुल जी के पास तथावस्तु में राचनता लाने का दूसरा उपकरण वातावरण की सृष्टि है। इस विषय में डा० ब्रह्मदत्त गर्मा का कथन द्रष्टव्य है— 'कथावस्तु में वातावरण विशेष की सृष्टि द्वारा कहानी में रोचकता आ जाती है।'<sup>१२</sup> विशिष्ट प्राकृतिक वातावरण का सजीव चित्रण राहुल जी की कहानियाँ की सौंदर्य वृद्धि में अत्यधिक सहायक हुए हैं।

राहुल जी की कहानियाँ घटना प्रधान हैं और वर्णनात्मक एवं इतिवृत्तात्मक रूप में प्रस्तुत हैं। यद्यपि कथाशिल्प का उनमें अभाव है पर युग-युग तक प्रसरित मानव जीवन की अनन्तता का कहानियाँ के रूप में प्रस्तुत करना राहुल जी की ही विशेषता है।

कथावस्तु की दृष्टि से राहुल जी की कहानियाँ का महत्त्व इसलिए है कि वे अपनी एक-एक कहानी में एक युग की कहानी कहते हैं। वह कहानी कल्पित कम तथा पर आधारित अधिक है। इसलिए राहुल जी की कहानियाँ प्रभाव और प्रसंग की कहानियाँ की भाँति संगठित नहीं हैं। राहुल जी का उद्देश्य इतिहास वर्णन है, जिसका वे कथात्मक रूप में प्रकट करते हैं। डा० ब्रह्मदत्त गर्मा का कथन इस विषय में सत्य प्रतीत होता है— राहुल की कहानियाँ में भारतीय सृष्टि तथा सम्प्रदाय का विकास प्रेम का इतिहास उपस्थित किया गया है। प्रायः सृष्टि का भिन्न भिन्न विदेशी सृष्टियों से जो सम्पर्क प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान समय तक हुआ तथा मानवता ने जो विकास किया उन सबका चित्रण इन कहानियों में है।<sup>१३</sup> राहुल जी की कहानियाँ के कथानक इतिहास की भित्ति पर आधारित वर्णन एवं आर्थिक असमानता का चित्रण करने वाले हैं। उनमें मानसिक ऊर्ध्वोत्थान के चित्रण के प्रति आग्रह लक्षित नहीं होता। वस्तुतः राहुल जी स्थूल कथानक देकर किसी विचारणीय समय या यथाथ स्थिति को स्पष्ट करने के प्रति आग्रही दिखाई देते हैं जिससे उनका कथाशिल्प सम्पन्न नहीं बन पाया।

### पात्र और चरित्र चित्रण

कहानी के कला विधान में पात्रों का चरित्रांकन का महत्त्व अत्यधिक है। पात्र कथावस्तु के सजीव संचालक हैं जिनसे एक ओर कथावस्तु का आरम्भ विकास और अंत होता है और दूसरी ओर जिनसे हम कहानी में आत्मीयता प्राप्त करते हैं।<sup>१४</sup> आधुनिक कहानी में तो पात्र के चरित्र का उद्घाटन करना कहानी का लक्ष्य बन गया है। पात्र के व्यक्तित्व को उभार कर पाठकों के सामने ला देना कहानी का सफलता मानी जाती है। स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत पात्र और उसका चरित्र चित्रण कहानी में सहज विद्वन्मयीता ला देता है।<sup>१५</sup> डा० श्यामसुन्दर दास चरित्र चित्रण की प्रक्रिया में विश्लेषणात्मक तथा अभिनयात्मक दोनों पद्धतियों की उपयोगिता स्वीकारते हैं।<sup>१६</sup>

राहुल जी की कहानियाँ म पात्र और चरित्र चित्रण का तत्त्व अभिभावक बम उमरा है। उनकी कहानियाँ प्रमुखतः वातावरण प्रधान कहानियाँ हैं और उनमें इस तत्त्व का इतनी प्रमुखता प्राप्त हुई है कि अथ तत्त्व गौण पड़ गया है। दूसरे स्थान पर उनकी कहानियाँ म उनके विचारक एवं इतिहासकार के रूप का स्थान मिला है यही कारण है कि उनकी कहानियाँ म ऐतिहासिकता एवं उनकी विचारधारा मबत्र मुखरित है। राहुल जी की कहानियाँ म पात्र उनके अपने विचार एवं जीवन-दृष्टि के अनुकूल हैं। अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने पात्रों का निर्माण किया है। प्रमुखतः उनके पात्र ममाज-मुधारक हैं। मुन्नाम नागन्त मुपण योधेय रावा नूरदीन, मगलमिह रेखा मगत सफर, मुमर लापा प्रभा मुग्धा—य ममा पात्र कहानीकार के विचारों का बाह्य मातृ है। य सभी पात्र समाज के अग्रगण्योत तत्त्वा का विरोधी हैं। वे अज्ञातवाद, यन्त्रवाद पुरोहितवाद पूजीवाद एवं सामाजिक विषमता के विरोधी हैं और लखक की मानवतावादी एवं साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल हैं। बहुरंगी मधुपुरी का पात्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि म विभिन्न स्तरों एवं वर्गों के हैं, उनका चयन-भेद प्रायः सीमित है। 'सतमी का बच्चे के पात्र प्रायः एवं ही प्रकार के हैं। अभिप्राय यह है कि राहुल जी न अपनी कहानियाँ म ऐसे पात्रों का ग्रहण किया है जो उनके उद्देश्य एवं विचारधारा के अनुकूल हैं।

डा० लक्ष्मणारायण लाल पात्रों के प्रमुखतः दो रूप मानते हैं—ऐतिहासिक एवं सामाजिक।<sup>५१</sup> राहुल जी के अधिकांश पात्र या तो इतिहास से लिए गए हैं या उनके अपने जीवन अनुभव म आये सामाजिक पात्र हैं। सतमी के बच्चे के पाठक जी, पुजारी जी दलसिंहार डीह बाबा जसिरी, राजबली तथा रामगोपाल आदि पात्र राहुल जी का पितृग्राम तथा ननिहाल के सुपरिचित पात्र हैं। बहुरंगी मधुपुरी के पात्र राहुल जी के मसूरी निवास म उनके सम्पर्क म आये पात्र हैं। बनला की बच्चा के जयन्त, दबपुन श्रीनर मयदबाबा आदि पात्र तथा बाल्मीकि स गंगा के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक हैं। इस प्रकार लखक ने इतिहास प्रसिद्ध एवं जीवन अनुभव म आये सामाजिक पात्रों की अपनी विचारधारा के अनुकूल ढाल कर प्रस्तुत किया है। लोकोत्तर पात्र उनकी कहानियाँ म नहीं हैं। राहुल जी न ऐतिहासिक पात्रों का चरित्राकन म अपनी विविष्ट कल्पना शक्ति और पाण्डित्य द्वारा उनके विविष्ट व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है और उनके सामाजिक पात्र प्रायः अगणित पात्र हैं, वे धनी निधन एवं सामान्य वर्गों म विभक्त हैं।

डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा पात्रों के चरित्र चित्रण की प्रक्रिया म मनोवशा निवृत्ता के उपयोग पर बल देते हैं<sup>५२</sup> परन्तु राहुल जी का ध्यान पात्रों का चरित्राकन करत समय उनके चरित्र का बाह्य रूप पर ही केन्द्रित रहा है। सफलतापूर्ण चरित्र चित्रण के लिए लखक म जिस मनावैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है वह राहुल जी म दृष्टिगोचर नहीं होती। उन्होंने पात्रों का चरित्राकन म पात्रों की आवृत्ति, बग भूपा तथा उनके बाह्य श्रियावलाप का ही चित्रण किया है। पात्रों की

प्रवर्तिगत विशेषतायां उनकी प्रतिक्रियायां एव उनके अतमन का विश्लेषण नहीं किया। निशा' कहानी में बाह्याकृति का एक रेखांकन द्रष्टव्य है— उसके लाल भल छुट कपोल की अरुण श्वेत छावि, ललाट को बचाते बिखरे हुए लट विहीन पाण्डु श्वेत केश अल्पमासल पथुल वक्ष पर गाल गोल श्यामलमुख स्तन, अनुदर कश कटि पुष्ट मध्यम परिमाण नितम्ब पेशीपूण वतुल जघा श्रमधावन परिचित हलाकार पेण्डुली।<sup>५१</sup> इसी प्रकार कुमार दुरजय मुरया<sup>५२</sup> जीता पाठक जी<sup>५३</sup> किरात सरदार अमाना<sup>५४</sup> आदि पात्रों का चरित्र चित्रण उनके बाह्य सौंदर्य, वस्त्रभूषा आदि के अद्भुत द्वारा किया गया है। पात्रों के गुणों एवं क्रियाकलाप का वर्णन राहुल जी ने स्थूल ढंग से वर्णनात्मक शली में ही प्रस्तुत किया है। जयन्त के क्रियाकलाप वर्णन का एक उदाहरण द्रष्टव्य है— 'जयन्त सुवाहु का वीर पुत्र था—वीरता और शौर्य में पिता के अनुरूप। युद्ध वर्जित होने के कारण जयन्त अपनी निर्माकृता का परिचय मृगया के क्षेत्र में ही देता था। वह पचानन के ग्रामने-सामने खड़ा हो उसका शिकार करता था।'<sup>५५</sup> इस प्रकार राहुल जी की दृष्टि चरित्रांकन के बाह्य रूप तक ही सीमित रही है। पात्रों के अंतरंग का विश्लेषण उन्होंने नहीं किया। प्रवाहण सफ़ेद सुमर जस विचारणील पात्रों के अतमन का विश्लेषण भी उन्होंने नहीं दर्शाया।

बाह्य चरित्रांकन में राहुल जी के विभिन्न पात्र साम्य रखते हैं। नारी-पात्रों के सौंदर्याङ्कन में एक जैसी विशेषतायें प्रकट की गई हैं।<sup>५६</sup> बहुरंगी मधुपुरी के अधिकारी पात्र समान चरित्र रखते हैं। महाप्रभु पेड़ बाबा, रायबहादुर कुमार दुरजय, प्रमादवाला मेमसाहब भीनाली आदि पात्र स्वार्थी एवं विलासी हैं। गोलू कमलसिंह राउत रुपी टोरा आदि पात्र भाग्यवादी एवं विपन्न हैं। विविध पात्रों की चरित्रगत समानता पाठक पर विशेष प्रभाव डालने में असमर्थ है।

चरित्र चित्रण के लिए व्यवहारित चार साधना का उपयोग किया जाता है— वर्णन सकेत कथोपकथन और घटना काय-यापार। इनमें सकेत और कथोपकथन द्वारा चरित्र चित्रण की गली सर्वाधिक कलात्मक स्वीकार की जाती है।<sup>५७</sup> राहुल जी ने प्रमुख वर्णनात्मक शली में चरित्र चित्रण किया है। इस विषय में डॉ० ब्रह्मदत्त गर्मा का कथन है— राहुल जी ने पात्रों की विपत्तियों का घटनाओं के सहार उपस्थित किया है। चरित्र चित्रण प्रत्यक्ष और वर्णनात्मक है।<sup>५८</sup> सकेतात्मक-शली का उनमें अभाव है। कहा-कही काय व्यापार एवं संवादात्मक-शली में भी राहुल जी ने चरित्र चित्रण किया है पर अधिकारित वे वर्णनात्मक ढंग से ही चरित्रांकन करते हैं। राहुल जी की चरित्र चित्रण कला अविकसित ही कही जा सकती है। आधुनिक कहानीकारों की चरित्र चित्रण के क्षेत्र में प्रगति स्थूल से सूक्ष्म का द्वार चरित्र के बाह्य संपर्क में आन्तरिक संपर्क की ओर गतिमान है वह राहुल जी में नहीं।

## संवाद

संवाद मूलतः नाटक का उपकरण है, पर सामान्यतः अथ समी रचना प्रकारा में भी इसका प्रयोग अनिवार्य है। कहानी में संवादों की योजना क्या विनास चरित्र चित्रण और वातावरण निर्माण के लिए अपेक्षित है। कहानी में संवादों में मनोवैज्ञानिकता, संक्षिप्तता, यथार्थता, व्यंग्य विनोदोदात्तता का गुण होना चाहिए। संक्षिप्त संवादों में राजनीति, समाज, धर्म, यथार्थ और आदर्श का संकेत होना चाहिए ताकि पाठक के अन्तःकरण पर पात्रों के विश्वासों का चित्र अंकित होना जाए। डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा के शब्दों में—'कहानी में इसका सघु प्रसारी, यदर्थपूर्ण प्राक्कथक और चरित्रकारी प्रयोग ही इष्ट होता है।'

राहुल जी की अनेक कहानियाँ संवादों से आरम्भ होती हैं। शिवा भगिरा, प्रवाहन नागदत्त बाबा नूरदीन (बोल्गा से गया) धुरविन (सतमो के बच्चे), लिस्विट्क डोरा (बहुरंगी मधुपुरी) कहानियाँ संवादों से ही आरम्भ होती हैं। कुछ कहानियाँ में कथावक्ता द्वारा क्या क्या विवरण दृष्टा है। भगिरा मुदास, प्रवाहन बंधुल मल्ल, प्रभा, सुरया, रत्नामंगल, सफर सुमेर कहानियाँ में संवाद-तत्त्व प्रधान है।

राहुल जी ने संवादों का उपयोग कथानक के विकास तथा पात्रों के चरित्रों को बनाने के लिए किया है। मुदास कहानी में मुदास तथा अमाला के संवाद संक्षिप्त एवं सजीव हैं। दोनों की प्रथम भेंट गाव के कुएँ पर होती है। मुदास अपनी यात्रा के विषय में बतलाता है कि वह काम की तलाश में इधर उधर घूम रहा है। दोनों में परस्पर प्रेम का उदय होता है। अमाला उसे अपने पिता के पास ले जाती है। वह भी मुदास की बातों से प्रभावित होकर उस काम पर सगा लेता है। पाठकों के मन में संवादों में सजीव एवं सजीव हैं क्या का गति देते हैं और मुदास के चरित्रांकन में सहायक हैं। इस प्रकार के सहज संवादों राहुल जी की कहानियों में यत्र-तत्र बिखरे हैं। सोफिया और नागदत्त की प्रणय-वार्ता का एक चित्र संवादों के माध्यम से प्रस्तुत है—

'यह भाला मैंने प्रियतम के लिए बनाई है।'

'बहुत अच्छी भाला है, सोफी।'

किन्तु मालूम नहीं उसे कसी लगेगी।

'क्यों बहुत अच्छी लगेगी।'

'उमरे पीले के, और यह भाला अनिश्चित गुलाबी की है।'

सुंदर मानूँगी।'

जरा तुम्हारे गिर पर रख कर देख लूँ।

तुम्हारी मर्जी। मेरे भी के पीले हैं।

इसी प्रकार संवादों सुरया और कमल की प्रणय-वार्ता में सुर तथा दिवा के

प्रेमालाप<sup>१०</sup> में देखे जा सकते हैं। स्मृतिज्ञान की नि तथा डोन् मा के सवादा में<sup>११</sup> भी स्वाभाविकता एवं सजीवता है। ऐम तपु सवाना में लखक कथा की गति दे सका है और पात्रों का चरित्राकन भी कर सका है।

निती विचारधारा एवं दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति के लिए भा राहुल जी ने सवाना का उपयोग किया है। यहाँ राहुल जी के पात्र लेखक की विचारधारा का वाहक बन जाते हैं और सवाद उनकी अभिव्यक्ति का उपकरण। कालिदास और सुषण योधय के सवादों में राजतंत्र की विवहणा और गणराज्या की आशा है।<sup>१२</sup> सुनास और दिवोदास की वार्ता का विषय भी प्रायः यही है।<sup>१३</sup> 'शुमर' कहानी में सवाना में गांधीवादा धम, भगवान विषयक विचारों को लेखक ने सवादों के माध्यम से व्यक्त किया है।<sup>१४</sup> 'सफर' कहानी में गांधीवादा ग्रहिता की निरक्षरता की ओर संकेत है।<sup>१५</sup> प्रमा कहानी के सवाद लेखक की बौद्ध धम के प्रति आस्था को व्यक्त करते हैं।<sup>१६</sup>

लेकिन बौद्ध सबको विरागी तपस्वी और मिथु बनाना चाहते हैं।

'बौद्धों में गृहस्थों की अपेक्षा मिथु बहुत कम हाते हैं और बौद्ध गृहस्थ जीवन का रस लेने में किसी से पीछे नहीं रहते।

'इस देश में और भी कितने ही धम हैं आखिर यवना का बौद्ध धम पर इतना पक्षपात क्यों? यह फिर भी समझ में नहीं आता।

यहाँ बौद्ध ही सबसे उत्तम धम है। जब हमारे पूर्वज भारत में आए, तो सब म्लेच्छ कहकर हमसे घणा करत थे। आश्रमणकारी यवनों की बात में नहीं कर रही हूँ यहाँ बस जाने वाले अथवा 'यापार आनि' के सम्बन्ध में आने वाले यवनों के साथ भी यही दगाव था किन्तु बौद्ध उनसे कोई घृणा नहीं करते।

यहाँ सवादों का उद्देश्य न तो कथा की गति देना है और न पात्रों का चरित्र पर प्रकाश डालना है। लेखक कथा विकास को विराम लगाकर अपनी विचारधारा को अभिव्यक्ति देता है।

वातावरण सजना के लिए भा लेखक ने सवादों का उपयोग किया है। दिवा कहानी के सवादों तत्कालीन आयपूवजा की युद्धनीति विचार-व्यक्ति एवं धम प्रवणता के वातावरण को प्रस्तुत करत है।<sup>१७</sup> सुरया और कमल के सवादों सा-दकालीन सागर का दृश्य अंकित करने में सहायक है।<sup>१८</sup> लिपिदक कहानी में मुहल्ल की स्त्रियों के सवादों द्वारा बदलते हुए फर्शों पर टीका टिप्पणी है।<sup>१९</sup>

राहुल जी की कहानियाँ में सवादों सम्बन्ध एवं विचारों के भार से लदे होने के कारण बोझिल बन गए हैं। जहाँ प्रणय प्रसंगा में संक्षिप्त सवादों के द्वारा लेखक माहक चित्र प्रस्तुत करता है<sup>२०</sup> वहाँ लम्बे सवादों कथा विकास में बाधक एवं चरित्राकन की दृष्टि से अनुपयोगी है। सफर और उससे मित्र शहर के सवादों ग्यारह पृष्ठों के

है जिनमें दंग की राजनीतिक स्थिति का अवन है। अगर प्रश्न करता है और सफर उनका उत्तर देता है। वातावरण विन्नन प्रमाण एवं 'गुप्त' हैं<sup>६८</sup>। 'गुप्त' कहानी के मकान का भी यही स्थिति है<sup>६९</sup>। हम कहानी से एक उद्धरण यहाँ प्रस्तुत है—'ता आप नहीं चाहते कि अखिल सचण सब एक हा जाए' ? बाल न हम एक कर दिया है कि तु गांधी जी के प्रिय धर्म, भगवान पुराणपथिता उस हम समझन नहीं देती। मुझे दलित, भोभा जी, मर रग मेहुआ नाक ज्यादा पतली ऊंची और आपका रंग बाला, नाक बिल्लुल चपटी। हमरा क्या अर्थ है ? मर म आप रक्त अधिर है। आपम मेरे पूवजा का रक्त अधिर है। आपका पूवजा न वण-व्यवस्था की लाह की दीवार खड़ी कर बहुत चाहा कि रक्त-भूमिभरण न होने पाय, किंतु चाह नहीं पूरी हुई इसने सबूत हम आप मौजूद हैं। आत्मा और गंगा सट व पुन आपस में मिलित हो गये हैं। धाज वण (रंग) को खतर भगदा नहीं है। आपको बार्द ब्राह्मण जाति में पारिज धरन व लिए तयार नहीं है। सारी बातें ठीक हो जाएं यदि धर्म भगवान पुराणपथिता हमारा पिण्ड छोड़ दें और यह सब तक नहीं हो सकता जब तक कि आपका और गांधी जी जैसे उनके पोषक मौजूद हैं।<sup>१</sup> इस प्रकार के संवाद प्रवचन से प्रतीत हान लगते हैं। इनमें न तो मनावांगानिकता ही है और न ही व्यव्य विनोशात्मकता। फलतः पाठन के अन्त वरण पर पात्रा के विश्वास का चित्र अंकित करने में भी सफल नहीं है।

कथोपकथन में नाटकीयता का गुण होता चाहिए परन्तु राहुल जी के कहानियों में नाटकीयता का अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। उनमें संक्षिप्तता, पनापन एवं सजीवता का प्रायः अभाव है। नानासाहब और भगलसिंह व संवाद नारस है<sup>१</sup>। सुमर और रामनाथ भोभा की शापन एवं गोपित सम्बन्धी बातों में भी नाटकीयता नहीं है।<sup>३</sup> कई स्थलों पर सन्निध हाने व बावजूद भी संवाद नाटकीय नहीं। जिस —

और ?

'और हिंदुस्तान का छुआछूत, जात पात, हिंदू मुस्लिम का अंतर मिटाना होगा। दंडन हो हम किसी के हाथ का खान में छूनाछूत का ख्याल रखते ह।'  
नहीं।'

'अधरे जा के भीतर धनी-गरीब के सिवा और छोटी बनी जात पात का कुछ ख्याल ?'

'उही और ?'

'सती बंद करना होगा लाखों औरता को हर साल आठ में जलाना इस क्या तुम समझते हो भगवान क्षमा कर देंगे।'<sup>३</sup>

इस प्रकार न तो लम्बे संवादा में और न संक्षिप्त संवादा में ही राहुल जी नाटकीयता का समावेश कर सके हैं। लम्बे संवाद गम्भीर विषया पर विवेचन करने



वाले हैं अतः बोधिलक्ष्य है। सधु सवाद प्रायः साधारण है। प्रणय प्रसंगा के सवादों में अवश्य नाटकीयता है। 'सतमी के बच्चे में घुरगिन कहानी के आरम्भ के सवादा में भी कुछ नाटकीयता है।' <sup>१४</sup> अधिकांश राहुल जी के सवादा लम्बे एवं घनाटकीय ही हैं।

राहुल जी के सवादों में माया पात्रानुबूल है। ग्रामीण पात्रों के सवादों में लोकभाषा का पुनः है। सतमी के बच्चे के सवादा की भाषा सरल व्यापमयी तथा मुहावरों और लोकाव्यक्तियों से सम्पन्न है। <sup>१५</sup> बाबा मुरदीन कहानी के सवादा लोकाभाषा से युक्त हैं। उदाहरणार्थ एक अंश प्रस्तुत है।

हमारी घट्टीरियाँ तो चादर भी नहीं खती। ऐसे ही छाती तानकर खेत हार में रात दिन घूमती फिरती हैं। उह तो काई उठा नहीं ले जाता।

इज्जतवाले भरा की इज्जत बिगाड़त हैं।

तो पण्डित! हम बेइज्जत वाले हैं और यौन है सोरा इज्जतवाला। <sup>१६</sup> लोकभाषा से प्रभावित इस प्रकार के सवाद सजीव एवं प्रभावपूर्ण हैं। 'बूँ' लाला कहानी के सवाद भी लोकभाषा में हैं। <sup>१७</sup> इसके अतिरिक्त भाषा की पात्रानुबूलता सुरमा कहानी में देखी जा सकती है। मुसलमान पात्रों के सवादों की भाषा में उर्दू फारसी के शब्दों का बाहुल्य है। <sup>१८</sup> 'मम साहब' तथा सफर कहानियाँ में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग है।

राहुल जी की कहानियाँ में प्रयुक्त सवादों के उपयुक्त विश्लेषण के उपरांत यह कहना उपयुक्त होगा कि राहुल जी ने पात्रों के चरित्र विकास के लिए सवादों का प्रयोग किया है। उनके संप्लित एवं सुन्दर कथोपकथन बोल्सा से गंगा की आरम्भिक कहानियाँ में हैं। बाद की कहानियाँ में गम्भीर विषयों का विवेचन होने के कारण उनके सवाद लम्बे हो गये हैं कई स्थलों तक विलम्बपूर्ण होने के कारण नीरस बन गये हैं। कनका की कथा में सतमी के बच्चे तथा घट्टीरगी मधुपुरी में सवाद स्वल्प ही हैं। सवादा की उत्कृष्टता की दृष्टि से राहुल जी की निम्नलिखित, 'बधुल भरल तथा प्रभा कहानियाँ दक्षिणीय हैं।

### वातावरण सृष्टि

कहानी-कला का गैरलक्ष्य वास्तविक जीवन है बाल्यनिक लोक नहीं। वास्तविक जीवन देश काल और जीवन की विभिन्न सत अक्षत परिस्थितियों से निर्मित होता है अतएव इन तत्त्वों का एक स्थान पर सञ्चयन और चित्रण करना कहानी में वातावरण उपस्थित करना है। <sup>१९</sup> कल्प की दृष्टि से कहानी में और विभिन्न रूप से ऐतिहासिक कहानी में वातावरण का अवतारणा अनिवार्य है। इसके बिना कहानी में न तो इतिहास की रसमयता एवं प्राणवत्ता आ सकती है न कहानी

का वह चरम उद्देश्य ही चरिताय हो सकता है, जिसके आधार पर ऐतिहासिक कहानी लिखी जाती है।<sup>10</sup> वस्तुतः लेखन की सज्जन चरित्र का परिचय वातावरण की सृष्टि से मिलता है। वह कहानी में वातावरण की परिवर्तना ऐसी परिस्थिति के रूप में करता है जिसके द्वारा कथानक तथा कथानक का विकास करने वाले चरित्रों के प्रतीक सचेतनात्मक रूप से पहुँचा जा सके।<sup>11</sup>

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ऐतिहासिक कथाकार हैं और उन्होंने इतिहास के प्रस्तरखण्डों को बड़े कोणों से जाँचकर उसके प्रत्येक युग के वातावरण की सजीव सृष्टि की है। "राहुल जी की कहानियाँ इसलिये उत्कृष्ट हैं कि उनमें परिपाक और परिष्कार का सजीव चित्रण है। वस्तुतः उनमें अत्यन्त सूक्ष्म शीर्षक हैं—देगराल का चित्रण ही सर्वप्रमुख है। डॉ० ब्रह्मान्त शर्मा लिखते हैं—'उन्होंने कहानी के लिए जिस कलात्मक रूप का प्रयोग किया उसमें ऐतिहासिकता तथा वातावरण का सौंदर्य है तात्त्विक आकर्षण नहीं।'<sup>12</sup> 'बोला से गंगा, बहुरंगी मधुपुरी', 'सतमी के बच्चे' कनला की कथा सभी में देगराल का चित्रण विशद एवं सजीव रूप से हुआ है। बाल्या से गंगा तथा कनला की कथा में तो देगराल का चित्रफलक अत्यन्त विशाल है। लेखक के व्यापक दृष्टि विस्तार ने ८००० वर्षों तक प्रसरित मानव-जीवन के इतिहास को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इतने विस्तृत ऐतिहासिक पर समग्रतः अधि-कार रखने वाली दृष्टि राहुल जी के अतिरिक्त अन्यत्र दुर्लभ है। राहुल जी वातावरण के कुशल चित्रण हैं।

घटनास्थल—राहुल जी की कहानियाँ में विस्तृत देगराल का चित्रण है घट-उनके घटनास्थल भी विविध हैं। 'बोला से गंगा' की प्रथम पाँच कहानियाँ—निशा, निवा, प्रमताइव, पुच्छून्, पुच्छान का सम्बन्ध बोला और मुवास्तु नदी के मध्य स्थित प्रदेशों से है। इस संग्रह की अन्य पाँच कहानियाँ लक्ष्मिला एवं पटना के मध्य स्थित विभिन्न प्रदेशों एवं नगरों की कहानियाँ हैं। 'कनला की कथा' की सभी कहानियाँ का क्षेत्र राहुल जी नवगुहट (कनला) का ही बनाया है। बहुरंगी मधुपुरी की सम्पूर्ण कहानियाँ का घटनास्थल पवतीप बिलामपुरी मधुपुरी (मसूरी) है। 'सतमी के बच्चे' कहानी संग्रह की कहानियाँ विविध स्थानों में सम्बन्धित हैं। 'सतमी के बच्चे' पाठों की, जमिनी दर्जासंगार का सम्बन्ध पन्ना गाँव से है। 'डीह बाबा व पुजारी' की घटनाएँ काना में घटित हैं। 'राजबली तथा चुरविन' की घटनाएँ कनला के आनवास के गाँव से सम्बन्धित हैं। रामगोपाल का घटनाएँ प्रयाग और लाहौर से सम्बन्धित हैं। इस संग्रह की एक कथा 'स्मृतिमान कीर्ति' का घटनास्थल मोर प्रदेश है। इस प्रकार राहुल जी की कथाओं के विविध घटनास्थल हैं। इन कहानियों में इन स्थानों के सजीव और यथार्थ चित्र प्रकट हुए हैं।

परिचय—राहुल जी ने अपनी कहानियाँ में वातावरण-सज्जन के लिए पर्याप्त उद्योग किया है और इसमें उन्हें सफलता भी मिली है। राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक

स्थितियाँ व सपन अद्भुत के साथ प्रकृति व भी सुन्दर चित्र उनकी कहानियाँ में मिलती हैं।

(क) राजनीतिक स्थिति—राहुल जी की कहानियाँ विभिन्न युगों से सम्बद्ध हैं अतएव उनमें विभिन्न युगों की राजनीतिक स्थिति का अद्भुत हुस्वा है। बागा से गंगा की कालावधि ६००० ई० पू० से सन १९४२ तक है। 'वनला की कथा' का भी काल पर्याप्त विस्तृत है। सतमी के वच्चे में बीसवा सन्नी के प्रथम तीन दशकों की स्थिति का चित्रण है और बहुरंगी मधुपुरी में स्वातन्त्र्योत्तर भारत की भाँका है।

दोस्ती से गंगा की प्रथम पाँच कहानियाँ गंगा दिया, 'भ्रमृताश्रव', 'पुस्तकृत तथा पुस्तधान' में ६००० ई० पू० से २००० ई० पू० की बागा से स्वातन्त्र्य प्रसारित हिन्दी-यूरोपीय जाति के राजनीतिक जीवन की भाँकी मिलती है। यह युग कबीला का युग था आर्य-यूवज छोटे छोटे कबीला (जनों) में विभक्त थे। इन जनो में परस्पर युद्ध होते थे शासन जन समिति द्वारा चलाया जाता था तथा जन के योग्यतम व्यक्ति को महापतिर माना जाता था।<sup>114</sup> महापतिर की प्रधानता होने पर भी जन ही सबस्व था। कालांतर में जन सघर्षों में युद्ध-संन्यापति इन्द्र को जन्म दिया।<sup>115</sup>

अङ्गिरा, मुनिम, प्रवाहण तथा बधुल मल्ल की कहानियाँ में १८०० ई० पू० से ४१० ई० पू० तक की राजनीतिक स्थिति का अद्भुत है। इस काल में आर्य जाति अमुरा से सगाम में विजयी हो तक्षशिला से थावस्ती तक पहुँच जाती है। अङ्गिरा कहानी में अमुरा के राजतन्त्र का वर्णन है। गंधार में गणतन्त्र-प्रणाली है परन्तु धीरे धीरे आर्यों में भी गणतन्त्र के स्थान पर राजतन्त्र को अपना लिया। यह युग गणतन्त्र और राजतन्त्र के संघर्ष का युग है। अतन्त्र प्रमा सुपण योधय दुमुल कहानियाँ में चन्द्रगुप्त मौर्य से हयवधन तक की राजनीतिक स्थिति का चित्रण है। यह युग साम्राज्यवाद का युग है, इस काल में गणराज्य का ह्रास हुआ और राजतन्त्र का विकास। इस काल के शासक स्वभावतः साम्राज्यवादी थे—राज्य की सीमाओं का विस्तार उनका प्रमुख लक्ष्य था। सुपण योधय में कालिदास गणराज्य के स्थान पर साम्राज्यवाद का समर्थन करता है।<sup>116</sup> चक्रपाणि कहानी में पृथ्वीराज और जयचन्द के परस्परिक वगनस्थ का वर्णन है जिसका परिणाम तुर्कों का भारत आगमन है। इस कहानी की घटनाएँ १२०० ई० के आसपास की हैं। बाबा नूरदीन में अलाउद्दीन की शासन स्थिति का उल्लेख है तथा मुरया में अकबरवालीन शासन का। मुगल शासन का लोकप्रिय बनाने के लिए अन्तर हिन्दू मुस्लिम दोनों से समान व्यवहार की नीति अपनाता है।

रेखामयत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन का वर्णन है। 'मंगलमिह' सन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से सम्बद्ध कहानी है जिसमें भारतीय जनता की राजनीतिक चेतना का वर्णन है। सफर और मुगर में दो महायुद्धों की राज

नीतिक स्थिति का अङ्कन है। इस युग में भारत गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह एवं असहयोग आन्दोलन द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति का संघर्ष को जारी रखता है। अंग्रेज रॉबर्ट एक्ट द्वारा भारतीयों का दमन करते हैं। इसी अवधि में जलियाँवाला बाग की घटना भी होती है।

स्वातन्त्र्योत्तर काल का कणन बहुरंगी मधुपुरी और कलकत्ता की कथा की कुछ कहानियाँ में विस्तार में मिलता है। सन १९४७ में भारत स्वतन्त्र होता है जनता की स्थापना होती है। कांग्रेस द्वारा देश की जनता के लिए निर्माण-योजनाएँ बनाई जाती हैं। सरकार को कांग्रेस सरकार को नीतियाँ और अंग्रेजों की नीतियाँ में कोई अंतर दिखाने नहीं पड़ता। वह साम्यवाद का उपासक है और साम्यवाद को ही गोपनीयता का उपचार स्वीकारता है।

(ख) सामाजिक अवस्था — सामाजिक अवस्था के अन्तर्गत समाज की सांस्कृतिक स्थिति, उसने आहार-व्यवहार, वस्त्र-भूषण, रहन-सहन आदि का कणन राहुल जी ने किया है।

राहुल जी ने जिस समाज का चित्रण किया है—वह विभिन्न युगों एवं आदर्शों का है। वह समाज गतिशील है अपनी आदिम अवस्था से विकसित होना हुआ वह आधुनिक युग तक पहुँचा है, उसके विविध रूप एवं स्तर हैं। समाज चित्रण के अन्तर्गत उसकी सामाजिक अवस्था के चित्रण में राहुल जी ने विभिन्न युगों में नारी की स्थिति का विस्तार बताया अथवा किया है। आर्य-जाति में स्त्रियों का पुरुषों की तरह सम्मान प्राप्त था। आर्य पूजा का समाज तो मात्र प्रधान समाज था ही। वहाँ नारी अनस्वामिनी थी। स्त्री आजीवन स्वतन्त्र रहती थी वह पुरुष की जगह सम्पत्ति नहीं थी।<sup>110</sup> आर्य स्त्रियों का वेशाभ्युषण एवं युद्ध में भाग लेने का अधिकार था। लोपा ब्रह्मवादिनी है और मार्गी ब्रह्मवाद धर्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद जैसे सम्प्रदायों पर बल विवाद करने में निपुण है।<sup>111</sup> स्त्रियाँ गृहकार्यों में कुशल हैं उनमें पदों की प्रथा नहीं है। साम्राज्यवादी युग में स्त्री का सम्मान कम होने लगा। वह पुरुषों की विशेषताओं की कामना का बन्धु बनने लगी। रीति-रिवाज में सहस्राब्दी की संख्या में उलट भर जाते हैं। यवना के भारत आगमन के अन्तर्गत नारी की स्थिति और भी नारकीय बन गई। स्त्री को घर की चहारदीवारी में बन्द कर दिया गया और पदों का प्रथा का प्रचलन हुआ। यवन राजाओं एवं सनातनियों द्वारा हिन्दू नारियों का सतीकरण किया जाने लगा।<sup>112</sup> अन्तर्गत की उदार धार्मिक मानों के परिणामस्वरूप अन्तर्जातीय विवाह प्रथा का विराम हुआ। पर हिन्दू नारी की स्थिति में इससे कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ।

बीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज पर अंग्रेजी सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट दृष्टि-गोचर होता है। नारी का इस काल में स्वतन्त्रता मिलती है। परन्तु उसमें विलासिता, शृंगारप्रियता एवं आडम्बर अधिक आ जाता है। नागरिक स्त्रियाँ पदों की प्रथा को

दूर कर पुष्प के समान स्वच्छ जीवन व्यतीत करती हैं। धनी स्त्रिया का जीवन अधिक विलासमय है। बहुरंगी मधुपुरी की अनन नाथियाएँ विलासिनी हैं। मेम साहब अपने बनाव शृंगार पर सबड़ा रुपये खच करती है। होटला में नृत्य करना जुआ खेलना तथा तम्बाको आटूट कराने के लिए पानगोष्ठिया का आयोजन उसके दैनिक कार्य है। साथ ही बहुरंगी मधुपुरी में ऐसी भी निधन स्त्रियाँ हैं जिन्हें अपने एवं अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए वारवनिता बनना पड़ता है। धनी स्त्रिया की विलासिता उनके मनोरंजन का साधन है और निधन स्त्रिया का पेट पालन की मजदूरी।<sup>111</sup> श्रमिक एवं निधन सनमी जसी नारियाँ पेट पालन के लिए दिन रात खेतों में काम करती हैं फिर भी भूल मिटाने के लिए दो कौर धन भी जुटा नहीं पाती।<sup>112</sup> इस प्रकार राहुल की कहानियाँ में आयनाल से लेकर आधुनिक युग की नारी की सामाजिक स्थिति का अवन है।

युगानुद्भूत जाहार-व्यवहार, वेश भूषा रहन सहन के अवन द्वारा राहुल जी की कहानियाँ में सामाजिक परिवेश का यथाथ एवं सजीव चित्रण मिलता है। पक्कीय गुहाघो में रहने वाले आर्यों से लेकर खोसकी घाटी के अर्यजी सम्यता में रहे हुए भारतीय समाज के गतिशील चित्र उनकी कहानियाँ की विनिष्टता है।

भारत में आन से पूर्व आय पूर्वज (हिंदी यूरोपीय जाति) पक्कीय गुहाघो में जीवन व्यतीत करते थे। हिम और शीत से अपने को बचाने के लिए वे पशु चम का प्रयोग करते थे। तब उनका जीविका का प्रमुख साधन था और कच्चा अथवा सूना हुआ मांस उनका आहार था। केवल आय पूर्वजों का ही नहीं भारत की आदि जातियाँ किराने निपाद आदि का आहार भी मांस ही था। मांस के अतिरिक्त उनके खान पान में दूध और सोमरस का भी प्रयोग होता था। विशेषकर भारतीय आर्यों के लिए ताँ सोमरस महत्वपूर्ण पदार्थ था।<sup>113</sup> भारत आने पर आर्यों की वेशभूषा में अंतर आ जाता है। वे ऋतु अनुसार एवं पुरुष-स्त्री के भेद के साथ पहनावा पहनते हैं। पुरुषों की वेशभूषा में उष्णीष कज्जक अंतरवामक और कमरबंद का प्रमुख स्थान है और स्त्रियाँ उत्तरासन (चादर), कज्जक व अंतरवासक धारण करती हैं।<sup>114</sup> भोजन में मांस व सोमरस की ही प्रधानता थी। निवास के लिए आरम्भ में तम्बू और बाद में कच्चे पक्के मकानों का प्रयोग होने लगा था। आर्यों की अपेक्षा असुरों के मकान अधिक सुंदर और सुंदर थे उनके निर्माण में ईंटों का प्रयोग होता था।<sup>115</sup> यह अवस्था वैदिकयुगीन आर्यों की थी।

वन्विकोत्तर काल में क्रमशः आर्यों के रहन सहन एवं खान पान में विकास होता है। साम्राज्यवादी युग में आय वंशजों का जीवन अधिक सुखमय था। ग्राम जीवन और नगर जीवन में भारी अन्तर आ गया था। नगरों में भय प्रासादों एवं अट्टालिकाओं का निर्माण होने लगा था। राजप्रासादों में सुरा सुंदरी एवं नृत्य का महत्त्व था। सयन बाबा बाबा नूरनीन एवं सुरया आदि कहानियाँ में मुगलकालीन

भारत की सामाजिक स्थिति का चित्रण है। नगरो मे भ्रम प्रामाद हैं और लोग कुतें  
 श्रवण का प्रयाण अधिक करते हैं।<sup>114</sup>

बोसबी गती म भारतीयों के जीवन म पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। इस  
 समय का समाज धान-धान और वनस्पति म पश्चिमी सम्यता क रंग म रंगा हुआ है।  
 'मधुपुरी' की कहानियों में विनायी नयाज का चित्र है जिसम आहम्बर और दिखावा  
 अधिक है। पुष्प और स्त्रियाँ दाना ही कोट-पेट पहनते हैं। रहन के लिए नवीन  
 फलन की कोठियाँ हैं। नगर म रहने वाले धर्मिक एवं निधन वग का जीवन बड़ा  
 कठिन है। उनके पास रहन क लिए साधारण मकान हैं पेट भर भोजन प्राप्त कर  
 लेना उनके लिए समस्या है।<sup>115</sup> इसके विपरीत ग्राम म रहन सहन का ढंग अब भी  
 पुराना है। वही धाती-कुतें का पहनावा, वही पौष्टिक एवं सरल भोजन और कच्चे  
 तथा साधारण भवान।

समाज चित्रण म राहुन जी ने समाज के मनोरजन आदि के साधना का भी  
 यत्न-श्रम उल्लेख किया है। इसमें उसकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का, उसकी  
 सम्पन्नता विपन्नता का संकेत मिलता है। मनोरजन के साधना म नृत्य प्रधान है  
 साथ ही आयों एवं आय-नृत्तजों को समीत एवं पान-गाथियाँ विशेषकर प्रिय थी।<sup>116</sup>  
 समीत उनके सम्मिलित काम का एक भग है।<sup>117</sup> तरण-तरणियाँ स्वच्छन्दता स  
 नृत्य-नान म सम्मिलित हान हैं परस्पर प्रेम प्रदान, हास-परिहास, प्रेमालाप मे व  
 स्वतंत्र हैं।<sup>118</sup> आय युवक एवं युवतियों का उत्सव विनय प्रिय थे। इन उत्सवों में  
 युवक-युवतियाँ मुरासान कर अपने नृत्य-गीत का प्रदान करते थे। नृत्य कवल अपने  
 पति या प्रिय क साथ मिलकर ही नहीं जाना था किसी भी प्रेमी क साथ प्रेमिकाएँ  
 निस्संकाच नृत्य करती थी।<sup>119</sup> अस्वाराहण तथा तरावी भी उनके लिए मनोरजन एवं  
 व्यामाम के साधन थे।<sup>120</sup> साम्राज्यकालीन भारत म भी नृत्य एवं संगीत का महत्व  
 था। मनोरजन क साधना म नाटक लाकप्रिय थे। अदवधाय एवं वातिदास क नाटक  
 इन्हीं युग की देन हैं। मुगलकालीन भारत म हिंदू-समाज के लिए जीविका के साधन  
 जुटान तथा अपनी मान प्रथाओं को बचाने का प्रयत्न था, मनोरजन की ओर उनका  
 ध्यान कम था फिर भी अकबर के शासनकाल मे उत्तमवी की ओर जनता का ध्यान  
 दबा जा सता है।

पश्चिमी सम्यता का प्रभाव आधुनिक मनोरजन क साधनों पर भी पड़ा है।  
 आधुनिक धनिया का जीवन विनाममय है। तरण-तरणियाँ औष्मकाल म पवतीय  
 विनामपुरिया म जाना पसंद करते हैं जहाँ पान गौष्टियाँ, नृत्य, जुधा शृंगार-मंजा  
 आदि की ओर उनका विशेष ध्यान जाना है।<sup>121</sup>

इस प्रकार सामाजिक स्थिति के अवन म राहुन जी न भारतीय सम्यता एवं  
 सस्कृति क विभिन्न गति-गति चित्र प्रस्तुत किया है। डॉ० ब्रह्मान्त गमा का इस विषय  
 म कथन मत्व है— राहुन साहित्यायन की कहानियाँ म भारतीय सस्कृति तथा

सम्यक्ता के विभाग वम का इतिहास उपस्थित किया गया है। धाय-महत्ति का भिन्न भिन्न विन्नी सत्कृतिया स जो सम्पन्न प्रागतिहासिक काल स चकर वनमान समय तक हुआ उन सबका चित्रण इन कहानिया स है।<sup>134</sup>

(ग) आर्थिक स्थिति—राहुल जी की कहानियाँ राजनीति एव सामाजिक स्थिति की तरह आर्थिक स्थिति का भी चित्र प्रस्तुत करती है।

आर्थिक दृष्टि से प्राचीन धाय लोग सम्पन्न थे। धाय-युवक जय वन्धु-नट पर रहत थे तो उनका जीवन बच था और बच-गुप्ता का आश्रित उनका व्यवसाय था, राजीविका का साधन था।<sup>135</sup> मध्य एशिया व आर्यों का व्यवसाय पशुपालन था।<sup>136</sup> उनका मुख्य पशु गाय और भेड़ था। भेड़ का भी धाय पालत था।<sup>137</sup> पशुधन ही उनकी सम्पन्नता एव विपन्नता का सूचक था। कालांतर म कृषि उनका मुख्य व्यवसाय बन गया।<sup>138</sup> स्थायी रूप स सप्त सिंधु म बस जान पर व्यापार और कृषि उनका मुख्य धंधे था।<sup>139</sup> आरम्भिक धाय बच पुला एव पत्ता म घपनी म्रिया का सजान था परन्तु अनाथ नागा व अनुकरण पर स्त्रियाँ सोन चाली व धामुपणा स अपने का अलङ्कृत करने लगी थी।

पनिष्क एव गुप्तकालीन भारत म वाणिज्य उन्नति व निखर पर था। इस काल की आर्थिक सम्पन्नता का मुख्य लाभ राजाभा सामन्ता एव व्यापारिया का था।<sup>140</sup> इस काल म ग्रामों की अपनी नगरों की स्थिति अधिक अच्छी था। गाँवों के लोग खिन्न थे यद्यपि वहाँ गिल्दी तनुवाय स्वणकार चमकार सभी प्रकार के गिल्दी व्यवसायी रहत थे परन्तु उनकी इस गिल्दी का लाभ उठान वाला नगर था।<sup>141</sup> मुसलमानी राज्य म आर्थिक स्थिति लगभग उसी प्रकार की थी जिस प्रकार की साम्राज्यवादीन भारत म। निधन और धनी का अंतर उसी प्रकार से बना रहा।

आर्थिक स्थिति म तीसरा परिवर्तन द्रव्येजा के समय दिखाई देता है। इस समय आर्थिक विपन्नता पहल स भी अधिक बढ़ने लगी। इस युग म धन धाय सामन्ता जमीनारों व सेठों व पाम सिमट सिमट कर आने लग। निधन और निधन हान लग। दिन रात काम करने व बाद भी उन्हें पट भर अन्न प्राप्त नहीं होता। भुखमरी स उनकी मृत्यु हो जाती है। सनमी के बच्चे कहाना समाज व इसी बग की दार्शनिक कहा है।<sup>142</sup> बहुरंगी मधुपुरी व पात्र भातू राजत त्रिसुन कमलसिंह आदि भी धनाभाव मे सतप्त हैं। इसके विपरीत मधुपुरी व कुमार दुरजय ठाकुर जी मेमसाहब आदि धनी पात्र हैं जिन्हें सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं।

(घ) प्रकृति चित्रण—वातावरण की सृष्टि व लिए रहल जा न तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक एव आर्थिक परिस्थितिमा का सफल चित्रण करने व अतिरिक्त प्राकृतिक वातावरण का भी सजीव अङ्कन किया है। राहुल जी व प्रकृति चित्रण अत्यंत सजीव हैं उनकी रेखाएँ आश्चर्य पुष्ट और रंग अत्यंत मनोरम हैं।<sup>143</sup> प्रकृति चित्रण के विविध रूपा की भार आश्चर्य विस्मयप्रसाद मिथ सबेते करत

है—‘प्रवृत्ति का वणन कई प्रकार का देखा जाता है—गुद भावाक्षिप्त और अलवृत्त । गुद वणन वह है जिनम प्रवृत्ति जैसी दिखाई देती है वैसी ही प्रस्तुत कर दी जाए । भावाक्षिप्त वणन वह है जिसम वणन करने वाले के हृदयगत भावा का आरोप भी हो । इस प्रकार प्रवृत्ति कही प्रमुख दिखाई देती है और कही विपण्ण । अलवृत्त वणन वह है जिसम उपमा उत्प्रेक्षा आदि अलवारो का विशेष लदाव हो ।’<sup>१००</sup> राहुल जी के प्रकृति चित्र अधिकतर गुद और अलवृत्त हैं ।

राहुल जी के प्रकृत चित्र प्रायः ऋतुप्रा, पवतीय स्थाना, उपवनो वनस्थलिया एक नदिया से सम्बन्धित हैं । ऋतुप्रा में शीत वषा और वसन्त के चित्र अधिक हैं । योगा से गंगा की आरम्भिक बहानिया किसी-न किसी प्रवृत्ति चित्र से आरम्भ होती हैं । वस्तुतः इन बहानिया के नायक-नायिकाया का चरित्र इन प्राकृतिक दृश्या के मध्य व्यक्त निखर उठा है । ‘निदा’ और ‘दिवा’ की कथाया में बोल्ला तट के तुपार मण्डित विभिन्न प्रदेशों के वणन चित्रबला क उत्कृष्ट उदाहरण हैं । राहुल जी के वसन्त ऋतु के चित्र अत्यन्त रम्य और आकर्षक हैं । कही उन्होंने वसन्तागमन के चित्र प्रस्तुत किए हैं तो कही वसन्त शी के । वसन्तागमन से निर्जिव प्रकृति सजीव हो उठी है, देखिए— वसन्त के दिन थे । चिरमृत प्रकृति में नवजीवन का संचार हो रहा था । छ महीने स सूखे भुज-वक्षो पर दूध पत्ते निकल रहे थे । बर्फ पिघली, धरती हरियाली से ढक्ती जा रही थी । हवा में वनस्पति और नई मिट्टी की मीनी मीनी मादक गंध फैल रही थी । जीवनहीन दिग्गत सजीव हो रहा था । कही वक्षो पर पक्षी नाना भाँति के मधुर शब्द सुना रहे थे कही फिन्सी अनवरत घोर मचा रही थी । कही हिमद्रवित प्रवाहों के किनारे बड़े हजारों जल-पक्षी कुंभक्षण में लगे हुए थे कही बलहम प्रणम नौका कर रहे थे ।<sup>१०१</sup> अमृताक्ष बहानी का आरम्भ भी पगाना के पवतीय प्रदेश में वसन्त-वणन के साथ हुआ है ।<sup>१०२</sup> वसन्त के जीवन का वणन बहुधा मल्ल तथा ‘प्रभा’ में द्रष्टव्य है ।<sup>१०३</sup> वसन्तान्त का चित्र मुदास में सुन्दर वन पड़ा है ।<sup>१०४</sup> शीतकाल के चित्र राहुल की बहानिया में हुआ है । राहुल जी न वषा-वणन वणन ‘सुरथा’ ‘सुमेर’ तथा नरमेघ बहानिया में हुआ है । राहुल जी न वषा-वणन में वर्षा के जल के वणन के साथ साथ सावन के महीने में कुल बहुधा के मधुर कण्ठा से निःसृत गीता का भी वणन किया है ।<sup>१०५</sup> निगिर शरद और ह्रमन्त को प्रायः एक ही रूप में देखा गया है । शीत ऋतु के वणन छोटे, बाह्य और चलते हैं ।<sup>१०६</sup>

राहुल पवतीय-यात्राया के प्रेमी थे । पवत की भूमि और वनस्पति ने उन्हें सर्वाधिक आकर्षित किया है । पवतीय वक्ष और हिमवमना धरती उन्हें बहुत प्रिय है । दयदारु वृक्ष का वणन देखिए— वन्य की घपर बरती घारा बीच में बह रही थी । उसके दाहिने तट पर पड़ा घारा स ही गुरु हो जात थे किन्तु बाईं तरफ अधिक झुगुमी होन स उपरका चौड़ी मातृम होती थी । दूर स देखने पर मिवाय घनहरित उगुग दबन्ग वक्षा की स्थायी क कुछ नहीं दिखना पड़ता था और नजदीक घान पर नीचे ज्वाण लम्बी और ऊपर छोटी होती जाती घासाघो के साथ उनसे बाण



जम तुरीन श्रम निगना पन्त थ घोर जाम गाः तरह-तरह वा बाग्यानि घोर  
 दूगन् वक्ष थ ।<sup>१५</sup> इन परिणाम म स्वभाव का विना चित्र प्रस्तुत है । हिमा-छान्ति  
 धरता का एक चित्रामा दय श्री द्रष्टव्य है— चार घाट का दय ? मयन ॥३  
 नम व नात पृथ्वा कपूर-ता इवन हिम म छा-छान्ति है । बीबीत घट म हिमपात न  
 हान म कारण दानगर हान ह्य भा हिम कठोर हा गया है । यह हिमवगना धरती  
 निगत व्याप्त म है बल्कि यह उत्तर स शिखि की घाट कुछ मात तम्बी गहरी  
 टकी मही रमा की भाति घसी गई है ।<sup>१६</sup> मधुपुरा पवतीम प्रकृति का एक चित्र  
 स्मृतिगतनीति म मुग्ध का पडा है ।<sup>१७</sup> स्वयं प्रतिरिक्ता रात्रि जा न माहारी  
 सरिता-तटा उद्यात घोर सरोवरा व चित्र भी चित्रित है ।<sup>१८</sup>

राहुत जी न वागा स गया म ही प्रभुग रूप स प्रकृति चित्र प्रस्तुत किये  
 हैं । 'वनला की बया बहुरगा मधुपुरा तथा सतमी व बच म बहूत वम प्रकृति  
 चित्र है । राहुत जी व प्रकृति चित्रण इतिवत्तात्मक अधि है वगु-वगन का घाट  
 ही उनका अधि ध्यान रहा है । 'सामय' प्रकृति चित्र वम है—वगन-श्री घोर  
 पुष्करिणी घाट व वगन म ही रमात्मकता है । इनम लगन का पूरा तापयता दष्टि  
 गावर हाता है । राहुत व प्रकृति चित्रण उनकी कहानिया म वातावरण निमाण  
 अथवा पाठमूमि के रूप म अधि घाट है जो कहानी की सीमा व प्राय अनुकूल है ।  
 प्रकृति चित्रण म विन्यासमयता दानीय है । उनकी कहानिया म प्रभुग रिम्मा की  
 श्रृंगला न बयल यथाय चित्र की गष्टि करती है बल्कि उनम मुग्ध वा भा सनिवग  
 गर देती है ।

राहुत जी की वातावरण-गष्टि व विविध रूपा पर विचार करन व अनन्तर  
 यह कहा जा सरता है कि उनकी कहानिया म एतिहासिकता व वा वातावरण का  
 सौम्य सर्वाधिक निगरा है । उनम वातावरण निर्माण की अमृत क्षमता है । रात्रि  
 जी की वागा स गया तथा वनला की बया तो वातावरण चित्रण प्रधान कहानिया  
 कही जा सरती हैं । बहुरमी मधुपुरी एवं सतमी व बच म भी सामान्य वाता  
 वरण व सजीव चित्र है । उनकी वातावरण-गष्टि म प्राकृति वगन विषय रूप स  
 दिम्बात्मक हैं ।

### जीवन दान और उद्देश्य

रिमी भी साहित्यिक दृष्टि का उद्देश्य बनन पाठका का मनोरजन कराना ही  
 नहीं है अपितु जीवन की व्याख्या करना है । कहानीकार भी कहानी के माध्यम स  
 मानव जीवन की व्याख्या करता है । यह व्याख्या उपयोग की तरह विवाद नहा होनी  
 समक जीवन व प्रति एक दृष्टिकरण मात्र प्रस्तुत करता है । राहुत जी रिम्मा का  
 बार है । उनकी कहानिया म उनका निश्चित जीवन गान एक उद्देश्य यक्त है ।  
 'बहुरमी मधुपुरी म राहुत जी का वचन है—'समसानीन चित्रण हात यदि पाठका  
 का इसस मनोरजन व साथ साथ कुछ और लाभ भी हुआ, तो मुझ इसस सनाप  
 होगा ।'<sup>१९</sup>

राहुल जी की कहानियाँ म उनकी निजी जीवन दृष्टि है। उनमें मानवतादी दृष्टि से जीवन की व्याख्या है अतः उनकी सादृश्यता में त्रिचिन भी संदेह नहीं रह जाता। धोष्ट कलाकार मानव आत्मा का पिपी हाना है। भारतीय संवेदनाशास्त्र तथा जीवन की यथार्थ परिस्थितियों की ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त कर देना उसका लक्ष्य होता है। राहुल जी ऐसे ही मानवतावादी नेपथ्य हैं। मानव और मानवता की गतिशीलता में—उनके निरंतर विकास में—उनकी प्रगल्भ भावना है। बाबा सा गंगा और बनला की कथा' में इसी मानव के विकास की कहानी है। राहुल जी का अटूट विश्वास है कि 'मनुष्य उच्छिन्न न होत वाला बहता प्रवाह है।' १५९ बाबा सा गंगा में मनुष्य की उसके पंगुत्व से विनसित होकर मनुष्यत्व तथा विकास की कथा है। उनके अपने गद्यांश में—'मानव आज जहाँ है वहाँ वह आरम्भ में ही नहीं पहुँच गया था, उसके लिए उस बड़े-बड़े संघर्षों में होकर गुजरना पड़ा है।' १६० डॉ० नगार्ड का इस विषय में कथन है—'पिछले आठ हजार वर्षों में ईसा से ६००० वर्ष पूर्व से लेकर जब मानव बाबा के किनारे पवत गुहा में अपने सत्त्व पंगुषा के समान ही रहा करता था आज तब उसने अपने अस्तित्व का सुरक्षित रखने के लिए जो संघर्ष किए हैं उन सबका सरल और सात्विक विवरण है।' १६१ वस्तुतः राहुल जी की कहानी में प्रगतिशील मानव जीवन की कथा है। राहुल जी के अनुसार मानव के विकास की प्रारम्भिक स्थिति स्वच्छ-दत्तापूर्ण थी। १६२ वह युग अत्युन्नत था जिसमें धर्म और सम्पत्ति सामूहिक थी व्यक्ति नहीं, बरिच जन या समाज की प्रधानता थी। १६३ मानव विकास के इतिहास में मध्ययुग में मनुष्य की इस स्वच्छ-दत्ता का अपहरण होता है उसे समाज और राज्य के अनुशासन में रहना पड़ता है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से यह उसकी असमानता का युग था। आधुनिक युग में मानवता का विकास बड़ी तीव्रता में हुआ है। वैज्ञानिक आविष्कारों एवं शिक्षा के प्रसार से आज मनुष्य एक-दूसरे के अत्यन्त निकट आ गया है। इस युग में मानव विकास का दो अवरोधक तत्त्व राहुल जी का उल्लेख करते हैं। वे हैं—सामाजिक व्यवस्था एवं पूँजीवाद। जात पति का भेद भाव तथा सामाजिक व्यवस्था हमारे समाज की नींवें तिरा रहे हैं और पूँजीवाद अपनी अत्यन्त ग्राह्य-वृत्ति द्वारा मानवता को उत्तरोत्तर विपन्न बना रहा है। ऐसी स्थिति में मानव विकास का पथ प्रगल्भ बनाना एक ही मार्ग है—साम्यवाद। राहुल जी की दृष्टि में वह भारत तथा विश्व की समस्याओं का एकमात्र समाधान है और मानवता के भविष्य की उम्मीद का आधार। 'म प्रकार राहुल जी साम्यवादी दृष्टि से जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। राहुल जी की कहानियाँ में व्यक्त विचारधारा उनके उपन्यासों की विचारधारा में अभिन्न है।

राहुल जी ने अपनी कहानियाँ में मानव जीवन की व्याख्या के लिए धर्म साम्यवाद पूँजीवाद अज्ञान प्रजातन्त्र आदि पर विचार प्रकट किए हैं। राहुल जी अतिप्रगल्भ धर्म को समाज के लिए घातक एवं अहितकारी मानते हैं। धर्म का साम्प्रदायिक रूप समाज के लिए अक्षय्य व सभारण, जो न मानव मानव में

भेद की दीवारें खड़ी की है। इस धर्म में मंदिर, मस्जिद तथा गिरजाघरों के निर्माण में तो स्पर्धा दिखलाई है परन्तु मानवता के निर्माण में नहीं। राहुल जी ने 'ठाकुर जी पेड़ बाबा', महाप्रभु आदि कहानियाँ में शिक्षित एवं अनि-  
क्षित भारतीयों की अवश्रद्धा पर व्यंग्य किया है। वे ब्राह्मणों, पुरोहिताँ एवं  
दोगी महात्माओं को शापक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। ब्राह्मण धर्म तथा पुरोहितवाद  
का विरोध 'बोल्गा से गंगा' की कई कहानियों में द्रष्टव्य है।<sup>१३३</sup> उनकी दृष्टि में पुरोहिताँ  
ने ही दाग प्रथा को विरसित किया है। अपने एवं राजाओं के अधिकारों को अक्षुण्ण  
बनाने के लिए पुरोहिताँ ने धर्म का आश्रय लिया है और वे जनता का राजमर्कित का  
उपदेश देने वाले हैं।<sup>१३४</sup> ब्रह्मवाद राजन्यास को सुदृढ़ करने का एक सबल साधन है।<sup>१३५</sup>  
तथा पुनर्जन्म का सिद्धांत धनियों के हाथ में क्षोषण का प्रबल उपकरण।<sup>१३६</sup> इस  
प्रकार धर्म राहुल जी के लिए डोंग है, क्षोषण का अस्त्र है, वह परधन-अपहारकों को  
शांति से परधन उपभोग करने का अवसर देने के लिए है।<sup>१३७</sup> ब्राह्मण धर्म को राहुल  
जी धूप छाह की सजा देते हैं।<sup>१३८</sup> महाकवि प्रबोधोप के शब्दों में वे इस धर्म के  
प्रति घणा प्रकट करते हैं— मुझे ब्राह्मणों के पाखण्डों से अपार घृणा है घणा से  
सारा गात्र जलता है।<sup>१३९</sup>

ब्राह्मण धर्म के प्रति तीव्र घृणा रखने वाले राहुल बौद्ध धर्म के प्रति श्रद्धावान  
हैं। बौद्ध धर्म उन्हें साम्यवाद के अधिक समीप प्रतीत होता है। राहुल जी इस  
उदार धर्म की सजा देते हैं।<sup>१४०</sup> इस धर्म में जाति-पाति ऊँच-नीच भाँति का भेद  
भाव नहीं।<sup>१४१</sup> वस्तुतः राहुल जी का धर्म साम्यवाद है। बौद्ध धर्म उसके पर्याप्त निष्कट  
है अतः इसके प्रति राहुल जी की आस्था स्वीकारण है।

राहुल जी की कहानियों में साम्यवाद के प्रति अत्यधिक आस्था व्यक्त की गई  
है। साम्यवाद अंग्रेजों के कम्युनिज्म का पर्यायवाची है। कम्युनिज्म लटिन भाषा का  
शब्द है। साम्यवाद को लटिन में कम्युनिज्म कहते हैं। कम्युनिस्ट समाज वह समाज  
होता है जिसमें सर कुछ—जमीन फक्टरियाँ—सब की मिली जुली सम्पत्ति होती है  
और सब लोग मिल जुल कर सामूहिक में काम करते हैं। यह कम्युनिज्म है।<sup>१४२</sup>  
साम्यवाद सर्वहारा वर्ग के हितों को मुखरित करता है। वह सर्वहारा का सद्भावना  
हथियार है।<sup>१४३</sup> आधुनिक बुद्धजीविता पर साम्यवाद की वस्तुवादी मायताओं का  
प्रभाव अधिक पड़ा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मार्क्सवाद सामयिक प्रश्नों  
पर बल देता है।<sup>१४४</sup> वस्तुतः साम्यवाद का उद्देश्य वर्गहीन समाज की स्थापना है  
जिसमें सम्पत्ति पर समाज का समानाधिकार हो। वह मानव समाज के लिए मुख  
सामग्री की वृद्धि करता है।<sup>१४५</sup> राहुल जी साम्यवादी कहानी लेखकों में अग्रणी हैं।<sup>१४६</sup>  
अपनी ऐतिहासिक एवं सामाजिक दाना प्रकार की कहानियों में उन्होंने साम्यवाद को  
सामाजिक विपक्षिताओं का एवमात्र उपचार बतलाया है। साम्यवादी दृष्टिकोण के  
कारण राहुल जी की कहानियों में विचारात्तेजस्व संवेदना प्राप्त होती है और सामाजिक  
क्षोषण, दरिद्रता, गन्तव्य आदि समस्याएँ एक निश्चित आधार पर चित्रित हैं। बोल्गा

ने गंगा की आरम्भिक कहानियाँ तिसा, दिवा' आदि में उन्हाने प्राचीन मानव समाज में साम्यवादी विचारधारा का दिग्दर्शन कराया है। आदि मानव मरान्तरा के भाव से अपरिचित था <sup>१५४</sup> उसका समाज एक बगहीन समाज था जिसमें सम्पत्ति पर सभी का समाधिकार था और सभी व्यक्ति यथाशक्ति काम करते थे। <sup>१५५</sup> साम्यवादी विचारक हान के कारण राहुल पूँजीवाद साम्राज्यवाद एवं ईश्वरवाद के विरोधी हैं। य सभी आर्थिक ग्रापण के कारण हैं। <sup>१५६</sup> गांधीवाद भी राहुल जी की दृष्टि में सामाजिक साम्य की स्थापना में असमर्थ है। सफ़्टर मुमर आदि कहानियाँ मूलक न गांधीवादी विचारधारा की आलोचना की हैं। उनकी दृष्टि में गांधीवाद राजनीति के क्षेत्र में अनुपयोगी है। <sup>१५७</sup> हरिजन पत्रिका भारत की अध्वार युग की धार खींचने वाली पत्रिका है। <sup>१५८</sup> गांधीवाद का धर्म भगवान तथा पुराणपरिचयता में विश्वास है और य सभी सत्त्व की दृष्टि में ग्रापण के साथ है। गांधीवाद निमागी गुलामी में इतर और कुछ नहीं। <sup>१५९</sup>

राहुल जी आर्थिक बध्म्य के उन्मूलन का एकमात्र उपाय साम्यवाद को ही मानते हैं। अपने उपयोगिता की तरह उन्हाने अपनी कहानियाँ में अनकहा दुःख है कि साम्यवाद ही विश्व मानवता का हित साधक है। पूँजीवाद के विनाश पर साम्यवाद का जन्म होगा। <sup>१६०</sup> राहुल जी का साम्यवाद का यह प्रकाश सावित्य भूमि में प्राप्त हुआ है। अतएव वह स्व का मजदूरो और विमानों की आशा बतलाते हैं। <sup>१६१</sup> राहुल जी साम्यवाद का भारत के लिए विशेषी वस्तु न मानकर स्वकी मानते हैं। अपने पात्र मुमर के मुख से वे कहलवाते हैं— यदि साम्यवाद का विदगी ही मान लें तो भी जैसे ईसाई इस्लाम जैसे विदेशी धर्म रत तार हवाई जहाज बन कारखाना जसी विदगी चीजें हमारी आँखा के सामने स्वदृष्टि बनकर मौजूद हैं, वैसे ही साम्यवाद भी स्वकी ही जायगा बल्व हो गया है। <sup>१६२</sup> इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ में उनकी साम्यवादी जीवन-दृष्टि सबत्र मुखरित है।

साम्यवादी चिन्तक राहुल राजनीति के क्षेत्र में राजतन्त्र एवं साम्राज्यवाद के विरोधी हैं। साम्राज्यवाद घोषण की वृत्ति का पापक है धर्म ईश्वर एवं पुरोहितवाद का मरणा है तथा मनुष्य की स्वतन्त्रता का अपहारक है। <sup>१६३</sup> इस प्रकार राहुल जी राजतन्त्र शासन प्रणाली का कटु आलोचक हैं। इसके विपरीत गणतन्त्र शासन प्रणाली के वे प्रबल समर्थक हैं। यही शासन प्रणाली मनुष्य का आर्थिक ग्रापण से बचानी है उसका आत्मसम्मान और अधिकारा की रक्षा करनी है एवं सभी गतिविधियों का समान मुक्त सुविधार्थ प्रदान करनी है। तन्मिला बगारी, कुलीनारा आदि प्राचान भारत के प्रतिष्ठित गणराज्य थे। गण के राजतन्त्र के विकास का साथ इन गणराज्यों का हान हो गया। गुन राजाघा के विषय में सुगण योधय का कथन है— नन्हा, मोठो यवना घरा और हुना ने भी जा पाप नहीं किया वह इन गुना न दिया। भारतमो से इन्हें गणराज्य का नाम मिना दिया। <sup>१६४</sup> यह गणराज्य-मदति प्राधुनिक प्रजातन्त्र का साथ रखती है। इसमें किसी भी बात का निषेध मस्थागार में मन-मन्य

द्वारा हाता था ।<sup>151</sup> सफ़्फ़र तथा मुमर कहानियां म राहुल जी न इसी 'प्रज्ञान' का स्वप्न देता है और स्वराज्य म यह स्वप्न साबार हुआ है ।<sup>152</sup>

इम प्रकार राहुल जी की कहानियां म उनकी विचारधारा एवं जीवन-दृष्टि अत्यंत स्पष्ट है । डा० सबसना के गान म वास्तव म लख वगहीन, धमहीन सामाजिक जीवन का पक्षपाती है आ भारतीय जीवन की वगमावना एवं धर्माडम्बर के घनेकानेक दोषों को देखत हुए अनुचित नहीं है । वगमेन की खाई का उभूतन कर, स्त्री पुरुष के भेद का मिटानर और धार्मिक दृष्टिया का निष्कासन कर लगन सवाक्षीण समता, धार्मिक स्वतंत्रता एवं बोद्धिगता पर आधारित एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहता है ।<sup>153</sup>

कहानी म उद्देश्य एवं विचारार्थि व्यक्ति के लिए कहानीकार विविध प्रणालियां का प्रयोग करता है । कही कही उद्देश्य अज्ञित रहता है और कही अत्यंत स्पष्ट । कुछ कहानियां क प्रथम या अन्तिम वाक्य ॥ सूक्ति रूप म ही व्यक्त कर दिया जाता है । इस विषय म यह मत प्रचल्य है— कहानीकार का उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, वह अधिक स्पष्ट रूप म व्यक्त नहीं किया जाना चाहिए । उसको और पात्रों के वार्तालाप में अथवा कहानी के अन्त म केवल एक सक्त मात्र ही लेखक को बर देना चाहिए । अधिक स्पष्ट हो जान स लेखक का उद्देश्य उपदेश सा बन जायगा और अपने प्रभाव को सा बढेगा, दूसरी ओर यदि लेखक अपना उद्देश्य गम्य ही रखगा तो इससे उस की रचना म सौंदर्य की कटि होगा और उस उद्देश्य का प्रभाव अनायास पाठक के मन पर पड जायगा ।<sup>154</sup> आधुनिक कथा साहित्य म लेखक से यह अपेक्षित नहीं कि वह कथा म स्वयं आकर अपने उद्देश्य को व्यक्त करे ।<sup>155</sup> इस दृष्टि से दखन पर स्पष्ट है कि राहुल जी ने कहानी के उद्देश्य कथन म कलात्मकता की रखा नहीं की । उद्देश्य की सूक्ष्म ध्यजना न कर व उसे स्वयं ही स्पष्ट कर देत हैं जिससे पाठक क लिए स्वतंत्र चिंतन का अग्रभाग नहीं रहता लिफ्टिक कहाना क उपसहार म लेखक कहानी के उद्देश्य का इस प्रकार प्रकट करता है— सचमुच ही मधुपुरी जसी हिमालय की विलासपुरिया म फगन का प्रचार जितना जल्दी और 'यापक' रूप स होता है वसा मदानी गहरो म नहीं होता । इसका एक बडा कारण यही है कि सीजन म आए भुलरिया के सलाज म यहाँ की साधारण तरुनिया के पर उलझ जात हैं और वे भी प्रवाह क अनुसार बहने लगती हैं ।<sup>156</sup> 'रूपी कहानी म भी उद्देश्य की स्पष्ट अर्थि व्यक्ति मिलती है मधुपुरी क लिए यह अकेली रूपी नहीं है । यहाँ और भी कितनी ही रूपिया अपने जीवन का बर्तन कर चुकी है । जब हम मधुपुरी क मधुर सौंदर्य को प्रशंसा करते नहीं थकत उस समय हम नहीं ख्याल आता कि सौन्दर्य को पदा करने के लिए कितना का नरक तुष्ट म पडने के लिए मजबूर होना पडा ।<sup>157</sup> इसी प्रकार राजत महाप्रभु काठ का साहज पेड बाबा<sup>158</sup> आदि कहानियां म उद्देश्य का कथन स्वयं लेखक द्वारा स्पष्ट रूप में हुआ है । सनमी के बच्च की कहानियों दलमिगार और पाठक जी की भी यही स्थिति है । बोलगा से गगा की एति

हासिक कहानियों में भी उद्देश्य-व्यञ्जना की यही पद्धति है। 'मगलसिंह' कहानी में स्वतन्त्र भारत में पचासवीं राज्य की स्थापना सम्बन्ध 'उद्देश्य लेखन' न स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है।<sup>१</sup> 'बाबा नूरदीन' में सामाजिक व्यथाम्य<sup>२</sup> भागदत्त में साम्राज्यवादी निरकुशाना<sup>३</sup> एवं प्रवाहण में राजवाद ब्रह्मवाद एवं धनवाद की स्वायत्तोलुपता<sup>४</sup> को भी लेखक ने व्यंग्य रूप में नहीं रखा। 'वनला की कथा की स्वराज्य' एवं 'सन ८७' कहानियाँ भी इसी प्रकार की हैं।

इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ सोद्देश्य हैं। उनमें उठावा जीवन दर्शन एवं विचारधारा सबकुछ मुखरित है। वे प्रगतिशील चिन्तक एवं मानवतावादी कलाकार हैं। और उन्होंने अपनी कहानियाँ द्वारा साम्यवादी एवं मानवतावादी स्वरा को गुंजाया है। यदि कहानी को सामाजिक वस्तु<sup>५</sup> स्वीकारा जाय तो राहुल जी की कहानियाँ में उद्देश्यपूर्ण सामाजिकता प्रत्यक्ष ही अनुभव की जा सकती है तथा उनकी कहानियाँ लक्ष्यात्मक कही जा सकती हैं।

### शैली

'शैली-तत्त्व कहानी कला की वह रीति है जो कथारस्तु आदि तत्त्वों को अपने विधान में उपयोग करती है। इसके अन्तर्गत दो पक्ष आते हैं—प्रथम भाषा पक्ष द्वितीय रूप विधान पक्ष। राहुल जी की कहानियाँ में मावानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा का संपादन हुआ है कहीं बड़े बोलचाल की भाषा है, कहीं गम्भीर और परिष्कृत है और कहीं अत्यंत विश्रुततमक तत्त्वम भाषा शैली है। शैली के रूप विधान पक्ष के अन्तर्गत कहानी निर्माण की विभिन्न प्रणालियाँ यथा कथात्मक शैली ग्राम्य चरित-शैली पत्रात्मक-शैली हास्यी शैली, नाटकीय शैली आदि आती हैं। राहुल जी ने अपनी कहानियाँ में प्रमुख रूप से कथात्मक शैली का प्रयोग किया है। वे अपनी कहानियाँ का सृष्टि कथनात्मक ढंग से करते हैं और समूची कहानी के सूत्रधार बनकर अथ पुरुष में नायक से सम्बन्धित घटनाप्रा, विचारा आदि का वर्णन करते हैं। राहुल जी की यह ऐतिहासिक शैली भरत, मुगल और बोधगम्य है। उनकी इस शैली का परिचय घटनाप्रा पात्रा एवं वातावरण के चित्रण में मिलता है।

ग्राम्यचरित-शैली का प्रयोग राहुल जी ने दो कहानियाँ 'दुमुख' तथा 'मुपनयन' में किया है। इनमें कहानी के नायक आत्मवर्णन एवं आत्मचित्रण के रूप में पूरी कहानी प्रस्तुत करते हैं। आत्मचरित-शैली के अन्तर्गत पात्रा के अमूर्त भावों एवं अतृप्त-हृदय की अभिव्यक्ति सहज रूप से हो पाती है, परन्तु राहुल जी की इन कहानियों में अमूर्तभावा एवं अतृप्त-हृदय का प्रायः अभाव ही है। वस्तुतः राहुल जी अपने समग्र साहित्य में कथनात्मक शैली के ही समर्थ लेखक हैं। कहानियाँ में भी उनकी शैली का यही रूप मिलता है।

### सूत्रपाकन एवं स्थान

राहुल जी की कहानियाँ के कथाविधान की विवक्षा के अन्तर्गत यह निष्कर्ष सहज ही निकाला जा सकता है कि आधुनिक ऐतिहासिक कहानीकारों में उठावा,

विशिष्ट स्थान है। हिंदी में ऐतिहासिक कहानियाँ का प्रायः अभाव ही है। इस दृष्टि से उनकी कहानियाँ इस अभाव की पूर्ति के लिए अद्वितीय योगदान प्रमाणित हो सकती हैं। प्रेमचंद की तरह राहुल जी ने भी ऐतिहासिक व सामाजिक दोनों प्रकार की कथाएँ लिखी हैं पर ऐतिहासिक कहानियों के क्षेत्र में विविधता यथाथता एवं ऐतिहासिक तत्त्वों के निरीक्षण की दृष्टि से राहुल जी का स्थान उच्चतर है। प्रसाद जी की ऐतिहासिक कृतियाँ आकाशदीप, पुरस्कार 'स्वयं के खण्डहर', देवरथ' आदि हिंदी की अद्वितीय ऐतिहासिक कहानियाँ हैं। इन कहानियों में इतिहास और अतीत के स्वर्णिम पन्ना से रस लिप्तता की सहज भावना जातीय गौरव, आदर्श स्थापन और साथ ही वर्तमान में पलायन की वृत्ति—यह अनेक बिंदु प्रकट हुए हैं। 'यत्तत्त्व में मिल जाती हैं।' राहुल जी की ऐतिहासिक कहानियाँ प्रसाद से विभिन्न उद्देश्य से लिखी गई हैं। उनमें वर्तमान में पलायन न होकर वर्तमान में प्रवृत्ति है और व एक निश्चित उद्देश्य को लेकर अतीत की ओर देखते हैं। राहुल जी की ऐतिहासिक कहानियाँ का महत्त्व इस दृष्टि से सर्वाधिक है कि वे केवल इतिहास ही नहीं मानव समाज की सम्पूर्ण प्रगति का चित्र प्रकट करती हैं। कला तत्त्व की दृष्टि से उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ प्रसाद जी की कहानियों से निस्संदेह अग्रतर हैं पर विस्तृत ऐतिहासिक दृष्टि से राहुल जी की कहानियाँ में प्रसाद की कहानियाँ में नहीं। राहुल जी की एक-एक ऐतिहासिक कथा के भीतर एक पूरे युग का चित्र प्रस्तुत है—यह राहुल जी की ही विशिष्टता है। बंदावतलाल वर्मा की ऐतिहासिक कहानियाँ मुगल भारत से सम्बंध रखती हैं। उनकी ऐतिहासिक कथाओं के प्रति निष्ठा सराहनीय है। परन्तु वर्मा जी की कहानियाँ का ऐतिहासिक क्षेत्र सीमित है। इसके विपरीत राहुल जी इस क्षेत्र में सर्वोपरि हैं। ऐतिहासिक तत्त्वों की यथाथता एवं वातावरण की सज्जा की दृष्टि से राहुल जी वर्मा जी से कहीं आगे हैं। चतुरसेन शास्त्री का दुखवा में वास कहीं मोरी सज्जा, 'सिंहगढ़ विजय' आदि कहानियाँ का निर्माण कल्पना एवं इतिहास के रमणीय घरातल पर हुआ है। राहुल जी कल्पना की अपेक्षा यथाय को अधिक महत्त्व देने वाले कलाकार हैं। ऐतिहासिक कथा की सच्चाई उनमें सर्वाधिक है। उनकी दृष्टि में यथाय कल्पना से भी अधिक रोमांचक है। आदिम युग से लेकर आधुनिक मानव-संस्कृति और इतिहास को कलात्मक रूप में गूँथ देना राहुल जी का महान कलाकार का ही कार्य है। भगवतशरण उपाध्याय ने भी मानव विकास से सम्बंधित कहानियाँ सवेरा संधप आदि सग्रहों में प्रस्तुत की हैं परन्तु राहुल जी की इतिहास दृष्टि उनसे अधिक व्यापक एवं विस्तृत वातावरण के आधार पर देखन वाली है। कोल्हा से गंगा की प्रभा क्षीपक कहानी राहुल जी के कथासाहित्य में ही नहीं वरन् प्रेम की उल्लयन वृत्ति की दृष्टि से हिंदी की एक अमर कहानी है। इस कहानी में लेखक की ऐतिहासिक प्रतिभा कल्पना रामायण, माया एवं भाव का अदम्य समन्वय है। हिन्दी की ऐतिहासिक कहानियाँ के विकास की परम्परा में राहुल जी का स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने ऐतिहासिक कहानी का जो रूप हमारे

सामने प्रस्तुत किया है उसे कलापथ के सहयोग से आधुनिक कहानीकारों का आगे बढ़ाना चाहिए। राहुल जी की कहानी-कला की अपनी सीमाएँ हैं—वे वस्तु नित्य, चरित्रावन की भावुकता एवं कवित्वपूर्ण उद्भावना, न टक्कीय स्थितियों की भवतारणा और समय का वेग अपनी कहानियाँ में नहीं दे सके, और इसके लिए पुरातत्त्व के एक विद्वान को दोषी ठहराना भी समीचीन प्रतीत नहीं होता। पर इन कहानियाँ में व्याप्त सुलभो हुई जीवन दृष्टि व्यापक ऐतिहासिक प्रतिभा, पुरातात्त्विक सूक्ष्म विश्लेषण प्रगतिशील विचारधारा एवं भूत वातावरण सृष्टि हिंदी के विरले ही लेखकों में प्राप्त हानी है। श्यामनन्दन प्रसाद सिंह के शब्दों में कहा जा सकता है—'कथा साहित्य के निर्माण में उन्होंने प्राचीन और नवीन का निर्वाह पूरी तरह किया है। उनके कथा-साहित्य में यथाय अधिक प्रबल हो उठा है। राजनीति की भावधारा वहाँ विराजमान है, क्योंकि उनका सीधा सम्बन्ध राजनीति से रहा है। उनके कथा साहित्य में सादृश्य चित्र और सस्मरण का आभास पूरी तरह से मिलता है। उनकी कहानियाँ एक नये दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। उन्होंने प्राचीन इतिहास के साथ वर्तमान जीवन के उन अंगों का स्पष्ट किया है, जिनकी ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया था। साहित्यिक भाषा, कलात्मकता, व्यञ्जना का सहारा लेना उनका उद्देश्य नहीं, उन्होंने सीधी-सरल शैली का सहारा लिया है। इसी से उनकी कृतियाँ सभी के लिए समान रूप से मनोरंजक एवं बोधगम्य हैं।''

सामाजिक कहानीकार की दृष्टि से राहुल जी यथायवादी प्रगतिशील बने जाएँगे। उनकी सामाजिक कहानियाँ ग्रामीण समाज की चेतना को प्रेमचन्द की भाँति चित्रित करती हैं। यथाय के प्रति आग्रह उनकी सामाजिक कहानियों की प्रमुख विशेषता है। इतना होने पर भी राहुल जी की सफलता बोगा से गंगा की ऐतिहासिक कहानियाँ हैं जो हिली में अग्रज दुलभ हैं। अपनी इस कथाकृति द्वारा राहुल जी ने मानव-संस्कृति को समृद्ध किया है। हिंदी के लिए राहुल जी की कहानी-सृष्टि वरदान है।



## सूचिका

- १ एन इण्डाडक्शन टू दि स्टडी आफ़ निटरेजर पृ० ३३६ ।
- २ प्वाइंट आफ़ व्य-मामरसेज् माम पृ १३२ ।
- ३ मास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत (त्रितीय भाग) पृ ४५२ ५३ स उद्धृत ।
- ४ ममाक्षा उत्तर डा ओमप्रकाश मास्त्री पृ० ११७ ।
- ५ कुछ विचार (भाग १) प्रमच पृ० ३०
- ६ साहित्यालोचन श्यामसुन्दर दास प २२६ ।
- ७ कहानी का रचना विधान डा० जग नाथप्रसाद वर्मा पृ १४ ।
- ८ साहित्य की मायताओं भगवतीचरण वर्मा पृ० १४१ ।
- ९ हिन्दी कहानियाँ-७ डा० कृष्ण साह पृ० ३१ ।
- १० नाट्य के रूप-बाबू गंगाधरदास प २०३ ।
- ११ हिन्दी साहित्य की कला पृ० २११ ।
- १२ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास डा० सम्मीनारायण साह पृ० २६५ ।
- १३ कला साहित्य और समीक्षा प्रचारक मिश्र पृ० ७६ ।
- १४ राहुल का कथा-साहित्य डा० सुबोधचन्द्र सक्सेना ।
- १५ कहानी और कहानीकार माहन्तनाथ जिजामु पृ० ४४ ।
- १६ कहानी के नाम भानुचन्द्र मास्त्रामा प ८४ ८५ ।
- १७ बोल्गा से गया त्रितीय संस्करण पर दा छाप ।
- १८ विचार और विवेचन डा० मगद पृ० १४७ ।
- १९ २ बोल्गा से गया (परिशिष्ट) प ३८३ ।
- २१ वही प ३८४ ।
- २२ माधरी (फरवरी १९४४) प ३ ।
- २३ मन्द एतिया का इतिहास (भाग १) पृ० ३५ ।
- २४ छुन क छोट इतिहास के पना पर भगवन्तरण उपाध्याय पृ० १ ।
- २५ बोल्गा से गया (परिशिष्ट) प ३८५ ।
- २६ हिन्दी नव्य-सम्पादक व रामगोविन्द तिवेनी पृ ३८ ६३ ।
- २७ विचार और विवेचन पृ १५७ ।
- २८ गया साहित्य के प्रश्न नन्दुनारे बाजपेयी पृ २०५ ।
- २९ कसौटी पर डा भगवन्तरण उपाध्याय पृ ७८ ।
- ३० विचार और विवेचन डा० मगद प १५६ ।
- ३१ प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ डा रामविलास वर्मा प २६ ।
- ३२ बोल्गा से गया प २२२ ।
- ३३ प्राचीन भारत डॉ० राधाकुमु मुन्शी प १ ६ ।
- ३४ बोल्गा से गया पृ० २३३ ।
- ३५ कसौटी पर प ६२ ।
- ३६ बोल्गा से गया पृ २५४ ।
- ३७ ३८ कसौटी पर पृ० ६४ ।
- ३८ ४ विचार और विवेचन प १४६ ५७ ।
- ४१ राहुल का कथा साहित्य ।
- ४२ कला की कथा (प्रारम्भ) पृ० १ ।

- ४२ बनता की कथा पृ० २३।  
 ४४ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन डॉ० ब्रह्मान्त शर्मा पृ० ३६४।  
 ४५ बाग्या से गया (प्रथम संस्करण) प्रकाशन।  
 ४६ विचार और विनयन पृ० ११८।  
 ४७ हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ पृ० ६२।  
 ४८ बहुरंगी मधुपुरी पृ० ६२।  
 ४९ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास पृ० २८६५।  
 ५० बहुरंगी मधुपुरी पृ० २८ ३३ ३५।  
 ५१ सतमी के काल पृ० ४२।  
 ५२ बहुरंगी मधुपुरी पृ० २१६ २२।  
 ५३ बही पृ० २२८ २३६ २३७।  
 ५४ सतमी के काल पृ० ७१४।  
 ५५ बहुरंगी मधुपुरी पृ० १४ १६।  
 ५६ बही पृ० २७ २८।  
 ५७ बही पृ० १ ६ १०३।  
 ५८ बाग्या से गया पृ० १८० १८१।  
 ५९ हिन्दी निबंध प्रभावक माधवे पृ० ६१।  
 ६० बहुरंगी मधुपुरी पृ० ७५८।  
 ६१ बोल्गा से गया पृ० ११२ ११५।  
 ६२ बही पृ० ३२३।  
 ६३ बहुरंगी मधुपुरी पृ० १४५।  
 ६४ सतमी के काल पृ० ४८ ६४।  
 ६५ ६६ विचार और विनयन पृ० १५८।  
 ६७ ६८ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन पृ० ३६५।  
 ६९ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास पृ० ३०।  
 ७० अखिलान्त कियरी बाग पोस्टा एण्ड फाइन्सार्ट पृ० ५५।  
 ७१ साहित्यानुचन पृ० २०१।  
 ७२ हिन्दी कहानियों का शिल्पविधि का विकास पृ० १०१।  
 ७३ कहानी का रचना विधान डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा पृ० १७।  
 ७४ कहानी-रचना विनयनकर ग्राम पृ० ४६।  
 ७५ बाग्या से गया पृ० ४।  
 ७६ बही पृ० २५८।  
 ७७ सतमी के काल पृ० २५ २८।  
 ७८ बनता की कथा पृ० ३ ६३।  
 ७९ बही पृ० ३४ ३५।  
 ८० बोल्गा से गया पृ० ४ १७।  
 ८१ हिन्दी कहानियों का शिल्पविधि का विकास पृ० ३ २३ ३।  
 ८२ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन पृ० ३६५।  
 ८३ कहानी का रचना विधान पृ० १२२।  
 ८४ बोल्गा से गया पृ० १०१ १०२।  
 ८५ बही पृ० १०३।

- ८६ सोल्गा से गंगा, पृ० २८६ २८७ ।  
 ८७ वही पृ० १८ ।  
 ८८ सप्तमी के ऋषि पृ० ५२ ।  
 ८९ सोल्गा से गंगा पृ० २२२ २२३ ।  
 ९० वही पृ० १११ ११२ ।  
 ९१ वही, पृ० ३६६ ६६ ।  
 ९२ वही पृ० ३६२ ।  
 ९३ वही पृ० १६३ ।  
 ९४ वही पृ० २३ ।  
 ९५ वही पृ० २६६ ।  
 ९६ बटूरगी मधुपुरी पृ० ६६ ७० ।  
 ९७ सोल्गा से गंगा पृ० १३८ ।  
 ९८ वही पृ० ३६७ ३६७ ।  
 ९९ वही पृ० ३६३ ३७३ ।  
 १०० वही पृ० ३७१ ।  
 १०१ वही पृ० ३३७ ।  
 १०२ वही पृ० ३७ ३७३ ।  
 १०३ वही पृ० ३१६ ।  
 १०४ सप्तमी के ऋषि पृ० ६३ ।  
 १०५ वही पृ० ६६ ।  
 १०६ सोल्गा से गंगा पृ० २८६ ।  
 १०७ बटूरगी मधुपुरी पृ० ३ ।  
 १०८ सोल्गा से गंगा पृ० २६२ ।  
 १०९ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विवरण पृ० ३०७ ।  
 ११० हिन्दी साहित्य-शोध पृ० २१८ ।  
 १११ हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव पृ० ७३ ।  
 ११२ विचार और विवेक पृ० १३८ ।  
 ११३ हिन्दी कहानियों का विवेकालोक अध्ययन पृ० ३६६ ।  
 ११४ सोल्गा से गंगा पृ० ४४ ।  
 ११५ वही पृ० ६६ ।  
 ११६ वही पृ० २२३ ।  
 ११७ वही पृ० ६ ११ २६ ३७ ३६ ।  
 ११८ वही पृ० ७६ १३१ ।  
 ११९ सोल्गा से गंगा पृ० २२४ ।  
 १२० गंगा की कथा पृ० ६ ।  
 १२१ बटूरगी मधुपुरी पृ० १४३ २३३ ।  
 १२२ सप्तमी के ऋषि पृ० २ ।  
 १२३ सोल्गा से गंगा पृ० ५१ ५८ ।  
 १२४ वही पृ० ६६ १० ।  
 १२५ वही पृ० ८२ ।  
 १२६ वही पृ० २२७ २८८ ।  
 १२७ बटूरगी मधुपुरी पृ० १७३ २४१, २४८ ।

- १२८ बोल्गा से गंगा प० २४ ।  
 १२९ बही प० २३ ।  
 १३० बही प० १७ ।  
 १ १ बोल्गा से गंगा प० १०८ ११० ।  
 १४२ बही प० ८२ १०८ ।  
 १३३ बटुरगी मछपुरा पृ० २० ३४ ४७ ४६ ।  
 १३४ हिन्दी बहानिया का विवेचनात्मक अध्ययन पृ० ३६६ ।  
 १३५ बोल्गा से गंगा पृ० ६ ।  
 १३६ बहा पृ० ४४ ।  
 १३७ बही प० ४६ ।  
 १३८ बही प० ६३ ।  
 १ ६ बही पृ० ६६ ।  
 १४० बनना की कथा पृ० ३२ ।  
 १४१ बोल्गा से गंगा प० २२७ ।  
 १४२ सतमी के वन्य प० २ ६ ।  
 १४३ विचार और विस्लेषण पृ० १५८ ।  
 १४४ वाङ्मय विमर्श प० ७७ ।  
 १४५ बोल्गा से गंगा प० १२ ।  
 १४६ बही पृ० ३३ ।  
 १४७ बही प० १३५ १८२ ।  
 १४८ बही पृ० ६६ ।  
 १४९ बही प० २८५ ।  
 १५ बही प० २८ २६ २०४ ।  
 १५१ बही प० ४८ ।  
 १५२ बही प० १ ।  
 १५३ सतमी के वन्य प० ४८ ।  
 १५४ बोल्गा से गंगा प० ८५ १६४ ३८८ ।  
 १५५ बटुरगी मछपुरी की शब्द ।  
 १५६ बनना की कथा प० ३३ ।  
 १५७ बोल्गा से गंगा प्राक्खन ।  
 १५८ विचार और विस्लेषण पृ० १५५ ।  
 १५९ बोल्गा से गंगा पृ० ११ १२ ।  
 १६० बनना की कथा पृ० ६ ।  
 १६१ बोल्गा से गंगा प० ६३ ६४ ११० ११२ ११५ ।  
 १६२ बहा प० १२५ ।  
 १६३ बही प० १२७ ।  
 १६४ बही प० १२६ ।  
 १६५ बहा प० १२५ ।  
 १६६ बही प० २१२ ।  
 १६७ बही पृ० १६७ ।  
 १६८ बहा प० १६५ ।

इन उप-यासा में अंकित रहते हैं। हिन्दी में विगुह रूप से सामाजिक प्रश्नों को लेकर लिखे गए उप-यास कम ही हैं। प्रायः उप-यासकारों ने समाज और राजनीति के प्रश्नों को एक साथ ही लेने की चेष्टा की है। प्रेमचन्द के सामाजिक उप-यासों में राजनीतिक बातावरण का भी साथ ही चित्रण रहता है। इसी प्रकार राजनीतिक उप-यासों में सामाजिक भावनाओं का सम्मिश्रण रहता है। वस्तुतः राजनीतिक धार्मिक, धार्मिक आदि समस्याएँ समाज का ही अंग हैं। अतः इस प्रकार की समस्याओं को चित्रित करने वाले सभी उप-यासों का स्थूलतः सामाजिक उप-यासों का अंतर्गत माना जाना चाहिए। राहुल जी का सामाजिक उप-यास है—'बाईसवीं सदी', 'ज्ञान के लिए', 'भाग्य नहीं दुनिया को बदलो' तथा 'राजस्थानी रनिंग'। इन उप-यासों में राजनीति-तत्त्व प्रधान है। राहुल जी ने इनमें मानववाणी राजनीतिक-ज्ञान का अनुरूप भारतीय समाज की यात्रा करने का प्रयास किया है। अतः इन उप-यासों को राजनीति प्रधान सामाजिक उप-यास कहा जा सकता है। राहुल जी साहस्य साहित्य रचना के समर्थक हैं। प्रेमचन्द और यन्पात की भाँति वे कला के उपयोगितावादी पक्ष को भाव्यता देते हैं। वे जीवन की साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन यापन में न मानव सामाजिक जीवन की पूर्णता में स्वीकारते हैं। इस प्रकार राहुल जी लक्ष्य को प्रधानता देते हुए उप-यास रचना करते हैं और उनके राजनीति प्रधान सामाजिक उप-यासों में यह सोद्देश्यता स्पष्ट लक्षित है।

'बाईसवीं सदी' राहुल जी की प्रथम उप-यासिक कृति है। प्रथम कृति होने के कारण इसमें रचनागत दोषों की प्रचुरता है। इसमें निबंध जैसी गुच्छता एवं एकरसता सी प्रतीत होती है। परन्तु वस्तु की मौलिकता एवं सरल तथा प्रवाहपूर्ण भाषा की दृष्टि से राहुल जी का यह प्रथम प्रयास स्तुत्य है। बाईसवीं सदी का महत्त्व इस दृष्टि में भी है कि यह हिन्दी का प्रथम कल्पलोक-आत्मक उप-यास (यूतोपिया नावल) है।

यूतोपिया ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'कहीं नहीं'। इसका प्रयोग प्रत्येक कल्पनापूर्ण अथवा आकांक्षी समाज के लिए होता है। यूतोपिया एक आदर्श राष्ट्रकुल है (जिसकी सत्ता कहीं नहीं) जिसके नागरिक परिपूर्ण-वस्था में रहते हैं और उनमें मानवीय प्रकृति की कोई भी त्रुटियाँ या कमियाँ या दुर्बलताएँ नहीं होती।<sup>1</sup> लुई वासरमन यूतोपियन विचारधारा का स्वरूप इन शब्दों में स्पष्ट करते हैं—एक अपूर्ण समाज से एक ऐसे काल्पनिक समाज की ओर अग्रसर होने का प्रयास जिसमें आदर्श मानवीय मूल्यों की परिपूर्णता मिले। इसका कोई भी रूप चाहे वह कितना ही कल्पनापूर्ण क्यों न हो अपने दम में वह सन्तुष्ट समस्याओं के समाधान का यत्न करता है।<sup>2</sup> ए० एन० माटन वर्तमान समाज की आलोचना करने के उद्देश्य से किसी औप-यासिक कृति में वर्णित काल्पनिक देश का यूतोपिया कहते हैं। वे लिखते हैं 'प्रारम्भ में यूतोपिया इच्छा की छाया मात्र है, किन्तु कालांतर में यह अधिक गूढ़ और पृथक् हो जाती है और सामाजिक आलोचना एवं योग्य की

अभिध्वनित हेतु एक विवाद साधन का रूप धारण करती है।<sup>८</sup> इस प्रकार यूनापियन विचारधारा वनमान से ऊपर उठकर वनवास की स्थितिधा को परिवर्तित करने का धार्मिक अथवा समग्र रूप से प्रयत्न करती है। यूनापियन मस्तिष्क की मानविक निर्मितियों के दो भेद हैं—विचारधारात्मक (आइडियोलॉजीकल) तथा बल्सलोकात्मक (यूनापियन)। प्रथम का प्रयोजन वनमान वसाधना को वायव्य रूप में लिए प्रगति करना अथवा उसे परिवर्तित करने के लिए निंदा करना होना है। दूसरी उम वसाधना के परिवर्तन के हेतु सप्ताहक क्रियात्मकता को प्रेरित करती है यदि यह परिवर्तन उसने धारणों के अनुरूप है।<sup>९</sup>

‘बाईसवीं सदी’ राहुल जी का माकमवादी बल्सलोकात्मक उपपास है। इस दृष्टि के दो शब्द हमने ‘कल्पना’ के अन्तिम अक्षरों को साधक करते हैं—‘महामाण्डित राहुल साहूपायन ने एक बार रात्रि के अन्तिम प्रहर में एक सपना देखा और विद्वत् बंधु के रूप में नये सिरे से भ्रमण करना आरम्भ किया। फिर गायब जाग्रतावस्था में भी सिलसिला जारी रहा और कल्पना अपना रूप मानी रखी। उसी कल्पना का साकार रूप है यह कृति।’<sup>१०</sup> ‘बाईसवीं सदी’ में राहुल जी ने दो गतावली बाद के विद्वत् की कल्पना की है और उसकी व्यवस्था में माकमवादी ढंग से परिवर्तन देखे हैं। इस यूनापियन में वनमान समाज की आलोचना तथा दो गतावली बाद के साम्यवादी मानव-ममान का स्वप्न है। यूनापिया का नायक विद्वत् बंधु वनमान समाज की विकसितता, अथवा एक विपन्नता का और संकेत करता है, जिसमें सामाजिक वैयर्थ्य अपने विकसित रूप में व्याप्त है। सामाजिक विवर्तन, निरन्तर एक वास्तविक है। प्रत्येक प्रकार से उसकी स्थिति दोषनीय है। क्षुधापीडित सामान्य व्यक्ति अथवा एक घुटनमय वातावरण में सांस ले रहा है और उसका पाम रूग्णता निवारण हेतु पसा तक नहीं है। इसके विपरीत धनिता जो सत्ता में अल्प हैं, सुखमय जीवन यापन करते हैं। उनके पास भौतिक सुख सुविधाएँ प्रभूत मात्रा में विद्यमान हैं। साधारण जनता इन धनियों के लिए दासों से बढकर नहीं है। वनमान स्थिति के दिग्दर्शन एक उत्तरी आलोचना के अनन्तर राहुल जी ने बाईसवीं सदी के बल्सलोकात्मक समाज को प्रस्तुत किया है। यूनापियन ग्रामीण समाज, सामूहिक कृषि, औद्योगिक स्थिति, निष्पातन निष्पादित गति प्रणाली, प्रजातांत्रिक गति व्यवस्था आदि का आदेश राहुल जी ने प्रस्तुत किया है।

‘आधुनिक यूनापिया का अपनी प्रभावपूर्ण कायपद्धति के लिए समग्र पृथ्वी की आवश्यकता है जिसका इस समावेन करना चाहिए। यह एक विश्वराज्य का विन होना चाहिए।’<sup>११</sup> राहुल जी ने ‘बाईसवीं सदी’ में इस प्रकार के बल्सलोक की स्थापना की है। इस कल्पना के देश अथवा राष्ट्र की प्राचीन नरों, भाषा का भ्रम मान नहीं हम एक जाति मानना जय ऊँच-नीच नहीं, समग्र विश्व की मानवता एक इकाई है। साथ ही सभी सुख सम्पन्न हैं। समाज में विविधताएँ एक दुबलताएँ नहीं हैं। ‘वामपंथी की गदावली में कोई धारित नहीं, कोई तापित अथवा पापी नहीं।

जीवन वसुधा समतल है, सभी मुखी एव समरस हैं। बार्डसबी सदी के इस कल्पलोक को इन पत्तियों में देखा जा सकता है—अब भूमण्डल में सभी जगह समता का राज्य है। धर्म के नाम पर धन और प्रभुता के नाम पर, गोरे और काल के नाम पर जस अत्याचार पहले होते थे, जिस तरह मानव सत्तानें दूसरा के परा के नीचे आज्ञा में कुचली जाती थी उन सब का अब नाम नहीं। अब मनुष्य मनुष्य बराबर हैं। सभी जगह श्रम और भोग का समान मूलमंत्र रखा गया है। न अब भूमण्डल में जमींदार हैं न सठ-साहूकार हैं न राजा हैं न प्रजा न धनी न निधन न ऊँच है न नीच। सार भूमण्डल के निवासियों का एक कुटुम्ब है। पृथ्वी की सभी स्थावर जगम सम्पत्ति उसी कुटुम्ब की सम्पत्ति है।<sup>11</sup> इस प्रकार राहुल का स्वप्न विश्व मानवता का है जिसका प्रत्यक्षीकरण बार्डसबी सदी में है। यह कल्पलोक राहुल जी की मार्क्सवादी जीवन दृष्टि का अनुरूप है।

जीने के लिए राहुल जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास है। इसमें बीसवीं शती के प्रारम्भ से लेकर सन् १९३६ तक की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण है। प्रथम विश्वयुद्ध के अनन्तर स्वातन्त्र्य प्राप्ति हेतु भारतीयों के आन्दोलन, अंग्रेजों की दमन नीति जमींदार और कृषकों के मध्य भूमि अधिकार सम्बन्धी संधियों के अतिरिक्त अनेक सामाजिक धार्मिक आर्थिक अथवा परम्परागत का सजीव अन्त इस उपन्यास में हुआ है। भारतीय समाज की विविध समस्याओं एवं उनका मार्क्सवादी समाधान को राहुल जी ने प्रस्तुत किया है। 'जीने के लिए' उपन्यास का वण्य भारतीय समाज तर ही सीमित नहीं इसमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज का भी सस्पश है। देवराज के जीवन चरित के विकास को रखाकित करते हुए राहुल जी ने उसका माध्यम से साम्यवादी राजनीतिक स्वरा का मुखरित किया है। डा० चण्डीप्रसाद जांगी के 'मंदा मे, विभिन्न राजनीतिक घटनाओं की मार्क्सवादी व्याख्या प्रस्तुत करना ही राहुल जी का उद्देश्य है। देवराज के चरित का निर्माण मार्क्सवादी सिद्धांतों का अनुरूप हुआ है।<sup>12</sup> वस्तुतः भारत की राजनीतिक प्रगति का दर्शाना ही उपन्यास का उद्देश्य है। सामाजिक राजनीतिक उपन्यास की दृष्टि से जीने के लिए राहुल जी की एक समय कृति है।

भागो नहीं दुनिया को बदलो की रचना भी राजनीतिक उद्देश्य का लेकर की गयी है। उपन्यास की श्रुतिका में राहुल जी ने लिखा है—'अनता की धोट देने का अतिन्याय दे देने का काम नहीं चलगा उसे अपनी भलाई बुराई में मानूँ हानी चाहिए कि राजनीति के अखाड़े में वैसे दाँव पेच खेन जाते हैं। इस पायी में इस बात की मैंने थोड़ी सी कोशिश की है।' वस्तुतः भागो उही दुनिया का बदलो में उपन्यास शिल्प का पूरा विधान नहीं है। इसमें सवादात्मक शैली में मार्क्सवाद का सिद्धांतों के अनुरूप भारतीय समाज की स्थिति पर विचार किया गया है। इस विचारक्रम में क्या का सा आभास भी मिलता है अतः इस कथामय की सत्ता देना ही उचित प्रतीत होता है।

‘राजस्थानी रनिवास’ को यद्यपि राहुन जी ने धीरे-धीरे नित्यम को सजा दी है, परन्तु इसमें जोसवी मंदी के आरम्भ के राजस्थानी के समाज का ही प्रधान रूप में चित्रित किया गया है। गौरी के माध्यम से राजस्थानी रनिवास में अग्नि की नारी की दयनीय दशा का अर्थ इस उपयोग में हुआ है। सामन्ती जीवन की पार्श्वविकृति का चित्रण भी राहुन जी को सफलता मिली है। डॉ० गणेशन भी इस यौगिकी सती के पूर्वाङ्क की घटनाओं पर आधारित सामाजिक उपयोग मानते हैं।<sup>८</sup>

समयतः सामाजिक उपयोग में राहुन जी ने वर्तमान समाज की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि समस्याओं का अर्थ किया है। सामाजिक वैषम्य, गायक धीरे गायित की स्थिति सामन्ती समाज में पसंदी हुई नारी, समाज के अन्धविश्वास आदि विविधता तथा आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था आदि का चित्रण करते हुए सामाजिक मामलों की स्थापना का आशय प्रस्तुत किया गया है। राहुन जी के इन राजनीतिक, सामाजिक उपयोगों को प्रारम्भिक चर्चा के उपयोग ही माना जा सकता है। जीने के लिए वे अतिरिक्त अन्य उपयोगों में धीरे-धीरे सिल्प का प्रभाव है। अतः राहुन जी की धीरे-धीरे देन का महत्व सामाजिक उपयोग न हाना ऐतिहासिक उपयोग हैं। उन्हीं में महापण्डित राहुन के अद्वितीय एवं विचारधारा की यथाशक्ति अभिव्यक्ति मिलती है।

### ऐतिहासिक उपयोग

ऐतिहासिक उपयोग में इतिहास और उपयोग के तत्त्वा का सम्बन्ध होता है। उपयोग में कल्पना की प्रधानता होती है और इतिहास में भीति सम्बन्ध को प्रस्तुत किया जाता है। इसी ऐतिहासिक सामग्री और और-यासिक बना के परिणाम का परिणाम है ऐतिहासिक उपयोग।<sup>९</sup> ऐतिहासिक उपयोग में तथ्यों के यथाशक्त रूप को ग्रहण कर कल्पना द्वारा उसे पूर्ण चित्र के रूप में परिणत किया जाता है। ‘ऐतिहासिक उपयोग के लिए तो इतिहास की रक्षा करने के साथ-साथ उसने स्वल्प का कल्पना के द्वारा स्पष्ट करना भी आवश्यक है। यह ध्यान रखना चाहिए कि उपयोग इतिहास का अनुकरण नहीं हो सकता सबसे पहले यह उपयोग है—साहित्यिक कलावस्तु। साथ ही यह इतिहास भी है, जिसकी रक्षा की भी रक्षा करनी पड़ती है, अतः महाकल्पना अनिवार्य नहीं हो सकती।<sup>१०</sup> डॉ० मण्डल ऐतिहासिक उपयोग का स्वल्प इन बातों में प्रस्तुत करते हैं—ऐतिहासिक उपयोग में देश-काल का सर्वप्रथम अधिक ध्यान रखा जाता है। वास्तव में इन उपयोगों के लक्ष्य की सफलता ही इस बात में निहित रहती है कि वे जहाँ तक हो अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करते ताराचित्र परिवर्तनों का विश्लेषण करा दें। ऐतिहासिक घटनाक्रम में असत्य व अप्रामाणिक घटनाओं की भरमार नहीं हो सकती।<sup>११</sup> इन बातों से स्पष्ट है कि इतिहास और कल्पना के अद्वितीय सामञ्जस्य द्वारा ही ऐतिहासिक उपयोग की सति सम्भव है। अतः यही इतिहास और कल्पना का सीमा पर विचार करना उपयुक्त होगा।



**इतिहास**—इतिहास यथाय की परम्परा का वक्त है। जीवन की यवस्था और गति का लक्षा होना व कारण इतिहास उपयोग का उपयोगी उपादान है। ऐतिहासिक उपयोग में ऐतिहासिक सत्यता का अनिवार्य करना अनिवार्य घम है। उपयोगकार इतिहास के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपयोगकार बंगालनलाल वर्मा व शर्मा में—मेरी सम्मति में इतिहास के साथ खिलवाड़ करना अनुचित है। इतिहास के पूरे निर्वाह में जो कठिनाई लेखक को मुगतनी पड़ती है उस सर कर लेने पर जो सतोष और आनन्द प्राप्त होता है वह अपार है और सौन्दर्य बोध की निधि को बनाता है।<sup>१</sup> वस्तुतः ऐतिहासिक उपयोगकार के सामने एक सीमा रेखा खिंची होती है जिसका वह उल्लंघन नहीं कर सकता। ऐसा करने पर उसका नाम विद्वान् एवं अप्राप्त माना जाएगा। ऐतिहासिक कलाकृति में इतिहास के तथ्या का यथाय भवन कला की पहली मर्यादा है। ऐतिहासिक उपयोगकार अपने उपयोग की सत्यता प्रकट करने के लिए जिन उपकरणों की सहायता लेता है डा० मनमोहनलाल वर्मा के अनुसार वे उपकरण इस प्रकार हो सकते हैं—प्राचीन शिलालेख, प्राचीन मुद्राएँ, परधाने स्मारक, ताम्रपात्र, यात्रिया की साक्षियाँ, प्राचीन ग्रन्थ आदि।<sup>१</sup> राहुन जी इन उपकरणों के साथ भौगोलिक ज्ञान को भी अनिवार्य मानते हैं।

**कल्पना**—इतिहास विवरण है, निर्माण नहीं। उपयोग और इतिहास में यही मौलिक अंतर है। वस्तुतः उपयोग यथाय के आधार पर कल्पना की सृष्टि है। जहाँ उपयोगकार इतिहास को स्वीकार कर कल्पना द्वारा वास्तवता और शुष्कता को दूर करने का प्रयत्न करता है वही वह इतिहास में उपयोग का समावेश कर ऐतिहासिक उपयोग की सृष्टि करता है। उपयोग में सज्जनरमकता का तत्त्व उपयोगकार की कल्पना गति से समाविष्ट होता है। इसी से उसकी रचना आकषक और मनोरञ्जक होती है।

ऐतिहासिक उपयोगकार कल्पना के प्रयोग में सदा स्वतन्त्र भी नहीं है। उसका कल्पना प्रयोग ऐतिहासिक तथ्या को विकृत करने का मनमाना अधिकार नहीं रखता। कलाकार को नवीन तथ्य निर्माण का तो अधिकार है पर वास्तविक तथ्या को विकृत करने का नहीं। कला की मर्यादा का उल्लंघन करते हुए डा० रामानन्द तिवारी का कथन है—कला की दूसरी मर्यादा का सम्बन्ध ऐतिहासिक तथ्या के परिवर्तन से है। कलाकार इतिहास सत्य नहीं है इसलिए उसे इस परिवर्तन का उतना ही अधिकार है जितना नवीन तथ्या और कल्पनाओं ने सज्जन का। किन्तु परिवर्तन द्वारा वास्तविक तथ्या को विकृत बनाने का अधिकार कलाकार को भी नहीं है।<sup>१</sup> डा० त्रिमूर्तिशर्मा भी उपयोगकार को इतिहास की मर्यादा में धक्का हुआ स्वीकारते हैं। अधिकार का स्वतन्त्रता है कि वह जिस ऐतिहासिक चरित्र को चाह आकषक रूप में रख सकता है परन्तु उसका निम्न तत्कालीन देश और काल के बारे में जितनी भी जानकारी बतलें, उन सब का समन्वय उसे चरित्र के विकास में दिखलाना आवश्यक

ही नहीं अनिवार्य भी है। राहुल जी कल्पना की रंगी मयाग की ग्रहण करते हैं।

ऐतिहासिक उपयोग राहुल जी का विचार—राहुल जी ने अपना शोध यात्रा सिद्धांत एव यत्र-तत्र कुछ लेखा में ऐतिहासिक उपयोग के विषय में अपने विचार प्रकट किए हैं। उनके अनुसार ऐतिहासिक उपयोग में हम ऐसे समाज और उनके व्यक्तियों का विवरण करना पड़ता है, जो सत्ता के लिए विवश हो चुका है। किन्तु उनमें पर्याप्त कुछ ज़रूर छाड़े हैं जो उनके माय मनमानी करने की इजाजत नहीं दे सकते। इन पर चिन्ता या ऐतिहासिक प्रयोगों का पूरी तौर पर अध्ययन की यदि आपन लिए दुर्लभ समझन हैं तो बौन बढ़ता है आप ज़रूर ही इन पर कदम रखें? हम देखते हैं कम-से-कम हमारे देश में समय ब्यापार भी एसी गतती कर बैठन हैं और बिना तैयारी के ही चलन उठा सत हैं।<sup>२३</sup>

ऐतिहासिक उपयोगों का विवेक ऐतिहासिकों की तरह ही होना चाहिए—उमें समझना चाहिए कि बौद्ध-सामग्री का मूल अधिक और निम्न क्या है। लिखित सामग्री वही प्रथम श्रेणी की मानी जाएगी जिस उसी समय लिपिबद्ध किया गया है। समकालीन लिपिबद्ध सामग्री सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जा सकती है। सिक्के, गिलाखें और ताम्रपत्र उसी समय के लिखे होते हैं इसलिए उनका मूल्य अधिक है। वास्तु श्रुतियाँ और चित्र अपने समय के समाज का जीवन पर बहुत प्रकाश डालते हैं।<sup>२४</sup>

ऐतिहासिक उपयोगों के लिए भौगोलिक ज्ञान भी आवश्यक है। इस विषय में राहुल जी का कथन है—ऐतिहासिक अनौचित्य से बचने के लिए जिस तरह सरकारी ऐतिहासिक सामग्री और इतिहास का अच्छी तरह अध्ययन आवश्यक है वैसे ही भौगोलिक अध्ययन की भी आवश्यकता है। जिस तरह ऐतिहासिक मापदण्ड स्थापित करने के लिए तत्कालीन राजाओं के राज्य और सामन्तों की पहल में ही साक्ष्य बनाने उसमें विलम्ब घटनाओं के अध्ययन का जो टोका लेना ज़रूरी है उसी तरह भौगोलिक स्थानों, उनकी दिशाओं और दूरियों का ठान गीत अन्वेषण करने के लिए तत्कालीन ज्ञान का खोना हर वक्त सामन रखना चाहिए।<sup>२५</sup>

इस प्रकार राहुल जी ने ऐतिहासिक उपयोग-मध्यमों में सबसे अधिक विचार प्रस्तुत किए हैं। वस्तुतः ऐतिहासिक उपयोगों की संख्या बहुत नहीं। जब तक तत्कालीन ऐतिहासिक सामग्री भौगोलिक स्थिति एवं तत्कालीन समाज के आधार पर व्यवहार योग्य विचार रखने-सूझने आदि की पूर्ण जानकारी न हो तो तब ऐतिहासिक उपयोगों की श्रुति लिपि का दायित्व नहीं उठाना चाहिए। राहुल जी का यह अग्रिम मूल मानन है—ऐतिहासिक उपयोगों में इतिहास और भूगोल या तत्कालीन समाज की समझन को ही अग्रिम दाय समझना है।<sup>२६</sup> ऐतिहासिक उपयोगों के लिए वस्तुतः हमारे अध्ययन की आवश्यकता है। राहुल जी अपने ऐतिहासिक उपयोगों की ओर प्रकाश डालने का मूल कारण की ओर संकेत करते हैं—इस तरह के उपयोगों

सिम्बन म जितन परिचय और अध्ययन की आवश्यकता है वस उपयाम हिन्दी म अभी कम है। दूसरे यह भी कि अतीत क प्रगति-गल प्रयत्न का सामन लाकर पाठका के हृदय म आदगों के प्रति इस प्रकार की प्रेरणा भी पदा की जा सकती है।<sup>१२७</sup>

### राहुल जी के ऐतिहासिक उपयास

राहुल जी के पाँच ऐतिहासिक उपयास हैं — 'निवागास' सिंह सेनापति, जय योधेय 'मधुर स्वप्न तथा विस्मृत यात्री'। ऐतिहासिक उपयास लेखन के लिए अनेक प्रकार के दृष्टिकान हो सकत हैं। यथा वनमान जीवन के कटु यथाय स असंतुष्ट एव पराजित हाकर अतीत क स्वप्न लाव म पलायन करक मानसिक विश्रान्ति प्राप्त करने का प्रयत्न या विगतकाल के आदगों के प्रति असंत मोहासक हाकर उनका अतिरजित रूप म चित्रित करके वतमान के साथ उसक वपम्य का रेखाकन, अथवा नय जीवन की ढालने के लिए इतिहास के समृद्ध युग म प्रकाश तत्त्वा का अवेपण। इन तीना कारणों से भिन्न अतीतो-मुख होने का एक यह कारण भी है कि कभी-कभी लेखक अपने जीवन दशन के आलाप म तत्कालीन जीवन के विविध पन्ना का विवेचन करता है। वह अतीत से उदाहरण खोजकर प्रस्तुत करना चाहता है ताकि वह अपन विचार एव आदोलन की जड़ें असन्त गहरी सिद्ध कर सके।<sup>१२८</sup> राहुल जी के अतीतो-मुख होने का यही कारण है। उनका समस्त जीवन और साहित्य यह प्रमाणित करता है कि न तो विचार के क्षन म वे पलायनवादी रहे हैं और न भाव के क्षत्र म अतीत क प्रति मोहासक। समाजवादी विचारधारा पर उह आस्था है और साम्यवादी जीवन दशन उनका अपना जीवन-दशन है। महेन्द्र चतुर्वेदी के गब्दा म उनका मूल उद्देश्य समाजवादी सिद्धांता क प्रसार द्वारा एक वगहीन आन्त समाज की स्थापना की प्रोत्साहन देना है। फलत उहोंने अतीत इतिहास म अपन मनोनुकूल पानों और घटनाओं का चयन किया है और अपने अभीष्ट लक्ष्य की धार के एकनिष्ठता क साथ अप्रसर हुए हैं।<sup>१२९</sup> इस प्रकार राहुल जी न अपने उपन्यासा म वनमान समस्याओं को प्राचीन वातावरण के माध्यम स प्रस्तुत किया है।

ऐतिहासिक सामग्री के स्रोत—राहुल जी क ऐतिहासिक उपयास दिवोदास सिंह सेनापति जय योधेय मधुर स्वप्न तथा विस्मृत यात्री इतिहास के विस्मृत पन्ना स सम्बद्ध हैं। राहुल जी का इतिहास ज्ञान बड़ा व्यापक और गम्भीर है। शताब्दियों क व्यवधान की चीरती हुई उनकी पनी दृष्टि भारतीय इतिहास के अनेक युगा का सा साकार बनाने म समर्थ हुई है। दिवोदास (१२२० ई०पू०) सिंह सेनापति (५०० ई०पू०), जय योधेय (३५०-४०० ई०) मधुर स्वप्न (४६२-५२६ ई०) तथा विस्मृत यात्री (५१८ से ५८६ ई०) विभिन्न कालों से सम्बन्धित उपयास हैं। इन उपयासा की रचना म लेखक न ऐतिहासिक तथ्यों क प्रति सावधानी एव ईमान दारी दिखलाई है। ऐतिहासिक सामग्री जुटाने की ओर उनका ध्यान सदैव अधिक रहा है। उनकी दृष्टि म एक ऐतिहासिक उपयासकार का विवेक इतिहासकार की

तरह हाना चाहिए। राहुल जी समकालीन लिपिबद्ध सामग्री का ही प्रामाणिक एवं प्रथम श्रेणी की सामग्री मानते हैं, जिसके अनन्त मुख्य रूप से तत्कालीन गिलालेख, नाम्न पत्र, सिक्के आदि आते हैं। राहुल जी ने अपने उपयोग में इतिहासकार के विवरण का परिचय दिया है इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं। वस्तुतः 'उनका व्यापक इतिहास ज्ञान उनकी कला की बहुत बड़ी गति है।'<sup>13</sup>

राहुल जी ने अपने ऐतिहासिक उपयोगों के ज्ञान के विषय में उपयोग की भूमिकाओं एवं परिणिष्टा में संकेत दिए हैं। दिवांगत में श्रद्धांश का काल की घटनाएँ हैं। अतः इस उपयोग की ऐतिहासिक सामग्री श्रद्धांश की कथाएँ हैं। 'सिंह सनापति' का आधार बौद्ध ग्रंथ है। भूमिका में राहुल का कथन है—'साहित्य पालि, संस्कृत त्रितीय में अधिकता से और जन साहित्य में भी कुछ उस काल के गणों की सामग्री मिलती है। मैं उस इस्तेमाल करने की वांछना की है।'<sup>14</sup> जय योधेय गुप्तकालीन योधेय गण की कथा है। इसका ऐतिहासिक आधार अत्यन्त पुष्ट है—मैंने अपने उपयोग में गौरववासी योधेय-गण और उसकी ध्वजसीमा को चित्रित किया है। यहाँ राजाग्रा, राजकुमार। तथा दूसरे गुप्तवंशी अधिरारिया के नाम देन में ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग किया है—समाज के चित्रण में मैंने कालिदास के ग्रंथों और उसी समय यात्रा करने वाले फाहियान के यात्रा विवरण का उपयोग किया है। डाक्टर अलतजर प्रोफेसर खलालदास बनर्जी और डा० आर० एन० दण्डेकर के ग्रंथ, गुप्त कालीन गिलालेख और सिक्के। से मैंने इस ग्रंथ में बहुत सहायता ली है।<sup>15</sup> मधुर स्वप्न का आधार इरान-मध्यमी इतिहास ग्रंथ है। सन १९४४-४५ की ईरान-यात्रा में राहुल ने इसके लिए सामग्री संकलित की थी। उपयोग के परिणिष्ट में विस्तार से उपयोग में आए यात्रा के ऐतिहासिक व्यक्तित्व की प्रमाणित करने के लिए सामग्री उल्लिखित है।<sup>16</sup> 'विस्मृत यात्री' के लिए राहुल जी ने चीनी-साहित्य से सामग्री ली है।<sup>17</sup> इन ऐतिहासिक ज्ञान के उल्लेख से स्पष्ट है कि राहुल जी ने अपने उपयोगों में जिन ऐतिहासिक तथ्या का प्रस्तुत किया है वे प्रामाणिक हैं।

राहुल जी के ऐतिहासिक उपयोगों में इतिहास और कल्पना—संज्ञात्मक साहित्य के क्षेत्र में राहुल जी की प्रतिभा का सर्वाधिक वरदान उनके ऐतिहासिक उपयोगों का प्राप्त है। स्वयं राहुल जी का कथन है—'इतिहास का प्रेमी और विद्यार्थी होने से उस भूमिमान करने की आकांक्षा हुई इसी के परिणाम में उपयोग है।'<sup>18</sup> राहुल जी का इतिहास ज्ञान बड़ा व्यापक एवं गम्भीर है और यही उनकी कला की सबसे बड़ी गति भी है। वे जिस ऐतिहासिक युग का ध्यान करते हैं उस साकार रूप प्रदान करना उनकी कला की विणिष्टता है। राहुल इतिहास की कला का स्पष्ट मानते हैं—'इतिहास एक तरफ विज्ञान है अथवा हृदय को नहीं मस्तिष्क को तृप्त करना उसका काम है तो दूसरी ओर वह कला का स्पष्ट है।'<sup>19</sup>

'गोचरानी गुट्टू' लिखती हैं—'यद्यपि राहुल सावध्यायन के उपयोगों की संस्कृति का रूप निर्माण वर्तमान युग की समचित्त संस्कृति से सम्पन्न हुआ है तथापि

उन्होंने इतिहास के जिस विणिष्ट युग में भारतीय जीवन की भावभूमि में प्रवेश किया है उसका सवा गीण प्रत्युत या कहें कि उसमें भी 'यापक' चित्रण उनके उपयोग में मिलता है।<sup>13</sup> युग विशेष के सर्वांगीण एवं 'यापक' चित्रण के लिए राहुल जी ने इतिहास के साथ साथ ऐतिहासिक कल्पना का भी आश्रय लिया है जिसमें उनके उपयोग रोचक एवं मरस बन गये हैं। राहुल जी के उपयोगों में इतिहास तत्त्व एवं कल्पना कुशलता द्रष्टव्य है। शिवदत्तसिंह चौहान लिखते हैं— इनके ऐतिहासिक उपयोगों में सिंह सेनापति जय योधेय मधुर स्वप्न उल्लेखनीय है उनका उद्देश्य विभिन्न प्राचीन संस्कृतियों और सामाजिक युग में मनुष्य के विकास की कहानी का चित्रित करना होता है। इसके लिए वे ऐतिहासिक और प्रागैतिहासिक युगों के विणिष्ट समाज और उनके निर्माण में भाग लेने वाले विणिष्ट और साधारण जनता का कल्पनाजय चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनके उपयोगों में प्राचीन मानव संस्कृति और समाज के ऐतिहासिक विकास की सुंदर भांती रहती है।<sup>14</sup> भाग के पठों में राहुल जी के ऐतिहासिक उपयोगों में इतिहास और कल्पना तत्त्व का विवेचन प्रस्तुत है।

### दिवादास

**इतिहास—** दिवादास ऋग्वेदिक आर्यों के जीवन से सम्बद्ध लघु उपयोग है। इस उपयोग में सप्तसिंधु में आर्यों एवं दस्युओं के संघर्ष का चित्रण है। इस संघर्ष में पुरु राजा पुरुकुत्स किलाता की सात पुरियाओं को 'वस्तु' कर राज्य विस्तार करता है और तस्युओं का राजा दिवादास पणिया को परास्त कर विराता की सो पुरिया पर अधिकार करता है।

दिवादास' की ऐतिहासिक घटनाओं के विषय में राहुल जी का कथन है— 'ऋग्वेदिक काल की घटनाएँ उपयोग का विषय हो सकती हैं। गन्धर्व विजय और पाण्डुराजयुद्ध शम्बर विजय आदि इस में।' इस उपयोग में गन्धर्व विजय और शम्बर विजय से सम्बद्ध घटनाएँ हैं क्योंकि उपयोग के नायक के साथ इन्हीं का सीधा सम्बन्ध है। दिवादास की इतिहास सम्मतता के लिए राहुल जी ने उपयोग के प्रत्येक परिच्छेद के आरम्भ में ऋग्वेद की एक एक श्लोका को उद्धृत किया है। इस प्रकार उपयोग के बारह अध्यायों की घटनाओं से सम्बद्ध बारह श्लोकाएँ उपयोग में हैं। परन्तु ये बारह श्लोकाएँ ही प्रस्तुत उपयोग का आधार हैं। एसा बात नहीं। राहुल जी ने इसी अनुरोध श्लोकाओं का भी आधार लिया है जिससे ऋग्वेदकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का अंकन करने में उन्हें सहायता मिली है। दिवादास में पुरुकुत्स दिवादास अबला सना सरमा, शम्बर गुण्य आदि का वर्णन ऋग्वेद की श्लोकाओं के अनुकूल हुआ है।<sup>15</sup> ऋषि भरद्वाज तथा दिवादास के विषय में राहुल जी संस्कृत काव्यधारा में लिखते हैं— भरद्वाज सप्तसिंधु के महान विजेता भरत जन के नायक दिवादास के पुरोहित (गुरु तथा प्रधान भन्नी) थे। शम्बर आदि पहाड़ी गन्धुओं पर विजय प्राप्त करने में भरद्वाज का बड़ा हाथ था।<sup>16</sup> उक्त तथ्य

‘वदिव इण्डेवम’<sup>१३</sup> तथा ‘हिंदी ऋग्वेद’<sup>१४</sup> तथा ‘ऋग्वेदिव इण्डिया’<sup>१५</sup> नामक ग्रंथों में म संकलित तथ्या में भी साम्य रमते हैं। ‘दिवोदास’ में वर्णित तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का विवरण ऋग्वेद की ऋचाओं पर आधारित है। साथ ही वैदिक युग के इतिहासकारों द्वारा दिये गए तथ्यों में अनुबल है। कुछ तथ्य इस प्रकार हैं—

(१) ऋग्वेद के विवरणों से प्रमाणित होता है कि धार्यों का प्रधान उद्योग कृषि-कर्म था। पशु-पालन तथा अन्न धरने का जानवरों का पालन कृषि-कर्म से किसी भी प्रकार कम महत्त्वपूर्ण नहीं था। गायों की बड़ी प्रशिक्षण थी। उनका दूध ऋग्वेद कालीन समाज में भोजन का प्रधान अंग था। प्रतिदिन पशुओं के भ्रूणों को गोप चरागाहों में ले जाते थे।<sup>१६</sup> राहुस जी ने ऋग्वेदिक धार्यों की भूमिका में धार्यों की धार्मिकता के विषय में इससे मिलता जुलता विवरण दिया है।<sup>१७</sup>

(२) ऋग्वेदिक म धार्यों और अनाय जन का भेद स्पष्ट मिलता था। वह भेद शारीरिक भी था सांस्कृतिक भी। अनाय वाले रंग के और अनाय या चपटी नाक वाले होते थे।<sup>१८</sup> इन्हें कृष्णचर्म कृष्णयानि या कृष्णरज कहा जाता था।<sup>१९</sup> मकड़ोंनल लिखते हैं— य नाग मानवीय सन्तु है जिनका रंग काला है जो अनाय हैं, अन्वे तथा अन्वेदा हैं।<sup>२०</sup>

(३) पण्डितों से सम्बन्धित वर्णन एवं उनके समुद्र तक फैले व्यापार आदि भी ऐतिहासिक तथ्य हैं—पण्डित भी धार्यों थे जिनका सम्बन्ध व्यापारिक श्रेणी से था। जो वेबन स्थल भाग से ही नहीं बल्कि समुद्र भाग से भी व्यापार करते थे और अपनी लोभी तथा धन संचय की वृत्ति के लिए सम्य धार्यों में खुरी दृष्टि से देखे जाते थे। वे उन धार्यों को नहीं करते थे जिन्हें धार्यों करते थे और धार्यों उनसे धृणा करते थे। य गंगा के किनारे रहते और नौका निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे।<sup>२१</sup>

(४) निबोधन में वर्णित धार्यों के आमोन् प्रमोद भी इतिहासज्ञों को मार्य हैं। आमोन् प्रमोद में रथ की दौड़ घोड़ा की दौड़, पासे खेलना, नृत्य और गान सम्मिलित थे। अन्न खेलन के दुष्परिणामों का भी उल्लेख है। उससे लोग का सब नाश हुआ जाता था।<sup>२२</sup>

(५) सप्तसिंधु के विविध धार्यों के विषय में श्री अविनाशचन्द्र दास का कथन है—‘सप्तसिंधु के धार्यों में विभक्त थे अपने धार्मिक विश्वासों तथा सामाजिक रीति-नीतियों के कारण। कुछ के धार्मिक विश्वास, देवपूजा भाषा तथा सामाजिक आचार विचार में साम्य था, यद्यपि उनका पयक राज्य एवं राजा था। य ऋग्वेद के पंचजन कहलाते हैं। अनु, दुह्य, तुवग, तस्सु तथा भरत पंचजन थे। य पंचजन सोम अर्पण के शौकीन थे। यह साम अर्पण इन्द्र को किया जाता था।<sup>२३</sup> धार्यों की सोमपान विषयक अनेक वदिव ब्याप्य मिलती हैं।<sup>२४</sup> इनके अतिरिक्त धार्यों के मांस भोजन का उल्लेख भी इन्हीं ऋचाओं में है।<sup>२५</sup>

इस प्रकार निबोधन सप्तसिंधु के ऋग्वेदिक धार्यों के जीवन का यथार्थ

लेखा जोखा है। राहुल जी ने ऋग्वेद की ऋचाया को सामने रखकर एक एक पक्ति लिखी है। उपयास की आधिकारिक क्या प्रासंगिक क्या तथा अथ प्रसंगों की योजना का स्पष्ट आधार ऋग्वेद की ऋचाएँ हैं। उपयास के प्रमुख पात्र एवं उनके संवाद भी ऋग्वेद में सम्पन्न हैं। अतः उपयास की ऐतिहासिकता असंदिग्ध है।

**कल्पना**— दिवोनास में कल्पना का प्रयोग स्वल्प ही है। राहुल जी एतिहासिक उपयास में ऐतिहासिक तथ्या को सच्चाई से प्रस्तुत करना अपना धर्म मानते हैं। दिवोनास में सप्तसिंधु के भायों के जन जीवन का प्रस्तुत करना उनका ध्येय है। और उसके लिए उनके सम्मुख ऋग्वेद की ऋचाया के रूप में पर्याप्त सामग्री विद्यमान है। उसी को सुव्यवस्थित कर ऐसे रूप में प्रस्तुत किया गया है कि दिवोनास इतिहास मात्र न रहकर उपयास बन गया है। दिवोनास की कथा को गलना बद्ध रूप में प्रस्तुत करने एवं उसमें और यामिक कथा के अनुकूल सरसता लाने के लिए कल्पना का पुनः भी लिया है। यह कल्पना इतिहास सम्मत है।

ऋग्वेद वर्णित पुरुरवा तथा उवगी की स्वतंत्र कथा यहाँ युगल गान के रूप में अत्यन्त रोचक बन पड़ी है। इस युगल गान की गायिकाएँ हैं—पुरुकुत्सानी तथा दिवोनास की माता पीरवा।<sup>१४</sup> आमान प्रमान के साधना में अश्व समन आयोजन ऋग्वेद की ऋचाया में संकलित है पर बारह वर्ष के दिवोनास को अश्व समन के विजेता के रूप में प्रस्तुत करना उपयासकार की कल्पना है जिससे उसके नायक के चरित्र उत्कृष्ट में सज्जित होनी है।<sup>१५</sup> छूत श्रीश का वर्णन भी ऋग्वेद में आया है परन्तु उपयासकार ने उसे दिवोनास की शासन प्रबंध कुशलता के प्रसंग में वर्णित किया है।<sup>१६</sup> बर्दिक काल में टिडडी दल के आक्रमण प्रायः होते रहने के पर भरद्वाज के मुख से टिडडी दल के रूप में विराता का वर्णन कल्पना का ही चमत्कार है।<sup>१७</sup> गंधर्व गहीता कुमारी की कथा भी कल्पना अथ है।<sup>१८</sup> शम्बर दुहिता का नाम और उसके साथ दक्ष मयमान के प्रसंग को सम्बद्ध करना भी लेखक की कल्पना की ही उपज है।<sup>१९</sup>

इस प्रकार राहुल जी के दिवोनास की कल्पना इतिहास सम्मत है व ऐतिहासिक तथ्या को कही दिक्कत नहीं करती।

## सिंह सेनापति

**इतिहास**— सिंह सेनापति राहुल जी का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक उपयास है। इसका कथानक ५०० ई० पू० के लिच्छवी गणराज्य से सम्बद्ध है। राहुल जी ने भूमिका में लिखा है—यह मेरा दूसरा उपयास है—ई० पू० ५०० का। मैं मानव समाज की उपास लेकर आज तक के विकास का २० कहानियाँ में लिखना चाहता था। उन कहानियाँ में एक इस समय (बुद्धकाल) की भी थी। जब लिखने का समय आया तो मालूम हुआ कि सारी बाता का कहानी में नहीं लाया जा सकता इसलिए सिंह सेनापति उपयास के रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है।<sup>२०</sup> भूमिका में ही राहुल जी ने प्रस्तुत उपयास के ऐतिहासिक आधारों की ओर भी संकेत किया है—

सिंह सनापति के समकालीन समाज को चित्रित करने में मैंने एतिहासिक यथार्थ और औचित्य का पूरा ध्यान रखा है। साहित्य पाली, मन्वन, तिथ्यतीथ म अधिकता से और जन साहित्य में भी कुछ उस वान के गणा (प्रजातन्त्र) की भावप्रती मिलती है। मैंने उस इन्तेमान करने की कोशिश की है। "राहुल जी न 'सिंह सनापति' की इतिहास सम्मनता का पाठका का विश्वास दिवाने के लिए एव रोचक क्या उपयाम के विषय प्रवेग में उल्लिखित की है।" उनका कथन है कि छपरा जिला में एव मित्र के परतो नेन की गुदाद करत समय उह कुछ इ टें प्राप्त हुई जिन पर ब्राह्मी अक्षरा में लिखा हुआ था। य ई टें नही किसी पुस्तक के पन्ने हैं। जयक न बामज-स्थाही की जगह भी ई ई टा पर नीह लेखनी में अरनी पुस्तक का स्वयं लिखा या लिखवाया। फिर मूल जान पर उ ह पकाकर छत्ती की राजल में यहाँ गाद दिया।" उसी पुस्तक का अनुबा "सिंह सनापति" है। अपने वान का पाठका का विश्वास दिवाने के लिए व लिखत हैं—'आपको भरी सच्चाई पर सहेह हो ता इन सालह मौ ई टा का जावर पटना म्यूजियम में देय लीजिय।" पुरातत्त्ववेत्ता राहुल के कथन का अक्षरसः सत्य मानकर कुछ गण पटना म्यूजियम में पहुच गय। परन्तु 'सिंह सनापति' किसी ऐसी अमृत पुस्तक का अनुबा नहीं है। यह एक मौलिक उपयाम है। विमृष्ट यात्री में उहान लिखा है—यदि यह वस्तु ई टा पर उत्खीण होता तो वह उपयास नहीं होता। ई टा के दानार्थी पाठक का समझ लेना चाहिए कि यह उपयास है ही एतिहासिक है अर्थात् उम काल के देकाल पात्र की परिधि से बाहर नहीं जा सकता। भरे सभी एतिहासिक उपयास उपयास हैं, इतिहास या जीवनी नही।"

इस उपयाम की क्या पालि वाडमय से ली गई है।" डा० नगेद्र सिंह सनापति की ऐतिहासिकता के विषय में लिखत हैं—'सिंह सनापति' में त्रिम्बसार और प्रजातन्त्र के व्यक्तित्व तथा उका लिच्छवीयों में युद्ध का प्रामाणिक रूप से एतिहासिक कहा जा सकता है यहाँ तब कि नायक सिंह भी काल्पनिक व्यक्ति हैं।" इस प्रकार डा० नगेद्र नायक सिंह का काल्पनिक मानत है परन्तु विनयविटक के महावर्ग में सिंह के विषय में लिखा है—'सिंह नाम का सनापति पहन जनमत का अनुयायी था। महात्मा बुद्ध के उपलब्ध का सुनकर वह उनका अनुयायी बन गया। महात्मा बुद्ध ने सिंह के निमन्त्रण पर सामिप भाजल किया।" इसमें अतिरिक्त त्रिकाली आक पाली प्रौर नम्ज में सिंह का नाम सिंह के ऐतिहासिक व्यक्तित्व का प्रमाण है।" राहुल जी न मन्मानन बुद्ध में भी सिंह का उल्लेख किया है।"

सिंह सनापति में लिच्छवीगण के सामाजिक व राजनीतिक जीवन का प्रस्तुत करना दत्तन का उद्देश्य रहा है। उपयास में वर्णित लिच्छवीगण की इतिहास सम्मनता के लिए टॉ० राधानुमुद मुकर्गी के निम्नलिखित वणना को उद्धृत करना अप्रासंगिक न होगा।

'सभी गणतन्त्र में लिच्छवी गणतन्त्र अग्रगण्य था। उसकी राजधानी बंगाली



म थी जिसने दो भाग थे । (१) ग्राम्य-तर या नगर का मुख्य भाग और (२) बाहिर (उपनगर) ग्रथवा बहतर बशाली । बुद्ध ने लिच्छवियों को कष्टसह बताया है जिनमें आलस्य और विलासिता नहीं थी जो मुलायम गद्दे तकियों की बजाय लकड़ी के लट्ठा के सिरहाने पर सोया करते थे । ये तीर चलाने हाथियों के साधन और कुत्ता स गिकार करने में सिद्धहस्त थे । वे बुद्ध के भक्त थे और उन्होंने उनसे बंगाली पधारने की प्रायना की थी ।<sup>११</sup> डा० भगवतशरण उपाध्याय ने भी लिच्छवी गणतन्त्र बंगाली नगरी तथा बुद्ध और लिच्छवियों के सम्बन्ध आदि के विषय में इसी प्रकार के तथ्या का उल्लेख किया है ।<sup>१२</sup> अजातशत्रु और लिच्छवियों के पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे नहीं थे । मगधराज अजातशत्रु साम्राज्य विस्तार की इच्छा से लिच्छवियों को पराजित करना चाहता था । सिंह सनापनि ने मकेतिन उसके युद्ध की ऐतिहासिक प्रामाणिकता असंदिग्ध है । इस युद्ध का उल्लेख डा० मुर्कजी ने भी किया है ।<sup>१३</sup>

लिच्छवियों के प्रजातन्त्रात्मक शासन एवं परिपक्वता के विषय में डा० भगवतशरण उपाध्याय का कथन है— लिच्छवी अपने सच की बैठका के लिए प्रसिद्ध थे । उनकी बैठका में शासन के कार्य सुचारु रूप और एकता से सम्पन्न होते थे । राष्ट्र का शासन एक प्रकार की संस्थापिका द्वारा होता था । बैठकें संस्थागार में होती थीं । बौद्ध ग्रन्थों से पता चलता है कि इन संस्थागारों के कार्यक्रम बड़ी मुस्तदी से होते थे । सभा की सम्मति इलाकामा द्वारा होती थी । इलाकाएँ उत्तम रक की काम में लाई जाती थी जितनी सम्मतियाँ होती । मतदान सचचा स्वतन्त्र होता था और निश्चय बहुमत के पक्ष में । इस प्रकार गणतन्त्र की कार्यवाही प्रजातन्त्रात्मक थी ।<sup>१४</sup> डा० प्रणान्त कुमार जायसवाल ने भी लिच्छवियों की गणतन्त्र शासन प्रणाली का उल्लेख किया है ।<sup>१५</sup>

उप-यास में वर्णित बौद्ध-नरेश प्रसेनजित् भी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं ।<sup>१६</sup> उसका गिनण ॥ गिला के विख्यात विद्यापीठ में हुआ था ।<sup>१७</sup> पण्डित बल्लभ उपाध्याय निम्नसार एवं प्रसन्नजित् को समकालीन मानते हैं ।<sup>१८</sup> बन्धुन मल्ल और महानि का त गिला में गिन्हा ग्रहण करने जाना भी ऐतिहासिक तथ्य है । डा० राय राय के अनुसार कुन्तीनारा के एक राजा का बन्धुन नामक पुत्र तगिला पढ़ने गया था । महानि जब गिल्य सीमा कर आया तो उसने पाँच सौ लिच्छवी युवकों को गिल्य सिमाकर तयार किया ।<sup>१९</sup>

उक्त तथ्य डा० रमणचन्द्र भजूमनार की ऐतिहासिक श्रुति कांपारेण राइफ इन एन्टीक इण्डिया<sup>२०</sup> जि आरमफीड इस्ट्री आफ इण्डिया<sup>२१</sup> डा० भगवतशरण उपाध्याय की पुस्तक प्राचीन भारत का इतिहास<sup>२२</sup> तथा डा० राय राय की पुस्तक प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास<sup>२३</sup> में भी मिलते हैं । बौद्ध धर्म और लिच्छवी गणतन्त्र का उक्त तथ्य की ऐतिहासिकता का मित्रान किया जा सकता है । इस पुर्त

वर्णिन वंशाली के बीग, कूटगारपाला महाभा बुद्ध का सामिप भोजन ग्रहण करना, जन और बौद्ध धर्म की प्रतिद्वन्द्विता आदि के प्रसंग<sup>२५</sup> सिंह सनापति व अनुकूल हैं।

सिंह सनापति' म वर्णिन ऐतिहासिक तथ्या एवं उपयुक्त ऐतिहासिक तथ्या के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट है (१) सिंह सनापति का नायक सिंह ऐतिहासिक पात्र है। (२) सिम्बसार अजातशत्रु तथा प्रसन्नजित इतिहास प्रसिद्ध नायक (सम्राट) हैं। (३) अय घोष पात्रा म वल्लराज जीवक, महालि तीर्थ वर महावीर एवं महात्मा बुद्ध का ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। (४) ममघ और वगानी व सधप (मुद्ध) सम्बन्धी घटनाएँ भी ऐतिहासिक हैं। (५) वगानी एवं तगगिला का गौरवाचन भी इतिहास-सम्मत है। निष्ठाविद्या की वणतन प्रणानी का चित्रण इतिहासानुकूल है और तगगिला के विश्वविद्यालय का गौरव सा कभी विमृष्ट हो ही नहीं सकता। (६) वाट्ठमन एवं जनमत की प्रतिद्वन्द्विता की चर्चा भी इतिहास में प्राप्य है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सिंह सनापति इतिहास की आधारभूत पर स्थित प्रौढ-यासिक रचना है। वना और वाक्य की मर्यादा का इसमें निर्वाह है।

कल्पना — सिंह सनापति' व प्रमुख पात्र एवं घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। साथ ही अनन्त काल्पनिक प्रमथा की सुन्दर योजना हुई है। गांधार कुमार कपिल का प्रे-का-भूरा चरित्र कल्पना प्रसूत है। उसके पराक्रम की कथा दब सट्टि के मुखोपनोम एवं प्रेम वणन 'लखन' की अपनी ही कल्पना है। गांधार कुमार के चरित्र की कल्पना में 'लखन' का अपना जीवन वान अभिव्यक्त होता है। विशेषकर 'उत्तरहु' में युद्ध प्रमथ म सम्बन्धित कपिल के चरित्र म। वृत्त यात्रा का प्रसंग भी कल्पनाप्रसूत है। इस कल्पना के पीछे भी राहुल जी का जीवन गान है जिसमें वह हर मानव को स्वच्छन्द बनना चाहते हैं।

सिंह सनापति' म विम्बसार और निष्ठाविद्या व मध्य युद्ध का वणन है, इस युद्ध के वणन म लखन न अनुमान से काम लिया है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि अजातशत्रु न निष्ठाविद्या को पराजित किया परन्तु यह प्रसंग उपयाम का विषय नहीं है। सर्वोपरि सिंह सनापति व समा स्त्री-पात्र वर्णित है। राहिणी और दोमा व प्रणय प्रमथ तथा नामा की गगरतें एवं 'यम्य विना' व प्रमथ म 'लखन' की कल्पना है। इसमें अनिश्चित तत्त्वज्ञान गान-यान तथा आचार विचार सम्बन्धी वणन म 'लखन' व वनना का प्रचुर प्रयोग किया है। सिंह सनापति' म इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय हुआ है, इसमें सन्देह नहीं।

### जय घोष

इतिहास — जय घोष सुप्त सम्राट के ममताशील घोष्य जानि व जन जीवन म 'लखन' ऐतिहासिक उपयाम है। 'लखन' ऐतिहासिकता के विषय म राहुल जी उपयाम व प्रावधान म विमत हैं — जय घोष ऐतिहासिक उपयाम है। इसमें ईगवी मन ३/० ४०० व भारत की राजनीति, समाजिक अवस्था का चित्रण किया गया है। प्रावधान म लखन न गुप्तमानीन गिनातया सिक्का तथा डॉ० अन्तेकर

के ऐतिहासिक ग्रन्थों फाहियान के यात्रा विवरण तथा कालिदास के ग्रन्थों का ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में उल्लिखित किया है। जय यौधेय में वर्णित मुख्य घटनाएँ पात्र एवं स्थितियाँ ऐतिहासिक हैं।

यौधेय जाति के विषय में डा० वासुदेव उपाध्याय का कथन है— यह जाति भारत के पश्चिमोत्तर प्रांत में बहुत प्राचीन काल से निवास करती थी। पाणिनि ने (ई० पू० ५००) इस जाति को ग्राम्यधृजजीविन सघ में उल्लिखित किया है। यौधेय एक बलशाली जाति समझी जाती थी जिसे समुद्रगुप्त द्वारा पराजित होना पड़ा। ऐसा समझा जाता है कि कुपाण वगैरे नष्ट करने में इस सघ ने भी योग दिया था। यौधेयों के कई प्रकार के सिक्के मिलते हैं जिन पर यौधेयाना गणस्य जय लिखा रहता है। इनका राज्य उत्तरी राजपूताना तथा पूर्वी पंजाब में फैला हुआ था।<sup>१८१</sup>

डा० रमेशचंद्र मजूमदार तथा डा० अनन्त गिब अस्तंकर की पुस्तक दि वाकातक गुप्त एज' में यौधेयगण के विषय में निम्नलिखित तथ्य मिलते हैं— (१) यौधेयों ने द्वितीय शती के अन्त में कुपाणा को पराजित कर उन्हें सतलुज पार भगा दिया। (२) तृतीय और चतुर्थ शती में उत्तरी राजपूताना और दक्षिण-पूर्वी पंजाब में यौधेयों का एक गणितशाली गणतन्त्रीय राज्य था। (३) समुद्रगुप्त के इलाहाबाद बाल गिलालेख से पता होता है कि यौधेय समुद्रगुप्त की प्रभुसत्ता को स्वीकार करते थे।<sup>१८२</sup>

राजवती पाण्डेय यौधेयों की अधिगत भूमि के विषय में लिखते हैं— य पूर्वो दक्षिणी पंजाब को अधिगत किया हुआ था। यह पूर्वो पंजाब सतलुज तथा यमुना की घाटियों के समस्त क्षेत्रों में प्रचुर परिणाम में प्राप्त यौधेयों के सिक्कों से स्पष्ट है।<sup>१८३</sup> डा० काशीप्रसाद जायसवाल लिखते हैं— यौधेय लोग बहुत कठिनाता से अधीनता स्वीकार करते थे और समस्त क्षत्रियों से अपनी वीर उपाधि सायक करने के कारण उन्हें गव था।<sup>१८४</sup> डा० राधाकुमुद मुखर्जी ने भी यौधेयों सम्बन्धी उपरिक्त तथ्य ही दिए हैं। स्वयं राहुल जी ने यौधेयों का प्रामाणिक रूप से परिचय दिया है— यौधेय एक बहुत ही बलशाली गणराज्य था जो यमुना सतलुज तथा धम्बल हिमालय के बीच में अवस्थित था। इतिहास और हमारे पुराने लेखकों ने हमें इसके बारे में बड़ा ही क्रूर और भौत धारण किया है। वस्तुतः यदि इनकी चली होती तो यौधेय नाम भी हम तक नहीं पहुँचने पाता। अब तो इतिहास के सम्भीर गवेषक डा० अलतंकर जैसे विद्वान साफ गल्लों में बँटने लगे हैं कि भारत में विदेशी कुपाणा के शासन को खत्म करने का श्रेय गुप्तवंश भारतीय वंश को नहीं बल्कि यौधेयों को है।<sup>१८५</sup>

सम्राट समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सम्भव में डा० वासुदेव उपाध्याय, डा० रमागवर त्रिपाठी डा० राधाकुमुद मुखर्जी और डा० नगेंद्रनाथ घोष ने इन तथ्यों को प्रकट किया है— (१) समुद्रगुप्त की प्रतिमा सयनामुखी थी। वह न केवल युद्धनाति तथा रणवीरों में अद्वितीय था वरन् नास्त्रा में भी उमकी बुद्धि

अकुठिता थी।" (२) समुद्रगुप्त के अनन्त पुत्र थे जिनमें से एक था राम रामगुप्त या जिसका पिता के पश्चात् राज्य करना कहा जाता है रामगुप्त बड़ा कायर था। रामगुप्त को कायर समझकर चन्द्रगुप्त ने उसका वध कर दिया और स्वयं चन्द्रगुप्त द्वितीय के नाम से गुप्त सम्राट बना।<sup>१</sup> (३) सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् गुप्त साम्राज्य में अशांति-सौ छा गई तथा राज्या को निबल समझकर शत्रुओं ने युद्ध छेड़ दिया। ऐसी ही विपन्न स्थिति में विजयनादिका का उदय हुआ तथा इनकी माता दत्तादेवी ने ऐम पराक्रमी पुत्र को पैदा कर अपने को कृतायु समझा।<sup>२</sup> (४) समुद्रगुप्त की समीपप्रियता के विषय में डॉ० उपाध्याय का कथन है "समुद्रगुप्त के कुछ सोने के सिक्के मिले हैं, जिनमें रत्नमय पर धड़े राजा की मूर्ति अंकित है और उसके एक ओर महाराजाधिराज समुद्रगुप्त लिखा है।"<sup>३</sup> (५) दत्ता देवी के विषय में राखालदास बनर्जी का कथन है—'दत्तादेवी समुद्रगुप्त की रानी थी। गायद महारानी (अधर्महिंसा या पट्ट महारानी) थी।"<sup>४</sup> (६) चन्द्रगुप्त महत्वा काशी सनानायक था। इसीलिए वह पूर्वी पञ्जाब, मानवा, गुजरात को अपने पैतृक राज्य में शामिल करने में सफल हुआ। उसने अपने पिता की भाँति सोने के सिक्के चलाये।<sup>५</sup>

आचार्य असग एवं आचार्य बसुबन्धु जो इन उपन्यास में जय के शिक्षक रूप में आए हैं ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। दोनों ही बौद्ध धर्म और दान के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। डॉ० बसुदेव उपाध्याय का कथन है—(१) "आचार्य असग का पूरा नाम बसुबन्धु असग था। परन्तु अधिकतर असग या आय असग के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म पुर्यपुर में हुआ सम्भवतः गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के समय में चौथी शताब्दी में आयका आविर्भाव हुआ।"<sup>६</sup> (२) आचार्य बसुबन्धु असग के छोटे भाई थे। वे बाद विवाद में बड़े कुशल थे। सत्तर वर्ष की उम्र में अपने पूज्य ज्योतिषाचार्य असग की प्रेरणा तथा शिक्षा से यह महायान सम्प्रदाय के योगाचार मत में दीक्षित हुए—इन्होंने भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में भ्रमण करके अपने जीवन के अनेक वर्ष बिताए। गौतम तथा कीर्तिमयी में भी इन्होंने कुछ दिना तक निवास किया था। अयोध्या तो इनकी माँ की दूसरी जन्मभूमि थी। सम्भव है आचार्य बसुबन्धु समुद्रगुप्त के समसामयिक तथा आश्रित हों।<sup>७</sup>

जय योग्य' का नायक कल्पित है परन्तु उसकी यात्राएँ कल्पित नहीं। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान की भाँति वह भारत के विभिन्न भागों में घूमता है। वह यात्रा में आय स्थानों वहाँ के निवासियों एवं मूर्तियों का वर्णन करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक ने जय की यात्राओं के रूप में फाह्यान की यात्राओं का वर्णन किया है। फाह्यान के यात्रा विवरण इस उपन्यास के ऐतिहासिक आधार के रूप में लेखक ने प्रयुक्त किए हैं।<sup>८</sup> नगदनाय घोष तथा मुर्खी जैसे इतिहासकारों द्वारा दिये गये फाह्यान के यात्रा विवरण प्रमाण के लिए दखल जा सकते हैं। नगदनाय घोष के शब्दों में—चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण

घटना चीनी यात्री फाह्यान की मारत यात्रा थी। गांधार के पहाड़ी इलाकों से हाता हुआ और माग म महान कठिनाइयाँ और सक्टा का सामना करता हुआ पगावर पट्टा जहाँ उस समय के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक म्याना का दर्शन किया। पगावर से वह पजाब में आया घुसा और जमशद दक्षिण पूर्व की ओर बढ़ता गया। उसने अपनी यात्रा में पढ़ने वाले मथुरा, सवाई कनौज कौण्डा काशी, कुशीनारा धावस्ती कपिलवस्तु पाटलिपुत्र, नालंदा आदि स्थानों का भ्रमण किया। इसके बाद उसने ताम्रलिप्ति (ताम्रकु) के लिए प्रस्थान किया जहाँ से समुद्र द्वारा वह स्वर्देश को लौट गया। स्वर्देश लौटते समय वह सिंह न तथा जावा में भी ठहरा था।<sup>११</sup> डा० राधाकुमुद मुखर्जी ने फाह्यान को चंद्रगुप्त द्वितीय के समकालीन माना है। अपनी यात्रा में फाह्यान ने पेशावर पाटलिपुत्र गया आदि को देखा। ताम्रकु (ताम्रलिप्ति) से पोत द्वारा वह जावा, चम्पा और सिंहल गया। पोत-यात्रा में एक बार तूफान भी आया।<sup>१२</sup>

फाह्यान की इस यात्रा का और 'जय यौधेय' के जय के यात्रा स्थानों के विवरण की तुलना से स्पष्ट होता है कि दोनों यात्री अपनी यात्रा में एक ही भाग से गुजरे हैं और उनकी यात्रा का उद्देश्य भी बौद्धधर्म के दर्शनीय स्थानों का दर्शन करना है। यहाँ तक कि दोनों ने ताम्रलिप्ति से सिंहल की यात्रा पोतों में की और भाग में तूफान भी आया। अमिन्धाय यह कि जय की देवयात्रा के रूप में राहुल ने फाह्यान की ऐतिहासिक यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया है।

जय यौधेय की रचना के लिए राहुल ने कालिदास के ग्रंथों की भी सहायता ली है।<sup>१३</sup> वासुदेव उपाध्याय,<sup>१४</sup> डा० त्रिपाठी<sup>१५</sup> डा० एन० गन० घोष<sup>१६</sup> तथा मजूमदार<sup>१७</sup> कालिदास का चंद्रगुप्त द्वितीय का समकालीन मानते हैं और डा० उपाध्याय ने तो कालिदास का कुतन प्रदेश में राजदूत बनाकर जाने का भी उल्लेख किया है।<sup>१८</sup> राहुल जी भी कालिदास को चंद्रगुप्त का समकालीन ही मानते हैं और उन्होंने यौधेय भूमि में राजदूत बनाकर भेजे जाने का अनुमान किया है। 'जय यौधेय' में वर्णित तत्कालीन परिस्थितियाँ कालिदास के ग्रंथों पर आघात प्रतीत होती हैं। हिमाचल और उत्तम-सक्त का वर्णन कालिदास ने भी किया है।<sup>१९</sup> कालिदास ने अनेक सलिल कलाग्रा का भी वर्णन किया है जो 'जय यौधेय' में भी वर्णित हैं। कविता तथा नाटक संगीत तथा नृत्य चित्रकला मध्मूत्तिकरण तथा स्वापत्य विविध विवरण युक्त सबका वर्णन किया है। विवाह और वसन्तागमन के उत्सवों पर अभिनय साधारणतया होता था। सलिल कलाग्रा को सोखने में स्त्रियाँ का विनाश स्थान था।<sup>२०</sup>

जय यौधेय में कालिदास ने अपने को स्वपाकित्या का कवि कहा है।<sup>२१</sup> और रघु के माध्यम से समुद्रगुप्त की कथा कहती है। वासुदेव उपाध्याय का निम्नलिखित कथन इन बातों की प्रामाणिकता स्थापित करता है— महाकवि कालिदास ने रघु की दिग्विजय का व्याज में इसी घम विजयी नरेश की दिग्विजय का वर्णन किया है।<sup>२२</sup>

डा राधाकमल मुखर्जी के अनुसार भी 'रघुवश' में 'एक महान निम्बित्रय का वणन किया गया है जिस पढ़कर समुद्रगुप्त की भारत विजय का याद आती है। समुद्रगुप्त के अश्वमेध यज्ञ की प्रतिध्वनि 'मालविकाग्निमित्र' में भी है।'<sup>114</sup>

इस प्रकार जय घोषेय' का कालिदास ऐतिहासिक व्यक्ति है। इस उपन्यास में उल्लिखित उत्सव-भवन हिमालय का वणन, तत्कालीन भारतीय समाज की कला-प्रियता, समुद्रगुप्त की दिम्बित्रय आदि का उल्लेख कालिदास के 'रघुवश', 'कुमार सम्भव' एवं 'मेघदूत' आदि रचनाओं के आधार पर है।

राहुल जी का 'जय घोषेय' मयाध ऐतिहासिक तथ्या पर आधारित है। डा० सावित्री सिन्हा के 'तादा म—'जय घोषेय में गुप्तकालीन राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक और नैतिक स्थितियों का चित्रण किया गया है। ऐतिहासिक प्रमाण के लिए चीनी यात्री फाह्यान के वक्तव्या, गितासेला और सिक्का का आधार ग्रहण किया गया है।'<sup>115</sup>

कल्पना —ऐतिहासिक तथ्या की मुद्रक भित्ति पर आधारित जय घोषेय में सर्वांगत एक मधुर कल्पना का सन्निवेश है। सर्वप्रथम उपन्यास का नायक 'जय' कल्पित पात्र है। इस विषय में राहुल जी की स्वीकृति है—'घोषेय का जाति के तौर पर नाम विस्मृत हो चुका था, ता उसके व्यक्तियों के नामों के मिलन की आशा वहाँ से हो सकती है।'<sup>116</sup> जय की कल्पना की घटनाएँ एवं जीवन के मायावरी के प्रसंग राहुल जी की मधुर कल्पनाएँ हैं। उपन्यास की आधिकारिक कथा में घोषेय एवं गुप्त शासक के सम्बन्ध एवं समय के अतिरिक्त अधिकांश घटनाएँ काल्पनिक हैं। हाँ, इतना प्रवश्य है कि वे घटनाएँ राहुल जी की ऐतिहासिक कल्पना से प्रभूत होने के कारण इतिहास विरोधी नहीं। जय' की तरह जय घोषेय पात्र भी कल्पित हैं। उनका प्रथम प्रसंग एवं आमा' प्रमोद के वणन में उपन्यासकार की कल्पना का चमत्कार द्रष्टव्य है।

जय से सम्बद्ध आधिकारिक कथा के अतिरिक्त उपन्यास में सिंहवर्मा और उसकी प्रमिका वासन्ती का प्रसंग है। यह प्रसंग उपन्यासकार की कल्पना है। बाची की आर जात हुए समुद्र में तूफान के आने के कारण सभी यात्री मर जाते हैं। केवल जय और उसका मित्र सिंहवर्मा अपनी प्रमिका वासन्ती के साथ जीवित रहता है। सिंहवर्मा और वासन्ती के प्रणय-परिणय का प्रसंग उपन्यास में रोचकता की सृष्टि करता है। शहर की पत्नी में जय का शहर भुवनी से विवाह भी काल्पनिक है। शहर के जीवन श्रवण में भी राहुल जी की मधुर-उत्तर कल्पना दानीय है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में वर्णित घोषेयों का जीवन भी कल्पना पर ही आधारित है। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इतिहास प्रसिद्ध गुप्त सम्राट् एवं घोषेय के साथ उनके समय का चित्रण करने के लिए उपन्यासकार कल्पना-मूला के उपयोग से कथा विकास करने में समर्थ हुआ है।

मधुर स्वप्न

इतिहास —'मधुर स्वप्न' में ईरान के सम्राट् शाह कबात् की जीवन घटनाओं

को चित्रित किया गया है। मज्दर मत का अनुयायी होने के कारण गाह बग़ात को पदच्युत होना पड़ता है। बालात्तर में हूण सम्राट तोरमान की सहायता से वह पुनः सिंहासनास्त होना है। उपयास के अंत में उत्तराधिकार के प्रश्न पर वह मज्दकिया का विरोध करता है और उनका वध करवा देता है। इस उपयास में श्वा ६ठी शती ईसवी के ईरान के जीवन का चित्रण है। राहुल जी ने उपयास के प्राक्कथन में कहा है—‘मैंने इस उपयास के द्वारा इतिहास के एक विस्मृत पन्ने को पाठका के सामने रखने की कोशिश की है।’ उपयास के परिशिष्ट में राहुल जी ने ईमई पारसी तथा मुसलमान लखना की कृतियाँ स उद्धरण प्रस्तुत कर उपयास के ऐतिहासिक तथ्यों को स्पष्ट किया है।

‘इनसाइक्लोपीडिया आफ रिलीजन एण्ड एथिक्स,’ ‘ईरान’ (ग्रार० चिंगमन तथा श्रीरान (राहुल साह्यायन) में मज्दक और उसके मत के विषय में निम्न लिखित तथ्य प्राप्त होते हैं—

१ बामदात पुन मज्दक, ईरान में पाँचवी शती के अंत में साम्यवादी बग का नेता हुआ है। ईरान की बराजकता के कारण इस मत के प्रसार में सहायता मिली है। उस (बग़ात) राज्य में नृत्तिगाली सामंतों तथा मज्दकी अनुयायियों जो दलित बग को उन्नत बनाने के लिए सामाजिक सुधारों की माँग कर रहे थे—मैं एक का पक्ष लेना था और उसने मज्दकी अनुयायियों का पक्ष लिया।<sup>१११</sup>

२ मज्दक का मत साम्यवादी था। वह सामाजिक बध्म्य का विरोधी था। मज्दकी पति-पत्नी के सम्बन्ध के स्थान पर सम्मिलित पत्नी के सिद्धांत के प्रचारक थे।<sup>११२</sup> ‘इसके सामाजिक सिद्धान्त वस्तुओं के समवितरण पर जोर देते थे। श्रीरान का अपनी सम्पत्ति निबन्धा को देने चाहिए। सम्पत्ति ही नहीं, स्त्रियाँ तक पर भी व्यक्ति का अधिकार नहीं होना चाहिए।’<sup>११३</sup> राहुल जी ने श्रीरान में भी इस प्रकार का तथ्य प्रस्तुत किया है।<sup>११४</sup>

३ मज्दकी आन्दोलन एक ऐसी धर्म का अनुयायी था जिसके अपने ही सिद्धांत में जा मुख्यतः माना की शिक्षाओं से लिये गये थे। मज्दक के सिद्धांत रुढ़िवादी, सामंतवादी समाज के लिए नातिकारी थे। इस ईरानी साम्यवादी उचित ही कहा जा सकता है।<sup>११५</sup>

४ मज्दक समाज सुधारक था। साम्यवाद ही उसकी दृष्टि में समाज-सुधार का मार्ग था। मज्दक साम्यवादी धर्मसापक्ष था। मज्दकी भगवान् अहमद के उपासक थे।<sup>११६</sup> उन तथ्यों से परसी स्काईस की पुस्तक ‘ए हिस्ट्री आफ परशिया’ में भी वही रूप में प्राप्त होते हैं।<sup>११७</sup>

‘अधुर स्वप्न के नायक सम्राट बग़ात के विषय में ‘ए हिस्ट्री आफ परशिया’ ‘ईरान’ और ‘इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकना’ में निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होते हैं—

१ बग़ात सन् ४८७ ई० में ईरान का शासक बना।<sup>११८</sup> कई वर्षों के अकाल,

पीराज के मुद्र तथा उमरावों पराजय व वारण, आधिर दष्टि से उमरावों का नाम अत्यंत डावाडात था। राजा का धन भी आविर्माना थी, परंतु राज्यांग रित था। उत्तरी सीमा की हूणा व मुग्धा का प्रबंध भी करना था।<sup>१४</sup>

२ गामनकाव के आरम्भ में कवान मग्दक व माम्बवान विजारा से प्रभावित हुआ। उसने इस आन्दोलन का सरक्षण प्रदान दिया और बहुत से बाहुता में परिचयन दिया, जिनमें से कुछ तो नारी सम्बन्धी थे। एा पडवन् द्वारा उस रिहायन में उनार दिया गया और उसने भाई जामास्य का सिंहासन पर बटाया गया। उस मयु की मजा नही ली गई और कारावास में डाल दिया गया।<sup>१५</sup>

३ अपनी पत्नी को सहायता से कारवास में निराल वह जल्दी ही भाग गया और हफ्तानिया व गगार में गरण ली। ४६६ ई० में हफ्तानिया (हूणा) की सहायता में उमने अपने भाई जामास्य को राजगद्दी से उतार दिया।<sup>१६</sup>

४ कव (कवान) के फिर से गद्दी पर बैठने का मग्दक व अनुयायियों का प्रभाव फिर बलवान गया और फिर वही तनातनी शुरू हुई। मग्दक के अनुयायियों ने अपनी गति को मजबूत करना चाहा। इस पर कव (कवान) भी विरोधी बन गया और उसकी भाषा में हजारों मज्जकी तलवार व घाट उतारे गये।<sup>१७</sup>

५ गह कवात की मयु ५३१ ई० में हुई।<sup>१८</sup> उसकी मयु व बाव नौगरेवा इरान का सामक बना। उत्तरी के राजारोहण के विषय में ईरान में लिखा है— 'अनवधिरवान मासानी घस के बड़े प्रतापी राजाभा में हैं। कव की इच्छा नौगरेवा को ही गद्दी देन की थी। उसकी मयु के बाद उसके बड़े लहव व ही गद्दी सम्माली, किन्तु महामंत्री ने यह गह की इच्छा को उपस्थित कर नौगरेवा का पक्ष दिया और इस प्रकार वह राजा उद्घोषित हुआ। अब भी भाइया और सम्बंधियों व बड़े बड़े पडवन् जारी रखे और नौगरेवा का अपने सभी भाइया और उनकी पुत्र-मताका का मार डालने पर मजबूर होना पडा। मग्दक अब भी जावित था। उसने अनुयायियों की सख्या भी काफी थी। नौगरेवा ने इन्हें भी अपने रास्त का कांटा तमभा और मज्ज के माथ उमने एक लाख अनुयायी मार डाल गये। नौगरेवा का नाम पहन खुमगे था। मज्जिया की हत्या के बाद ही उसने नवगिरवान की उपाधि धारण की।<sup>१९</sup>

'स प्रकार मयुर स्वर्ण' में वर्णित मग्दक और उसके धर्म गहकवा एक मुमरी से सम्बद्ध प्रमग ऐतिहासिक हैं। 'मयुर स्वर्ण' के परिशिष्ट में गहक की ने उपयोग की ऐतिहासिक सामग्री के विषय में लिखा है— 'मज्ज' वास्तविक नहीं, ऐतिहासिक व्यक्ति थे। मग्दक के सम्बंध में जो सामग्री मिलती है उसमें प्रमग पुराने ईसाई तपका की कनिषा है जिनमें अपने धर्म का ऐतिहासिक लिखित हुए प्रमग दगना गहगाता का जिक्र आ जाता है। इसका बाद दूसरा खान पारमी खान की पुस्तकें हैं और तीसरी तथा अन्तिम सामग्री मुमलमा लेखका की अरबी पारमी की पुस्तक में मिलती है। निम्न यह नि उपयोग की मुख्य तथा मुख्य



पात्र एवं मञ्चकी आशयन इतिहास-सम्मत तथ्य हैं। गौणपात्र जम जामास्य, सभ्रां तोरमान, मिहिरकुल आदि भी ऐतिहासिक पात्र हैं। तत्कालीन परिस्थितिया का चित्रण भी इतिहासानुबन्ध है। डा० कमलकुमारी जोहरी ने 'मधुर स्वप्न' की ऐतिहासिकता पर आक्षेप किया है—'सिंह सनापति' के तक्षगिला और दशाली व गणतंत्र तथा 'मधुर स्वप्न' के दिहवगान—इन सभी का राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन बिल्कुल एक सा है और यह जीवन लेखक की रचि और कल्पना का साम्यवादी जीवन है, यह सूर्य के प्रकाश की भाँति स्पष्ट है। यह कस माना जा सकता है कि चित्रित इन विभिन्न काल और देश का जीवन एक-सा ही होगा। अतः यह स्पष्ट है कि लेखक ने इनमें ऐतिहासिकता का निर्वाह प्रायः नहीं किया है बल्कि अपनी भावना का आरोप किया है।<sup>111</sup> डा० जोहरी का कथन सर्वांगन सत्य नहीं। यह ठीक है कि राहुल ने दिहवगान के चित्रण में कल्पना का प्रयोग किया है अपनी भावना का आरोप किया है परन्तु इससे मुख्य घटनाओं, पात्रों एवं परिस्थितियों की ऐतिहासिकता को घाँच नहीं आ सकती।

**कल्पना** — मधुर स्वप्न के अधिकांश नारी पात्र (सन्धिक को छोड़ कर) काल्पनिक हैं। इनमें शूद्र काल्पनिक यक्षितरव घुमन्तु कया बदक का है। यह चरित्र इतना आकर्षक स्वाभाविक और सजीव रूप में अंकित किया गया है कि इससे राहुल की कल्पना अपने चरम पर पहुँच जाती है। राहुल जी की बदक—एक सुष्ठु कल्पना—मनमोहक है अविस्मरणीय है। इस सोली कया का रंग के विस्फाह के प्राप्ता में नृत्य करत हुए मृगु का प्रसंग अत्यन्त कारणिक है। सलिया के स्वच्छंद जीवन के चित्रण में भी लेखक की कल्पना सजीव है। दिहवगान का चित्रण—वहाँ की परिस्थितियाँ एवं सम्मता का चित्रण—लेखक की साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित है। इस प्रश्न का भी उपयोग में कल्पित ही कहा जायगा। लेखक ने अतीत पर अपनी साम्यवादी भावनाओं का आरोप किया है। 'आईमबी सनी' में जिस साम्यवादी समाज की भनक है वह यहाँ भी द्रष्टव्य है।

### विस्मृत यात्री

**इतिहास**—विस्मृत यात्री इतिहासज्ञ एवं यामावर राहुल की कृति है। यह रचना उनके अपने व्यक्तित्व का अनुरूप है। इसमें बौद्ध यात्री नरेन्द्राय का जीवन चरित निरूपित हुआ है। नरेन्द्राय छोटी गति के उद्यान प्रदेश का एक बौद्ध यात्री है। वह भारत और लका की यात्राओं के अनन्तर चीन जाता है। वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार एवं बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद करता है। नरेन्द्राय के विषय में राहुल जी लिखत हैं—नरेन्द्राय कोई कल्पित पात्र नहीं है वह हमारे ही देश के—अब पश्चिमी पाकिस्तान के—स्वात (उद्यान) की भूमि में सन् ५१० ई० में पदा हुए थे।<sup>112</sup> हान मिंगु वनन के बाद भारत सिंहल मध्य एशिया और चीन में विधरण किया था और अतः आधुनिक सियान महानगरी में अपना शरीर छोड़ा।<sup>113</sup> नरेन्द्राय विषयक ऐतिहासिक सामग्री लेखक को डा० पा० चाउ से प्राप्त हुई है जिसका उल्लेख

इहीन उपयोग की भूमिका से किया है। हमने अतिरिक्त उमने जीना अभिप्राय तथा यात्राया आदि से अभिप्राय विवरण राखून जी न 'धुमकडराज नरेन्द्रया' नामक लेख में भी लिख है।<sup>133</sup> उसकी भारत और सिंहन यात्रा के विषय में वे लिखते हैं—'वे भारत के सभी बौद्ध तीर्थों में गये। सवास्तिवादिया व गुरु मयूर पर उड़ाने दया ही हागा प्रावली जेतवन, लुम्बिनी श्रृण्पित्तन, सारनाथ आदि के दान से व अपने की वसे वचित रख सकते थे। भारत और सिंहन व उन पवित्र स्थानों का नरेन्द्रया न जरूर ही दया होगा जिनकी यात्रा एक गतांगी पहले चीनी पर्यटक फाह्यान कर पुरा था। मिहल में वह महाविहार या अमरगिरि विहार में रहे हाम। उनकी भारत की यह सारी यात्रा केवल यात्रा के तौर पर ही नहीं हुई होगी, बल्कि यही पर उन्हें बड़े बड़े विद्वानों के सम्पर्क में आकर अपने ज्ञान-कोष का बढ़ाने का मौकाम भी मिला होगा।<sup>134</sup> हम प्रकार नरेन्द्रया का व्यक्तित्व और उनकी यात्राएँ ऐतिहासिक हैं इसमें सन्देह नहीं।

नरेन्द्रया ने चीन में रहकर बौद्ध धर्म व ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। उनके समय चीन में और भी कितने ही भारतीय पण्डित अनुवाद का काम कर रहे थे जिनमें उपगूय, परमाथ, मद्रसन, ज्ञानमद्र, जिनगुप्त, गौतम धर्मप्रण, विनीत रवि और धर्मगुप्त मुख्य थे।<sup>135</sup>

इस प्रकार राहुल ने अपने उपयोग की ऐतिहासिकता के विषय में स्वयं ही पर्याप्त प्रमाण डाला है। 'धुमकडराज नरेन्द्रया' लेख की प्रस्तुत उपयोग की विस्तृत भूमिका माना जा सकता है। नरेन्द्रया विषयक उनके तथ्यों का समर्थन 'इण्डिया एण्ड चाइना' तथा चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास' में हो जाना है। इन पुस्तकों में शायद नरेन्द्रया उनके समकालीन भारतीय पण्डितों एक मुद्र वगैरे में सम्बन्धित तथ्य निम्नलिखित हैं—

(१) नरेन्द्रया उत्तान प्रणेश का बौद्ध भिक्षु था। उसने मध्य-एशिया के विभिन्न देशों की यात्रा की। चीन में रहकर उसने बौद्ध ग्रन्थों का मसूदा व पालि से चीनी भाषा में अनुवाद किया। उनका चीन में सन ४८६ ई० में गैहान हुआ।<sup>136</sup>

(२) गौतम प्रणा रवि, उपगूय, गुणमद्र, यणागुप्त आदि न बौद्ध ग्रन्थों को अनुदिन किया।<sup>137</sup>

(३) मुर्द्ध वगैरे का मस्यापक माथ चिएन था। वह इतिहास में 'वननी' नाम से विख्यात हुआ। बौद्ध धर्म में उसकी अग्राध अदा थी। वननी का राज्यकाल ५१६ ई० में १०८ ई० है।<sup>138</sup>

इस प्रकार धुमकडराज नरेन्द्रया ने क्या अभिप्राय मुख्य तथ्य ऐतिहासिक है। इसका अतिरिक्त यात्रा सम्बन्धी विवरण एवं भारत, सिंहन तथा चीन की तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण इनकी ऐतिहासिकता का पुष्ट करते हैं। राहुल जी ने उप-

यास में इतिहास भूगोल तथा नीतिन दल का न एव मुख्य पात्रों को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

**कल्पना**—प्रस्तुत उप-यास में प्रासंगिक कथा जिसका सम्बन्ध 'गातिल' से है, लेखक की कल्पना है। उप-यास के नारी पात्र एवं उनके प्रणय प्रसंग कल्पना प्रभूत हैं। नरेन्द्रयश का शशक-वर्णन लेखक की कल्पना ही प्रतीत होती है। बुद्धिल छात्र भिक्षुधरा का बलिदान एवं नरेन्द्रयश का वचाव भी काल्पनिक प्रसंग हैं। इस प्रकार इस उप-यास में बहुत कम स्थल ही काल्पनिक हैं, शम्भू का बौद्ध धर्म-सम्बन्धी प्रकाण्ड ज्ञान, चीनी इतिहास का ज्ञान, बौद्ध प्रदेशों एवं स्थानों सम्बन्धी मौखिक ज्ञान इस उप-यास में मुखरित हो रहा है।

राहुल जी के उप-यासों में इतिहास और कल्पना के सामंजस्य पर विचार करने के अनन्तर यह सहज कहा जा सकता है कि राहुल जी ने इतिहास और कल्पना को एक साथ गलाकर अपने उप-यासों को कलात्मक रूप प्रदान किया है। प्रकाशचन्द्र गुप्त के शब्दों में—'ऐतिहासिक उप-यास की दृष्टि में इतिहास पर पूर्ण अधिकार के साथ ही अपूर्व कला-भजन का गुण भी आवश्यक है। राहुल जी का पाणिन्य सुपरिचित है। आश्चर्य उनकी कलात्मक प्रतिभा पर हाता है। वे इतिहास और कल्पना इन विरोधी तरफों का अपूर्व समावयव करने में सफल हुए हैं।<sup>13</sup> इतिहास और कल्पना के समावयव में राहुल जी ने कही ऐतिहासिक तथ्यों का कल्पना से अभिभूत नहीं होने दिया। ऐतिहासिक तथ्यों अधिकृत रूप से उनकी कृतियों में विद्यमान हैं। डॉ० भगीरथ मिश्र इसीलिए उन्हें प्रधानतया सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक उप-यासकार के रूप में महत्त्व देते हैं।<sup>14</sup> राहुल जी ने अपने कथानकों के लिए सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुसंधान किया है। वस्तुतः राहुल जी ऐतिहासिक उप-यासकार के कर्तव्य के प्रति सदा सजग हैं। उनके उप-यासों में कल्पनातिरेक नहीं है, इतिहास और कल्पना का सुसामंजस्य का मध्य भाग ही उन्हें सदा अनुकरणीय रहा है।

**राहुल जी की उप-यास कला**

**कथा शिल्प**

राहुल जी के पास ऐतिहासिक सामग्री का अक्षय भण्डार है ऐश्वर्यमयी कल्पना है एकाग्र स्वच्छ और निश्चिन्त जीवन श्रान है और सहृदय व्यक्तियों के व्यवधान के भार-भार दखने वाली तीव्र दृष्टि है परन्तु कथाशिल्प विशेष नहीं है।<sup>15</sup> डॉ० नगेन्द्र का इन शब्दों से स्पष्ट है कि राहुल जी में कथा निर्माण की कलात्मक विरासत का प्रायः अभाव है। स्वयं राहुल जी का कथन है कि उनके ऐतिहासिक उप-यास उप-यास न होकर और-यासों का इतिहास हैं।<sup>16</sup> उनका यह कथन उनकी उप-यास कला की ओर सम्यक् गमन करता है। वास्तव में उनके उप-यासों में इतिहास अधिक है और कथा कम। अतीत के सांस्कृतिक ऐश्वर्य की अभिव्यक्ति ही उनमें प्रभुत्व है। डॉ० प्रतापनारायण टण्डन का मत इस विषय में उल्लेख्य है— ऐति

हामिर्ग उद्योगों की परम्परा में सांस्कृतिक पक्ष की प्रधानता देकर चलने वाले उप-यामकारों में महापण्डित राहुल साह्यायन प्रमुख हैं। इनमें (उप-यामों में) उन्होंने जिस प्रकार के कथानक का प्रयोग किया है उस पर सांस्कृतिकता की छाप स्पष्ट है परन्तु राहुल साह्यायन ने ऐतिहासिक उप-यामों के सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कथानक सांस्कृतिक बोझ में डूबने आशङ्कित हो गये हैं कि उप-याम न लगकर सांस्कृतिक इतिहास लगत है। यह निष्कर्ष यह कि राहुल जी के उप-याम 'औप-यामिक इतिहास' अथवा 'सांस्कृतिक इतिहास' अधिक है—उप-याम कम। अतः यदि उनके कथानक में कलात्मकता की गूँथता हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

कथा का आधार—राहुल जी के उप-यामों का आधार भारतीय एवं ईरानी इतिहास और समाज है। भारतीय इतिहास में उन्होंने बहुराज्य से लेकर प्राधुनिक वान तर्क के इतिहास को औप-यामिक रूप दिया है। 'दिवोदास' ऋग्वेदकालीन प्रायों के सांस्कृतिक जीवन का कथारूप है। सिंह मनापति' और 'जय घोष' में क्रमशः १०० ई० पूर्व तथा ३५०-४०० ई० के गणराज्यों में सम्मिलित कथानक हैं। यिस्मन-यानी की बालावधि छठी शती है। राजस्थानी रतिवास में पूर्वाध वीसवीं शती की सात पर्वों के भीतर रहने वाली ठाकुरानिया की बेवसी और दुख तथा पुन्या की स्वेच्छाचारिता की कहानी बही गई है।<sup>१२</sup> उनके राजनीतिक उप-याम जीने के लिए में भारतीय स्वतन्त्रता-समय की कथा है। 'मधुर स्वप्न' में भारतीय जीवन की परिधि को लोप कर राहुल जी ने एंग्लो-इंडियन जीवन की विस्तृत परिधि में प्रवेश किया है। इस उप-याम में छठी शती के ईरान का इतिहास प्रस्तुत है। 'म प्रकाश' राहुल जी ने अपने उप-यामों में भारत के प्राचीन एवं प्राधुनिक समाज का प्राचीन कथा का आधार बनाया है। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में—'इन उप-यामों की वास्तविक महिमा प्राचीन भारत के सजीव चित्र उपस्थित करने में है।'<sup>१४</sup>

इतिहास और समाज के साथ-साथ राहुल जी ने अद्भुत कथानक तथ्यों का भी कथा का आधार बनाया है। उनके कथानक उप-याम 'जादू का मुँह', 'तान की भाँव' विस्मृति के समय में तथा 'सने की दान' में अद्भुत कथानक तथा का कथा का आधार बनाया गया है। उनकी बहुराज्य सजीव चित्रों का आधार भी अज्ञान तथ्य है।

ऐतिहासिक शोध—राहुल जी ने अपने उप-यामों में जिन ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण किया है उन्हें विद्वत्मयी बनाने का आधार अति-हार्मिक घटनाओं का विवाद सम्पन्न एवं अनुसंधान किया है। यह कथानकों की आधार-भूत उन ऐतिहासिक घटनाओं पर टिकी हुई है। म. ग. र. राहुल ने घटनाओं में सम्बद्ध विहीन ऐतिहासिक मामलों को एकरूप कर विविध इतिहास को प्रस्तुत किया है। इतिहास के साथ-साथ राहुल जी ने पुनरावृत्ति का भी अद्भुत चित्रण किया है। इन घटनाओं एवं विचारों में अति-मन्य है। उन्हें ।

उप-यासा में इतिहास और कल्पना का अदभुत सम्बन्ध है, जिसे हम पीछे विवेचन कर चुके हैं। उनके सामाजिक उप-यासा में उनके जीवनगन अनुभव विसरे हुए हैं।

कथा-संकेत एवं कथा का आरम्भ—राहुल ने अपने उप-यासा के प्राक्तनता में (विशेष रूप से ऐतिहासिक उप-यासा में) तत्कालीन राजनीति तथा सामाजिक परिस्थितियाँ उल्लेख कर कथा की पृष्ठभूमि का स्पष्ट कर दिया है। इस स्पष्टीकरण के प्रति वे बड़े सतर्क निर्याई देते हैं। 'उदाहरणार्थ विस्मृत यात्री' के दो शब्दों में राहुल जी नायक नरेन्द्रगण का संक्षिप्त जीवन वृत्त प्रस्तुत कर देते हैं। 'जय योधेय' के प्राक्तनता में वे योधेयगण विषयक ऐतिहासिक सामग्री का उल्लेख कर कथा मूल की आधार भी संकेत कर देते हैं। 'मिहू सेनापति' का विषय प्रवेश तो उप-यास के कथा तन्त्र का अंग ही बन गया है। इसमें राहुल जी ने औप-यासिक कथा की ऐतिहासिक सत्यता प्रमाणित करने के लिए राक्षस कथा गयी है जो उनकी भौतिक कल्पना है। 'मिहू सेनापति' की इस शैली का अनुकरण आचार्य द्विवेदी के उप-यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में हुआ है। इस प्रकार इस उप-यास के विषय प्रवेश द्वारा राहुल जी कथानक का आरम्भ करते हैं। राहुल जी के सभी उप-यासा में कथा का आरम्भ शीपका द्वारा हुआ है। जय योधेय का आरम्भ समुद्रगुप्त और योधेय शीपक से हुआ है। जीने के लिए का 'वाल्मीकि' द्वारा और दिवांगत का सात पुरिया का ध्वंस शीपक से। इतना ही नहीं उन्होंने अपने सभी उप-यासों में कथा का विभाजन परिच्छेदों के स्थान पर शीपका में किया है। इस विधि से उप-यास का कथा की पूँव ही जानकारी करवा देता है। इससे उप-यास की कथा समझने में पाठक को सारल्य अवश्य अनुभव होता है पर साथ ही उनका कथानक विषयक भौतिक्य कम हो जाता है।

कथा विकास—राहुल जी के ऐतिहासिक और सामाजिक उप-यासा में कथा विकास अपेक्षाकृत सरल ढंग से हुआ है। उनके कथानक जटिल न होकर सरल गिल्प विधान रखते हैं। प्रासंगिक घटनाओं की भरमार वहाँ नहीं है। 'जीने के लिए उप-यास' में माहुलाल विषयक एक प्रकरी कथा है। 'मिहू सेनापति' और 'जय योधेय' में भी एक-एक ही प्रासंगिक कथा है। विस्मृत यात्री में बुद्धि की कथा भी प्रकरी मानी जा सकती है। दिवांगत में प्रासंगिक कथाओं का अभाव ही है। इस प्रकार राहुल जी अत्यंत सरल ढंग से कथा का विकास करते हैं। कथा विकास के लिए वे किसी बड़ी-बड़ी परम्परा के अनुगामी नहीं हैं। फिर भी उन्होंने कथा विकास-रूप कुछ नई विधियाँ का प्रयोग किया है जिनका विवेचन यहाँ अभीष्ट है।

(क) यायावरी के प्रसंग—राहुल जी के औप-यासिक वस्तु निर्माण में यायावरी का प्रसंग का सर्वाधिक प्रयोग है। राहुल जी याथा और कथा कहानी में समीप का सम्बन्ध मानते हैं। अपने चरित-नायक की जीवन-यात्रा-वर्णन में वे उनके यात्रा के प्रसंग का अवश्य चयन करते हैं। इस चयन में चेतक का अपना व्यक्तित्व उभरा है। 'विस्मृत यात्री' उप-यास नरेन्द्रगण की यायावरी प्रवृत्ति का आख्यान बन गया है।

है। डा० सुप्रभा घवन के शब्दांश—“उपयास म नायक का जीवन यात्रा का रूप धारण करता है। उसकी जीवन-यात्रा में अनन्त स्थला, विविध जातियाँ अस्तित्व गाँवाँ एवं नगरा, विभिन्न व्यक्तियों का परिचय प्राप्त होता है जो उनके मन को विकसित करते तथा हृदय का उन्मूलन बनाते हैं। वह चलते चलते उन उन स्थला व्यक्तियों और जातियों के सम्बन्ध में अपने भाव और विचार व्यक्त करता हुआ जीवन की व्याख्या करता जाता है जिसके आधार पर उसने निजी व्यक्तित्व की रूपरेखा बनती है।” इसी प्रकार ‘जीने के लिए’ का देवराज मुरारि तथा रूस की यात्रा करता है। इसी उपयास में ज्वाकरे-इम्पेरी की कश्मीर-यात्रा का भी वर्णन है। ‘रेलयात्रा’, ‘हिमालय’, ‘दण्ड विरोध’ आदि शीर्षक नायक तथा यात्रायात्रा की यात्रा प्रवृत्ति के सूचक हैं। जय योधेय’ म नायक जय गायार हिमालय, काशी, सिंहल आदि की यात्रा करता है। सिंह सनापति’ म कपिल का यात्रायात्रा से अत्यधिक प्रेम है। ‘मधुर स्वप्न’ म गाह नवात अपने मादकी साधियों के साथ छदम-वेष्ट म घूमता है। ‘वाईसवी सनी’ की कथा का विकास भी नायक की यात्रायात्रा द्वारा हुआ है। अभिप्राय यह है कि राहुल जी के उपयासों के घटनाक्रमक गिल्फिल्टन के गढ़ने में यात्रा प्रसंग प्रबल सहायक हैं। वे उपयास गिल्फिल्टन का नियमन करते हैं। राहुल जी चरितनायका के यात्रा प्रदेशों के भूगोल, समाज एवं संस्कृति का वर्णन करते हैं, जिसे वे स्वयं ऐतिहासिक उपयासकार के लिए अनिवार्य तत्त्व मानते हैं। राहुल जी ने अपने उपयासों में यात्रा नैली का उपयोग कर भूगोल, भाषा विज्ञान तथा इतिहास से कथा को सम्पूरित किया है तथा प्राचीन वातावरण की सजीव स्रष्टि की है। कथा विकास में यात्रा प्रसंगों का सम्बद्ध कर राहुल जी ने उपयास में यात्रा-आहित्य के तत्त्वों का अमूल्य समन्वय किया है। राहुल जी की यह महत्त्वपूर्ण निजी विशेषता है।

(ख) युद्ध एवं वीरता के प्रसंग—राहुल जी के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों में कथानक की विकास प्रणाली करने वाला दूसरा तत्त्व है—युद्ध एवं वीरता के प्रसंग। नायकों की युद्धवीरता एवं साहस पराक्रम से सम्बद्ध घटनाक्रमों द्वारा कथा की विकास मिलता है। ‘स्वीडन’ में उर रास की प्रधान घटना ही दिशानाम १४११ ई. में युद्ध में मरने के तत्त्व है जिसमें लेफ्टिनेंट गम्बर की पराक्रम एवं आप-नायक दिवोदास की विजय का वर्णन किया है। ‘जीने के लिए’ उपयास का नायक देवराज प्रथम महायुद्ध में अपनी युद्धवीरता का परिचय देता है। वह केवल अपनी वीरता का परिचय युद्ध क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सैन्य में भी प्राप्त करता तथा कृपा एवं जमीनारों के संधर्ष में भी अपने अर्थ साहस का परिचय देता है। सिंह सनापति में सिंह ने पाण्डवों के साथ युद्ध-वर्णन का प्रसंग है। जय योधेय’ में जय के नृत्य में योधेय का विजयान्वित युद्ध का वर्णन है। ‘मधुर स्वप्न’ में गाह नवात के सत्याग्रहों द्वारा उसे पुनः सिंहासनास परवान के लिए संधर्ष का चित्रण है। विष्णु यात्री में युद्ध के प्रसंगों का समावेश है परन्तु नायक नरेश्वर की यात्रा उम

के साहस और वीरता का प्रकट करती है। इस प्रकार यात्रा प्रसंगा की तरह मुद्रा के प्रसंग राहुल जी के उप-यासा में क्या विकास के सहायक उप-गान हैं।

(ग) प्रणय प्रसंग—राहुल जी ने उप-यासा में क्या विकास के लिए अपने नायक के प्रणय प्रसंगा के वर्णन से भी सहायता ली है। जय योधय का नायक जय वसुन्दा के सौन्दर्य पर मुग्ध है और वह विधिवत उसकी परिणीता बनती है। इस विवाह से पूर्व देश भ्रमण करते समय जय की ग़बर कथा से प्रणय-सीता का प्रसंग भी उप-यास में मिलता है। ग़र कुमारी भी उसके रूप-लावण्य पर मुग्ध है। इसी प्रकार जय के सहायत्री सिंह और वाम-सीता का प्रणय प्रसंग भी अत्यन्त रोचक है। नायक के योधय मायी सुमन देवतक भाँति का अपनी प्रियामा से स्वच्छ प्रेम का भी सख्त ने वर्णन किया है। सिंह सनापति में रोहिणी एवं सिंह के विवाह से पूर्व उनके प्रेमाकुर का विनाश दर्शाया गया है। विस्मृत यात्री में नायक नर-द्रव्य का भद्रा से असफल प्रणय का वर्णन है। 'मधुर स्वप्न' में ग़ाह कथा से सामन्त-पुत्री नवानदुल्ल से प्रणय करता है और सिंहासनाखंड हान पर उसे परिणीता बनाता है। 'जीने के लिए' का नायक देवराज और प्रमुख यात्री जेनी विवाह में पूर्व एक-दूसरे के प्रति आकर्षण रखते हैं। इस प्रकार राहुल ने अपने उप-यासा में क्या विकास एवं रोचकता के संचार के लिए प्रेमगाथाओं एवं प्रणय प्रसंगा की अवतारणा की है। इन कथाओं द्वारा इतिहास के निर्जीव कलेवर में उप-यागरार न रस संचार किया है।

इस प्रकार राहुल जी के उप-यासा में क्या का विकास सरल रूप में हुआ है। उसमें प्रायः आधिकारिक कथा ही रहती है। प्रासंगिक कथाएँ कम ही हैं। क्या विकास के लिए उन्होंने यात्रा मुद्रा एवं प्रणय के प्रसंगा की आयोजना की है।

उपसंहार—राहुल जी के उप-यासा के कथानक सरल गति से चलते हुए सुख अथवा दुःख में परिवर्तित प्राप्त करते हैं। फलतः उनका कथानक सुपात एवं दुपात दोनों प्रकार के हैं। 'दिवोदस' सुपात है। इसमें शबर पर विवाह के विजय से औप-यासिक सघप की परिणामाप्ति होती है। सिंह सनापति का कथानक भी मुख्यतः परिणति प्राप्त करता है। जय योधय में योधयगण की पराजय से उप-यास दुपात कहा जायगा। विस्मृत यात्री नायक नर-द्रव्य की पूरी जीवन-यात्रा से सम्बद्ध है। अतः उसके दिवगत हान के साथ उप-यास की कथा समाप्त होती है। मधुर स्वप्न भी सुखान्त ही माना जायगा क्योंकि उप-यास में मन्त्रक एवं उसके अनुयायियों का दारण अन्त सिद्धाया गया है। जीने के लिए भी इसका कोटि का है। इसका नायक देवराज आजीवन सघप करता हुआ अपने विरोधियों द्वारा मार दिया जाता है। इस उप-यास का अन्त बड़ा मार्मिक एवं करुण है जो पाठकों के हृदय पर अवसाद की गहरी रेखाएँ अंकित कर जाता है—उसे क्या मानूँ या कि करार की आड़ से मृत्यु उसकी ओर भाव रही है। जिस वक्त उसके पर करार से नीचे की ओर बड़े, उसी वक्त दोनों तरफ से दो लाठियाँ उसके परा पर पड़ी, वह वहीं मुह के बल गिर गया।

एक पर बा हट्टी चूर हा चुकी थी। बात ही-बात में नम आत्मों द्वारा और में उस पर टूट पड़े, भीम चन्द्र मिनटा में वहाँ देवराज का निर्जीव शरीर पड़ा था।' १४

**अतिरिक्त कथा शिल्प**—कथा शिल्प की दृष्टि से राहुल जी के उपयोग निम्न एवं अत्यधिक हैं। इनके कथानका में वह व्यक्ति नहीं जो पाठक को अभिमान कर उस ध्यान गाय वहाँ से चल। डॉ० गोदानाथ तिवारी निम्न हैं—कथानक की दृष्टि से दाय भी बहुत है। कथानक में उत्सुकता नहीं कथानक में जैम मोड़ निम्न जान हैं, व नहीं हैं। अनावश्यक विस्तार बहुत हैं। १५ जगदीश गुप्त इन कथानका में सुमन्दन का अभाव पाते हैं। १६ डॉ० कमलकुमारी चौहरी इन कथानका में एकरमता का दोष पाती हैं। १७ डॉ० नयेन्द्र व अनुमार राहुल जी आत्मिक नाटकीय परिस्थितियों की सृष्टि नहीं कर सके। १८ डॉ० टण्डन राहुल जी के उपयोग में कथानक एका की मुरझाव न रख सकने की त्रुटि देखते हैं। १९ निम्न यह कि राहुल जी के कथाशिल्प के विषय में अधिकांश आलोचकों का मत यह है कि वह अप्रौढ़ एवं अतिरिक्त है। उसमें उत्सुकता एवं कुतूहल का अभाव है।

राहुल जी के उपयोग में कथाशिल्प का इन युनायि का सबसे प्रमुख कारण उनकी सोच-समझ है। वे कला के संप्रदाय उपयोग के समर्थक हैं। राहुल जी ने अपने उपयोग का रचना भावनाओं जीवन दान की अभिव्यक्ति के लिए की है। श्री महेन्द्र चतुर्वेद के शब्दों में—'मानव स्वतन्त्रता की मित्र के लिए, आदर्श समाजवादी समाज-व्यवस्था की स्थापना के लिए अथवा और रुढ़ि जबर जीवन पर प्रत्यक्ष आपात करने के लिए व उसे साधन रूप में ग्रहण करते हैं।' २० कला विषयक यहाँ मोड़-पता उनके कथाशिल्प की अभिव्यक्ति विषय है। डॉ० तिवारी के शब्दों में—'म उपयोग उद्देश्य प्रधान है। उद्देश्य इनमें हावी है। प्रचार के माध्यम है।' २१ राहुल जी अपने उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए कथा प्रवाह को विराम लगाकर पात्रों के माध्यम से अपनी विचारधारा का प्रकट करने लगते हैं। ऐसे स्थान पर उनकी विचारधारा आरोपित लगती है और कथा की स्वाभाविक गति भी अवरुद्ध हो जाती है। विचारों के प्रकाशन एवं तब बिनक की प्रचुरता के कारण कथा की गति मन्द हो जाती है और उनकी विचारधारा का चट्टन करने के लिए पात्रों को एक-एक कर पढ़ना पड़ता है। उदाहरणार्थ जब चौधरी व आदर्शवाद का बहुरूप हितार्थ अन्तर्गत अथ धर्मों में उनकी उन्नतता प्रतिपादन करना २२ तथा बौद्धधर्म के प्रति-अन्तर्गत, निर्वाण परमोद्वेग विषय विचारों का आशय २३ कथा के विभाग में आधर है। उपयोग के तहत चौधरी गहन में उन्होंने आदर्श धर्म की चर्चा की है। २४ मार्क्सवाद के अन्तिम रूप चौधरी अन्तर्गत परमात्मा पर निरंतर प्रभाव होता है। गिरावट के २५ वीं तथा २६वीं अध्याय अन्तर्गत एवं राजनय के युग-आपा का गया शोका प्रस्तुत करने हैं यहाँ कथा में गति नहीं। मधुर स्वप्न में मानव, अमरता तथा मनुष्य और मनुष्यता 'गिरावट अन्तर्गत' का मानव प्राण—आराधना की अभिव्यक्ति करने हैं कथा अन्तर्गत है २७ — =



वाद स असहमत शीघ्र अन्त्याय तथा साम्राज्यवाद मन्त्र की दवराज की विचार धारा<sup>१५८</sup> का की गति म प्राधन है। दिवोनास राहुल जी की लघु रचना है इसमें लखन ने समय स काम लिया है पर तु 'विस्मृत यात्रा' उपन्यास के अनुरूप पंथा में राहुल जी विचारधारा की अभि प्रक्ति के प्रति जितने सचेष्ट दिखाई देते है उतने कथा विनास की आर नही। श्री बी० एम० चिंतामणि लिखते हैं—'उद्देश्य की मिद्धि के लिए ऐसी ऐसी घटनाया का इसमें (मिहसुसनापति) तनिवेश किया गया है जा निष्पक्ष विवेचन करन पर पूणरूपेण अनावश्यक और अप्रामाणिक मानूम पडती है। कथानक पूणरूपेण सुमगठित नही है।'<sup>१५९</sup> इस प्रकार राहुल जी की कला पर उनका लक्षन हावी हा जाता हैं तथा कथाशिल्प अविकसित रह जाता है।

कथा शिल्प में गवित्य का दूसरा बडा कारण उपन्यासकार का विवरण माह प्रतीत हाता है। डा० जगदीश गुप्त लिखते हैं — राहुल जी म उपन्यासकार की अपेक्षा इतिहासकार और बहुभाषाविन के तत्त्व अधिन प्रधान एव शक्तिशाली है फलत उपन्यास बोभीला ह। ऐतिहासिक लघ्य के समाहित करन के प्रयास में कथा की गति निश्चित हो गई है और कही कही उसकी आनुपातिकता एव स्वाभाविकता का भी आघात पहुचा है।<sup>१६०</sup> मधुर स्वप्न के विषय म प्रकट डा० गुप्त के ये विचार उनके सभी उन यास के विषय मे स य प्रतीत होत है। राहुल जी म इतिहास भूगोल एव वस्तु वगन के प्रति अ यधिक आसक्ति प्रतीत होती है। मधुर स्वप्न द्वारा राहुल जी इतिहास के विस्मृत पंथ प्रस्तुत करना चाहते है, यन इन उन यास म इतिहास के प्रति लेखक का मोह स्वाभाविक है। लेखक छठी गनी के ईरान के इतिहास को साकार रूप देन के लिए वहाँ की सामाजिक आर्थिक आदि स्थितिया जातिगत सकीणता दास प्रथा आदि का तो वणन करता ही है साथ ही हूणो और कदारिया का अन्तर स्पष्ट करन ईरानिया के राजवश का क्रम विकास समझाने तोरमान की विजया का उल्लेख करन तारमान की राजधानी अथवा तम्बुसा की नगरी के वगन म 'नलक' का इतिहास माह प्रकट है।<sup>१६१</sup> जय योधय म समुद्रगुप्त और योधय का पारस्परिक सम्बन्ध<sup>१६२</sup> तथा सिंह सनापति म त गतिना का वणन<sup>१६३</sup> भी लेखक के ऐतिहासिक विवरण है।

ऐतिहासिक विवरण के अनिरिक्त कुछ अ य प्रनय भी लेखक के विवरण मोह के प्रतीक ही मान जायेंगे। सिंह सनापति म कृष्णमाना का 'जय योधय' म सिंह वर्मा और दास की का तथा मधुर स्वप्न म सोली जाति का प्रसंग राहुल जी के विवरण माह के परिचायक ह। चीन के लिए म बनल जवाफरे की हिमालय यात्रा सिंह सनापति म चौद घम तथा जन घम सम्बन्धी चचा 'जय योधय' म कालिदास और जय के वानावाप आदि प्रसंग भी कथागत गविलता के लिए उत्तरदायी ह। इस प्रकार राहुल जी का विवरण मोह उनके औपन्यासिक कथाशिल्प के लिए घातक मिद्ध हुआ है।

राहुल जी के कथाशिल्प म एक अ य दाप यह भी दृष्टिगोचर होता कि है वे

घटनाओं को चरमसीमा पर पहुँचा कर क्या का विकास प्रारम्भ करते हैं। 'मधुर स्वप्न' में गाहकवात् के पुनर् सिंहासनादृष्ट होने के साथ क्या का परिवर्तमानि होनी चाहिए जो परतु लेखक का इतिहास मोड़ कर जो और अपने उद्देश के लिए विरक्त करता है। राहुल जी ने इस घटना के अनन्तर गाहकवात् के उत्तराधिकारी के चुनाव तथा गाहकवात् और मजकुरी के सम्बन्ध की क्या भी कही है। जब यौवेय' में क्या जब के जीवनान्ध के साथ न समाप्त होकर चन्द्रगुप्त द्वारा भय राजाओं का पराजित करने के साथ होनी है। सिंह सेनापति' में लिखी विद्या तथा विभ्रमार्थ में लिखे के साथ क्या समाप्त हो जानी चाहिए परन्तु इसके बाद दो अध्यायों में संभव प्रौढ्यम् तथा रोहिणी आदि स्त्रियों की धीरता का आख्यान करता है। इस प्रकार राहुल जी अपने तान्त्रिक ऐतिहासिक उपन्यासों में क्या की परिवर्तमानि चरमसीमा पर न करके क्या अपने का आख्यान पहुँचाते हैं। 'दिव्योत्सव', 'विस्मृति पात्रो' तथा 'जीने के लिए' इस शोध से मुक्त हैं।

राहुल जी ने अपने उपन्यासों की कथा के आधार पर क्या 'गीतिका' में विनाशित किया है। परिच्छेदों के 'गीतिका' केन से भी क्या लिख में 'यूनना आदर्श' है। क्या-विषयक पाठकों की जिज्ञासा एवं कौतूहल बलि की छाति में 'गीतिका' ही कर दन है, और क्या की पढ़ने की उत्सुकता समाप्त हो जाती है। जिज्ञासा भयाना कौतूहल और मासिक क्या का प्राण-तत्त्व है, राहुल जी ने इस छोटे बम ही ध्यान दिया है। उन के उपन्यासों में सम्बन्ध-तत्त्व अवश्य है, पर, उस में एक स्वाभाविक क्रम विकास नहीं है। क्या में कौतूहल को जाग्रत रखन के लिए मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का समावेश होना चाहिए, पर राहुल जी में इनका प्रभाव ही है। राहुल जी अपने कथ्य एवं तथ्य को सीधे साथ-साथ स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे किसी प्रकार का रहस्य पाठकों के सामने नहीं रखते। इसमें क्या के लिए जिस कौतूहल तत्त्व की उपन्यास में प्रयत्ना होती है राहुल जी के कथानका में वह नहीं है। डा० सुभाषचन्द्र के शब्दों में कहा जा सकता है—'राहुल जी के उपन्यासों की क्याएँ सीरी मानी हैं, उनमें क्या-मक माडा घटना प्रवाह उत्तराधिकारी का प्रथम अभाव है। मनोवैज्ञानिक धारणा और भावपूर्ण या स्वदनात्मक प्रसंगा की भी कमी है।' ११ डा० नगेंद्र राहुल जी के क्या-नकी में नाटकीय प्रसंगा के अभाव के विषय में लिखते हैं—'राहुल जी ने तो अप्रत्यक्ष नाटकीय परिस्थितियों की सृष्टि कर सके हैं और न चारित्रिक दृष्टि की उन्मादना ही। यह बात नहीं कि इन घटनाओं में नाट्य तत्त्व नहीं है अप्रवा पात्रों के जीवन में सम्बन्ध नहीं है। उदाहरण के लिए जब यौवेय' की क्यावस्तु और उसके अन्तिम परिस्थिति और चरित्र दाना के निर्माण का यथार्थ सम्भावना है। परन्तु राहुल जी इसमें यथार्थता साम नहीं उठा सकें और यथार्थ कारण है, यह यह कि राहुल जी की दृष्टि प्रतिपाद और इतिहास पर केन्द्रित रही है। १२ निष्कर्ष यह कि राहुल जी का क्या लिख अप्रौढ एवं अविकसित है। उसमें घटना विधान की कला (कला) का अभाव है, क्या की गतिविधि सरल एवं स्पष्ट है।

कथाशिल्प की विनिष्टताएँ कथाशिल्प के प्रौढ़ विरास के अभाव में भी राहुल जी के कथाशिल्प की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। इनके उपयोग में इतिहास और कल्पना का पर्याप्त समन्वय है। प्रवासचन्द्र गुप्त के अनुसार राहुल जी इतिहास एवं कलात्मक प्रतिभा के धनी हैं और वे इतिहास तथा कल्पना इन विराधी तत्वा का अपूर्व समन्वय करने में सफल हुए हैं।<sup>१५</sup> उनकी कल्पना इतिहास के विस्तीर्ण क्षेत्र में जाकर ऐतिहासिक तथ्या का उदघाटन करती है। वे ऐतिहासिक कल्पना से इस विशाल दंग के अतीत को निहारते हैं और अनेक जातियाँ राखा एवं सृष्टिमा को कथा रूप में प्रस्तुत करते हैं।

राहुल जी के कथानक सरल हैं परन्तु उनकी विनिष्टता है उनमें प्रतिपादित राहुल जी का स्पष्ट जीवन ग्यान और मानव जीवन का चित्रण। मधुर स्वप्न मानवता का मधुर स्वप्न है। राहुल जी ने जीवन और समाज की विषम स्थितियाँ का अवन करके साम्य स्थापना एवं जन मुक्ति के स्वप्न को चित्रित किया है। विस्मृत यात्री में तथागत के दुःखवाद और मानस के बगवान् में सामंजस्य स्थापित कर राहुल जी ने मज्झिम मानवता को जीवन देने का प्रयास किया है। 'सिंह सेनापति' के कथानक में गणतन्त्रात्मक युग की स्वच्छन्दता, नारी की स्वतन्त्रता श्रम की गरिमा सम्पत्ति पर समानाधिकार का स्वर मुखरित कर राहुल जी मानव की समता चाहते हैं। अग्निप्राय यह है कि राहुल जी के कथानक मानव जीवन एवं मानवीय आदर्शों की अभिव्यक्ति का कारण प्रेरणाप्रद है। भदंत आनन्द कौसल्यायन राहुल जी में भारत की भूखी नगी जनता के लिए असीम वेदना पाते हैं।<sup>१६</sup> यही वेदना उनके उपयोग में सचित्र प्रकट है। बाईसवीं सदी में राहुल जी ने सशस्त्र मानवता की मुक्ति का स्वप्न देखा है। जीने के लिए यह इस मुक्ति के लिए सद्य है। साथ ही अपने ऐतिहासिक उपयोग में वे गणतन्त्रात्मक मानवतावाद की प्रस्थापना करते हैं।

कथाशिल्प के लिए अपेक्षित कौतूहल एवं जिज्ञासा के अभाव में भी राहुल जी का उपयोग रोचक है। यह रोचकता प्रेम प्रसंगा युद्ध एवं साहस के प्रसंगा तथा यात्रा प्रसंगा द्वारा राहुल जी अपने उपयोग में लाते हैं। 'जय दीधन' तथा 'मधुर स्वप्न' की कथा अपेक्षाकृत अधिक रोचक है। 'जय दीधन' में चन्द्रगुप्त और कुरुभव की प्रणय कथा<sup>१७</sup> पारिवारिक हास्य विना के प्रसंग,<sup>१८</sup> हिमालय-यात्रा का प्रसंग तथा नन्दा और वसुन्धरा के सवा<sup>१९</sup> उपयोग का रोचक बना देते हैं। 'मधुर स्वप्न' की कथा रोचक रूप में प्रस्तुत मानवता का स्वप्न है। इसमें विस्मृति बारा में गहवरात को सम्यक् द्वारा उद्धार की कथा कौतूहलपूर्ण तथा रोचक है। 'जाने के लिए' का कथानक भी रोचक एवं प्रभावपूर्ण है।

राहुल जी का औपयामिक कथानक में यौन भावना का प्रचुर प्रयोग है। वे सामाजिक स्तर पर सामूहिक समस्या का अवन करते हैं। उन्होंने अपने उपयोग में स्वच्छन्द दृष्टिकोण स्थितियों की सामाजिक स्वीकृति की स्थापना मुक्त विचार चुम्बना,

मान पान एवं नृत्य गा गान्धिया आदि की उत्पत्ति काग नो है। 'हि मेनारि'  
 म योन भावना का प्रतिरेव है। मगत के म यधिव प्रयाग का शं० नगत्र आपति-  
 जनक मानन है। वे लिगन हैं— जिस उदारता ने राहुन जी के पात्र एन-दूमेरे पर  
 पुष्पना की बोछारे बरत है वह अनतिक न भी मानी जाए परन्तु समग्र अवश्य हैं।  
 वास्तव म रस की उद्भावना करने का यह सन्ता उपाय इनने समयम के साथ  
 व्यवहृत किया गया है कि उतने घटित होने लगती है। 'योन भावना का असममित  
 प्रयाग उक्त उपयाम म अशक्तिर अवश्य प्रतीत होता है परन्तु 'मधुर स्वप्न,  
 'जय घोषेय', 'विस्मृत यात्री एवं 'जीन के लिए मे इसका सममित प्रयाग क्या म  
 रोषकता लाता है माय ही मानवीय तत्वा का प्रतिष्ठापक है। ६१० दवराज सभम  
 के इस उपयोग को जनमान युग का प्रभाव स्वीकारत हैं। उनके शब्द म—“राहुन  
 की ने ऐतिहासिक उपयासा म जय घोषेय”, सिंह मनासति तथा 'मधुर स्वप्न' म  
 जिस मुक्त और स्वच्छंद विलास का महत्त्व मनाया है वह इतिहास की रक्षा मात्र  
 नहीं है, उसम इस युग का भी प्रभाव है। इसकी द्विवेदी युग की उपदगा मर लजा  
 चीनता के याह्य और झूठे आश्चर्य के विपक्ष प्रतियोग मात्र वह कर ही सत्ताप  
 नहा किया जा सता। यह निश्चित रूप से फायद के लिबिडा जाने सिद्धात का  
 परिणाम है जो यह प्रतिपात्ति करता है कि मनुष्य के अवचेतन की गहरी प्रवृत्तियाँ  
 काममूलक हाती हैं। हमारे सारे मानसिक सपप के मूल म कामभावना है।”<sup>१०१</sup>

निष्पत्ति यह कि राहुन जी का कथागल्प प्रोढ़ औपयामिनि गि० के अनुकूल  
 नहीं है। फिर भी यात्रा, प्रेम और शीघ के प्रसंगा द्वारा कथा-विकास, मानवीय तत्वा  
 एवं मानवतावाद की प्रतिष्ठा प्राचीन मायताया और धारणाया के प्रति विद्रोह  
 का स्वर्ण, इतिहास और कल्पना का मधुर समन्वय कथा धारणा की नई गली एवं  
 स्वस्थ दृष्टिकान उनक कथा गित्य के मौलिक युग है। इनके कथानक म इतिहास  
 और दान, तथ्य और कल्पना का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। कथागल्प की दृष्टि  
 से 'जय घोषेय' मधुर स्वप्न एवं जीन के लिए' राहुन जी की उत्तम कृतियाँ हैं।  
 'बार्मवी सनी' राजस्थानी रनिवास तथा भागो नर दुनिया का बदला ता कथामास  
 मात्र हैं। 'विस्मृत यात्री इस दृष्टि से मामा य रचना है और दिवाणस' एक सफल  
 लघु उपयाम है।

### पात्र और चरित्र चित्रण

उपयास मानव जीवन का चित्र है।<sup>१०२</sup> उसने अस्तित्व का कारण ही यही है  
 कि वह जीवन के चित्रण का प्रयास करता है।<sup>१०३</sup> उसने नित्यप्रति के दृष्ट और जिए  
 जान पाव जीवन का आभास होता है।<sup>१०४</sup> यानि उक्तिया म स्पष्ट है कि मानव और  
 उमरा चरित्र ही उपयाम का मूलधार है। आधुनिक उपयास म घटना एवं वस्तु  
 की अप्रथा चरित्र चित्रण को अधिक महत्त्व प्राप्त है। रात्रिमन के शब्द म चरित्र  
 चित्रण से अग्निप्राय यात्रा का पवाण मूर्तिमाना एवं स्यामाविकता का चित्रित करना  
 है। व छायायात्रा न होकर यकित्व-मम्पन होकर पुष्पन के पृष्ठा से उमरन

चाहिए।<sup>१९१</sup> पाठक क्या उसकी घटनाएँ एवं प्रमग भल सनता है परन्तु पात्रों का व्यक्तित्व उसने अतः करण पर ऐसी गहरी छाप अवित कर देता है कि वे उसे सबदा अविस्मरणीय हो जाते हैं। अतः किसी भी उपयासकार से सर्वोपरि यह अपेक्षित है कि वह ऐसे सजीव पात्रों की सृष्टि करे जो पाठक पर अमिट प्रभाव अवित कर सकें। मले ही चरित्र अवतारणा किसी भी क्षेत्र से हो।<sup>१९२</sup> इस प्रकार के पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व वाले होते हैं व घटनाओं एवं परिस्थितियों को जन्म देते हैं। ऐसे स्वतंत्र व्यक्तित्व सम्पन्न पात्रों के बाह्य एवं आंतरिक पक्ष को उभारना उपयासकार का कर्तव्य है। राहुल सावत्यायन ने अपने ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपयासों में ऐसे पात्रों की अवतारणा की है जो अपने कृत्यों द्वारा समाज एवं इतिहास में मोड़ लाने वाले हैं। ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि द्वारा वे अपने साम्यवादी आदर्शों की प्रतिष्ठा करने में सफल हुए हैं।

**पात्र चयन-परिधि**—राहुल जी ने अपने ऐतिहासिक उपयासों के प्रमुख पात्रों का चयन इतिहास से ही किया है। दिवोदास के दिवोदास, पुरंदुरस, वसन्तस्यु अर्थात् भरद्वाज एवं शम्बर ऋग्वेदकाशीन ऐतिहासिक पात्र हैं। सिंह सेनापति का नायक सिंह मगधराज धिम्बमार तथा अजातशत्रु प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं। 'जय यौधेय' के समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एवं कालिदास भी प्रख्यात हैं। मधुर स्वप्न के शाहूकवात भुसरो तथा तोरमान तथा विस्मृत यात्री का नायक नरेन्द्रय्य का चयन भी इतिहास से हुआ है। अन्य पात्र प्रायः काल्पनिक हैं। सामाजिक उपयास 'जीन व लिंग' के सभी पात्र काल्पनिक हैं ही। ऐतिहासिक उपयासों में भी लेखक ने उक्त प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त कल्पना से ही पात्र सृष्टि की है परन्तु इनका इतिहास भत्यमूलक है। डा० प्रभाशकर मिश्र राहुल जी के उपयासों के पात्रों के चयन क्षेत्र को अत्यन्त सीमित कहते हैं।<sup>१९३</sup> परन्तु उपयुक्त चयन क्षेत्र से स्पष्ट है कि उनका चयन सत्य नहीं है। राहुल जी ने अपने पात्र इतिहास और समाज दोनों क्षेत्रों से लिए हैं। पुनश्च ऐतिहासिक पात्रों का काल क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। बर्तमान युग से लेकर गुप्त-युग तक और भारत से लेकर चीन और ईरान देशों तक फैले हुए पात्रों का चयन कर उन्होंने ऐतिहासिक उपयासों की रचना की है। शताब्दियों के अन्तरालों का पार कर राहुल जी की पनी दृष्टि ने जहाँ इतिहास के अनेक युगों का साक्षात्कार करवाया है वहाँ उन युगों के पात्रों का सजीव व्यक्तित्व भी प्रस्तुत किया है। साथ ही उनके पात्र विविध वर्गों से सम्बन्धित हैं। वे शासक और शासित, गोपक और गोपित, अमीन एवं कपक वगैरे तक ही सीमित नहीं हैं, सामान्य जन भी हैं जो समाज राजनीति एवं धर्म सभी क्षेत्रों में अपना निजी स्थान रखते हैं। हाँ, राहुल जी के पात्रों का सीमित क्षेत्र इस दृष्टि से अवश्य बड़ा वा सफल है कि वे सभी साम्यवादी विचारों का अनुयायी हैं।

**चरित्र निमाण का स्रोत**—चरित्र चित्रण का एक बहुत बड़ा स्रोत लेखक का

निजी व्यक्तित्व भी होता है। जमन उपयोगवार गटे ने अपने जीवन की अनेक समस्याएँ एवं विनिष्टताएँ को उपयोग के वण्य विषय व रूप में प्रयुक्त किया है।<sup>१०६</sup> उनके उपयोग 'विन्डम मोस्म अट्रेटिसिप' के नायक विल्हेम मोस्टर के विषय में जाज तू बावस का कथन है कि 'उसमें गटे के बहुत से व्यक्तिगत गुण समाविष्ट हैं और उसके विरास में उनके सप्टा के जीवन की अनर घटनाएँ हैं।<sup>१०७</sup> हेनरी जेम्स भी चरित्र निर्माण का एक बहुत बड़ा मोत लेखक को ही मानते हैं।<sup>१०८</sup> विशेष रूप से 'बाल्यनिर्वा' पात्र तो लेखक के व्यक्तित्व का मूल रूप होते हैं। यही स्थिति राहुल जी के चरित्रनायक की है। 'जीने के लिए' का नायक देवराज उनके अपने जीवन का ही प्रतिरूप है। वह जीवनगत परिस्थितियों, स्वभाव एवं विचारा में तो राहुल जी साम्य रखता ही है, साथ ही उपयोगवार और उनके नायक के अनक कार्यों में भी सादर्य है। वह राहुल जी की तरह ही साम्राज्यवा से घृणा करता है,<sup>१०९</sup> जीवाद के परिणामी का भयनर बतनाता है,<sup>११०</sup> और उन्ही की तरह ही सयाग्रही बनकर गाँव गाँव में जन जागृति का प्रचार करता है।<sup>१११</sup> साम्यवाद तो उनका इष्ट है ही। इसी प्रकार 'विस्मृत यात्री' का नायक नरेन्द्रया राहुल की तरह यात्री नरेन्द्रया का जीवन महद् अनुबंधी के गन्दा म— 'विस्मृत यात्री' में एक बौद्ध यात्री नरेन्द्रया का जीवन चरित्र निरूपित हुआ है और उससे भी आगे उत्तम स्वयं लेखक के जीवन का आशिक प्रतिनिधित्व हुआ है।<sup>११२</sup> डॉ० मुपमा धवन 'विस्मृत यात्री' के नायक के विषय में लिखती हैं— 'विस्मृत यात्री का चरित्र लेखक के निप आकषक ही नहीं वह उसके व्यक्तिगत जीवन के सारा को भी भवृत करता है।<sup>११३</sup> इसी प्रकार जय मोधेय का बदान तथा मन्व राहुल जी के विचारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। डॉ० मुग्ग सिंहा के दो म कहा जा सकता है— 'उनके मोपण एवं अभाय के विरुद्ध प्राति की परम्परा का प्रति विद्रोह करत है, उनमें मोपण एवं अभाय के विरुद्ध प्राति की जवरदस्त भावना है। इनमें स किसी को भी बतमान सामाजिक रूपविधान पसंद नहीं है और वे इनमें आमूल चुल परिवर्तन के लिए लेखक के सक्ता पर कटिबद्ध प्रतीत होते हैं।<sup>११४</sup> दुस्परमात्रा की तरह स्त्री पात्रा में जेनी भी नेयर के विचारा का बहुत करती है। अभिप्राय यह कि पात्रा के चरित्रावन में राहुल जी के अपनी आत्मकथा का सफा प्रगन किया है। उनका अपना जीवन एवं व्यक्तित्व उनके प्रीपयासिक पात्रा का एक बहुत बड़ा स्रोत बन गया है।

स्थिर एवं अगगत पात्र — राहुल जी के पात्र स्थिर एवं अगगत हैं। वे युग अथवा जन मूह का प्रतिनिधित्व करने वार हैं। ऐतिहासिक उपयोगा में नायक विज्ञान जन मूह के महत्त्वपूर्ण या दानना का प्रतिनिधि होता है। उसकी इच्छाएँ एवं उद्देश्य विज्ञान जन मूह की इच्छाया और उद्देश्या के साथ सामजस्य स्थापित करने वाली होती हैं।<sup>११५</sup> जय और सिंह प्रमाण मोधेय गण एवं लिच्छवि-गण के गुण-दाया का मानदण्ड है, वे अगगत पात्र वह जा सकत हैं। डा० न्गेड के अनुसार—

इसमें गान्ध नहीं कि इन दोनों उपयोगों में प्रधानत एक एक व्यक्ति के जीवन का विवरण है, फिर भी इसमें म कोई व्यक्ति-प्रधान उपयोग नहीं है। य दोनों व्यक्ति वास्तव में गण-जीवन के प्रतीक हैं।<sup>१४</sup> 'जीने के लिए' उपयोग का देवराज भी प्राप्ति प्राप्त परंतु प्रातिहार की वष का प्रतिनिधि है। साथ ही धर्मजी उपयोगकार स्वाट की तरह<sup>१५</sup> राहुल जी के पात्र गतिगीन अथवा विनामगीन नहीं हैं। वे अधिक भागत म्पिर हैं। स्थिर पात्र उन्हें नहा जा सकता है जिन पर परिपात्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ना। आद्यत जिनके चरित्र में कोई परिवर्तन नहीं आता, वे स्वयं नहीं बदलते, माना वे आरम्भ से ही स्वतः पूरे हैं। केवल उनके सम्बन्ध में पाठका का मान बदलता है।<sup>१६</sup> देवराज, जय, सिंह एवं दिवोनाथ—ये सभी चरित्रनायक आद्यत समरम हैं। मन्त्र उनमें गीय पराक्रम एवं समर्थ का निदान है। वे विनामगीन न होकर पूरण में हमारे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इन पात्रों का कोई-न-कोई गुण पाठक के सामने प्रतिमान होता है और धीरे धीरे लेखक उस विस्तार देना जाता है।

पुरुष पात्र—राहुल जी के उपयोगों में प्रधान हैं और समर्थ के लिए नारी पात्रों की अपेक्षा पुरुष-पात्र ही उपयुक्त हैं। इसीलिए राहुल जी का ध्यान नारी पात्रों की ओर कम गया है। मुख्यत उनके उपयोगों में पुरुष-पात्रों का ही चरित्र उभरा है। देवराज सिंह जय, नरेन्द्रनाथ दिवोनाथ और दाहू कथात उनके नायक हैं। इनके अतिरिक्त मोहननाथ बगिल बुद्धिल मन्त्रक, सियारका, भट्टराज आदि पात्रों की अवतारणा इन नायकों के सहयोगी एवं मित्र के रूप में हुई है। विस्तार भ्रमण गन्धु, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विश्वमादित्य, शम्बर को प्रतिनायक कहा जा सकता है। राहुल जी के नायक पात्र लेखक के निजी भावों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे साम्यवादी विचारधारा का वहन करने वाले हैं। उनमें गुरुवीरता उत्साह, पौरव प्रातिहारिता एवं धायारिता का गुण प्रायः समान है। सहयोगी पात्र नायकों के मुख दुष्ट के सहचर हैं। उनकी विनिष्टताएँ नायकों के गुणों से पर्याप्त सादृश्य रखती हैं। प्रतिनायक रात्र लखन के साम्यवादी आदर्शों के विरोधी के रूप में प्रस्तुत हैं। ये पात्र गतिशील हैं और साम्यवाद की स्थापना (शम्बर को छोड़कर) इनका उद्देश्य है। पराक्रम और साम्य में वे भी नायक-पात्रों से कम नहीं। इस प्रकार राहुल जी के पुरुष पात्र नायक सत्यागी पात्र एवं प्रतिनायक तीन वर्गों में विभक्त हैं। प्रथम दो वर्गों के पात्र समर्थ की महाशक्ति के पात्र हैं और प्रतिनायकों के प्रति उनकी विरक्ति एवं घृणा व्यक्त है। ये सम्राट पात्र उनकी प्रकृति के विरुद्ध हैं। लखन ने इनके अकृपाओं को अधिक उभारा है। इस दृष्टि से राहुल जी का चरित्र चित्रण समर्थ एवं निरपेक्ष नहीं है।

नारी पात्र—राहुल जी के उपयोगों में समर्थ नारी चरित्रों का अभाव है। वे जय अथवा सिंह के समानांतर किसी नारी-पात्र की अवतारणा नहीं कर सके। नायकों का दृष्टि तो उपयोगकार न की ही नहीं। कोई भी नारी-पात्र पत्रागम की स्थिति का प्राप्त नहीं करता। प्रभावकर माचवे के शब्दों में—राहुल के सभी

उप-यास एक प्रकार से नायिका 'भूय' हैं। जीवन के कम-पक्ष का प्रधानता देने के कारण पात्रों का भाव-पक्ष कमजोर पड़ जाता है।<sup>१६</sup> 'विस्मय पात्रों' में तो कोई प्रमुख नारी-पात्र है ही नहीं। 'जीने के लिए' में जेनी ब्राउन का चरित्र अवश्य कुछ उभरा है। जेनी देवराज की तरह राहुल जी की विचारधारा का बहन करने वाली है। वह आतिथारिणी है, साम्यवादी विचारों की समर्थिका है। देवराज की तरह ही वह जन जागृति में विद्वान्मत्न रखती है और आर्थिक विपन्नता की बहुत झाना-झन खाती है। वह देवराज के लिए प्रेरणाप्रद है, वह उसके दण्ड मंत्रों के माग में वापस नहीं है। इस प्रकार जेनी ब्राउन राहुल जी के नारी-पात्रों में सहायक सशक्त व्यक्ति है। इसी उप-यास की राधा देवराज की माना के रूप में चित्रित है। वह घामीण जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। 'दिव्योत्सव' की पोंखी का चरित्र भी माना के रूप में अवित्त किया गया है। अपने पति राजा वधूपर की मृत्यु होने पर विवादास को धर देती है और उस अपने कृतव्या के प्रति सच कहती है। 'मधुर स्वप्न' की सन्निक 'गृह' कथा की सहोदरा तथा पत्नी है। सन्निक का कृतव्यापरायणा महिष्णु, पत्नित्वा नारी के रूप में चित्रित किया गया है। 'सिंह सेनापति' की राहुणी साहस और पराक्रम में पुण्या के समान है। 'जय घोष' की तनुना जय के अनुकूल युद्ध-वीरता का परिचय देती है। 'जय नारी-पात्र' मुनदा मन्ना नन्दा वामली (जय घोष) मामा तथा (सिंह सेनापति) बदर (मधुर स्वप्न) आदि प्रायः एक से मिलते हैं। राहुल जी ने नारीत्व के चित्रण में प्रेयसीत्व रूप का ही अधिक चित्रण किया है। मानस्य उनमें गौण है। राधा और पोंखी को छोड़कर सभी नारी-पात्र प्रेमिकाएँ, भागिनियाँ तथा पत्नियाँ हैं। उनका नायिकाएँ युद्ध संचालन में मने ही कुशल हैं, परन्तु राहुणी अवस्था में वे नायिकों का निर्वाह करने में अक्षम प्रतीत होती हैं। गृहस्थ जीवन की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में उनका चित्रण भ्रूरा ही लगता है। उनके जीवन में प्रेम का ही एकमात्र महत्व है। इस प्रकार उनका चरित्र चित्रण एकांगी बन गया है। इस सम्बन्ध में डा० नन्दन का कथन सत्य प्रतीत होता है— 'नारी पात्रों में सिंह सेनापति की राहुणी और क्षमा, जय घोष की वासन्ती और मुनदा एक ही साचे में ढली हुई हैं। मामा और नन्दा में तीक्ष्णता और ज्ञान है, उनका चित्रण देवकर अमरीकन सैनिक द्वारा किया हुआ क्रिया के कथन का स्मरण हो आता है।'<sup>१७</sup> राहुल जी के नारी चित्रण में वस्तुतः उस की स्वच्छन्द-नारी का चित्रण है। 'गजस्थानी रनिवास' के गौरी आदि नारी-पात्र नारी की कर्ण दिशि का चित्रण अवश्य प्रस्तुत करते हैं।

**बहिरंग चित्रण**—बहिरंग चित्रण का मुख्य पात्रों की भावना, भावना, अवस्था नाम दिया अनुभव आदि में होता है।<sup>१८</sup> राहुल जी के उप-यासों में पात्रों के बहिरंग चित्रण की प्रवृत्ति अधिक रही है। इस विषय में रणवीर राधा के उप-यास का विलम्बितता का समाप्त विषय में बहुत गये थे 'गजस्थानी' की चित्रण विधि पर भी सही प्रतीत होता है—'उनके ऐतिहासिक उप-यासों की लम्बी-लम्बी भाविकाओं के



प्रतिरिक्त, जिन में उन्होंने अपनी ऐतिहासिक यात्रा का उत्पन्न किया है उनका पात्रों के बहिरंग चरित्र चित्रण की ओर अधिकांश ध्यान इस बात का परिचायक है कि चरित्र चित्रण में उनका दृष्टिकोण इतिहासकार का अधिक रहा है और उपन्यासकार का कम।<sup>११४</sup>

बहिरंग चित्रण के अन्तर्गत राहुल जी की पात्रों की वेगमूपा एवं भावना का वर्णन प्रभावशाली रहा है। ऐसी वर्णना से उनकी रचना में मरी पड़ी है। दिवोदास में पुष्पकुत्सामी की भावना का वर्णन इस प्रकार किया गया है—'तुलसीदास की पुष्पकुत्सामी बड़ी गम्भीर प्रकृति की महिला थी। गुलाबी रंग मुकुटरी धारण, भरा चेहरा, पीले-लाले रंग का साव बह प्रसाधारण स्वस्थ मुद्रा थी। सारे भावपूर्ण में उसके सावर्ण्य की प्रसिद्धि थी।<sup>११५</sup> 'मधुर स्वप्न में सम्बन्ध के लोभ का लक्षण चित्र द्रष्टव्य है—'क्षीण कटि अनन्तवत्सल गल सदा प्रीति तनु प्रग तनु प्रगुली हिमस्वैत गरीर, प्रारक्त कपोल बादाम समान लोचन बभ्रु मुखरेखा सभ भ्रूलता दीप पद्म नेत्र, श्वेत तथा समान दंत वृष्णामरक्त दीप रंग जूड़ा के रूप में निबद्ध तथा सामान द्विविधा विभक्त थे।<sup>११६</sup> इसी प्रकार 'मन्द' के चरित्रांकन में भी उपन्यासकार ने उसकी भावना की वर्णन किया है।<sup>११७</sup>

भावना के साथ साथ पात्रों की वेगमूपा का भी सजीव वर्णन हुआ है। सिंह सेनापति में सिंह की वेगमूपा सम्यक् ही उसका स्वगत वर्णन है—'मैं सब भय भाषा में भी त गिनीय धन चुका था। जाहो में बसा ही सुत्पन्न चमकचुक् पहनता, वैसे ही अपने लम्बे रंग का जूट बांध नम चमक के कन्दोप से बाँक रखता।<sup>११८</sup> वही वही पात्रों के तुलनात्मक भावना-वर्णन भी राहुल जी ने प्रस्तुत किये हैं। दिवोदास तथा गम्बर के युद्धप्रसंग में उनके भावना वर्णन की तुलनात्मक रूप रत्ना द्रष्टव्य है—'दिवोदास का गरीर अत्यन्त गौर वर्ण गिर पर अत्यन्त पील रंग, हाथ में भय का विशाल वज्र उसका विमानवाय पीरय के अनुसृत था। विराटराज शरीर में घोंगा ही छोटा था और उसके दीप्तिमान मुख को देखते ही बनता था। उस पर मृत्यु की छाया नहीं पड़ रही थी बल्कि विजय की उमंग नाच रही थी।<sup>११९</sup> इस प्रकार राहुल जी ने चरित्रांकन में पात्रों के भावना प्रकार एवं वेगमूपा का चित्रात्मक वर्णन किया है। नारी की भावना के अन्तर्गत उनकी नरेश्वर वर्णन की प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। प्रेमचन्द का विचार था कि 'किसी चरित्र की स्वरक्षा करते समय हृदयानवीक्षा की जरूरत नहीं। दो चार वाक्यों में मुख्य मुख्य बातें वह देना चाहियें।<sup>१२०</sup> लेखक के मतानुसार भी प्रत्येक मुश्किल क्लेशों की यह पहचान होती है कि वह कुछ महत्वपूर्ण चोरा का चयन कर उन्हें एकत्रित करके विभिन्न अवसरों पर हल्के सकेतो से पाठक की कल्पना को उद्दीप्त करने की चपटा करे।<sup>१२१</sup> राहुल जी के भावनावर्णन में यह विवेकता दशनीय है। वे सन्धि में ही अपने पात्रों के इस रूप से परिचित करवाने हैं।

वस्तु जगत की भाति उपन्यास जगत् के पात्रों का भी कोई-न कोई नाम अवश्य

होना है। यह नाम नायक एवं उसके चरित्र का यजक होता है। पात्रों का नाम रसत समय उप-यासकार ने सामने पात्रों का समूचा चरित्र विस्तार आ जाता है उसका गुणावगुण उस प्रत्यक्ष हो जाते हैं। चरित्र चित्रण में राहुल जी ने पात्रों के नामकरण का भी उपयोग किया है। 'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति उनके अनक पात्रों पर चरिताय होती है। 'असदस्यु' 'सिंह' 'जय' आदि नाम उनके चरित्र गुणों—गौरव निमयता एवं साहस—आदि की अभिव्यक्ति करते हैं। देवराज नाम से उनके सगत् व्यक्तित्व की भन्नक मिल जाती है। नातिल अपने नाम के अनुसार नात प्रवृत्ति का है और बुद्धिल बुद्धिवादी है। बहक (गुलाब) से उसकी सुंदरता कामलता आदि का बोध हो जाता है। आमीण पात्रों के नाम लोटू सिंह मैकसिंह भगवत् लक्ष्मी आदि स्वभाविक नाम हैं और आमीण अतिशय वय के प्रतीक हैं। अभिप्राय यह कि राहुल जी ने अपने अधिकांश काल्पनिक पात्रों के नामकरण द्वारा भी उनके चरित्र की आर सवन कर दिया है।

उप-यासों के कुछ शीपकों से भी पात्रों के व्यक्तित्व का प्रकाशन हुआ है। 'दिवोदास', 'विस्मय यात्री', 'मधुर स्वप्न' सिंह सेनापति तथा जीने के लिए' के अनेक अध्यायों के शीपक पात्रों के चरित्रांकन में सहायक हुए हैं। 'अश्व समन', 'दिवोदास राजा तथा अतिथि-गृह दिवोदास की वीरता एवं अतिथि सेवा के गुणों की ओर संकेत करते हैं। जीने के लिए' के नायक देवराज का चरित्र 'गिकार और उपचार', 'प्रेम और आत्मा', 'सत्याग्रही', 'कोयल की खान', 'जेल यातना' आदि शीपकों से व्यक्त हो जाता है। 'महावीर की ओर', 'व्यस्त जीवन' आदि शीपक 'नरेन्द्र' के व्यक्तित्व का स्पष्ट करने वाले हैं। चरित्र चित्रण की यह पद्धति प्रायः प्रस्वभाविक होती है क्योंकि नामकरण अथवा शीपक से ही चरित्रिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति हो जाने से पाठकों की उत्सुकता बढ़ पड़ जाती है।<sup>१</sup>

राहुल जी ने यत्र-तत्र पात्रों के अनुभाव चित्रण के द्वारा भी उनके चरित्रों पर प्रकाश डाला है। देवराज तथा जीने के मिलन में उनका अनुभाव चित्रण दिया—  
 जीने के सुनहले बालों वाले सिर की अपनी गाल में लिए उसकी ठुडकी पर अपने दाहिने हाथ की उंगली को रगें, उसकी नीली आँखों को गम्भीरता में दग्गन हुए देवराज जितने ही समय तक अपने हृदय को खाल कर रखता रहा। यद्यपि उनके वार्त्ताकार ने गम्भीरता का रूप धारण किया था, लेकिन मानूस होता था वे दाना हम परती का छाडकर किसी दूसरे लोक में चले गये हैं।<sup>२</sup> राहिणी और सिंह के प्रेम-वर्णन में भी उनका अनुभाव चित्रण द्रष्टव्य है—  
 उसने मुँह पाछार मरी आर ताशा। उसकी आँखें सूजी हुई थी। उसने नील तारका पर स्निग्ध जल की परत पड़ी हुई थी। मैं हाथ की हिनाना चाहा। उसने सर का पास कर लिया। जितना ही जितना उसने कहा वो धाया सजाया न था तो भी उनमें होने पर भी वह कोपय तन्नु की भाँति कामन था। मैंने उनमें प्रेमगुलिया की खतान टूट कहा—राहिणी। मैं मर्या हैं मुझे चिंता न बननी चाहिए।<sup>३</sup> यहाँ सावित्र एवं काविर दाना प्रकार—

क अनुभावा का चित्रण दृष्टा है। युद्ध-वर्णन के प्रसंगात्तम श्री नायक के अनुभावा का चित्रण मिलता है।<sup>१०१</sup> संक्षेपतः यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि राहुल जी ने पात्रों के चरित्रावतन में उनका अनुभाव चित्रण भी किया है।

**अन्तरंग चित्रण**—पात्रों के जीवन के स्वरूप का जानने के लिए उसकी आन्तरिक चेतना का जानना, उसके अन्तर्मा का विश्लेषण करना अनिवार्य है। अन्तरंग चित्रण में पात्रों के मन में उठने वाले भाव-काय का कारण और उद्देश्य, भावा का सधप और उसके कारण तथा परिस्थितियाँ मन की भीतरी दशा और उसके बाह्य प्रकटीकरण का रूप, कथनी और कर्मी का अन्तर, स्वप्ना के कारण और उनका विश्लेषण आदि का अवन आवश्यक है।<sup>१०२</sup> डा० देवराज के मत में—आज कल के उपन्यासों का प्रमाणवाक्य यह है कि जीवन व्यवस्थित रूप से सजी हुई दीप-मालिका नहीं है वह तो ऐसा ज्योतिर्मण्डल है जो हमारी चेतना को आकाश में अपने भीने और अध-भारदणक आवरण से आच्छादित कर रहा है।<sup>१०३</sup> इस आवरण को वेधकर पात्र के भीतरी रहस्या का प्रकट कराना उपन्यास का उद्देश्य है। एच० ए० मरे के अनुसार पात्र के प्रकट रूप से अधिक महत्वपूर्ण उसका अग्रकृत रूप होता है जो प्रकट रूप को प्रेरित करता है। मनुष्य के व्यवक्त आचार-विचार और व्यवहार में उसके चरित्र का एक अक्ष ही प्रतिबिम्बित हो पाता है। शेष का तो उसकी प्रकट चेष्टाओं में आभास तक नहीं मिलता।<sup>१०४</sup> परन्तु राहुल जी के उपन्यासों में पात्रों के अन्तर्मा का विश्लेषण यदा कदा ही मिलता है। प्रमुखताओं के अपने चरित्रनायकों की विशेषताओं का ही आश्रय करते चलते हैं। वे देवराज सिंह, जय, दिवोदास एवं नरेन्द्रनाथ की अन्तर्मा का विशेषताओं का यथा-कालिकारिता यायावरिता कीरता पराक्रम सधपशीलता राजनीतिज्ञता आदि को अवश्य उभारते हैं, पर उनके अन्तर्मा का चित्रण नहीं करते। इसका स्पष्ट कारण यह है कि उनके पात्र अपने व्यष्टि की तरह जीवन और जगत के प्रति सुनिश्चित एवं स्पष्ट विचारधारा रखते हैं उनमें अन्तर्मा की स्थिति ही नहीं है। वे अपने निर्धारित जीवन-दर्शन के अनुसार कार्य करते हैं। वे साम्यवादी आश्यों के अनुगामी एवं जीवन और जगत के प्रति यथायथादी दृष्टिकोण रखते हैं। डा० नगट के मत में—व्यक्तिगत विकास की रेलगाड़ी एन-दम सीधी है। उनका बहिर्मुखी जीवन सधपा स्वस्थ है उसमें प्राणवृत्ता है। व्यष्टि के महाप्राण जीवन की शक्ति और स्वास्थ्य उनमें साफ दृष्ट पड़ता है।<sup>१०५</sup> राहुल जी के पात्र दृष्टि-शक्ति सम्पन्न हैं। वे सधपों एवं परिस्थितियों से जूझते हुए अपने मार्ग का निर्माण करते जाते हैं।

राहुल जी की दृष्टि पात्रों के अन्तर्मा के विश्लेषण पर केन्द्रित न होकर अपने प्रतिपाद्य एवं ईतिहास की ओर उन्मुख रही है। उनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का ध्य नहीं है। चरित्र के अन्तर्मा अग्रकाशित अन्तर्मा के चेतन अवचेतन अंशों का पकड़ने का उन्होंने प्रयत्न ही नहीं किया। ऐतिहासिक चरित्रों के निर्माण में उपन्यासकार के सामने सबसे बड़ी कठिनाई यही होती है कि उसके सामने कोई आदर्श नहीं

हाना। सुदूर इतिहास के पात्रों का विकास हमारी आत्मा के सामने नहीं होता, वे इतिहास में विकसित रूप में ही हमारे सामने आते हैं अतः उनके चरित्र के विकास त्रय को जानना सहज नहीं।<sup>11</sup> 'जाज ल्यू कावस के य' शब्द इतिहासिक उपयोगकार को कठिनाई को स्पष्ट करते हैं। वह अपने पात्रों के पूर्व जीवन के विषय में अनुमान मात्र लगा सकता है। राहुल जी के पात्र भी इतिहास सम्मत होने के कारण चार्ित्रिक दृष्टि से रहित हैं। फिर भी यन्त्र-बद्ध पात्रों के स्वभाव वर्णन में उनकी अतः प्रवृत्ति का चित्रण हो जाता है। उदाहरण के लिए नरैन्द्रपण के प्रस्तुत शब्द देखिए— मेरा ध्यान हृष्ट-मुष्ट भुम्भित और सुपरिचालित गुलाबी मुखों की तरफ नहीं जाता था बल्कि बाल्य और तारुण्य में ही बद्ध हो गया, कम और अस्थि-काल मात्र रह गये नग मूँछे जीण-शीण लोगों की ओर अधिक जाता। मैं बिन्दुन स्वाभ-गुण रहा, मह नहीं मानता और जिन धमकता को मैंने स्वीकार किया उनका सदा अनुपालन किया, यह भी बात नहीं है। परन्तु मेरा हृदय मग्न किसी के दुःख को सहन में असमर्थ रहा इस मेरा गुण समझ या निबलता।<sup>12</sup> यहाँ नरैन्द्रपण के दण्डों एवं करण स्वभाव का अर्थ हुआ है। 'राधा' के गम्भीर स्वभाव का निरूपण दूत पत्तियों में देखिए—

गरीबी और संसार के जीवन-संघर्ष ने उसे बहुत गम्भीर और चिन्ताकुल बना दिया था। उसके चेहरे पर जवानों की बेपरवाही और प्रफुल्लता की जगह मजिदगी अधिक दिखाई पड़ती थी।<sup>13</sup> अतिशय यह कि राहुल जी की दृष्टि पात्रों को उनके ऐतिहासिक रूप में चित्रित करने की ओर अधिक रही है वे मनोवैज्ञानिक उपयोगकारों की तरह पात्रों के अन्तर्द्वारों को उभार नहीं पाये। संक्षेप कहा जा सकता है कि राहुल जी की चरित्र चित्रण की पद्धति उपयोगकार की अपर्या इतिहासकार की अधिक है। इतिहासकार की पट्टी पात्र के व्यक्त अंग तक ही रहती है अतः अतः उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसी प्रकार राहुल जी की उपयोगकारों की चरित्र पात्रों के व्यक्त रूप अर्थात् उनके आचार-व्यवहार को चित्रित करने में तैयारी रही है। अतः औपचारिक चरित्र चित्रण की दृष्टि से राहुल जी को असमर्थ ही कहा जाएगा। उनका चरित्र चित्रण सतही ढंग का है वह बहिरंग मात्र है अतः, व्यक्तिगत अथवा मनोवैज्ञानिक नहीं।

नाटकीय चित्रण—राहुल जी ने यद्यपि पात्रों के बाह्य रूप का ही वर्णन अधिक किया है तथापि उन्होंने प्रत्यक्ष चित्रण-पद्धति अथवा वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम-माध्यम चरित्रात्मक के लिए नाटकीय पद्धति का भी आश्रय लिया है। इसके अन्तर्गत वह घटना-पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रिया, संवाद-व्यवहार एवं अथवा पात्रों के आन्तरिक स चरित्र चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

(क) घटनाओं द्वारा चरित्र चित्रण—पात्रों की परिस्थितियों पर, उनका चरित्र में प्रयोगात्मक सम्बन्ध होता है। यही उनका चरित्र वर्णनात्मक को उभारता है और यही उभार जीवन में घटित हुए घटनाओं के चरित्र को निवारित है।<sup>14</sup> राहुल जी ने उपयोगकारों की घटनाओं उनके पात्रों के चरित्र का उभारन में प्रयत्न है।

‘जीन के लिए’ उपन्यास में माहनलाल की मृत्यु दवराज के जीवन प्रेम का बदल देती है। वह देश सेवा और कर्त्तव्य के मार्ग पर आरुढ़ हो जाता है। जय यौधेय’ में जय और उसके साथी सिंह के पोत मर्न से जय को एक नये जीवन का साक्षात्कार होता है।<sup>११८</sup> विस्मृत यात्री में बुद्धिल की मृत्यु नरेन्द्रयश के जीवन में परिवर्तन ला देती है।<sup>११९</sup> मधुर स्वप्न में शाह बवान दुर्मिर्ष की घटना से प्रभावित हो मर्त्य के मार्ग को अपना लेता है। अभिप्राय यह कि राहुल के पात्र जहाँ घटनाप्रा का निर्माण करते हैं वहाँ घटनाएँ भी पात्रों के चरित्र का प्रकाशित करती हैं।

(स) कथोपकथन द्वारा चरित्र चित्रण—घटनाप्रा का सम्बन्ध तो उपन्यास के कथानक एवं पात्र दोनों से होता है परन्तु उपन्यास में कथोपकथन का प्रयोग अधिक वास्तविक चरित्रोद्घाटन के लिए ही रहता है। राहुल जी ने आत्मकथात्मक (‘सिंह सेनापति’ जय यौधेय एवं विस्मृत यात्री) तथा ऐतिहासिक (जीन के लिए, मधुर स्वप्न) शैली में लिखे अपने उपन्यासों में सवादा की प्रचुर योजना की है। इनसे पात्रों के चरित्रोद्घाटन में विशेष सफलता मिली है। राहिणी और सिंह के निम्न उद्धृत सवाद उनके मधुर एवं आशामय भावी जीवन की ओर संकेत करते हैं।

और तुम राहिणी ?’

मैं भी अभी तो फूँसी नहीं समाती थी।

मैं उस राक्षस को परास्त करके छाड़ा किन्तु उठकर देखता हूँ तो तुम वहाँ नहीं हो। मेरे प्राण निश्चयन से लगे। किन्तु उसी समय नींद खुल गई।

‘स्वप्न में तुम विश्वास करते हो प्रियतम ?’

‘नहीं मैं विश्वास नहीं करता हूँ राहिणी।’

तब भी विश्वास नहीं करते, कि तुम सा करती है स्वप्न का विषाद उन्हा होता है अच्छे का बुरा बुरे का अच्छा।

यदि विश्वास करना हीना तो अन्धारे के विचार के अनुसार मैं विश्वास करूँगा।<sup>१२०</sup>

जीन के लिए उपन्यास में दवराज और जेनी के सवाद उनके प्रेम और कर्त्तव्य सम्यग्धी आदर्शों की अभिव्यक्ति करते हैं।<sup>१२१</sup> श्रीमती ज्याफरे के सवादों में माँ का वास्तव्यपूर्ण हृदय भावता है।<sup>१२२</sup> जय यौधेय में जय और राजकुमारी के सवाद जय के समर्पित प्रेम की ओर संकेत करते हैं।<sup>१२३</sup> निष्पत्ति यह कि पात्रों के स्वरूप को प्रकट करने में राहुल जी के सवादों का सर्वाधिक श्रेय है।

(ग) पत्रात्मक शैली—राहुल जी पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करने के लिए जीने के लिए उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। जेनी के दवराज के नाम लिख गए पत्रों में जेनी का चरित्र उद्घाटित होता है। जेनी का अधूरा पत्र जिस एनी ब्लॉक पूरा करती है वह जेनी के आदर्शों एवं कार्यों को प्रकाशित करता है।<sup>१२४</sup>

(घ) उद्धरण शैली—राहुल जी में इस शैली का अभाव है। फिर भी

पुनरवा और उवशी विषयक गीत की टीका टिप्पणी म पोरखी का चरित्राकन सफलता-पूर्वक हुआ है।<sup>१२२</sup>

निष्पन्न रूप में हम कह सकते हैं कि राहुल ने पात्रों के चरित्राकन में उनके बाह्य रूप का ही अकन अधिक किया है, अतएव चित्रण का उनमें अभाव है। जहाँ तक चित्रण की प्रणालियाँ का प्रश्न है, राहुल जी ने आकृति-वैशम्यता, स्वभाव-वर्णन, अनुभाव-वर्णन, नामकरण द्वारा चरित्राकन, कथापकथन पत्रात्मक शैली एवं घटनाओं के माध्यम से चरित्राकन की पद्धति का उपयोग किया है।

राहुल जी का चरित्र चित्रण इस प्रकार उल्लेख्य कृति का नहीं है वह बहिरांग चित्रण तक ही सीमित है और यदि डॉ० रामा का रूपक ग्रहण किया जाये तो हम कह सकते हैं कि उनके पात्रों का चरित्र जलमय हिमनग के समान है जिसका अन्धाश ही व्यवन त्रिषा प्रतिक्रियाओं में प्रतिबिम्बित हुआ है।<sup>१२३</sup> राहुल जी के पात्रों के चरित्राकन का महत्व इस बात में है कि वे ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि द्वारा सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान कर सके हैं। इस सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें पात्रों के अन्तरंग चित्रण की आवश्यकता ही नहीं थी। डॉ० प्रभाकर माधवे के शब्दों में—'सबसे राहुल जी अपने जिस उद्देश्य का लेकर चले हैं उस दृष्टि से पात्रों का उभारने-सवारने में उन्होंने कोई कोर-बसर बाकी नहीं छोड़ी।'<sup>१२४</sup> अतएव हम कह सकते हैं कि चरित्र चित्रण की दृष्टि से जीने के लिए, 'मधुर स्वप्न एवं जय धीमेय' अथवा राहुल जी के उपन्यास में उल्लेख्य बन पड़े हैं।

संवाद

प्रेमचंद उपन्यासगत संवादों के महत्व के विषय में लिखते हैं—'उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाए, उतना ही अच्छा है। इस सम्बन्ध में इनका ध्यान रखना आवश्यक है कि वार्तालाप कबन रसनी नहीं होना चाहिए। किसी भी चरित्र के मुँह से निकले हुए प्रत्येक वाक्य का अपने मनामाया और चरित्र पर कुछ प्रभाव डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक, परिस्थितियों के अनुकूल और सूक्ष्म होना आवश्यक है।'<sup>१२५</sup> इस प्रकार उपन्यास में कथापकथन का समावेश कथु के विराम एवं चरित्र तथा उद्देश्य की अभिव्यक्ति के निर्वाह जाता है। अच्छे कथापकथन में गायकता स्वाभाविकता और नाटकीयता का गुण अनिवार्य है।

राहुल जी ने अपनी औपन्यासिक कृतियाँ में संवादों का प्रचुर प्रयोग किया है। भाषा नहीं तुनिया की बल्कि उपन्यास की संवादात्मक रचना है ही अतएव उपन्यासों में भी संवादों का प्रचुर प्रयोग है। उनमें 'जीन बत्र' तथा 'मिह मना पति' का पारम्परिक संवादात्मक शैली में हुआ है। राहुल जी के संवादों की सजाकट के लिए नहीं है। उन्होंने संवादों द्वारा कथा का विराम करने का अनिवार्य कार्यों के

व्यक्तित्व का उदघाटन भी किया है। सर्वोपरि सवाद राहुल जी की विचार धारा की मुखरित अभिव्यक्ति हैं। राहुल जी के सवाद मर्मिष्ठ एवं दीर्घ दोनों प्रकार के हैं। उनके लघु सवाद क्या विकास एवं चरित्र अभिव्यक्ति में सहायक हैं। लम्बे सवादों द्वारा लेखक के विचारों को मूर्तरूप मिला है, यद्यपि उनमें असात्मक उत्पत्ति का अभाव है।

**सक्षिप्त-सवाद—**राहुल जी के उपन्यासों में सक्षिप्त सवादों की याचना उनकी सवादगत कलात्मकता की उत्कृष्टता का परिचायक है। छोटे छोटे सवादों की याचना से वे क्या विनाश और पात्रों के चरित्र विनाश में सफल हुए हैं। 'सिंह सनापति' इस दृष्टि से उनकी उत्कृष्ट रचना है। इस उपन्यास के प्रारम्भिक सवाद उदाहरणार्थ प्रस्तुत है—

(दूसरे साधियाँ के) बाग़ मुझ आचार्य के सामने जाना पड़ा। आचार्य बहुत लाश्च न पूछा— तुम्हारा नाम गोत्र, तात । ' गोत्र काश्यप और नाम सिंह कहत मैं न गड़े की ढाल आचार्य के सामने रखी ।

आचार्य ने जहाँ-तहाँ लाहे की कीला से जटित उस ढाल का हाथ में लेकर कहा— बड़ी सुन्दर है यह ढाल और साथ ही बहुत मजबूत भी ।

'मेरे पिता न गड़े की अपने हाथ से मारा था और उसी में बनी ढालों में से एक है ।

'तो बस सिंह । तुम्हारे पिता की तक्षशिला वाला की प्रिय वस्तु मानूँ मैं तभी तो उन्होंने त्याग तोर से इसे सम्पादन करके भेजा ।

लेकिन, आचार्य । मेरे पिता तरह बप पहले मर चुके । उस वक्त मैं पाँच बप का था ।'

आह वरत । बिना पिता के पुत्र का कष्ट मुझ खूब मानूँ मैं । मैं आठ बप का था, जब मेरे पिता मरे थे । किन्तु मेरे तीन बड़े भाई और माँ थी । तुम्हारी माँ तो होगी ?'

'हाँ मेरे पुत्र प्राण जननी जीवित है । उनकी मैं पहली सत्तान था । मैं न दूसरा ब्याह किया किन्तु सौभाग्य से उनके नव पति मेरे द्वितीय पिता साबित हुए । उन्हीं की कृपा से मैं अब तक कुछ सीख-पढ़ सका हूँ ।'

'तो बस ! मैं समझता हूँ, तुम गुल्फ़ देकर नहीं पढ़ सकोगे, किन्तु उनकी परवाह न करो । तुम्हारे जस धर्म निगुल—अतवासी (शिष्य) के लिए बहुलाश्व का घर खुला हुआ है ।

आचार्य की इस असीम कृपा के लिए मैं मुह से क्या कह सकता हूँ ?'

कुछ कहने की जरूरत नहीं । तुम अपने का भरी बिला का अच्छा पात्र साबित करना । <sup>२२१</sup>

आचार्य बहुलाश्व और नायक सिंह के उन सवाद सम्मिश्र हैं । लघु प्रश्ना और लघु उत्तरों के रूप में इन सवादों का संयोजन हुआ है । सवाद स्वाभाविक बातचीत

स हैं। क्यावस्तु के विनाश में सहायक हैं तथापाना के आरम्भिक रूप की भी प्रस्तुत करत हैं। आचार्य बहुलाश्व की उगारता एवं शिष्या के प्रति महानुभूति इन सवादों में व्यक्त है। नायक सिंह के सवाद उसकी पारिवारिक स्थिति का भवन करत हैं। सगादी की मरिप्यता एवं उनकी गत्यात्मकता का एक और उदाहरण इसी उपन्यास में दृश्य है —

‘और मिठास है ?’

रहन स तुम्हें विश्वास नहीं होगा, भया। मैं खिलाव दिखलाऊँगी।’

‘किंतु मूखी दासा उमनी स्वादु खावे हो हागी।’

‘मूखी नयी, ताजी जमी।’

‘पाव महोन पहले की दूटी दासा ताजी-जैसी बस रहगी ?’

‘बैठे हागी। और बणिगा के दासा की मुरा तो तुमने न पी हापी भया ?’

‘नहा सिफ़ उपमा मुनी है।’<sup>१२२</sup>

राहिणी एवं सिंह का उक्त सवाद मरिप्य, मधुर स्वाभाविक बातचीत का रूप है और इस प्रकार का भवन सवाद सिंह ‘सनापति’ की विशिष्टता है। सारे उपन्यास में वक्तात्मक शैली के ध्यान पर सवादोत्तम शैली का प्रयोग निरंतर है। सिंह केनापति की तरह ‘निबोदास’ के सवाद भी सन्निप्य एवं वक्तात्मक हैं। इस उपन्यास में उपन्यासकार का विचारामरिप्य के प्रति आग्रह कम है एवं तब वितक-पूर्ण सवाद भी नहीं हैं। इस लघु उपन्यास में सवाद सरल, प्रवाहपूर्ण एवं क्या विनाश में सहायक हैं। उदाहरणार्थ पुत्रुत्तमानी तथा पौरवी के सवाद दृश्य हैं।<sup>१२३</sup>

‘माता और भी स्नेह प्रनिदान करती हुई कहती है—‘वनद, तू कितनी सुन्दर है ?’

(नन्-पौरवी)—‘माता तुम किससे कम हा ? तुम्हारे लावण्य का वक्ता तो सार मरिप्य में हा रहा है।’

(‘माता-पुत्रुत्तमानी)—‘पर मैं तो पुत्रवती हा चुकी हूँ, तू तो अभी कमर है।’

(नन्-पौरवी)—‘पुत्रवती हाता तो बड़े सौभाग्य की बात है, फिर तुम्हें क्या उमा पुत्र मिला है।’

‘नहा नन्, तू आ पुत्रवती होने ही वाली है।’

‘तब मैं भी पुरानी हा जाऊँगी।’

तरी जमी का सौग्य इतनी जल्दी पुराना नहीं हा सकता। पत्रवन वध्रयद्वय मरिप्य वक्ता नाग्यानी है जो उनकी जमी पत्नी से मिली।

‘निबोदास’ व उक्त सवाद स्वाभाविक मरिप्य एवं सरल हैं। इसमें सन्देह नहीं। वक्ता वक्ता उपन्यास व सवाद में भी उक्त गूण विद्यमान हैं। दवरान और जेनी व मरिप्य उनके सौग्य प्रेम की मरिप्य करत हैं। ‘मधुर स्वप्न’ में क्या विनाश व फिर मरिप्य का सफ़्त प्रयोग दृष्टा है। मरिप्य के विनाश के विना मरिप्य जिस



छल नीति के प्रयोग के पक्ष में है, उस वह अत्यन्त सक्षिप्त रूप में अपने सवादा द्वारा प्रकट करता है।<sup>१३</sup> उसने सवादा उपन्यास की भावी कथा की सूचना के साथ उसकी स्वायत्तालुपता एवं अयाचारा की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार के सवादा जय योधेय में भी विद्यमान हैं।<sup>१३१</sup>

सम्बन्ध सवादा—सक्षिप्त एवं सजीव सवादा व विपरीत राहुल जी के उपन्यास में सम्बन्ध सवादा भी कम नहीं है। जहाँ राहुल जी अपनी विचारधारा को अभिव्यक्ति देना चाहते हैं अथवा समाज धर्म एवं राजनीति के किसी पक्ष की आलोचना करते हैं, वहाँ सवादा सम्बन्ध सम्भाषण अथवा प्रवचन बन गया है। इन सवादा में नाटकीयता का प्रायः अभाव है कथा यहाँ अवच्छिन्न हो जाती है और कही कही तो पात्रों की दोष कालीन वार्तापत्रों में विषय परिवर्तन के अभाव के कारण एकरसता एवं नीरसता प्रतीत होनी लगती है। विचारों की पुनरुक्ति सवादा-कला की क्षति पहुँचाती है। राहुल जी के सम्बन्ध सवादा तीनों रूपों में द्रष्टव्य हैं।

(क) युक्तिपूर्ण सम्बन्ध-सवादा—राहुल जी के पात्रों व सम्भाषणों में मार्क्सवादी दार्शनिक युक्तियाँ एवं सिद्धांतों की प्रचुरता है। ऐसे स्थलों पर सवादा दीर्घ हो गये हैं। जीने के लिए भ्रमोद और मोहनलाल व सवादा इसी प्रकार के हैं। मोहनलाल दश की स्वतंत्रता के लिए सावत्रिक जाति को अनिवार्य मानता है। उसका आग्रह है—‘हम चाहते हैं जाति को प्राध्यात्मिक रूप देना। इस मनोवृत्ति से मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता है। जाति सावत्रिक उदय पुरस्कृत है। उस राजनीति क्षेत्र तक सीमित नहीं रखा जा सकता। सावत्रिक न करने पर वह कभी सफल नहीं हो सकती। इसका हमका पहल ही निणय कर लेना है कि हमारे जाति पक्ष का प्रदीप विज्ञान होने जा रहा है या धर्म। धर्म को मानने पर निश्चय ही हम सारे देश में एक जातिकारी दल कायम नहीं कर सकें। भारत की राष्ट्रीय एकता जात-पात और मजदूरों की चिन्ता पर होगी’<sup>१३२</sup> इसी उपन्यास में साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद के परिणामों की ओर संकेत करता हुमा नायक देवराज शोषिता की एक जाति मानता है—‘मुक्त मानव होता है, हिंदुस्तान और इंग्लैंड के श्रमजीवियों का भाग्य एक सूत्र में बंध गया है। एक की परतंत्रता से दूसरे की परतंत्रता स्थायी होती है। एक की स्वतंत्रता से दूसरे का स्वतंत्रता में बड़ी मन्द मिनती है। दुनिया के शोषिता की जाति एक है। मेरी समझ में इंग्लैंड के मजदूरों को हिंदुस्तानी मजदूरों के संगठन और आंदोलन में अपनी ही श्लिष्टस्पी लेनी चाहिये जितनी कि अपने यहाँ व लेने रहें हैं।’<sup>१३३</sup> ‘मधुर स्वप्न में साम्यवादी कायप्रणाली के विषय में अन्जगर मजदूर का सवादा भी इसी प्रकार का है।’<sup>१३४</sup>

(ख) विचार प्रधान सम्बन्ध सवादा—राहुल जी ने युक्तिपूर्ण व सम्बन्ध तर्क वितर्कों द्वारा साम्यवाद एवं बोद्ध चिन्तन सम्प्रदायों विचारों के प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया है। साथ ही समाज व जीवन के विविध पहलुओं के बारे में अपने विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। जय योधेय में परलोचना के विषय में जय का कथन

हे—'पुत्र पिता का परलोक है पुत्र पिता का पुनर्जन्म है। पिता मरने से पहले अपने शरीर, अपने मानसिक और शारीरिक संस्कार का एक अंग माता के शरीर में स्थापित करता है। माता उसमें अपना अंश मिलाती है और नौ मास तक मर खड़ा उस शिशु के रूप में अगले लोक, अगली पीढ़ी के लिए देती है। इसमें परलोक मानता हूँ। इस परलोक का मैं पक्षपाती हूँ।'<sup>१३८</sup> जय वं द्वारा लखन ने साम्राज्यवाद, पुनर्जन्म, निर्वाण<sup>१३९</sup> आदि के विषय में भी विचार प्रकट किये हैं। मधुर स्वप्न में कवान के अन्तःपुर की मोजन-गाला में कवात और मदवी नेलाघा का वातालाप है।<sup>१४०</sup> मज्दक बुद्ध, मानी आदि साम्यवादी विचारका के विचारों को अपने सवांग में उद्धृत करता है। ये सवांग पात्रों के स्वतंत्र सवाद न होकर लेखक के निजी विचार हैं। इस प्रकार राहुल जी ने सवादों के माध्यम से निजी विचारों को अभिव्यक्त कर दिया है।

**आलोचनात्मक सवाद—**राहुल जी जब मार्क्सवादी विचारधारा एवं सौंदर्य का समर्थन करते हैं तो अन्य राजनीतिक विचारधाराओं एवं धर्मों की तीव्र आलोचना एवं खण्डन करते लगते हैं। उनके पात्रों के आलोचनात्मक एवं खण्डनात्मक सवांग यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। आर्वाक दशन के विषय में जय का कथन है—'मरा मतलब है, आर्वाक के नाम से आप जिस जीवन-दशन को हमारे सामने रख रहे हैं वह सामना, सठा का दशन है। बिना अपवाद व ब सभी इसी पर चरत आये हैं। किसी की परबाह मत करो, बाप और भाई की भी तलवार के घाट उतारन, बिप पिलाकर मुलाने में जरा भी आना जानी न करो, यदि तुम्हारे खाने पीने की जरूरत म बाधा होव।'<sup>१४१</sup> इसी प्रकार जमींदार प्रथा के उन्मूलन के विषय में काप्रेंस की नीति की आलोचना करते हुए कमान कहता है—'जी हाँ, उठान का अधिकार नहीं, लेकिन मारी शक्ति लगाकर उसकी रक्षा करने का काम तो काप्रेंस न आपके जिम्मे सौंपा है न।'<sup>१४२</sup> इस प्रकार राहुल जी धर्मगत मकीणताओं एवं राजनीतिक क्षेत्र में स्वायत्त सोलुपता आदि के वर्णन में आलोचनात्मक सवादों की सहायता लेते हैं।

निष्पत्ति यह है कि राहुल जी के लम्बे कथापकथन उनकी मान्यवादी विचारधारा के प्रभाव से ग्रसित नहीं हैं और उन पर प्रचारोत्पत्ति का गहरा रंग चढ़ा हुआ है। अनीत एवं वतमा की घटनाओं का मार्क्सवादी दृष्टिकोण से विवरण करने के कारण उनके पात्रों के सवाद उनके अपने दृष्टिकोण के अनुकूल हैं।

राहुल जी के उपन्यासों में सवांगों में भावानुरूपता एवं नाटकीयता का प्रभाव ही दृष्टिगोचर होता है। उनमें बाह्यनीय गुण वसिष्ठता, यनापन और काय के अनुसार गति नहीं है। 'गुप्त विषयों के विवेचन से सम्बद्ध होने के कारण उनमें राजकता, चुम्मा एवं हाजिरजवाबी का प्रभाव है। दरबार और उसके सादियों में अंग्रेजों साम्राज्यवादी नीति विषयक चर्चा<sup>१४३</sup> तथा जय और असन के बीच घम एवं दशन विषयक सवांगों में<sup>१४४</sup> ये लुटियाँ पाई जाती हैं। राहुल जी के कथापकथन बौद्धिक अधिक हैं। उनके पात्र गणतंत्र साम्यवाद एवं बौद्ध-धर्म जैसे गम्भीर विषयों पर तक वितक

करत है। एस स्थला पर विषय प्रतिपादन की और अधिक ध्यान देने व कारण राहुल जी पात्रों के सवादा में प्रसंगानुसार माधुय कोमलता एवं श्रोज आदि की सृष्टि नहीं कर सक हैं। कई स्थलों पर तो प्रणय वार्ताएँ भी आवश्यक नहीं हैं। विस्मृत यात्री' में नरेन्द्र और उसकी प्रेमिका भद्रा की प्रणयवार्ता में प्रणय भम्बूची उल्लास एवं आवेग का अभाव है।<sup>१३२</sup> राहुल जी व इन गम्भीर विषयों से सम्बन्धित सवादा के विषय में यह सहज ही कहा जा सकता है कि ये सवादा प्रायः वात-विवाद के रूप में प्रस्तुत हैं। उपन्यास का मुख्य पात्र अथवा नायक विचारों का प्रतिपादन करता है और अन्य पात्र उसका समयन करते जाते हैं। अतः नायक के विचारों से सभी पात्र प्रभावित हो उसका अनुगमन करते हैं।

सवादों की भाषा राहुल जी व उपन्यासों के सवालों की भाषा पात्रानुकूल एवं वातावरणानुरूप है। दिवानास जय योधेय तथा 'सिंह सेनापति' के प्रमुख पात्रों के कथना में सरलता के तत्सम भाषा की प्रधानता है। फलतः उनसे देशकाल की सकारण रूप प्रदान करने में लेखन को सफलता मिली है। 'मधुर स्वप्न' में भी पात्रानु-कूलता की विशिष्टता विद्यमान है। ईरानी वातावरण वहाँ सुचारु रूप में अंकित हुआ है। कहीं-कहीं तत्सम भाषा की प्रचुरता से सवादों में दुर्बोधता भी आ गई है। परन्तु अग्रज भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है। राहुल जी ने अपने ग्रामीण पात्रों के सवादा की भाषा में लोक भाषा का पुट दिया है। इससे कथानक की एकरसता में वचिष्य और सजीवता आ गई है। जाने के लिए' में दवराज और लक्ष्मी के सवादा में लोक भाषा का प्रयोग हुआ है।<sup>१३३</sup>

राहुल जी के सवादा की अपनी विशेषताएँ एवं दुर्बलताएँ हैं। जहाँ उन्होंने सवादों का विचारामिव्यक्ति का माध्यम न बनाकर वस्तु विकास एवं चरित्राकन के लिए उनका उपयोग किया है वहाँ उनके सवाद मक्षिप्त, सजीव एवं गतिशाली हैं परन्तु अधिकांशतः राहुल जी के सवाद दाँध, आलोचनात्मक एवं बाद-विवाद का रूप धारण किए हुए हैं। सवाद-कला की दृष्टि से सिंह सेनापति तथा दिवानास उत्तम रचनाएँ हैं।

### देशकाल और वातावरण

वातावरण पात्रों का सत्कार है, जिसमें रहकर पात्र अपने व्यक्तित्व का उद-घाटित एवं विकसित करते हैं। आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र स्थान और समय के औचित्यपूर्ण नियोजन को देशकाल की सत्ता देते हैं और ऐतिहासिक उपन्यासों में इसकी अनिवार्यता इन पात्रों में व्यक्त करते हैं— ऐतिहासिक उपन्यासों को सामन रखने से इस तत्त्व के समाजगत अर्थव्यवस्था का सही भाँति पता चल जाता है। क्योंकि यदि इन उपन्यासों में तत्समयिक समाज के आचार-व्यवहार का ठीक ठीक निरूपण न किया जाय तो उनका उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है।<sup>१३४</sup> डा० रमेश कुंतल मेघ के पात्रों में 'विनिष्ठा' का ऐतिहासिक बोध वातावरण सृष्टि द्वारा उड़ी गहराई से होता है। वगैरह पात्रों के आचार-व्यवहार धर्म बलाएँ सामाजिक जीवन नगर आदि

इसके उपादान हैं।<sup>१४४</sup> वस्तुतः ऐतिहासिक उपयासा में ऐतिहासिक घटनाओं की अपनी तत्कालीन जीवन चित्रण का महत्त्व अधिक है। श्री पदुमलाल पुन्नालाल वन्शी का मत अग्रणीय है—'इनमें ऐतिहासिक घटनाओं का इतना महत्त्व नहीं होता, जितना तत्कालीन जीवन के चित्रण का। उन्हीं से हम बौद्ध हूँता है विरमय होता है, आतंक होता है, थड़ा होती है और मानव जीवन की चिरमन गरिमा पर दृढ़ विश्वास भी होता है।'<sup>१४५</sup> बातावरण के मुख्य दो रूप हैं—समाजगत एवं प्रकृतिगत। समाजगत बातावरण के अन्तर्गत समाज की विविध राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि परिस्थितियाँ एवं यात्रा की वन भूषा, शृंगार आचार-व्यवहार, खान-पान आदि आन हैं। प्राकृतिक बातावरण में प्रकृति के विविध रूपा, पशु, पक्षी, सरिता मरुवर, पर्वत निर्भर वानर, उपवन आदि की गणना की जाती है।

राहुल जी के उपयासा में बातावरण-मृष्टि का तत्त्व सर्वाधिक उभरा है। बातावरण सजना के लिए सैकड़ों न पर्याप्त उपाय किया है और उम मफलता भी मिली है। वन और वानर जना ही उनके उपयासा में सजीव रूप से प्रकट हैं। उनकी ऐतिहासिक कल्पना युग-परिस्थितियों को पूर्ण रूप से मूल्य कर सकी है। बातावरण निर्माण के लिए राहुल जी न कल्पित किया एवं ऐतिहासिक वस्तु वगण से साहाय्य लिया है साथ ही ऐतिहासिक गद्यावली का प्रयोग भी बातावरण निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है। राहुल जी न अपने ऐतिहासिक उपयासा में जिस गद्यावली का प्रयोग किया है, वह प्राचीन भारत एवं प्राचीन ईरान के सांस्कृतिक एश्वर्य की अभिव्यक्ति में समर्थ है। डॉ० गांधीनाथ निवारी लिखते हैं—'राहुल जी न ऐतिहासिक बातावरण के निर्माण के लिए विविध गद्यावली का प्रयोग किया है। सिंह सेनापति एवं जय घोषेय में यह वीरगल मिलता है। वहाँ वह बहुत उचित और सौंदर्य का साधक है।'<sup>१४६</sup> डॉ० नगद को राहुल जी इस क्षेत्र में प्रसाद जी से भी बड़े हुए दृष्टिगोचर होते हैं—'अनीत के सांस्कृतिक एश्वर्य का अभिव्यक्त करने के लिए जिस समृद्ध और समर्थ गद्यावली का प्रयोग प्रसाद जी न अपने नाटकों में प्रारम्भ किया था राहुल जी न उनकी और भी अधिक श्रीवृद्धि की है। वास्तव में इस क्षेत्र पर उनका अधिकार प्रसाद जी की अपेक्षा अधिक व्यापक है।'<sup>१४७</sup> निस्संदेह राहुल जी के उपयासा में अग्र्य तरवा की अपेक्षा दानास और बातावरण का तत्त्व अधिक सफल रहा है।

दो चित्रण—राहुल जी के उपयास विविध घटनाओं एवं देशों से सम्बद्ध हैं। मुख्यतः उनकी रणस्थली भारत तथा ईरान है। 'निवागस' का मुख्य घटनास्थल सप्त सिन्धु 'मह सेनापति' का गद्यावली और तक्षशिला 'जय घोषेय' का घोषेय प्रदेश विस्मृत यात्रा का उद्यान प्रत्या तथा चीने के लिए बाईसवीं सदी और राजस्थानी निवास का प्रमाण छपरा घटना और राजस्थान है। मधुर स्वप्न का मुख्य घटना स्थल इरान देश की राजधानीतस् पोत है। राहुल के नायक यायावर हैं और उनकी यात्राएँ भारत के बौद्ध तीर्थस्थानों के अनिरिक्त सिंहलद्वीप तथा महाचीन तक की

भूमि तक हैं। उप-यासा तबत ये यात्रा विवरण उप-यास गिल्प का भग बन गये हैं और उसका नियमन करते हैं। इसलिए भूम्य वेदस्थला के अतिरिक्त समूचे भारत तथा ईरान को घटनास्थल के रूप में उप-यासकार ने ग्रहण किया है। राहुल जी ने देश अथवा भूगोल वर्णन में पर्याप्त सतकता से काम लिया है। ऐतिहासिक उप-यासों में भौगोलिक वर्णना की ओर जितना ध्यान राहुल ने दिया है उतना किसी अन्य उप-यासकार ने नहीं। राहुल जी के उप-यासा में भूगोल के अनेक मानचित्र हैं। भौगोलिक यथायता एवं सजीवता राहुल जी की महती विशिष्टता है।

राहुल जी में उप-यास ऐतिहासिक हैं आचलिक नहीं। फिर भी वे जब किसी प्रदेश विशेष का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत करते हैं अथवा यात्रा प्रदेशों का वर्णन करते हैं तो उस मंचल विशेष का पूरा चित्र प्रस्तुत हो जाता है। इसीलिए विरचनाय प्रसाद तिवारी उनके उप-यासा में स्थानीय रंग की महत्ता स्वीकारते हैं।<sup>१४६</sup> उप-यासा न्तगत नगर वर्णन और यात्रा वर्णन राहुल के भौगोलिक ज्ञान के प्रतीक हैं। उन्होंने अपने नामक की यात्रा में आय नगरों का विस्तार वर्णन किया है। 'विस्मृत यात्री' के नामक की जन्मभूमि उद्यान प्रदेश का वर्णन उदाहरणार्थ प्रस्तुत है— अपनी अपनी मातृभूमि सबकी अच्छी लगती है इसलिए मैं किसी के कुरूप और असुन्दर होने की बात नहीं करता पर उद्यान तो सचमुच ही स्वर्ग का उद्यान है। उत्तर की ओर कपूर श्वेत हिमा से आच्छादित उत्तुंग शिखरों की पक्षियाँ कितनी सुन्दर मानूम होती हैं? बाल्य में मैंने पहले-पहल इन श्वेत शिखर पक्षियों को देखा था

उद्यान की भूमि यही है जिस सभी सुवास्तु कहा जाता था। अब भी हमारी एक नदी का नाम सुवास्तु (स्वात) है। हमारी नदियों का पानी, पानी नहीं दूध है। सुवास्तु उस अपने सुन्दर वास्तुभा (शुही) के कारण कहा जाता था और अब अपने मधुर फलों के उद्यानों के कारण वही उद्यान के नाम से प्रख्यात है। हमारे उद्यान की शिक्षा

उदुम्बर (अजीर) और दूसरे भी फल कितने मधुर होते हैं।<sup>१४७</sup> इसी प्रकार उद्यान की भूमि वहाँ की ऋतुओं निवासियों लोगों के रहन-सहन पशु चारण वृषि आदि का वर्णन लेखक ने बड़े विस्तार और तन्मयता से किया है।<sup>१४८</sup> 'जय योधेय' में हिमालय के पर्वतीय सौन्दर्य ग्रामों एवं ग्रामीणों तथा उनके रीति रिवाजों आदि का भी वर्णन हुआ है।<sup>१४९</sup> इसके अतिरिक्त बाबा, काको सिंहन योधेय भूमि का वर्णन भी 'जय योधेय' में आया है। इस प्रकार राहुल के भौगोलिक वर्णन उनके ऐतिहासिक उप-यासा का यथायता प्रदान करते हैं एवं तत्कालीन वातावरण का भूत कर दत्त है। वे भौगोलिक मानचित्र प्रस्तुत कर ऐतिहासिक उप-यासकार के कृत्य की रक्षा करते हैं। परन्तु लम्बे-लम्बे भौगोलिक वर्णन एवं विवरणों का प्रस्तुत करते समय लेखक यह विस्मृत कर बैठता है कि वातावरण निर्माण उप-यास के लिए साधन मात्र है साध्य नहीं। राहुल जी का भूगोल वर्णन का मोह और यासा कथा की क्षति पहुँचाता है। विशेष रूप से विस्मृत यात्री में भौगोलिक वर्णन ही कथा का ढाँचा निर्मित करते हैं। परन्तु सबत्र ऐसा नहीं। सिंह सेनापति, मधुर

स्वप्न, 'जीने के लिए' तथा 'दिवोदास' में यह भूगोल-वर्णन साधन-मात्र ही है। यदि प्रायः यह है कि नगर-वर्णन एवं यात्रा-विवरण 'विस्मृत यात्री' में बाधक हैं, पर अल्प उप-यासा में उनका आनुपातिक समावेश ही है।

**समाजगत वातावरण**—राहुल जी की कला सजना की चरम परिणति जीवागत यथाय के धरुन एवं प्राचीन भारतीय समाजगत वातावरण के सजीव चित्रण में प्रकट हुई है। शचीरानी मुद्दू लिखती हैं— 'तत्कालिक पारिवारिक जीवन, उसकी जटिल समझौते और मधुर रम्य प्रसंग-नामा की सजीव मातृवर्ति एवं आत्मशक्ति आदि को राहुल जी ने अपने उप-यासा में अतुल्य क्षमता एवं आत्मप्रतीति के साथ अंकित किया है। प्राच्य और पाश्चात्य इतिहास का गम्भीरतम अध्ययन होन के कारण देश-विदेशों के प्रमुख प्रमुख आदर्शों और बौद्ध-मस्तिष्क का प्रभाव भी उनके ऐतिहासिक निरूपण में दृश्य है।' <sup>१५३</sup>

(क) राजनीतिक अवस्था—'दिवोदास' से लेकर 'राजस्थानी रत्नमाला' तक के राहुल जी के ऐतिहासिक, सामाजिक राजनीतिक उप-यासा की कालावधि अत्यंत विस्तृत है। प्रायः-युग से लेकर अधुनातन समाज को उन्होंने अपने उप-यासा में चित्रित किया है। प्रायः-जाति के इतिहास अंकन में वे विशेष सफल रहे हैं। श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त के शब्दों में— 'आर्यों के प्राचीन इतिहास की कथा के साँचा में ढालन में राहुल की प्रतिभा विशेष रूप से चमकती है।' <sup>१५४</sup>

'दिवोदास' में दिवांगत सम्मिलित सप्तसिंधु के आर्यों की राजनीतिक दशा का सुन्दर चित्र प्रस्तुत है। यह युग जनो का युग है। जनो की सख्या अनन्त है जिनमें मुख्य पाँच जन हैं— "पुरु, यदु, द्रुह्य, तुवग और अनु।" <sup>१५५</sup> जना की आगे कई शाखाएँ हैं जैसे पुरु-जन कुशिक, भरत, तक्षु आदि शाखाया में विभक्त था। <sup>१५६</sup> पुरु जन का सम्मान सर्वाधिक था और यह राजवंश बीरता एवं निर्भीकता में अग्रणी था। पुत्रकुल इस जन के राजा थे। प्रायः-जना में परस्पर फूट थी इसी कारण वे जजरित हो रहे थे। अग्रपदव और उनके पुत्र दिवोदास ने आर्यों को एकमूत्र में बाँधन का भरसक प्रयत्न किया तथा प्रायः राज्य का पूरा में विस्तार किया। राज्यविस्तार के लिए आय पणियों और किरातों से सतपरात थे। दिवोदास ने गम्बल बंध करके असुरों की सी पुरिया पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रकार यह युग आर्यों और किरातों का समपयुग था जिसमें आर्यों ने किरातों पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। दिवोदास के राज्यकाल में प्रायः जन प्रथा से निकल कर सामन्ती शासन-व्यवस्था में आ चुके थे और पितृ-भक्ता के स्वच्छन्द वातावरण से निरल राजा की निरङ्कुशता की ओर बढ़ रहे थे। पर वे जनतन्त्र के नियमों की अवहेलना नहीं करते थे।

दिवोदासकालीन शासन नीति में पुरोहित का महत्त्वपूर्ण स्थान था। पुरोहित केवल राजा को यज्ञ और धार्मिक कृत्या में ही सलाह नहीं देते थे बरन् राजनीति में भी उनका सक्रिय सहयोग था। दिवोदास के शासन एवं पुरोहित भस्माज शक्ति

पुरोहित मात्र नहीं थे बल्कि युद्ध की कला में निपुण थे। साथ ही श्रायों की महत्वा का भी प्रतीक थे।<sup>२५०</sup>

सिंह सेनापति में ५०० ई० पू० की साम्राज्यवादी शासन प्रणाली एवं गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था का तुलनात्मक चित्र है। मगध में पहली प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था थी जिसके सूत्रधार बिम्बसार और अजातशत्रु थे और गांधार तथा वैगाली में दूसरे प्रकार का शासन प्रबंध था जिसके स्वरूप की विवाद व्याख्या राहुल जी को असीम है। प्रथम शासन प्रणाली के प्रति उनकी घणा-युक्त है और दूसरी के प्रति अनुरक्ति। राजाघात एवं सम्राटों के लिए 'लेखक' न 'रजुल्ला' शब्द का प्रयोग किया है। राजतन्त्र शासन प्रणाली राहुल जी की दृष्टि में जनहिताय की विरोधिनी है।<sup>२५१</sup> इसके विपरीत गणशासित प्रदेशों को राजनीतिक अवस्था अधिक व्यवस्थित एवं जनहिताय है। तक्षशिला एवं वशाली में इसी गणतन्त्र शासन प्रणाली का निदर्शन है। गणतन्त्र में कोई किसी का स्वामी नहीं, वही दास और स्वामी का भेद नहीं। इन प्रदेशों की शासन-व्यवस्था गण-सभा द्वारा संचालित होती है। गणसभा के प्रधान को गणपति कहते हैं। गणसभा के सभी सदस्य गणतन्त्र की सभी मर्यादाओं का पालन करने की शपथ लेते हैं। गणसभा में नियम बहुमत से होता है और नियम से पूर्व छद्म इलाका द्वारा मत जाना जाता है। इस प्रकार सिंह सेनापति में दो विरोधी राज्य व्यवस्थाओं के सघर्ष का चित्रण द्वारा राहुल जी ने तत्कालीन वातावरण का साकार रूप प्रदान किया है।

'जय यौधेय' गुप्तकालीन राजनीतिक रमंच को प्रस्तुत करता है। इस समय भारत में साम्राज्यवादी शासन-व्यवस्था अपनी नावा को सुदृढ़ कर चुकी थी। समुद्र गुप्त एवं चंद्रगुप्त विनम्रान्त्य चण्वर्ती सम्राट् थे। इस काल में भी गणराज्यों का सबका उच्छेद नहीं हुआ था। यौधेय ग्रंथ गणा की स्थिति पर्याप्त सुदृढ़ थी। इस उपवास में भी दो विरोधी शासन व्यवस्थाओं के सघर्ष को दर्शाया गया है। यहाँ भी साम्राज्यवाद के दूषण एवं गणतन्त्र प्रणाली के गुणों का वर्णन है। साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था में पुनः इसी ताक में रहता है कि बाप कब मरेगा। बाप का चिता भी ठण्डी नहीं हान पाती कि भाई एक दूसरे का सिर काटने लगते हैं।<sup>२५२</sup> इसके विपरीत गणराज्य में भारी भूमि सारे वन की समझी जाती है यौधेय अपने को एक घर का सगा भाई समझते हैं।<sup>२५३</sup> साम्राज्यवाद में सम्राट सारी भूमि का स्वामी है जनता उसका लिए दास बनकर कुछ नहीं उसका राजप्रासाद सुदूरियों से भरा रहता है पुरोहित उसकी प्रशस्ति गाते हैं कवि उसकी योगोक्ति की कविताएँ लिखते हैं—वह सर्वोपरि है सब उसकी इच्छा के त्रीढाक-दुक् हैं। गणतन्त्रीय यौधेयगण गणशासन में आस्था रखता है। वही किसी को कोई वचन नहीं वही प्रेम स्वच्छ वातावरण में विकसित होता है वहाँ कोई स्वामी नहीं कोई दास नहीं सभी समिपुत्र समान हैं। उपवास के अंत में आजीवन विरोध करते रहने पर भी यौधेयगण चंद्र गुप्त की तीव्र राज्य विप्लव के सम्मुख विनम्र हो जाता है। अजीरानी गुट लिखती

हैं— राहुल जी के प्रख्यात 'सिंह सनापति और जय यौधेय' उपनाम उनकी समझ कल्पना की सहज उदभूति हैं जिनमें लिच्छवि और यौधेयो वंश गणजीवन की अनेक कल्पना उनके विरोधी राजकुलों का वधन और समवाचन परस्थितियों के विभिन्न पहलुओं का समय चित्रण हुआ है।<sup>१२१</sup>

'मधुर स्वप्न' में राहुल प्राचीन ईरान के इतिहास का कथा वंश में उठाते हैं। एक ईरानी परम्परा का अनुसार सामानी युग में उपनम व्यक्ति श्री ईमन के राज्यसिंहासन का अधिकारी हो सक्ता है। कथात इमो युग में स्वच्छाचारी शासक है। ईरानी राजाशा का जीवन भारतीय शासना की तरह ही सफ़ा का जीवन है उनके सबसे नजदीक के सम्बन्धी उनके जीवन के ग्राहक होते हैं। राजाओं एवं उनके सामन्तों को जनता के दुःख दूर सुनने का अवकाश नहीं है। ईरान की राजनीति में यह युग सामन्तवादी युग था। राज्य में सभी ऊँचे ऊँचे पद भिन्न भिन्न सामन्तीय वंशों के लिए निश्चित थे। सामन्ती जीवन की विलासिता तथा उसरी में—नारकीय जनजीवन—का चित्रण राहुल जी ने सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।<sup>१२२</sup>

विस्मृत यात्री में उद्यान प्रदेश की स्थिति का वर्णन है। उद्यान प्रदेश कश्मीर के राजा मिहिरकुल के अधीन था। सन् ५४७ में मिहिरकुल की मृत्यु पर उद्यान स्वतंत्र हो गया। बम्बोज आदि में सामन्तों ने छोटे छोटे राज्य कायम कर लिए थे, परन्तु उद्यान में स्थानीय राजवंश ने फिर से प्रभुता स्थापित कर ली थी।<sup>१</sup> 'विस्मृत यात्री' में कथानक भारत से बाहर अपनी यात्रा चीन तक करता है। उपन्यासकार ने चीन की राजनीतिक स्थिति की भार भी संवत किया है। महाचीन उत्तर तथा दक्षिण दो राज्या में विभक्त था। इन राज्यों में राजनीतिक परिवर्तन थोड़े-थोड़े समय के बाद होते रहते थे।<sup>१२३</sup>

जीने के लिए' आदि राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों में बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध के भारतीय समाज का अर्थ है। जीने के लिए में अंग्रेजी प्रभुसत्ता ने भुक्ति प्राप्त करने के लिए भारतीयों द्वारा किये गए प्रयत्नों की भाँकी मिलती है। अंग्रेजी राज्य के उच्छेद के लिए अन्तराष्ट्रीय जातिवारिता, प्रथम विश्वयुद्ध अंग्रेजी साम्राज्यवाद के अत्याचार, रीढ़ एकट जलियाँवाला-बाग़ गणतन्त्र स्वराज्य फण्ड प्रसहयोग की तयारी सत्याग्रहिया एवं स्वयं सक्ता को बाराबास का दण्ड आदि का उपन्यास में वर्णन अतीव श्रुती व स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों के संघर्षों की कहानी है।<sup>१२४</sup> स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन और अंग्रेजों द्वारा उनका नगसनापूर्ण दमन—यही इस समय की राजनीतिक अवस्था का रहस्य है। 'भाग्य नहीं दुनिया को बदलो उपन्यास में समाजवादी प्रजातन्त्र की स्थापना राहुल जी का उद्देश्य है। स्वतन्त्र भारत की माकमवादी माग-दण्ड लक्ष्य की अमीष्ट है। अन्तर्द्धि, कल कारखाना का प्रसार आदि समस्याओं पर उपन्यास में विचार किया गया है, जिससे तन्त्रापीन यातावरण की भाँकी भी मिल जाती है।<sup>१२५</sup>

(ख) सामाजिक अवस्था—सामाजिक अवस्था के अन्तर्गत



समाज की रीति रिवाज तथा उसके आहार, वेशभूषा, रहन सहन आदि का समावेश होता है। राहुल जी के उपन्यास विविध काल एवं देश सम्बद्ध हैं। अतएव समाज चित्रण के विविध रूप उनके उपन्यासों में द्रष्टव्य हैं। दिवोदास में ऋग्वेद के अनुकूल आय जनजीवन उसके आहार विहार वेशभूषा रहन सहन आदि का उल्लेख है। प्राचीन भारत के लोग का रहन-सहन सरल एवं आढम्बर रहित था। आय नदिया के समीप गांव में भोजपडिया में रहते थे। उनके ग्राम स्थायी नहीं थे। उनकी पुरिया लकड़िया की बाटा वाली मोर्चावदी से घिरी रहती थी।<sup>१५०</sup> आयों के भोजन में पौष्टिक पदार्थों की प्रचुरता थी। मास, सोम सत्तू दूध उनके भोजन की मुख्य वस्तुएँ थी।<sup>१५१</sup> आयों की वेशभूषा सीधी-सादी थी। आय पुरुष चमड़े या ऊन की ट्रापी पहनते थे। उनकी पोशाक में उष्णीष का भी प्रयोग होता था।<sup>१५२</sup> आय पुरुष और स्त्रिया शारीरिक सज्जा की ओर विशेष ध्यान देते थे। पुरुष स्त्रियों की तरह लम्बे बाल रखते थे। बालों को झटका करके वे जूड़े का रूप दे सकते थे जिसे कपड कहा जाता था। आय स्त्रिया मणि मुक्ता और सुवर्ण के ओषण (मण्टीका) बहुत पसंद करती थी। पुरुषों की ट्रापिया सोने के तारों से लकड़िया रहती थी।<sup>१५३</sup> इस प्रकार दिवोदास में आयों के रहन-सहन भोजन, वेशभूषा और मन्त्रा का यथाथ चित्रण हुआ है।

सिंह सनापति में गणराज्या के सामाजिक जीवन का चित्रण राहुल जी को अभीष्ट है। तमगिला और बगाली के वंश में लेखक ने बहा के लोग के निवास, भोजन आदि का उल्लेख किया है। तमगिला और बगाली दोनों के आवास स्थान प्रायः एक ही हैं। वे आढम्बर रहित परंतु सुरक्षित हैं।<sup>१५४</sup> लिच्छवियों का भोजन पुरा आयों से साम्य रखता है। दूध भी सुरा तथा नाना प्रकार का मास उनके खान पान के विषय अंग है। दधि मधु और सत्तुओं का घोल भी उह द्रव्यन्त प्रिय था। आवास एवं भोजन के प्रतिरिक्त उपन्यास में उनकी वेशभूषा-सज्जा का भी उल्लेख है। पुरुष अनर्वांसक (धोती) और उत्तरीय (चदर) पहनते थे और स्त्रिया उत्तरीय अनवासक के प्रतिरिक्त छोटे कचुक पहनती थी। जूता पहनने का भी रिवाज था। स्त्रिया को आभूषणों से अधिक प्रेम नहीं था। धातु के आभूषणों की जगह वे लता के पत्र फूल आदि की आभूषणों के रूप में प्रयोग करती थी।<sup>१५५</sup> गणराज्य की स्त्रिया और राजप्रासादों की राजकुमारिया की वेशभूषा में बहुत अंतर था। राजकुमारों भार शरीर में आभूषणों में लगी रहती थी। राजकुमारों विद्या की भूषा मन्त्रा राजकन्याओं की आभूषणप्रियता का प्रतीक है।<sup>१५६</sup> जय योधेय में भी अतः पुर की रानिया के वेशभूषण इसी प्रकार के दिये गए हैं। आभूषणों के प्रतिरिक्त शारीरिक गज्जाम स्त्रिया आँखों का पलना या अजन रेखा से अंकित करती थी परों में अजन कण और अना में अंगराम और मुख पर मुखवर्ण का भी प्रयोग करती थी।<sup>१५७</sup> योधेय और लिच्छवियों के भोजन आदि में भी पर्याप्त साम्य है। जय और चंद्र को लकड़ी की आय पर नून पूर गुंथर का मास बहुत पसंद है। 'जय योधेय' में जय की विविध

यात्राओं के प्रसंग हैं। इन यात्राओं में आए विविध स्थानों के स्त्री पुरुषों की वेग भूषण का लखन ने गरीबी से अन्तर स्पष्ट किया है। गांधार की गोपाक चौधेरी में मिली थी। "उनका मुख बहुत घिरावेदार और ऐसा टढ़ा भेगा मिठा होता कि बपड़े की ऐंठन बहुत-सी तिरछी रचाएँ बनाती है। गांधारिया का मुखन भी उन्नी तरह का होता है। स्त्री-मुग्ध दानों बहुत पहनते हैं। मिर पर गांधारिया उत्तरीय और गांधार उष्णीष (पगड़ी) रखते हैं। परा में मोता व तनीय जूत हैं।<sup>१२४</sup> 'विस्मृत यात्री' में उद्यान निवासी ऋतु धनुर्वेद गांधारियों की बदलते रहते थे। जाड़ा में बड़ी नलिया के निचल माया में कमल में पहाड़ा के ऊपरी गांधारियों में बर्षों में पयारा (अपित्यकाओं) में रहते थे।<sup>१२५</sup> उद्यान निवासी धनी दाढ़ी में छ रक्त थे। यहाँ के लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी थे परंतु मास उनका प्रिय भोजन था।<sup>१२६</sup> इसने प्रतिरिक्त द्रव्य तथा दूसरे सूखे फल, गेहूँ की रोन्ने तथा शाली (धान) भी उनके भोजन के अंग थे।<sup>१२७</sup>

प्राचीन ईरान ('मधुर स्वप्न') में वध-वपम के कारण धनी और निधन के भोजन, आवास आदि में पर्याप्त अंतर था। अमीर (अिनम राजा पुरोहित तथा सामन्त सम्मिलित हैं) भव्य प्रसादा में रहते थे गरीब तथा अ-पेरी कोठरिया में। नगरी के राजपरा और बापिया में मृत्यु नग्न ताण्डव कर रही है और इधर बहुत क और विम्बोह भोज उठा रहे हैं।<sup>१२८</sup> अतः पुर की भोजन-शाला का एक दृश्य अमीरों के भोजन, रहन-सहन का विचित्र प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त है—'अतः पुर की भोजन-शाला में माना व्यजना की मधुर गंध आ रही थी। वध मास 'गीतल मास, पक्षि-मास मेघ मास दो मास के धर्म का मास अतून के तल में पका स्वेत पाक सिरके के मास मिठा बबूनर, हस चकोर और तीतर का तला मास घोड़ की छाती का मास, नाना भाति के मास सोने की धालियों में अलग अलग सजा के रखे जा रहे थे।

भोजन के प्रतिरिक्त पान भी भिन्न भिन्न प्रकार के सजा के रखे जा रहे थे।<sup>१२९</sup> सामन्ती जीवन की सौकी के कई विचित्र उपवास में वानावर्ण की सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी वेशभूषा सज सज्जा आदि का अलङ्कृत भाषा में राहम जी ने अकन किया है। इसका विपरीत सामान्य जन जीवन की मामूली आवश्यकताओं से भी वञ्चित था।<sup>१३०</sup> 'मधुर स्वप्न' में पुनर्जन्म के जीवन की भी भाँकी है।<sup>१३१</sup>

जीने के लिए उपवास में आधुनिक भारत के नागरिक एवं ग्रामीण वातावरण का अकन है। भारत के शक्ति नगरी में पक्के मराना में टाट-बाट में रहते हैं।<sup>१३२</sup> ग्रामीण में रहने वाले विमान और कमकरी का रहन सहन उनकी निधनता का प्रतीक है। गाँव के मजान बन्धे, घास फूस की छता वान तथा और सन्नि-युक्त हैं। ग्रामाणों का खान पान दाल रोटी तक सीमित है, जो की रोन्ने नून मिरच कढ़वा तेल मजदूरा का मास है। सोन के लिए चारपाइ नही, पुआल ही उनकी शया है।<sup>१३३</sup> खा पान में पोष्टिक पदार्थों के अभाव के कारण ये लोग अस्वस्थ रहते हैं। बीमारी की व्यवस्था में इलाज करवाने में भी अशक्त हैं।<sup>१३४</sup> इस उपवास में कारा

गंगा व माजिन का वणन कृतिया व रहन-महन का चित्र प्रस्तुत करता है।<sup>१८५</sup>  
 राजस्थानी रनिवास म अतपुर की नारिया की बरण दगा के अवन के साथ-साथ  
 उनकी वग मया आति व भी यथ थ चित्र प्रस्तुत हैं। इस प्रकार राहुन जी न अपन  
 उपयासा में विविध गुण। व सामाजिक जीवन व चित्र अंकित करत हुए उनका खान  
 पान वेश मया मज्जा रहन महन आदि के वणन द्वारा वातावरण को सजीव बना  
 दिया है।

(ग) आर्थिक अवस्था—राहुन व उपयासा म प्राचीन तथा आधुनिक  
 भारत की एव प्राचीन ईरान की आर्थिक स्थिति का भी मफन अवन हुआ है। आर्थिक  
 दृष्टि स मन्तमिधु के आर्यों का जीवन सम्पन्न था। आर्यों का मुख्य धन गाय घोड़े  
 और भड़ बकरियाँ थी।<sup>१८६</sup> व कृषि भी करत थ क्योंकि जो के सत्तु और अपूप उनके  
 आहार म सम्मिलित थ। अधिक धनी और म्भुताशाली आर्य पशुपालन और कृषि म  
 दास नसिया की सहायता लत थ पर साधारण आर्य स्वय ही कृषि और पशु-पालन  
 का काम करत थे। आर्यों के समकालीन पनि वाणिज्य-व्यापार करते थे और वे  
 पर्याप्त धनी थ।<sup>१८७</sup>

सिंह सनापति और जय चौधेय म गांधार बगानी तथा अशोकवा के गण  
 राज्या के वभव का वणन है। बगानी की समृद्धि तथा तक्षशिला व गौरव के वणन  
 म राहुन जी न गणनासित प्रदगा की आर्थिक अवस्था का सजीव वणन किया है।  
 बगानी की समृद्धि का वणन राहुन सिंह के शब्द म करत है—'बहाली स्फीत समृद्ध  
 ह। उसकी बमारियाँ व गगाली पदा करती हैं उसकी गायों का दूध घी, मांस लिच्छ  
 किया व गरीर को हूट्ट पुट्ट करत है।<sup>१८८</sup> तक्षशिला के 'यवमाय का वणन राहुन जी  
 इस प्रकार करत है—'कर्मणा और उद्याना की सम्पत्ति के अतिरिक्त वाणिज्य  
 तक्षशिला के नागरिका की आजीविका का बडा साधन है। स्थल मार्ग स प्राची की  
 वस्तुओं को पारवों बवहम्रा और यवना के दगों में पहुचाने म सहायता पहुचाना  
 तक्षशिला क स्थल साधों का मुख्य काम है। तक्षशिला यदि आवस्ती राजगह कौशाम्बी,  
 उज्जयिनी म भी अधिक समृद्ध है तो उसका प्रधान कारण यही है।<sup>१८९</sup> जय चौधेय म  
 गुप्त साम्राज्य और चौधेय गण की सम्पन्न आर्थिक स्थिति क संकेत है। जय चन्द्रगुप्त  
 के विषय म कहता है — अपन राज्यकोप को वह भरता जा रहा था, लेकिन साथ ही  
 प्रजा को भी सन्तुष्ट रखना चाहता था। रास्ता को अब उमने चारा और डाकुआ मे  
 अकटक कर दिया था। पाया और सार्या के ठहरन क लिए जगह जगह पायशालायें,  
 कुूप और बापी बनवाई थी। उसके दोनारों म बहुत शब्द खाना था और वह  
 तरह तरह के थे।<sup>१९०</sup>

मयूर स्वाम म प्राचीन ईरान की जिस आर्थिक स्थिति का चित्रण किया  
 गया है वह अत्य न वषम्यपूर्ण है। अमीर अत्य त अमीर हैं और गरीब अत्य त गरीब।  
 दुमिक्ष की अवस्था म बमबरा कृषक आदि के पास स्वाद्यान नहीं है और सामंत  
 सोना चानी पटारने का उपनम कर रहे हैं।<sup>१९१</sup> सामाजिक विषमता के अत्य त करण

चित्र उपयाम 'अ' आरम्भिक पृष्ठा में द्रष्टव्य हैं। 'विम्बूत यात्री' में महाचीन की आर्थिक स्थिति का विवरण है। महाचीन में भी कुछ लाग ही अर्थ-सम्पन्न हैं अधिकांशतः अर्थ-मन्द से अस्त है।<sup>२१३</sup>

जीने के लिए उप-यास में भारत (२०वीं शती पूर्वार्द्ध) की आर्थिक स्थिति को राहुल ने अंकित किया है जो अत्यन्त यथार्थ है। भारतीय ग्रामीण जनता की आर्थिक स्थिति अत्यन्त गौवनीय है। अधिकांश कृषक श्रृण अस्त हैं और ध्याज की दर अधिक हान से आजीवन अधमण ही रहते हैं। आजीविका के लिए लाग ग्रामों का छोड़कर दूर नगरों में नौकरी करते हैं, वहाँ भी मजदूरी बहुत घटी है। दरवाज के परिवार की आर्थिक स्थिति के अवन में लेखक ने भारतीय ग्रामीण जनता की आर्थिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया है।<sup>२१४</sup> सामाजिक बर्णन शहरी जीवन में अधिक स्पष्ट है।<sup>२१५</sup> यही स्थिति आगे नहीं दुनिया को बदलो में भी अंकित है।

प्रकृतिगत-वातावरण—वातावरण-संजन में राहुल ने उप-यासों के प्राकृतिक दृश्य भी महत्वपूर्ण हुए हैं। राहुल स्वयं महान वातावरण से और उनके कथा-नायक नर-द्रव्य, जय सिंह आदि भी घुमकण्ड हैं। इन नायकों की यात्राओं में विविध प्राकृतिक दृश्यों एवं स्थानों का जहाँ भी आगम हुआ है, राहुल ने वहाँ की प्राकृतिक छटा का अवलोकन ही अंकित किया है। राहुल आद्य प्रकृति को जीवन सौन्दर्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग स्वीकारते हैं।<sup>२१६</sup>

राहुल तथा उनके कथानायक दोनों ही पश्चिमी मोक्ष पर अनुसृत हैं। हिमालय के प्रति उनका सर्वाधिक आकर्षण है। गिरिजा हिमालय तथा अर्थ यक्षता और उन पर उगी हुई वनस्पति के समीप चित्र उनके उप-यासों में अंकित हैं। हिमालय के तुषारमण्डित उत्तुम शिखरों एवं गगनस्पर्शी देवदारुओं का वनन मनोमुरब्धकारी है।<sup>२१७</sup> पत्र-पत्र वक्षों में आकर्षक चित्र राहुल ने प्रस्तुत किए हैं।<sup>२१८</sup> मजे सजाए वक्षों में युक्त उद्यान का सौन्दर्यजनकता देखने को और भी प्रिय है।<sup>२१९</sup>

राहुल के उप-यासों में प्रकृति चित्रण श्रुत वक्षों के रूप में अधिक हुआ है। पदच्छल वक्षों में उनके प्रकाश चित्रण की प्रमुख विशेषता है। वसन्त, शीतल वर्षा, गरम हैमन्त तथा शिशिर—सभी का वक्षों अल्पाधिक रूप में उनके उप-यासों में विवरा हुआ है। वसन्तावसन्त और वसन्तावसन्त के चित्र मधुर स्वप्न में हैं। वसन्त का एक चित्र द्रष्टव्य है— तिथि और हुपरात की उत्पत्ति में प्रकृति नव जागत हुई थी। वसन्त न जाड़े की मृत्युच्छाया को हटाकर सभी जगह आनन्द का जीवन संचारित किया था। वक्षों की पत्तियाँ बृहन्मुखित हो रही थीं या कामल विमल निवन आय थे। पुष्पवाटिकाएँ अब हरित तृण और उत्कृष्ट पुष्पों में आच्छादित थीं।<sup>२</sup> वसन्तावसन्त अथवा शीतलावसन्त का वक्षों में श्रुत अनुकूल पुष्पा, पत्रा एवं मधुरमयी दूरा का वक्षों मधुर स्वप्न में सजाव बन पड़ा है।<sup>३</sup>

वक्षों श्रुत का वक्षों 'जय योषेय' में प्रस्तुत है। जय का प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त प्रभावमय प्रतीय होता है। वह बहता है— आनन्द गड घने वादन छाया हुआ है।

एक घोर गुन्ग गागर की जलगति की विधान दान पादर तनी हुई है और दूसरी घोर यह हरितगाली की साटी । धन गन्ध व गाय मधुर-नका मिश्रित हो रही है । ऊपर घरीर म नीतर मन्ध पुरवा संग रही है । जिस प्रकृति का यह रूप पुनरित न करगा । <sup>१४</sup> यही राहुत न प्रकृति के मानव पर यह प्रभाव का समित्त भक्त विना है । विस्मृत यानी म वर्णा श्रुतु म सुवास्तु तट की छवि साकार हा उठती है । <sup>१५</sup> धन तीन श्रुतुमा—गरद हमत और गिगिर को—पथक रूप म न सरर राहुत ने सभी को नीतवाल व रूप म हा स्तुन किया है । हमन के एकाध स्वतन्त्र चित्र भी है, परन्तु य वगन और वर्णा के चित्र की तरह सरस नहा । <sup>१</sup>

श्रुतु-यणन व घतिरित राहुत न मन्थिया, पवतीय उपत्यकामा, सध्या एव रात्रि घाति का भी प्राकृतिक सौन्दर्य भवित किया है । श्रिबोम' म पराणी (रावी) घोर विपरीता (ध्यास) घादि सात सिधुमा का यणन है । <sup>१६</sup> मधुर स्वप्न म तिना का वणा भावाक्षिप्त रूप म हुआ है । यहाँ ननी घोर उमर तट पर स्थित राजभवन का सजीव यणन हुआ है । <sup>१७</sup> तिना की निम्नभ्यता का प्रभावगाली चित्र मा उपन्यास म है । <sup>१८</sup>

राहुत के प्रकृति चित्र कई स्थान पर घोर-यासिर क्या के भग बन गये हैं । उनके पात्र घपनी यात्राया म प्राकृतिक सौन्दर्य को घाव्याधिन करते हुए घषतर होत हैं । मधुर स्वप्न' स प्रकृति का एक ऐसा ही चित्र प्रस्तुत है— बीच नि सूर्यास्त से कुछ पहल सवार ननी के एक भाग को पार करत ही मृती उपत्यका में पहुच । यह जगह काफी खुली ता थी ही साथ ही यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य की अपार रात्रि एनमित थी, जिस देखकर सवारा का मानून हुआ कि वह किसी दूसरे लोक में आ गए हैं । यहाँ पहाडा के चारा भार वधा की हरियाली दीख पड़ती थी । जगह-जगह फरने बह रहे थे जहाँ-तहाँ कुछ नग पाषाण का छाडकर सभी जगह पाम, जगती फून लगे हुए थे । ननी कुछ समतल सी भूमि में चलने की बजह स परघरा पर सग सरगित हा चलती थी इतनी पघर ध्वनि नही कर रही थी । <sup>१९</sup>

प्राकृतिक वातावरण भवित करत हुए राहुत न सध्या और रात्रि के घलहत एक रोचक चित्र प्रस्तुत किया है । 'मधुर स्वप्न' से मध्या का एक चित्र द्रष्टव्य है— 'सध्या के समय प्रतीची को अण्ण राग स रजित कर एक घोर सूय का राहित मण्डल लुप्त हाने को या और दूसरी और पूण चत्र के प्राची के क्षितिज पर घागमन का प्रतीक्षा के सारे लक्षण दिसलाई पड़ रहे थे । पणिमण घपनी बुलाया पर पहुच कर रात्रि के मोन और विधाम के पहल बलरव कर रहे थे । <sup>२०</sup> रात्रि की नीरवता का चित्र भी इसी उपन्यास म है । <sup>२१</sup>

राहुत जी व प्रकृति चित्र स्थिर एव गत्यात्मक दोनों प्रकार के हैं । 'विस्मृत यानी' म भस्त हात हुए सूय का भवन प्रकृति व गान्त रूप का स्थिर चित्र प्रस्तुत करता है । <sup>२२</sup> इसके विपरीत जय योधेय म हिमालय की चचल चपल नदिया का चित्र गत्यात्मक कहा जाणगा । इस चित्र म नदियो एव नारियो का तुलनात्मक रूप

अत्यन्त आशयक बन पड़ा है। <sup>३१६</sup> यात्रा प्रसंगात् म विमिन स्थाना की प्रकृति के तुलनात्मक चित्र 'सिंह मेनापति' में भी मिलते हैं। <sup>३१७</sup>

इस प्रकार राहुल के उपन्यासों में प्राकृतिक वातावरण के विविध रूप प्रस्तुत हैं। स्थान विशेष के प्राकृतिक सौन्दर्य को अंकित कर उन्होंने वातावरण को सज्जता एवं मनाहारिता प्रदान की है। राहुल के प्रकृति चित्र विविध हैं—आत्मध्वन रूप में प्रकृति इतिवृत्तात्मक एवं परिगणनात्मक रूप में भी प्रस्तुत हुई है और उसके मल्लिष्ट एवं भावपर रूप भी हैं। आत्मध्वन चित्रों में राहुल ने प्रकृति के मध्य एवं <sup>३१८</sup> सरल और गुच्छ <sup>३१९</sup> स्वनम एवं तुलनात्मक चित्र अंकित किये हैं। उद्दीपन एवं भावाक्षिप्त रूप में भी प्रकृति प्रस्तुत हुई है और साथ ही उमर अलकत रूप की साज सज्जा भी विश्रुत है। राहुल के इन विविध प्रकृति चित्रों की उपयोगिता भी है। ये चित्र वातावरण निर्माण के अंग तो हैं ही क्या विकास के भी अंग बन गये हैं और पात्रों की चरित्रिक विशेषताओं को उभारने में भी सहायक हुए हैं। हमारे इस विवेचन से स्पष्ट है कि राहुल के प्रकृति चित्र इतिवृत्तात्मक और मात्र चलते हुए नहीं हैं जसा कि डॉ० प्रमाणकर मिश्र ने माना है। <sup>३२०</sup> राहुल जी के बहुत से चित्र इतिवृत्तात्मक अथवा परिगणनात्मक मात्र न होकर रसात्मक भी हैं।

समग्रतः राहुल जी अपने ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों में वातावरण सज्जा के प्रति विशेष मजबूत प्रतीति होत हैं तथा समाजगत एवं प्रकृतिगत—दोनों प्रकार के वातावरण अंकन में वे सफल रहे हैं।

### जीवन दर्शन एवं उद्देश्य

उपन्यास का लक्ष्य मानव-जीवन की व्याख्या है। प्रायः सभी उपन्यासकार एवं साहित्यवाचक अपनी अपनी गन्दावली में मानव-जीवन की अग्नि यज्ञित का ही उपन्यास का उद्देश्य मानते हैं। हमारी जम्म नियत है— उपन्यास के अग्नि-यज्ञ का एतद् ही कारण है कि यह मानव जीवन की अग्नि-यज्ञित का प्रयत्न करता है। यदि उपन्यास इस प्रयत्न को छोड़ दे, तो विनयता के समान इसकी विविध दशा हो जाएगी। <sup>३२१</sup> रल्लफॉर्म उपन्यास को मानव जीवन का सद्यः स्वरूप ही है। उनकी दृष्टि में यह 'एमी पहली कला' है जो सम्पूर्ण मानव को लेकर उस अग्नि-यज्ञित प्रदान करने की चेष्टा करती है। <sup>३२२</sup> जाद भी उपन्यास का मानव जीवन का अग्नि यज्ञ बना साहित्य मानते हैं। <sup>३२३</sup> वस्तुतः उपन्यास-साहित्य परिवर्तित होत हुए मानव समाज का इतिहास है और यही उसका महत्त्व है। <sup>३२४</sup> इस प्रकार मानव जीवन की विविध समस्याओं का विवेचन उपन्यासकार का अंगोष्ठ है। वह जीवन के प्रति अपने विशिष्ट दृष्टिकोण की अग्नि-यज्ञित के लिए इस कथा रूप का आश्रय लेता है। जीवन के प्रति यह विशिष्ट दृष्टिकोण उपन्यासकार का जीवन-गान गाना जाना जाता है।

राहुल साहित्यकार के रूप में उपन्यासिनावाणी मिद्धात के अनुगामी हैं। वे आस्था धारणा या चिरम्यायी विश्वास के अन्ध-धुरे हान की कभी नहीं अनुमति

और बहुजन अनहिन को स्वीकारत हैं<sup>१११</sup> तथा साहित्य में वे 'गिव तत्त्व को 'मुन्दरम्' की अपेक्षा अधिक महत्त्व दत्त है। इसी कारण उनके औपन्यासिक कथा-रूप में कलात्मकता का अभाव पड़ चुका है परन्तु जिस स्पष्ट एवं स्वस्थ रूप में उन्होंने अपनी विचारधारा एवं जीवन दर्शन को अभिव्यक्त किया है वह असंदिग्ध रूप में प्रागस्तनीय है। वस्तुतः राहुल जी का स्पष्ट जीवन-ज्ञान था। अतीत की ओर जाने का उनका उद्देश्य था, अपने उस जीवन दर्शन को गहनता से प्रभावित करना तथा सामाजिक परम्परा को समझने में मदद देना।<sup>११२</sup> गचीरानी गद्गू इस विषय में लिखती हैं— 'सामयिक जनजीवन के प्रति न केवल जागरूकता ही प्रत्युत एक भौमासिक का दृष्टिकोण उनमें दीप्त पड़ता है। एक ओर तो वे भावनाओं के स्रोत में बैठकर विचित्र विचित्र अनुभवों में कल्पना का रंग भरते हैं दूसरी ओर एक स्वस्थ जीवन उपमावता की भाँति आध्यात्मिक तत्त्वा की अवहलना करते बुद्धि द्वारा प्रतिपादित अनात्मवाद और परिवर्तनवाद से खिंचे रहते हैं।'<sup>११३</sup> डा० जगदीश गुप्त राहुल जी का पान संयोजना में उनके जीवन ज्ञान की निहितिक की ओर संकेत करते हैं— 'जिन ऐतिहासिक पात्रों की ओर लेखक ने संकेत किया है तथा जिनसे प्रेरणा ग्रहण की है वे उनके जीवन दर्शन के प्रतीक हैं।'<sup>११४</sup> डा० नगेन्द्र स्पष्टतः राहुल जी की औपन्यासिक कृतियों में द्वैतात्मक भौतिकवाद के रूप में उनका जीवन दर्शन देखते हैं।<sup>११५</sup> डॉ० चण्डीप्रसाद जोशी राहुल जी की ऐतिहासिक एवं सामाजिक राजनीतिक कृतियों में उनके इतिहास प्रेम का कारण उनका मार्क्सवादी दर्शन मानते हैं।<sup>११६</sup> वस्तुतः राहुल साह्रत्यायन के ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों का मूलभूत उद्देश्य मार्क्सवादी सिद्धांतों के प्रचार एवं प्रसार द्वारा आदर्श समाज के निर्माण को प्रोत्साहित करना है और इसी रूप में उनके जीवन ज्ञान की अभिव्यक्ति हुई है। श्री रत्नाकर पाण्डेय के शब्दों में— 'राहुल का कृतित्व मायापुत्र गीतम के उपदेश से कल्पित के बंधन को काटता है। राहुल का दर्शन जीवन है समाज के लिए उपादेयतापूर्ण स्थिरता में इसा में उनको विश्वास है मिट्टी की ममता ने राहुल को भौतिकता का दर्शन दिया।'<sup>११७</sup> राहुल जी के उपन्यासों में इस प्रकार मार्क्सवादी एवं बौद्ध दर्शन की व्याख्या एवं इन दोनों का समन्वय प्राप्त होता है, साथ ही वे सब एक प्रगतिशील साहित्यकार की तरह जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। भक्तिमत् भोक्ता की तरह<sup>११८</sup> राहुल ने साहित्य के माध्यम से मार्क्सवाद को अंकित किया है। यही कारण है कि अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में प्राचीन काल से सम्बद्ध कथाओं के मातल उन्होंने मार्क्सवाद का आधुनिक विचारधारा का सन्निवेश किया है।

मार्क्सवाद के आलोक में उपन्यास—मार्क्सवाद एक बुद्धिवाह्य यज्ञानिक दर्शन-मदति है। वहाँ मनुष्य की सभी समस्याओं के विश्लेषण का प्रयत्न विवेकयुक्त होता है। वहाँ किसी अदृश्य अर्थ में अपराजित सत्ता या रहस्यात्मक शक्ति पर अंध लम्बित नहीं रहा जाता। जो है प्रत्यक्ष प्रयोग्य और तर्क की सीमा में है।<sup>११९</sup> राहुल जी मार्क्सवादी उपन्यासकारों में प्रतिष्ठित लेखक हैं। उन्होंने ऐतिहासिक यथाथवा

की व्याख्या मानववादी सिद्धांतों द्वारा करने की परम्परा का आरम्भ किया है। उनके उपयोग का मूलभूत उद्देश्य मानववादी सिद्धान्तों के आख्यान द्वारा आदर्श समाज का निर्माण करना है। उनके औपचारिक विधान का माध्यम है और साध्य है जीवन। वे जीवन का अधिक समझ बनाने के लिए लिखते हैं और इसी दृष्टि में अतीत की क्या भी कहते हैं।<sup>33</sup> राहुल जी का इतिहास की ओर झुकाव भी इसी कारण था कि वे अपने समाजवादी विचारों का अतीत के पृष्ठ में उद्घाटन करना चाहते थे। राहुल ने अपने उपयोग में प्राचीन सामाजिक जीवन से नवीन साम्यवादी तत्त्वों को लोकांतरित किया है और यह प्रमाणित किया है कि जब कभी समाज में वण सम्पत्ति आदि के आधार पर विषमता का समावेश हुआ है तब मानव जीवन ह्रासो-मुक्त एवं पुनर्जात हुआ है।<sup>34</sup> राहुल जी की सभी औपचारिक दृष्टियाँ मानववादी विचारों की अभिव्यक्ति करती हैं। डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त राहुल के उपयोग में भीतकतावादी जीवन-दृष्टि का मुखरित देवत है—‘उहान अतीत की विभिन्न घटनाएँ एक परिस्थिति का प्रकट करते हुए एक तत्त्व का उद्घाटन किया हैं, जिससे भीतकतावादी जीवन-दृष्टि का मर्म की भावना, रुढ़िवादिता की निस्तारता तथा साम्यवादी सिद्धांतों की पुष्टि हो सकती है।’<sup>35</sup> राहुल जी ने मानववादी विचारों के दिग्दर्शन के लिए इतिहास का मिहावलोचन किया है। वे प्राचीन जीवन में भी प्रत्यक्ष अथवा पराग रूप में समाजवादी विचारधारा का मिहावलोचन करते हैं। सप्तसिंधु-काल के प्राचीन मर्यादा राजा का विकास हो रहा था फिर भी उनका सामाजिक जीवन साम्य के आधार पर था उनमें विषमता नहीं थी—‘अपनी जीविका के लिए अपने अपने गौ, भेड़, अजड़ा अथवा पशु पालते थे। पर उनकी तात्कालिकता थी—वेवलायी भवति वेवलायी—वेवला अपने आप खाने वाला केवल पाप खाने वाला होता है।’<sup>36</sup> एक जय ध्वज पर मरदाज खानपान के पदार्थों की सभी के लिए समान वितरण है।<sup>37</sup> ‘दिवादास में यद्यपि स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष मानववाद के उद्घरण नहीं हैं तथापि राहुल ने प्रायः लोग की आजीविका और साधन-पदार्थों पर समाधिकार को दृष्टि किया है। सिंह सनापति, जय धीवय, मधुर स्वप्न, विस्मृत यात्री ऐतिहासिक उपयोग में तथा ‘जान के लिए’, ‘भाग्य नहीं दुनिया को बदलो और बाईसवीं सदी राजनीतिक उपयोग में तो साम्यवादी सिद्धांतों का विवाद प्रतिपादन है। इन उपयोग में प्राचीन काल के महान् नागरिक प्रचारकों की भाँति राहुल क्यासा और उपख्यान के माध्यम में अपने सिद्धांतों और विचारों का प्रतिपादन करते हैं। वह इतिहास का हमें दर्शन दिग्दर्शन कराते हैं सामाजिक व्यवस्था की भावना जागृत करते हैं और समाज की अग्रगामी शक्तियों का बल देते हैं।<sup>38</sup> राहुल जी ने मधुर स्वप्न में समाजवादी समाज का स्वप्न देखा है—पराय धर्म का नष्ट करने वाला संसार ध्वस्त हो जाता है। लेकिन उनका संसार ध्वस्त होकर रहने वाला आज नहीं तो कल, इस रूप में नहीं तो सोच, हजार पंद्रह सौ वर्ष यह तुम्हारा माया-जाल टूट कर रहेगा। दो बाहु और एक मस्तक वाला तुम अकथ्य निनानवे मस्तक और निनानवे जोड़े हाथों वाले अंगार जल



समूह का धोखे में डालकर सत्ता नूटत नहीं रह सकते । <sup>334</sup> सामाजिक साम्य का यह स्वप्न आधुनिक युग का स्वप्न है ।

राहुल जी ने मार्क्सवादी सिद्धांता का प्रतिपादन करते हुए अपने उपन्यासों में गोपक और गोपित का सम्बन्ध आधुनिक विपमता व्यक्तिमत्ता की भावना का निषेध, जनशक्ति में विश्वास, द्वाद्वात्मक भौतिकवाद की मायता, ईश्वर और धर्म में भविष्यवासी और चार्वाक ज्ञान की मार्क्सवादी व्याख्या को प्रस्तुत किया है ।

राहुल जी ने मार्क्सवादी लक्ष्य की भाँति पूँजीवाद को समाज के लिए सबसे बड़ा भ्रमिणीय माना है । यह पूँजीवादी व्यवस्था सर्वहारा के जीवन को असहनीय दुख दुःख के निम्नतम स्तर की ओर धकेलती है । <sup>335</sup> पूँजीवादियों एवं गोपका के प्रति राहुल के मन में अपार घृणा है । इनके विपरीत गोपित श्रमिक एवं कृषकों के प्रति उनमें अपरिमित सहानुभूति है । गोपित बग अनवरत श्रम करता है परन्तु वह अपने श्रम का भोग नहीं उस तो केवल जीवित रहने के लिए श्रम का कुछ भाग प्राप्त होता है परन्तु गोपक बग उसका धन को हड़प कर विलासिता का जीवन व्यतीत करता है । गोपक और गोपित का सम्बन्ध मार्जार भूषक का सम्बन्ध है । जय वासन्ती से कहता है— मार्जार हैं यह दुनिया के ठगने वाले जिनके फंदा का कोई ठिकाना नहीं है । इनकी पथशालाएँ सब जगह सब रूप में खुली हुई हैं । गिवालय जिनालय सुगतालय, नपालय वणिक्तालय कहीं कहीं तक बिनाऊ और बंधारा बहुजन साधारण जनता मूसा है । <sup>336</sup> विस्मृत यात्री का मायावर नायक नरेन्द्रयश दुःखवाद की व्याख्या करता हुआ सामाजिक विपमता को प्रत्यक्ष दुःख मानता है । <sup>337</sup> पूँजीवादियों एवं साम्राज्यवाधियों की लोलुपता सामाजिक विपमता का कारण है । यही विपमता दुःख का कारण है — मनुष्य में सम्पत्ति की जा विपमता है वही सबसे अधिक दुःख का कारण है । सन्नाने या सामन्ता को बन्धन में इतना डूब रहने का क्या अधिकार है? यह बन्धन तथा धन उनके प्रासादा में आकाश से नहीं टपकता । परिश्रम करते करते लागों की कमर टूट जाती है तब यह बहुमूल्य धातुषा और रत्ना के जेवर प्राप्त होते हैं ।

इस सबको जो हाथ तमारा करते हैं वह दुनिया में सबसे गरीब हैं । जो अपने हाथ से एक तण भी न हटाने की शपथ खाए हुए हैं वह भीख में रहते हैं । <sup>338</sup> सम्पत्ति का समविभाजन ही समूह समाज को सुखी बना सकता है । अन्तर्गत मजदूर इसी समानता का अनुमोदन करता है— भगवान ने पृथ्वी पर अन्न पतल दिया कि मनुष्य उस अपने में समान विभाजित करे और कोई एक दूसरे से अधिक न ले जाये । किन्तु मनुष्य एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं और हर एक व्यक्ति अपने का अपने भाई से पहने रखना चाहता है । इसमें सुधार तभी हो सकता है यदि गरीबों के लिए धनियों के धन का ले लिया जाये । जिनके पास अधिक है उनसे धन लेकर निधनों को दे दिया जाय । माल असवाय या कोई सम्पत्ति जो अधिक हो उसे लेकर दूसरों में बराबर बाँट दिया जाय जिससे व्यक्ति व्यक्ति में अन्तर न हो । <sup>339</sup> मजदूर मधुर स्वप्न में अनन्त स्थिति पर सामाजिक साम्य व अन्ततः भावना के लिए धन की समानता को अनिवार्य

कहता है। बहुजन के हित के लिए कुछ लोग (पूजोपतिया) को कष्ट होता भी स्वाभाविक है, परन्तु इस विवाद दुःख के लिए उह कष्ट भी सहन कर लेना चाहिए।<sup>१४३</sup>

राहुल जी का विचार है कि आर्थिक दिपमता के लिए किसी एक व्यक्ति को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। जब तक परिस्थितियाँ को नहीं बदला जाता, शोषित लोग को सचेत नहीं किया जाता तब तक सामाजिक मामलस्य स्थापित नहीं हो सकता। इसके लिए बहुजन का उदबुद्ध करना होगा उनमें ऐक्य स्थापित करना होगा फिर शोषणों का अन्त अवश्यमावी हो जायगा और भूमि पर वस्तुन स्वयं उत्तरेगा। फिर कोई भूगर्भ न होगा न कोई धन बचक न हुआ।<sup>१४४</sup>

द्वैतात्मक भौतिकवाद की व्याख्या 'मधुर स्वप्न' में बड़े विवाद रूप में राहुल जी ने प्रस्तुत की है। द्वैतात्मक भौतिकवाद के अनुसार ईश्वर झूठी कल्पना व प्रतिरिक्त कुछ नहीं।<sup>१४५</sup> अतः यदि कोई दबता है तो वह मनुष्य ही है, मनुष्यतर कोई नहीं। मनुष्य में सिर्फ सहार की ही अभ्युत्पत्ति नहीं है वह निर्माण करने की भी अभ्युत्पत्ति क्षमता रखता है। मनुष्य के 'मस्तिष्क' और 'भूमि' के सम्बन्ध में क्या-क्या छिपा है, इसका अनुमान करना भी मुश्किल है। तुम्हें शायद यह पसन्द न लग लेकिन मुझे तो मनुष्य की शक्ति देखकर विश्वास हो गया है कि जगत् का यही वग है, बाकी अनेक वग अथवा एक वगानवग झूठी कल्पना है।<sup>१४६</sup> ईश्वर का अस्तित्व राहुल जी की स्वीकार्य नहीं। वह न तो सत्त्व का उपादान कारण है और न ही निमित्त कारण, कोई वायु केवल एक कारण से नहीं होता अपितु कारण समुदाय से होता है। ऐसी अवस्था में अकेला ईश्वर ससार का निर्माता नहीं हो सकता।<sup>१४७</sup> पञ्चितन विश्व का स्वामाविर्गुण है अतः इसके कर्त्ता के रूप में ईश्वर की आवश्यकता नहीं है।<sup>१४८</sup> और यदि कहीं भगवान् हैं तो उन्हीं ने दुनिया के कोन-कोन में अत्याचार, लूट-पाट और अशान्ति का भर रखा है।<sup>१४९</sup> ईश्वर का विचार राहुल जी की दृष्टि में मनुष्य को पराश्रित बनाने वाला है।<sup>१५०</sup> इस प्रकार भक्तवादी राहुल ईश्वर की कल्पना पूजोपतियाँ तथा राजा-महाराजा-महाराजाधिराजों के स्वायत्त के लिए मानते हैं। ईश्वर की निरक्षरता की छाड़ में व अशक्ती निरक्षरता की उचित ठहराना चाहते हैं।<sup>१५१</sup> ईश्वर की तरह राहुल जी धर्म, परलोकवाद, पुनर्जन्म आदि में भी विश्वास नहीं रखते।<sup>१५२</sup> राहुल के लिए ईश्वर एक मिथ्या धारणा मात्र है और धर्म हलाहल विष, विनाशक आह्वान धर्म।<sup>१५३</sup> आह्वान धर्म ही नहीं आध्यात्मिक जीवन भी राहुल की दृष्टि में मामला और सड़ा का दान है।<sup>१५४</sup> प्रगतिवादी लक्ष्य की तरह सामाजिक क्रियाएँ एक अथवा विश्वासों का राहुल जी न सर्वत्र विरोध किया है। डॉ० नयन राहुल के उपन्यासों में प्रतिपादित ज्ञान का द्वैतात्मक भौतिकवादी स्वीकारते हैं—'इन उपन्यासों का प्रतिपाद्य जीवन-ज्ञान स्पष्ट रूप में द्वैतात्मक भौतिकवाद है उसमें आत्मा, परलोक, अन्तर्लोक आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का तीव्र निषेध करत हुए भौतिकवाद की प्रतिष्ठा है। त्याग, दायित्व आदि का पनिय सुनि-साधना का विस्कार करत हुए स्वस्थ जीवन-उपभोग को स्वाकृति है। व्यक्तिगत जीवन के ऊपर सामूहिक जीवन की सफलता का दिग्दर्शन

३। दृढात्मक भौतिकवाद के अनुसार राहुल जी राजतन्त्र और अध्यात्मवाद दोनों को एक ही सिद्धान्त की दो अभिव्यक्तियाँ मानते हैं और स्पष्ट शब्दों में उनकी धारणा है कि अध्यात्म की उत्पत्ति राजतन्त्रा को स्थिर करने के लिए ही की गई है ।<sup>३४४</sup>

राहुल जी ने अपने उपन्यासों में अनेक स्थलों पर साम्यवादी समाज का सज्जन किया है। 'बाईसवीं सदी उनके साम्यवादी समाज का स्वप्न है। जिसमें मनुष्य को जीवनयापन की सभी सुविधाएँ सबसुलभ हाँगी किन्ती भी प्रकार की व्यक्तिगत सम्पत्ति मनुष्य के पास नहीं हाँगी, सभी कुछ राष्ट्र का होगा अपने-परायण का भेदभाव नहीं होगा।' <sup>३४५</sup> सामूहिक धर्म सामूहिक भावना, सामूहिक फल प्राप्ति, रोगों से मुक्ति जात पाँत के भेदभाव की समाप्ति नारी स्वतन्त्रता आदर्श ॥ पाँचों का त्याग, व्यक्तिगत सम्पत्ति न हानि का कारण तत्सम्यग्धी अनेक मानुषों की समाप्ति, स्वस्थ पुरुष और स्त्रियाँ गिनित नागरिक बगैरहीन समाज—यह बाईसवीं सदी का स्वप्न है ।<sup>३४६</sup> नारी और पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध प्रेम का तनुमात्र है और किसी प्रकार का बन्धन उन्हें नहीं ।<sup>३४७</sup>

'सिंह सनापति म तक्षगिला उत्तरपुरुष तथा बंशाली के जन समाज के वर्णन में राहुल का मार्कवादी स्वर है। तक्षगिला में दासों और भिखारियों का अभाव है प्रत्येक व्यक्ति जीविका के लिए धर्म करता है और उसके फल का भोक्ता भी है ।<sup>३४८</sup> तक्षगिला के लोगों का जीवन आनन्दमय है। उत्सवा का उनके जीवन में विशेष स्थान है ।<sup>३४९</sup> प्रेम विवाह अथवा उमुक्त प्रेम उनके जीवन का अधिकार है। कोई भी स्त्री स्वच्छापूर्वक किन्ती भी पुरुष ॥ प्रेम और विवाह करने के लिए स्वच्छन्द है ।<sup>३५०</sup> उपन्यास में उत्तर कुरु के रूप में देवभूमि का अंकन है और यह देवभूमि साम्यवादी भूमि के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इस भूमि में गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था है। रजुल्ला के अत्याचार नहीं हैं। समाज उमुक्त स्वच्छन्द वातावरण में जीवन जीता है उनका जीवन आनन्दमय है ।<sup>३५१</sup> स्त्री किसी एक पुरुष के साथ बंधकर नहीं रहती, उसे किसी भी पुरुष के साथ प्रेम करने का अधिकार है। सत्तान सम्बन्धी भरे सेरे का भाव नहीं, किन्ती दब का अपना पुत्र नहीं है, सब गण्ट के हैं—समाजियों के हैं ।<sup>३५२</sup> बंशाली भी गणतन्त्रीय नगरी है—यहाँ भी जीवन में धर्म की ही सर्वाधिक महत्त्व प्राप्त है। स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर खेता में काम करते हैं युद्ध में भाग लेते हैं। उनका प्रेम की स्वतन्त्रता और स्वच्छता उनके नित्य उत्सवा और बुध्द्वन उत्सवा में दृश्यनीय है ।<sup>३५३</sup> दास प्रथा का यहाँ भी अभाव है ।<sup>३५४</sup>

'जय योधय में योधय सभ का रूप सावित्र सभ से साम्य रखता है। योधय जय गणतन्त्र का नामक बनकर भूमि पर जनता का अधिकार प्रस्थापित करता है तथा जनहित के लिए सामूहिक योजनाएँ बनाता है। वह पलायनवाद एवं कपोतवाद का विरोधी है। यह अशोक में युद्ध युवतियों का एक संगठन तयार करता है जो साम्यवादी दल से भिन्न नहीं है। यह साम्यवादी दल जानुव जस पूँजीपतियों का

जीना दूसर कर देता है। जय यौधेय' म सम्मिलित होती का भी उदाहरण प्रस्तुत है।<sup>१३५</sup> साम्यवादी होती का यह रूप किसी बलबोज स साम्य रखता है।<sup>१३६</sup>

'मधुर स्वप्न' म 'दिहवगान' का चित्रण लेखक की साम्यवादी कल्पना क अनुकूल है। डा० कमलकुमारी जोहरी के शब्द म—मिह सनापति के तपशिला घोर बशाली के गणतंत्र तथा 'मधुर स्वप्न' के दिहवगान इन सभी का राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन एक सा है और यह जीवन लेखक की स्त्री और कल्पना का साम्यवादी जीवन है।<sup>१३७</sup> राहुल ने अदजगर मजदूर का उपयोग में साम्यवाद क स्वप्न-द्रष्टा के रूप म प्रस्तुत किया है। वह 'दिहवगान' नामक ग्राम की सृष्टि करता है जो उसके मधुर स्वप्न का साकार रूप है। इसमें वह अपने ममता के सारे सिद्धांत की प्रत्यक्ष करता है। 'दिहवगान' म श्रम और काम की सारी व्यवस्था साम्यवादी है। स्त्री-मुक्त के सम्बन्ध में मजदूर का बयान है—'यवन विचारक फलातीन न बतनाया कि भगान उद्देश्य को लेकर चपन वाले नर नारिया को सम्पत्ति से ही मेरा-तेरा का सम्बन्ध नहीं हटाना चाहिए, बल्कि उनके लिए स्त्री म मेरा-तेरा का भाव होना भी हानिकारक है क्योंकि स्त्री म केन्द्रित वह मेरा-तेरा का भाव फिर पुत्र पुत्रिया में केन्द्रित हो जाएगा, फिर उनकी सत्ताना म।'<sup>१३८</sup> दिहवगान' म 'बाईसवीं सदी' की तरह सम्मिलित भाजनशालाभा का वर्णन है।<sup>१३९</sup> दिहवगान म राहुल का मधुर स्वप्न साकार हुआ है—'यहाँ किसी की कोई व्यक्ति सम्पत्ति नहीं सार फलोद्यान सारे खेत, सारी जगम-स्थावर सम्पत्ति ग्राम के सारे व्यक्तियों की सम्मिलित सम्पत्ति है। जिससे जितना काम हो सकता है उतना कोई न-कोई उपयोगी कार्य करता है, और लोग शक्ति से अधिक काम करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं और जैसी जिसके लिए आवश्यकता होती है उस परिणाम म लागो को चीज दी जाती है।'<sup>१४०</sup> दिहवगान का लक्ष्य है समस्त मानवा की समता, परस्पर प्रेम और सावधिक सुख-ममद्वि।<sup>१४१</sup> अदजगर भाग-साम्य को श्रम साम्य के बिना अधूरा समझता है।<sup>१४२</sup> प्रेम उसकी दृष्टि म जीवन का स्वभाविक रस है।<sup>१४३</sup> मनुष्य का मुख समता में ही मिल सकता है।<sup>१४४</sup> इस प्रकार 'मधुर स्वप्न' म दिहवगान साम्यवादी स्वप्न क अनुकूल है। 'जीने के लिए म देवराज तथा जेनी के माध्यम से राहुल जो न अनन्त अपनी माकमवादी विचार धारा की अभिव्यक्ति दी है। माक्राजवादी निरुत्पत्ता स्व-उत्प्रेम, पूँजीवाद के भ्रष्टाचार आदि के वर्णन म उन्होंने माकमवादी विचारों की ही प्रकट किया है।<sup>१४५</sup> 'भागो नहीं दुनिया का बन्ने म समाज एवं विश्व का परिवर्तित करने के लिए राहुल जो माकमवादी जाति का समर्थन करते हैं।<sup>१४६</sup>

निष्पत्ति यह कि लेखक ने सभी उस रास उसने माकमवादी जीवन दान के प्रतिदिम्ब है। पूजा का समबिनरण, पुरुष और नारी के समाधिकार, सहकारी जीवन गणतन्त्रात्मक व्यवस्था मुक्त प्रेम आदि में मन्वीकृत विचार उनके माकमवादी जीवन-दान से प्रेरित हैं। वहीं कहा ता य विचार आरापिन म प्रनीत हान है और कथानक से मुसामजस्य स्थापित नहीं कर पाते। राहुल जो स्वयं अपने धोषभासिक

व्यापारों के प्रभावों में परिचित थे और उन्होंने अपने उपयोगों की सोहे-सपना की स्पष्ट घोषणा भी की है—मरे उपयोगों या कहानियों में प्रयोगों के तत्व का ढूँढने के लिए बहुत प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनका निम्न में मरा उद्देश्य ही है कुछ आदर्शों की ओर पाठकों को प्रेरित करना। अगर यह उद्देश्य मरे सामने न रहता, तो 'नायक' में कहानी या उपयोग लिखता ही नहीं। इसलिए जिस मरे दोस्त प्रयोगों कहते हैं उस में अपनी मजबूरी मानना है।<sup>३२२</sup> अतः हमारी धारणा है कि राहुल चित्तवृत्त हैं, उपयोगों के बाद में।

बौद्ध दर्शन के आलोचकों में उपयोगों—राहुल जी ने अपने जीवन में बौद्ध-दर्शन का अध्ययन ही नहीं किया प्रत्युत जीवन में उसका आचरण भी किया है। बौद्धधर्म में दीक्षित होकर उन्होंने इस प्रकार प्रचार एवं प्रसार के लिए अनवरत प्रयत्न किया है। राहुल जी की अनुभवात्मक उपलब्धियाँ बौद्ध जगत् के क्षेत्र में अमूल्य ज्ञान मानी जा सकती हैं। अपनी उपयोगों की वृत्तियों में राहुल जी ने मानसिक के अनन्तर बौद्ध-दर्शन को ही अभिव्यक्ति दी है। उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपयोगों 'सिंह सेनापति' जय घोष एवं विस्मय यात्री का नाम बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। 'मधुर स्वप्न' तथा 'भागो नहीं दुनिया को बालों में भी अनेक स्थानों पर उपयोगों के बाद बौद्ध धर्म का स्मरण करता है। विस्मय यात्री का नाम 'नरन्धरा' तथा बौद्ध धर्म के भिक्षु-यात्री के रूप में चित्रित है। जय घोष का जय भी आचार्य असंग और वसुधायु से बौद्ध दर्शन की शिक्षा प्राप्त करता है और सिंह सेनापति में महारमा बुद्ध स्वयं एक पात्र के रूप में विद्यमान है जिनसे उपयोगों का नाम सिंह प्रभावित होता है। इन उपयोगों में राहुल जी की बौद्ध दर्शन विषयों विचारों का अनवरत मुखरित हुई है।

बौद्ध दर्शन के चार आधार स्तम्भ हैं—(१) प्रतीत्य समुत्पाद (२) अनित्यवाद, (३) अनात्मवाद तथा (४) निर्वाण। राहुल जी के उपयोगों में इन चार सिद्धान्तों का निरूपण एवं व्याख्या मिलती है। प्रतीत्य समुत्पाद मध्यमार्ग का सिद्धांत है। भगवान् बुद्ध प्रतीत्य समुत्पाद एवं धर्म में एक ही स्वीकारते हैं।<sup>३२३</sup> श्री वाचस्पति शरीला के मत में—इस मध्यमार्ग के अनुसार एक ओर तो वस्तुओं के अस्तित्व में कोई सदेह नहीं है किन्तु उनको नित्य नहीं कहा जा सकता। उनकी उत्पत्ति दूसरी वस्तुओं से होती है। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार वस्तुओं का पूर्ण विनाश भी नहीं होता बल्कि उनका अस्तित्व बना रहता है। इसलिए वस्तुएं न तो पूर्ण नित्य हैं और न पूर्ण विनाशील ही।—एक वस्तु के बाद दूसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है इसी सनातन नियम को बुद्ध ने प्रतीत्य समुत्पाद नाम दिया है।—प्रतीत्य समुत्पाद के अनुसार काय कारण सम्बन्ध को विच्छिन्न माना जाता है।<sup>३२४</sup> राहुल जी भी प्रतीत्य समुत्पाद की इसी रूप में व्याख्या करते हैं।<sup>३२५</sup> प्रतीत्य समुत्पाद के इस सिद्धांत के विषय में विस्मय यात्री का नाम अपने अतीत के जीवन पर विचार करता हुआ

नहीं है जैसा कि न्यायिक तथा दूसरे स्थिरतावादी कहते हैं। वह संपत्ति में नहीं—  
बल्कि मण्डुक्युक्ति (मन्त्र कुदान) में होता है, प्रतीत्यसमुत्पाद—इसके बाद यह  
होना है—का नियम सवय व्यापक है।<sup>१३८१</sup>

अनित्यवाद अथवा क्षणिकवाद बौद्ध-द्वान का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत है।  
अनित्यवाद के अनुसार दुनिया की सभी वस्तुएँ अनित्य धर्मों के सघात पर टिकी  
हाने के कारण अनित्य हैं। क्षणिकवाद प्रत्येक वस्तु का अनित्य तो मानता है, साथ  
ही वह उसे क्षणिक भी कहता है—विकास की विया में कोई भी दो क्षण एक नहीं रहता। यह क्षणिकवाद का  
है। कोई भी मनुष्य किन्हीं दो क्षणों में एक जसा नहीं रहता। यह क्षणिकवाद का  
सिद्धांत है।<sup>१३८२</sup> राहुल भी इस विषय में लिखते हैं—'बुद्ध के द्वान में अनित्यता  
एक ऐसा नियम है जिसका कोई अपवाद नहीं है।'<sup>१३८३</sup> राहुल के उपासी में  
अनित्यतावाद के स्वरूप की विस्तृत व्याख्या मिलती है। आत्मा की अनित्यता के  
विषय में महात्मा बुद्ध का कथन है—'मैं किसी ऐसी आत्मा को नहीं मानता जो दो  
पल भी वही हो एक सारे जन्म या एक शरीर से दूसरे शरीर में जाने वाले नित्य  
ध्रुव आत्मा की तो बात ही क्या है।'<sup>१३८४</sup> इसी प्रसंग में वे आगे कहते हैं—'मैं किसी  
वस्तु जड़ चेतन देव ब्राह्मण को नित्य ध्रुव नहीं मानता। जा है वह पदा हुआ है  
वह मरने वाला, नष्ट होने वाला है—जीवन नदी का प्रवाह है जो हर क्षण नया  
होता है। यदि नया हान की गुजाइश न होती तो हमारे सारे सुकम हमारे सारे  
सुविचार हमारे सारे सुवचन निष्पल होते।'<sup>१३८५</sup> 'विस्मृत यात्री' का नायक इस  
अनित्यतावाद में जीवन की साधकता देखता है—पुराने को जीवन होना ही पड़ता है,  
उसे नवीन के लिए अपना स्थान खाली करना ही पड़ता है।<sup>१३८६</sup> अनित्यतावाद में  
ईश्वर के अस्तित्व को भी नकारा गया है।<sup>१३८७</sup> आचार्य नरेन्द्रदेव अनीश्वरवाद के  
विषय में लिखते हैं—समस्त कायकारणात्मक जगत प्रतीत्य समुत्पन्न है। हतु श्रीर  
प्रत्ययों की अपेक्षा बरके ही समस्त धर्मों की धमता स्थित है। इसलिए इस नय में  
ईश्वर ग्रहण यदि कल्पित कारणों का प्रतिषेध है।<sup>१३८८</sup> जय यौधेय में जय का  
अनीश्वरवाद के विषय में इसी प्रकार का कथन है—'बदलता विश्व का स्वामाधिक'  
गुण है इसलिए किसी बदल देने वाले कर्त्ता या ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं है।<sup>१३८९</sup>  
बौद्ध द्वान अनात्मवाद का अनुयायी है। अनात्मवाद का पुद्गल प्रतिषेधवाद  
भी कहते हैं। बौद्ध आत्मा या पुद्गल की वस्तुमत् नहीं मानते। आत्मा नाम का  
कोई पदार्थ स्वामान नहीं है। अनात्मवाद के अनुसार—जीवन के भीतर कोई भी  
वस्तु ऐसी नहीं है जिसका हम आत्मा कह सकें। रूप वेदना, सप्ता, सम्भार और  
विज्ञान—इन पाँचों का मयान हमारा जीवन है और ये वस्तुएँ अनित्य हैं।<sup>१३९०</sup>  
आचार्य वसुधायु 'जय यौधेय' में आत्मा की नियता का खण्डन करते हैं—आत्मा के  
निय हान की लालसा मत्स्य से डरने का भय बहुत ही सुच्छ स्वार्थोचना और  
बाधरता है।<sup>६१</sup>

निर्वाण का गान्धर्व अर्थ है अग्नि की लौ के समान धूम जाना।<sup>१३९१</sup> बौद्ध

दशन के निर्वाण के विषय में श्री गरोला निश्चित हैं—बुद्ध ज्ञान को निर्वाण कहते हैं। विच्छिन्न प्रवाह के रूप में उत्पन्न नाम रूप-पञ्चा के बन्धनमूत होकर जो एक जीवन प्रवाह का रूप धारण कर सतत गतिशील है इस प्रवाह का मध्या विच्छेद हा जाना ही निर्वाण है।<sup>३६३</sup> भरतसिंह उपाध्याय जीवन का विगुद्धि को विमुक्ति कहते हैं।<sup>३६४</sup> निर्वाण किसी पथक लोक का नाम न होकर उस अवस्था का नाम है जिसमें ज्ञान द्वारा अवधारणी अवधार दूर हो जाता है।<sup>३६५</sup> वसुधैव कुटुम्बकम् जय धीमेय में जीवन निर्वाण को दीप निर्वाण की तरह बुद्ध ज्ञान के रूप में ग्रहण करते हैं।<sup>३६६</sup> उपवास का नायक जय परलोकवाद को धोले की टट्टी कहता है।<sup>३६७</sup> इसी उपवास में एक बौद्ध उपासिका के निर्वाण सम्बन्धी विचार दृष्ट्य हैं—आत्मा नहीं बल्कि चेतना का एक प्रवाह है जो सदा नष्ट होते तथा नया पदा हात चेतना विदुषों की धारा मात्र है धारा में एकत्व का स्थान हो सकता है लेकिन निर्वाण तो उस अवस्था को कहते हैं, जबकि यह चेतना प्रवाह निरुद्ध हो जाता है।<sup>३६८</sup>

उपयुक्त दार्शनिक सिद्धांतों के अतिरिक्त बौद्ध धर्म एवं दान की अन्य मापताओं एवं उपनिषदों का भी यत्र-तत्र उल्लेख राहुल जी ने किया है। राहुल जी बौद्ध धर्म का बहुजनहिताय धर्म स्वीकारते हैं। इससे बहुजनहिताय रूप के विषय में आचार्य असंग का ध्यान है—‘उसके भीतर प्राणिमात्र के लिए प्रेम था ज्ञान प्रकाश फलाने की लगन थी और बहुजन के उपकार की भावना थी।’<sup>३६९</sup> बाधिसत्त्वों के मार्ग के विषय में वे आगे कहते हैं—मनुष्य का अपना सुख अपने निर्वाण के लिए नहीं बौधना चाहिए उसका जीवन प्राण बहुजन हिताय होना चाहिए। जब तक एक भी मानव दुःख में है बंधन में है तब तक हमें निर्वाण नहीं चाहिए।<sup>३७०</sup> विस्मय यात्री में बुद्धि भी बौद्धधर्म को बहुजनहिताय तथा बहुजन सुखाय कहता है।<sup>३७१</sup>

बुद्ध के चार आय मंगल—दुःख दुःख हतु दुःख विनाश तथा दुःखविनाश के मार्ग की व्याख्या विस्मृत यात्री में बुद्धिल करता है।<sup>३७२</sup> बौद्ध दान के ये चार आय सत्य बौद्ध दशन के मार्ग में जीवन की अनुभूति तथा निर्वाण प्राप्ति के चार सिद्धांत हैं।<sup>३७३</sup> बुद्ध के साधना विषयक विचार कि दश अतिया का त्याग होना चाहिए<sup>३७४</sup> सिंहा सेनापति में बुद्ध द्वारा इस प्रकार व्यक्त हैं—‘मैं सेनापति’ दोनों प्रकार के चरम पक्षों पर जाने की बुरा कहता हूँ। आदमी को न एकांततया शरीर का सवारन ही में लगना चाहिए न शरीर को सुखाकर उस अव्यक्त बनान में ही लग जाना चाहिए।<sup>३७५</sup> इस बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मज्झिमा-परिपदा (मध्यम मार्ग) कहा जा सकता है। न भोग विलास में ही सबका आसक्त रहना और न कठोर अनिद्रा उपवासों से आत्मा ही को बर्बाद करना<sup>३७६</sup> बुद्ध की यह मज्झिमा-परिपदा स्वयं बुद्ध द्वारा सिंहा सेनापति में स्पष्ट की गयी है।

बौद्ध धर्म जाति भेद का कट्टर विरोधी है। बुद्ध की दृष्टि में कोई अस्पृश्य नहीं है। जाति भेद कोई वस्तु नहीं है मनुष्य के गुण उसने काय में है जाति में नहीं।<sup>३७७</sup>

राहुल जी अपने उपयासा में सबत्र जातिभेद पर प्रहार करते हैं। जय योधेय का नायक जाति भेद ब्राह्मण धर्म का उपज मानता है और बौद्ध धर्म द्वारा इसका निवारण सम्भव कहता है।<sup>१५८</sup> बुद्धिल भी बौद्ध धर्म में जाति भेद का अभाव देखा जाता है।<sup>१५९</sup> इस प्रकार राहुल जी जाति भेद के बहुत आलोचक बन गये हैं। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म के विचार-स्वात्म्य<sup>१६०</sup> एवं आचरण विषयक सिद्धान्त<sup>१६१</sup> का भी उनके उपयासा में यत्र-तत्र उल्लेख है। निष्पत्ति यह कि राहुल जी ने मन में बौद्ध धर्म का प्रति असीम आस्था थी। ये इस बहुजन हिताय धर्म मानते थे और बुद्ध तथा माकम में उन्हें साम्य दृष्टिगावर होता था। बौद्ध धर्म के दार्शनिक एवं व्यावहारिक सिद्धान्तों का अभि व्यक्ति उनके एनिहासिक उपयासा में विशेष रूप से हुई है।

बौद्ध धर्म एवं मार्क्सवादी धर्म का समन्वय—मृत आनन्द कीमत्पावन बौद्ध-धर्म के प्रतीत्य-समुत्पाद तथा वैज्ञानिक भौतिकवाद में प्रायः साम्य स्वीकारते हैं। यद्यपि बौद्ध धर्म की मृत के साथ मन की स्थिति भी ग्राह्य है परन्तु सांख्यिक अनित्यता के कारण वैज्ञानिक भौतिकवाद एवं बौद्ध धर्म में अपने-आपके रूप में विशेष अंतर नहीं। वे लिखते हैं—‘‘दोना दाना को गति का निरन्तर अस्तित्व न केवल माय ही है, किन्तु दाना को उसका आग्रह है। वैज्ञानिक भौतिकवाद परिमाणों तक परिवर्तन हात हात गुणात्मक परिवर्तन की बात करता है तो बौद्ध धर्म प्रतीत्य समुत्पाद की। दोना विचार यदि एकदम एक नहीं है तो दोना परस्पर अविरोधी है।<sup>१६२</sup> राहुल जी बौद्ध-दार्शनिक एवं मार्क्सवादी विचारक हैं। उनकी कृतियां में बौद्ध-धर्म एवं द्वैतात्मक भौतिकवादी विचारधारा का समन्वय प्राप्त होता है। वे बुद्ध और माकम की विचारधारा में पर्याप्त साम्य देखते हैं और दोना विचारकों की विचारधारा के समन्वय-सामंजस्य को अपनी कृतियां में प्रस्तुत करते हैं। उनकी दृष्टि में बौद्ध धर्म मार्क्सवादी धर्म का समन्वय के लिए प्रथम सोपान है।<sup>१६३</sup> इस प्रकार बौद्ध धर्म और द्वैतात्मक भौतिकवाद में तारतम्य एवं सामंजस्य दार्शनिक उपयासकार राहुल जी की मौलिकता कही जा सकती है। राहुल ने देश विदेश का भ्रमटन किया, विविध आस्तिक एवं नास्तिक दाना का चिन्तन और भवन किया तथा उनके समन्वय-सामंजस्य द्वारा भौतिक विचारों की अदभावनाएं अपनी सजनात्मक कृतियों का प्रदान की। राहुल जी की इस मौलिकता का उदा० जगदीश गुप्त ‘‘राहुलवाद’’ की सभा दत्त है।<sup>१६४</sup> श्री महेंद्र चतुर्वेदी लिखते हैं—‘‘नखक की दृष्टि में प्राचीन ब्राह्मण-संस्कृति तथा पूँजीवादी संस्कृति परिस्थिति में व अनुसार प्रायः परस्पर समकक्ष हैं—दोना ने धर्म का पापण किया है मानवीय समता का निषेध किया है। उसने अनुसार माकम अग्रिम बड़ है—दाना की चिन्ताधारा की तात्त्विक समानता को लेखक ने रेखांकित किया है।<sup>१६५</sup> राहुल जी का कथानायक दाना विचारधारा का समन्वय के बाहुल्य है। विष्णुन मारी में बौद्ध धर्मानुयायी नरेन्द्र यों का जीवन द्वारा मार्क्सवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। बौद्ध धर्म नरेन्द्रयों में जन भवा तथा समाज-नित्याण की अदम्य भावना है उसकी बहुजन हिताय



की चेतना समाजवादी चेतना के रूप में परिणत हो जाती है। सिंह सेनापति के अन्त में सिंह और तथागत के परम्पर विचार विनिमय द्वारा बौद्धमत तथा मार्क्सवाद में सामंजस्य स्थापित किया गया है। डा० सुपमा घवन लिखती हैं— उनकी दृष्टि में मार्क्स आधुनिक परिस्थिति में बुद्ध का रूप है। तथागत की विचार पद्धति और ब्रह्मात्मक भौतिकवाद में तात्त्विक साम्य है। बुद्ध और मार्क्स मानव की बुद्धि तथा अनुभूति की कसौटी पर जीवन के स्वरूप की निर्णीत करने के पक्ष में हैं, दोनों परम्परा के अनुसरण में विश्वास नहीं रखते दोनों पर नास्तिकता का आरोप लगाया जाता है, दोनों की जीवन तथा समाज की अनित्यता एवं परिवर्तनशीलता में आस्था है। दोनों सामाजिक वषम्य और मानवीय भेदभाव के विरोधी हैं।<sup>१११</sup> 'जय मीथेय' का नायक जय भी तथागत के विचारों एवं सिद्धांतों को मार्क्सवादी विचारधारा में ढाल कर उन्हें नवीन रूप प्रदान करने का प्रयत्न करता है। 'मधुर स्वप्न में मज्जा की धम और साम्यवादी जीवन दशन में राहुल जी ने साम्य दिखलाया है। राहुल जी के इस मौलिक समन्वयवादी चिंतन को निम्नांकित रूप में देखा जा सकता है।

**परलोकवाद व पुनर्जन्मवाद की भौतिक व्याख्या—**राहुल जी ने परलोकवाद एवं पुनर्जन्मवाद की भौतिक व्याख्या की है। हिंदुओं के आत्मवादी दशन को धोखे की टट्टी कहकर राहुल जी उसकी आलोचना करते हैं और बौद्ध दशन के पुनर्जन्मवाद एवं क्षणिकत्व में अपनी आस्था प्रदर्शित करते हैं। परलोकवाद के लिए जीवन के एक क्षण का 'यय व' जीवन का अप-यय समझते हैं। परलोकवाद उन्हें एक रूप में मान्य है जिसकी व्याख्या वे जय के 'गङ्गा' में करते हैं— पुत्र पिता का परलोक है पुत्र पिता का पुनर्जन्म है। पिता मरने से पहले अपने शरीर अपने मानसिक और गारिष्व सस्कार का एक अंश माता के शरीर में स्थापित करता है। माता उसमें अपना अंश मिलानी है और नौ मास गर्भ में रख उस शिशु के रूप में अगले लोक, अगली पीढ़ी के लिए देती है। इसे मैं परलोक मानता हूँ।<sup>११२</sup> परलोकवाद एवं पुनर्जन्मवाद की प्रस्तुत व्याख्या आधुनिक युग में ग्राह्य है। इस विषय में डा० नगेन्द्र लिखते हैं— इनमें एक विशेष सगति है। यह अस्वीकृत नहीं किया जा सकता, यह व्याख्यान भी अपने ढंग से सटीक और मनोशाही है और आज के वैज्ञानिक युग में अधिक ग्राह्य भी हो सकता है।<sup>११३</sup> जय परलोकवाद एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वाभाविकता एवं वायरता का सिद्धांत समझता है और उसे पूज्यवाद की समर्थिका ब्राह्मण-संस्कृति का अस्त्र समझता है—'यदि पुनर्जन्म का विश्वास हाथ पर और मन को न बांध होता तो हजार में नौ सौ नित्यान्वे जनता अपने सामने परोसी थाली एक आदमी के सामने रखकर मूखों न मरती और न मूखे और नगे रहने वाला की बर्माइस, उनके खून और हड्डियाँ सब बड़े-बड़े प्रासाद तयार होते।'<sup>११४</sup> सिंह सेनापति में आचार्य बहुनाश्व पुनर्जन्मवाद को रजुसा की बल्पना मानते हैं जिससे वे अपनी प्रजा का अधकार में रक्ख सकते हैं।<sup>११५</sup> इस प्रकार राहुल जी की परलोकवाद एवं पुनर्जन्मवाद विषयक व्याख्या भौतिकवादी है। परलोकवाद की यह व्याख्या इस लोक से आँखें

भूँदकर किसी कल्पित सोच को बहतर बना की प्रेरणा नहीं देती।<sup>११</sup> अतः राहुल जी परलातवा<sup>१२</sup> की व्याख्या साच की धरती पर करत हैं। व परलोचन<sup>१३</sup> व स्थान पर लाकवाद की स्थापना करत हैं।

(त) दुखवाद की भावसंवादा व्याख्या—राहुल जी न बौद्ध ज्ञान के दुखवाद की व्याख्या मानसवादी दृष्टि से की है। डा० मुपमा धवन व गंगा म—“राहुल ने तपागत के दुखवा<sup>१४</sup> तथा भावम के धगवा<sup>१५</sup> म सामजस्य स्थापित किया है। बुद्ध जहाँ दुख व कारण का विनयण और उनर निवारण का उपचार धार्मिक दृष्टि से करत हैं वहाँ भावस का विवचन तथा उपानान धार्मिक तथा वमवाद पर प्राधारित है।<sup>१६</sup> ‘विस्मृत याना म नरेद्रय<sup>१७</sup> बौद्ध सिद्धांता की मानमवाणी विवचना प्रस्तुत करता है। दुख-दुख व विषय म वह कहता है—मनुष्या म सम्पत्ति की जा विषमता है, वह सबस धार्मिक दुख का कारण है।<sup>१८</sup> दुख निवारण व उपाय के विषय म उनका बयन है—‘पनी घरीव का भेद मित्रा<sup>१९</sup> ही सत्तार म मनुष्य-जाति को दुख-सागर मे उगारा जा सकता है।<sup>२०</sup> इस प्रकार नरेद्रय<sup>२१</sup> बौद्ध विचारों को भावमवादी धारणावली म व्यक्त करता हुआ इस मत पर बल देता है कि ‘भभाव के कारण होने वाले दुख की जड़ का मैं भवेना नहीं बाट सकता और समाज म धार्मिक विषमता ही दुख का मूल कारण है।<sup>२२</sup> वह अधिष्ठावादी हाते हुए भी गमनाटा एव प्राप्ततायिया के प्रति सहानुभूति निस्सामा उचित नहीं समझना। वह कहना कि निघन व्यक्ति अपने धूखजमा के कारण दुखी है उसे भाय नहीं। इस वह विषमता को स्थिर रखने का उपाय मानता है। वह अनुभव करता है कि दोषर ग्रन्थ हैं, गोपित बहुमव्यक्त हैं। तपागत न बहुजन हिताय का उपेग किया या इस उद्देश्य की पूर्ति बहुजन (गोपित) को उदबुद्ध करने से ही हो सकता है।<sup>२३</sup> इस प्रकार नरेद्रय<sup>२४</sup> व द्वारा राहुल न चार भाय सत्ता की भावमवादी व्याख्या प्रस्तुत की है। इस उपवास म बुद्धिल द्वारा भी दुखवाद की व्याख्या इसी रूप म की गई है।<sup>२५</sup> ‘जय योधेय का भाय<sup>२६</sup> जय भी दुखवाद की धार्मिक दृष्टि से व्याख्या करता है।<sup>२७</sup> जय की कुनाय बुद्धि एव सर्वज्ञा<sup>२८</sup> हृदय सामाजिक विसमसिया के पूरणरूपण अभिग ह और उसका प्रबुद्ध-विवेक दुख के मूल कारण का समझन की क्षमता रखता है। इस प्रकार दुख वाद एव वगवा<sup>२९</sup> का सामजस्य राहुल की नई उदभावना है।

(ग) भोगवाद का सिद्धान्त—गौ० गापीनाथ तिवारी के अनुसार राहुल जी काभो पिदा और भोज करो के भोगवाणी सिद्धांत के समर्थक हैं।<sup>३०</sup> व चाहत हैं कि मनुष्य समाज के सभी उपभोगा का भास्वादन करे क्योंकि सत्तार व सभी पदाय उसके उपभोग के लिए ही निमित्त हुए हैं। राहुल जी गात्र-भदार्थों म पक्वान म अधिव भास म ण का समर्थक करत हैं। सिंह सेनागति म सत्थागार का सामूहिक भोजन वरमतरी के मुने भास और गर्मागम गूजर भादव म होता है।<sup>३१</sup> जय योधेय का भाय<sup>३२</sup> अपनी रचि के विषय म कहता है—लकड़ी की भाग पर पूरे सुधर के भास को हम बहुत पसंद करत थ।<sup>३३</sup> ‘राजस्थानी रनिवास’ म राजपूत ठापुरा एव

ठाकुरानियों का प्रिय खाद्य भी मांस है।<sup>४३२</sup> इस प्रकार राहुल जी के उपायासा में सभी पात्रों का प्रिय खाद्य मांस है।

पय-नदार्थों में राहुल जी ने दूध व साथ मदिरा का अधिक उल्लेख किया है। अग्रोन्का में कोई घर ऐसा नहीं जहाँ मदिरा-पान न होता हो। लोग द्राक्षा और कापिशायी सुरा का पान करते हैं। नृत्य उत्सवों पर यौधेया में सुरापान एक आवश्यक अंग था।<sup>४३३</sup> सिंह सेनापति में आचार्य बहुलाश्व मदिरा प्रेमी हैं। रोहिणी भया सिंह का स्वागत कापिशायिनी सुरा से करती है।<sup>४३४</sup> अतिथि-सत्कार मन्त्रि के बिना अधरा है। विभिन्न समारोहों पर तो मदिरा पान में स्त्री पुरुषों में प्रायः हाड़ लग जाती है।<sup>४३५</sup> 'राजस्थानी' निवास में अधिकांश राजपूत ठाकुर एवं सामंत मदिरा एवं मदिरेक्षणों के उपासक हैं। राहुल जी लिखते हैं—'राजस्थान के राजपूतों में—विशेषकर पसे वाला में—शराब पानी से अधिक महत्त्व नहीं रखती और स्त्री पुरुष दोनों बेरोक टोक उसे पीते हैं।'<sup>४३६</sup>

राहुल जी ने यौन सम्बन्धों का भी स्वच्छन्द चित्रण किया है। उनकी दृष्टि में स्त्री पुरुष स्वामाधिक यौन आकर्षणों से मुक्त नहीं हो सकता।<sup>४३७</sup> वे प्रेम को जीवन का स्वामाधिक रस मानते हैं।<sup>४३८</sup> मुक्त प्रेम के प्रसंगों का वर्णन वे निस्संकोच करते हैं। सिंह सेनापति में आचार्य बहुलाश्व के शिष्य शिष्याएँ दिगम्बर तरते हैं।<sup>४३९</sup> जय यौधेय में कुटिया के भीतर लड़कें और लड़कियाँ नग्न सोती हैं। 'मधुर स्वप्न' में नग्नपत्नी अनाहिता के मन्दिर की परिचारिकाएँ नग्न रहती हैं।<sup>४४०</sup> राहुल जी के पात्र चुम्बन और आर्तिगन का निस्संकोच आदान प्रदान करते हैं। सिंह सेनापति में चुम्बन महोत्सव मनाया जाना है।<sup>४४१</sup> मधुर स्वप्न में राहुल जी ने भोग साम्य अथवा सम्मिलित पत्नी प्रथा की ओर संकेत किया है। अद्वजगर मजदूर का कथन है—'महान उद्देश्य का लेकर चलने वाले नर नारियों की सम्पत्ति से ही मेरा तरा का सम्बन्ध नहीं हटाना होगा बल्कि उनके लिए स्त्री में मेरा तरा का भाव होना भी हानिकारक है क्योंकि स्त्री में केन्द्रित वह मेरा-तेरा का भाव फिर पुनः पुत्रियों में केन्द्रित हो जाएगा, फिर उनकी सत्ताना में।' <sup>४४२</sup> सम्मिलित-पत्नी के इस सिद्धांत की व्याख्या राहुल जी की अपनी कल्पना है। इस मत का समर्थन लेनिन आदि मार्क्सवादियों ने भी नहीं किया। इस विचारधारा में राहुल जी का निजी स्वर अनुगुंजित हो रहा है। उपायसत्कार का विद्रोही व्यक्तित्व मार्क्सवाद की सीमाओं को लाघ गया है। मधुर स्वप्न' के शब्द द्रष्टव्य हैं—'इसी तरह इस दुनिया से दुखों को दूर करने के लिए अनुपम भोजन में समता, भाषा को समता, कामों की समता स्थापित करने का एक ही ण है—मैं और मेरा का स्थान छोड़कर विश्व का एक कुटुम्ब बना उसमें समता की स्थापना ही सारे रागों की दवा है।'<sup>४४३</sup>

राहुल जी के इस भागवानी सिद्धांत की समालोचना में बहुत आलोचना की है। डा० नम्रूद्र उनके पात्रों के परस्पर चुम्बनों के आदान प्रदान की आपत्तिजनक कल्पना के लिए गोपानाथ तिवारी का आरोप है कि चुम्बन आर्तिगन द्वारा पाठकों की

सस्ती पागबिरता उमास्वर्ग नेखर पाठवा की सम्प्रा बजाने का धुन म हैं।<sup>१११</sup> राहुल जी द्वारा निर्देशित सम्मिलित-पत्नी का सिद्धांत भी ठीक नहीं जचता। 'मानवता के विकास और सम्पत्ता के इतिहास का मुख्य पथवर्धन करने पर नात होता है कि जिनामा, भान और एकनिष्ठा मनुष्य के उच्चतर स्वभाव के चीनक हैं। सम्मिलित पत्नी का सिद्धान्त इन तीनों के विरुद्ध है अतएव वे भानवीय चेतना के विकास का बरम भ्राता नहीं हो सकता।'<sup>११२</sup> इन आक्षेपों का उत्तर स्वयं राहुल जी ने इन शब्दों में दिया है—'मैं धाज की सकीण हिन्दू प्रवृत्ति की परवाह नहीं करता, मैं परवाह करता हूँ साथ की।'<sup>११३</sup>

राहुल जी ने मानव जीवन को स्वाभाविक आकस्मिकताओं की सत्य माना है। वे भान-भान तथा धीन-भाम्वा के विषय में अध्यात्मवादी भववा परम्परावादी सहीण धारणाओं से मुक्त हैं। राहुल जी का यह भौतिकवादी दृष्टिकोण पारंपार्य देना के खान-भान एक भोग सम्बन्धी दृष्टिकोण में प्रेरित तथा भारतीय परम्परा एवं इतिहास में अनुमादित है। साथ ही यह भौतिकवादी चार्वाक-ज्ञान से भिन्न है क्योंकि उप-यासवार की दृष्टि में भावाक दान या भोगवादी दृष्टिकोण व्यष्टिवादी है और सत्य समष्टिवादी दृष्टिकोण से भोगवाद की व्याख्या करता है—'भाग सबके सम्मिलित प्रयत्न का फल है इसलिए भवेत् भोगने का हम कोई हक नहीं है। दुनिया की सारे भोगों में समझ समी करना सम्भव है जबकि सभी सम्मिलित प्रयत्न करें।'<sup>११४</sup> इस प्रकार राहुल जी का भोगवादी दृष्टिकोण चार्वाक दान से भिन्न एवं भौतिक है एवं मार्क्सवाद से प्रभावित है। वे उस मार्क्सवादी का समर्थन करते हैं जो मानव हृदय के अनुकूल है एवं मानव-बुद्धि द्वारा अनुमादित है तथा जिस भोगवाद में सारे मानव सम्मिलित हैं।<sup>११५</sup>

उपयुक्त विवेचन के आधार पर यह सहज कहा जा सकता है कि राहुल जी ने बौद्ध-ज्ञान एवं मार्क्सवाद प्रतिपादित द्वैतात्मक भौतिकवादी दान में समन्वय एवं भारतीय निर्देशित करने एक नातिकारी काम किया है। बौद्ध दर्शन की मार्क्सवादी व्याख्याओं द्वारा उठाने पाठन का आधुनिक दिव्य दृष्टि प्रदान की है। मार्क्सवादी विद्वत् की व्याख्या के साथ विश्व को बनाना चाहता है बौद्ध दर्शन ने भी सत्ता के दुष्प्रकारों का खाली और उसके नाश के उपाय भी बताये हैं। ईश्वर तथा आत्मा की अस्वीकृति एवं सृष्टि की परिवर्तनशीलता के विषय में प्रतीत्य समुत्पत्ति एवं बर्तानिक भौतिकवादी में विरोध अन्तर नहीं। मार्क्सवाद व्यक्तिगत सम्पत्ति के नाश और व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने के सिद्धान्त के समर्थन के विनाश की मानवी कल्याण के लिए आनन्दक मानता है बौद्ध-दर्शन में इस दृष्टि से भी मार्क्सवाद के निकट होने की विशेषता है। यदि एक दान लाभ के विरुद्ध लगाई ठानता है तो दूसरा 'बोम के विरुद्ध।'<sup>११६</sup> इस प्रकार बौद्ध-दान और मार्क्सवादी द्वैतात्मक भौतिकवाद में सिद्धान्त और व्यवहार—दाना दाना में राहुल जी ने जिम साम्य का रेखांकन किया है वह निरसदह द्विती में उनकी भौतिक धूम-धूम है। उनके उप-यामों में दोनों ही दर्शन

बहुजनहिताय के साधन हैं। मानवता का हित ही उनका साध्य है। वही-वही राहुल जी ने दोनों दंगना में साम्य दर्शाते हुए अपने मौलिक विचारा की भी अभिव्यक्ति की है यथा परलोकवाद की लौकिक व्याख्या, भोग साम्य में सम्पत्ति के साथ साथ नारी को भी सामूहिक सम्पत्ति मानना आदि। इस मौलिकता को 'राहुलवाद' की सना दी जा सकती है।

**राहुल जी की प्रगतिशीलता—** औपन्यासिक कृतियाँ में प्रतिपादित राहुल जी के जीवन दर्शन एवं विचारधारा के अनन्तर उनके विचारा की प्रगतिशीलता दर्शनीय है। राहुल जी प्रगतिशील विचारक एवं प्रगतिवादी विचारधारा के प्रौढ़ विद्वान हैं। वे अपनी कृतियाँ द्वारा सामन्ती शोषणचक्र हटाने जन जागरण जन स्वातन्त्र्य नारी स्वातन्त्र्य एवं आर्थिक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक रुढ़ियाँ से मुक्त होने और प्रजातांत्रिक मानवतावादी की प्रतिष्ठा करने <sup>४१</sup> की प्रेरणा देते हैं। प्रगतिशील साहित्यकार के विषय में राहुल अपने एक निबन्ध **■** लिखते हैं— प्रगतिशीलता जीवन के हर एक भ्रम भान और कर्म दोनों से सम्बन्ध रखती है और जरूरी है कि उनके प्रति प्रगतिशील साहित्यिक अपने दृष्टिकोण का साफ साफ समझे। प्रगतिशीलता कभी अपने को अपनी पूर्वगामी सस्कृति धारा की विरासत से महकूम नहीं कर सकती— प्रगतिशील लेखक के बारे में कभी-कभी आरोप सुना जाता है कि वह नग्नता अवलीलता और यौन-दुराचार को अपनी लेखनी का विषय बनाने हैं। दरअसल यदि कोई प्रगतिशील लेखक ऐसा करता है तो वह भारी गरजिम्मेवारी निखवाता है और प्रगतिशील बड़े जाने का अधिकारी नहीं हो सकता। <sup>४२</sup> इस प्रकार राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार के लिए आवश्यक मानते हैं कि वह परम्परागत सस्कृति और साहित्य की अवहलना न करे और साहित्य में अवलीलता को स्थान न दे। परन्तु स्वयं राहुल जी ने अनेक स्थलों पर पूर्वगामी भारतीय सस्कृति के उत्तराधिकार को झुठलाया है और प्राचीन साहित्यकारों यथा कालिदास आदि को चाटुकार बतलाया है। <sup>४३</sup> कालिदास के प्रति उनका यह मत उनकी अप्रगतिशीलता का ही प्रतीक माना जायगा। इसी प्रकार 'जीने के लिए' उपन्यास में मोहनलाल प्राचीन सस्कृति को विशेष महत्व नहीं देता — देश की सस्कृति सभ्यता इतिहास की मौके के मौके जिस प्रकार दुहाई दी जाती है, वह भी हमारे काय में बाधा डालन वाली है। <sup>४४</sup>

राहुल जी के उपन्यासों में फायड के यौनवादी से प्रभावित लेखक का चित्रण भी अतिरेक से हुआ है। 'सिंह सेनापति' 'जय घोषेय तथा मधुर स्वप्न' में अनेक स्थलों पर राहुल जी ने नग्न, अवलीन एवं अशोभन चित्र प्रस्तुत कर पाठक की वासना को उभारा है। साहित्य में नारी की स्वतन्त्रता का स्थान पर उसके नग्न चित्रों को प्रस्तुत करना प्रगतिशीलता के अनुकूल नहीं है। इन त्रुटियों को होने पर भी राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार हैं। उनके उपन्यासों में प्रगतिशील तत्वों का सामंजस्य एवं सगति प्राप्त होती है।

राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार का जनजाति में अडिग विद्वान् मानत है।<sup>१८</sup> और उन्होंने अपने उपयोग में भी जनजाति का आह्वान एवं उपयोग किया है। 'जीने के लिए' में मोहनलाल गस्त्र प्रयोग की उपयोगिता जनहित की दृष्टि से ही स्वीकार करता है। शस्त्र प्रयोग एवं विज्ञान हैं। उसकी एक ग्रास व्यवस्था है। उसके प्रयोग में देश की जनता की सद्गुणभूति और सहायता भी आवश्यक है और यह सभी हो सकता है जबकि जनता समझे कि इस सपनता से उसे कुछ मिलना, उससे जीवन की कठुना कुछ कम होगी उससे सामने का निविड भयंकर कुछ क्षीण होगा।<sup>१९</sup> जनजाति का आह्वान एवं उगका उपयोग राहुल के सभी उपयोग में है। 'सिंह सनापति', 'जय योधेय' तथा 'बाईसवीं सदी में जनजाति का महत्वाकन राहुल की प्रगतिशीलता का प्रतीक है।

राहुल जी जनतन्त्रवाद के समर्थक हैं। उनके उपयोग में सामन्तवाद, पूँजीवाद एवं साम्राज्यवाद का दोष का उत्पन्न है, जिससे वे पाठकों की जनतन्त्रवाद एवं मार्क्सवाद में आस्था बढाना चाहते हैं। 'सिंह सनापति' 'जय योधेय' जीने के लिए 'मधुर स्वप्न' आदि में राहुल की प्रगतिशीलता का यह रूप दर्शाते हैं।<sup>२०</sup>

राहुल जी प्राचीन भारतीय परम्परा से वर्तमान काल में दिशा निर्देश भी करते हैं। राहुल जी ब्राह्मण सत्कृति के विरोधी हैं, परन्तु प्राचीन भारत की स्वयं परम्परा का भी नहीं। लिच्छवियाँ और योधेय की गणराज्य प्रणाली की उपयोगिता के वर्णन द्वारा राहुल जी उनके आदर्शों की वर्तमान प्रजातन्त्र में अपनाते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'जय योधेय' एवं 'सिंह सनापति' में गणतान्त्रिक प्रणाली के गुणगान का सिद्धान्तकर्म किया है। वे साम्राज्यवाद की अपेक्षा गणतन्त्र शासन प्रणाली के प्रबल समर्थक हैं।<sup>२१</sup>

राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार की तरह मनुष्य और उसकी सम्पन्न-संस्कृति के विकासशील रूप का ग्रहण करने के पक्ष में हैं। वे हासवासियाँ की तरह वर्तमान प्रजावस्था से लौटकर अन्वेषण एवं असहायता के प्रतीक भतीत की ओर उन्मुख नहीं होना चाहते।<sup>२२</sup> वे भतीत और वर्तमान के अविच्छिन्न सम्बन्ध का मानते हुए भी वर्तमान में आस्था रखते हैं।<sup>२३</sup> आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति की वह दश की उत्पत्ति का सबसे बड़ा वन मानते हैं।<sup>२४</sup> हम प्रकार राहुल जी की वर्तमान वैज्ञानिक युग में आस्था उनकी प्रगतिशीलता की परिचायिका है।

राहुल जी वर्तमान भारतीय समाज के अप्रगतिशील तन्त्रा—वर्ग विषमता वर्ण व्यवस्था, श्रम श्रमियाँ का अनुसरण आदि—का भी विरोध करते हैं। सामाजिक विषमता उनकी दृष्टि में समाज के लिए अभिशाप है।<sup>२५</sup> जाति भेद राष्ट्रीय एकता में बाधक है।<sup>२६</sup> अतः उनका एक प्रमुख पात्र माहनन्त्राल देश की स्वतन्त्रता के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर निर्देश करता है—'वह दोष कम यही है कि देश के भीतर धर्म और जाति भेद न जितनी दीवारें खड़ी की हैं, उन्हें गिरा देना।'<sup>२७</sup> एक श्रम

स्थल पर वह कहता है—'भारत की राष्ट्रीय एनता जात-पात और मजहब की चिंता पर होगी।'<sup>११</sup>

राहुल अपने उप-यासा में नारी-स्वातन्त्र्य का प्रबल समर्थक है और साथ ही नारी को उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते हैं। साम्राज्यवाद और सामन्तवादी सम्प्रदाय में नारी की स्वतन्त्रता का अपहरण हुआ और राहुल जी इसलिए साम्राज्यवाद के प्रति घृणा की भावना प्रकट करते हैं। अतः पुरा का वह कामनास्त्र की खुली पाटाला खोलता है<sup>१२</sup> जिसमें नारियाँ का जीवन अमानुषिक एवं नारकीय बना हुआ है।<sup>१३</sup> राजस्थानी रनिवास में घुट घुट कर मरती सामन्ती समाज की नारी के दयनीय चित्र राहुल जी ने प्रस्तुत किया है—सभी अतः पुरा में एक ही तरह की हवा एक ही तरह की ग्राह और कराह है। सभी अतः पुरिकाग्रा का एक ही सा दम घुटना, अमानुषिक, अप्राकृतिक अत्याचार और दुःखवहारा का शिकार होना देखा जाता है। इसलिए तो सदियों तक वह चुपचाप सार अत्याचारों को बर्दाश्त करती आ रही है।<sup>१४</sup> इससे विपरीत वे गणराज्य में नारी जीवन की स्वतन्त्रता एवं स्वच्छ-दत्ता का दलते हैं। यौधयमण में नर और नारी का भेद नहीं। पुरुष की तरह वह स्वच्छन्द है उसका अपना व्यक्तित्व एवं अस्तित्व है। सिंह सनापति में कपिल नारी को उन्मुक्त दबी कहता है।<sup>१५</sup> नारी स्वातन्त्र्य का साथ नारी का उत्तरदायित्व की ओर भी राहुल संकेत करते हैं। जीने के लिए में जनी तथा सिंह सनापति की रोहिणी कृत-यपरायणा स्त्रियाँ हैं, केवल स्वच्छन्द रमणियाँ नहीं। जेनी देवराज से अपने प्रेम का विषय में कहती है—हम वह हलाहल प्रेम नहीं चाहते। हम उस प्रेम को चाहते हैं जो दुराराह घाटियाँ पर चढ़ने वाले दा साधियों को हिम्मत न हारने दे बकाबट से चूर चूर हुए उनके शरीर में स्फूर्ति पैदा करे। भारी से भारी जतरे और प्रतिम उत्सव के लिए उनके दिलों को मजबूत करे। यदि तुम्हें श्रमजीवियों का स्वतन्त्र युद्ध में जाना होगा तो जनी रायफल हाथ में लिए कंधे से कंधा मिलाकर तुम्हारे साथ जायगी।<sup>१६</sup> उपन्यास में वर्णित जेनी का देवराज से स्वच्छन्द प्रेम केवल वासना नहीं वह कृत्य और दायित्व का भी प्रतीक है।

राहुल के उप-यासा में अपने अधिकारों के लिए सधप एवं आदर्शों के लिए बलिदान का चित्रण है। जीने के लिए में देवराज और जेनी इसी सधप एवं बलिदान के प्रतीक हैं। जेनी अपने अंतिम पत्र में देवराज को लिखती है—मृत्यु! कितना भयंकर और अवाञ्छनीय शब्द है। लेकिन मेरे लिए उस में वह भयंकरता नहीं। जीने के लिए हम मृत्यु का आतिथ्य करते हैं। मृत्यु का लिए तयार हुए बिना जीना असम्भव है। जा जाना मृत्यु के मोल में विकता हो वह जीना किस काम का? <sup>१७</sup> इसी जीने के लिए अथवा आत्माओं एवं कृत्या का पालन के लिए माहनलाल, देवराज तथा जेनी सधप एवं बलिदान का गाथा अर्पण करते हैं। मधुर स्वप्न में साम्य स्थापना के लिए मजदूरियों को सधप करना पड़ता है। तब यौधयमण गणराज्य एवं साम्राज्यवादी शासन-मण्डति का सधप है और इस सधप का नायक जय अपने प्राणा की

प्राप्ति देता है। इस प्रकार राहुल जी ने उप-यास के पात्र वस्तुओं के लिए संपन शील हैं।

राहुल जी के उप-यास में प्रतिपादित विचारधारा—पूँजीवाद के स्थान पर साम्यवाद तथा साम्राज्यवाद के स्थान पर गणतन्त्रवाद की स्थापना, धार्मिक अंधविश्वासों एवं परम्पराओं का विरोध, वर्तमान में अस्थायी वर्गान्तिक प्रगति में विश्वास, नारी की स्वच्छन्दता एवं वस्तुपरायणता, सामाजिक विषमता पर प्रहार एवं स्वल्प प्राचीन भारतीय परम्पराओं का समर्थन—राहुल जी को प्रगतिशील उप-यासकार बना देती है। मार्क्सवादी उप-यासकार सामाजिक प्रगति का प्रेरणा देना और उसका दिग्दर्शन देना अपना धर्म स्वीकारता है। हाब्स बास्ट न जन विप्लव में सहयोग देना उप-यासकार का अनिवार्य कर्तव्य माना है।<sup>१९३</sup> राहुल भी इस प्रगति-शील बलाकार हैं।

### भाषा-शैली

राहुल जी की भाषा शरीर मूलक वर्णनात्मक है। 'जय यौधेय' तथा 'सिंह सनापति' आत्मकथात्मक शरीर में रचित उप-यास हैं, जिनमें सबादात्मक शैली का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है पर अधिकतर उन्होंने वर्णनात्मक शैली का ही प्रयोग किया है। डॉ० गणगा के शब्दों में—'राहुल जी की विचार-शैली मूल रूप में सत्ता विवरणात्मक ही रही है, यद्यपि उसके अंतर्गत उन्होंने फ्रीड बक, दस्य विधान आदि पर भी प्रयोग किए हैं।'<sup>१९४</sup> राहुल की वर्णनात्मक शरीर प्रवृत्ति-वर्णन भाव-वर्णन, वस्तु-वर्णन आदि में दृग्गोचर है। जीने के लिए' उप-यास की वर्णनात्मक शैली सरल, रोचक, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक है। सामान्यतः वर्णनात्मक शैली में प्रभाव और चमत्कार का अभाव होता है परन्तु इस उप-यास की शैली में यह युग्मता नहीं। सजीव वयोप-वयना, देश एवं पात्रानुकूल भाषा, मार्मिक प्रशंसा एवं रोचक वर्णनो से 'जीने के लिए' की शैली सुन्दर बन पड़ी है। वर्णनात्मक शैली के बीच आत्मकारिक एवं हास्य-व्यांग्यात्मक शैली के भी सुन्दर उदाहरण इस उप-यास में प्राप्त होते हैं।<sup>१९५</sup> समग्रतः राहुल की लेखन शैली वर्णनात्मक है। घटना, पात्र, वातावरण सब इस इतिवृत्तात्मकता एवं वर्णना की प्रधानता है।

राहुल जी की भाषा में एकरमता नहीं है। कही-वही वह संस्कृतनिष्ठ रूप धारण कर लेती है तो कहा अपना सहज एवं सरल रूप में प्रस्तुत है। हिन्दी मुहावरों, लोकांकिता एवं सूक्तिता का उभरते प्रचुर प्रयोग है। डॉ० सराजिनी 'गर्म' उनके ऐतिहासिक उप-यासों की भाषा के विषय में लिखती हैं—'राहुल साह्यायन ने ऐतिहासिक उप-यासों में विविध भाषा-शैली का परिचय दिया है। उन्होंने उप-यासों में स्थानीय रंग की सृष्टि के हेतु भारत की ही संस्कृति नहीं भारतवर्ष के बाहर की संस्कृति जन-जीवन की भाषा के रूप में ग्रहण किया है जिससे स्थानीय वातावरण मुखर हो उठता है।'<sup>१९६</sup> संक्षेपतः राहुल की शैली आत्मकथात्मक एवं वर्णनात्मक है। उनकी भाषा प्रधान रूप से सरल सहज, मुहावरोंदार तथा सुबोध है। प्राचीन



वातावरण को साकार करने के लिए उन्होंने सस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग 'दिवोदास' जय योधय तथा सिंह सेनापति में किया है, जिसमें उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। वस्तुतः राहुल की भाषा सवन स्वाभाविक एवं सहज है, कृत्रिमता उसमें नहीं।

राहुल जी के औपन्यासिक गल्प की विवेचना के अनन्तर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि राहुल जी सामाजिक राजनीतिक उपन्यासकार की अपेक्षा ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में अधिक सफल रहें हैं। अतीत की विस्मृति का स्मृतिपट पर विकीर्ण करने वाले राहुल ऐतिहासिक प्रतिभा के धनी हैं और उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों के वष्य के रूप में उन विषयों का ग्रहण किया है जिनकी ओर हमारी तक समय उपन्यासकारों का ध्यान नहीं गया था। 'निर्वास' 'सिंह सेनापति', जय योधय तथा मधुर स्वप्न' विषयों की मौलिकता एवं नवीनता का लिय हुए हैं। राहुल का ऐतिहासिक लक्ष्य के प्रति ईमानदारी का भाव ही प्रशंसनीय है। राहुल की औपन्यासिक कला की अनेक 'यूनताएँ' हैं, यथा सुसंगठित कथानक का अभाव, पात्रों के बहिरंग चित्रण की प्रचुरता अतिशय सोद्देश्यता आदि जिससे उनके उपन्यास उच्चकोटि के कलात्मक उपन्यास नहीं बन सके। फिर भी उनकी औपन्यासिक कृतियाँ की अपनी विशेषताएँ हैं। विषय-वस्तु की मौलिकता वस्तु विकास के लिए मात्रा प्रसंगा की नियोजना इतिहास और कल्पना का सुसामञ्जस्य व्यक्तित्व के अनुकूल पात्र सृष्टि पात्रानुकूल संवाद-योजना तथा भाषा-शैली, आत्मकथात्मक एवं वर्णनात्मक शैली के सफल प्रयोग, वातावरण भवन की अदभुत क्षमता, भावसंवाद तथा बौद्ध दशन का समन्वय तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण—राहुल के उपन्यासों में दृशनीय हैं। वस्तुतः राहुल जी न ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की शैली का माग-दशन किया है, इसमें किंचित भी संदेह नहीं। जय योधय' तथा सिंह सेनापति' राहुल के दो सशक्त उपन्यास हैं जिनके वष्य विषय एवं शैली ने हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों को प्रभावित किया है।



- ३६ निबोदास दो श्रृंग ।  
 ४० ऋग्वेदिक आद्य पृ० ३७६ ३७८, ३६८, ३४८ ३३४ २८४ ।  
 ४१ संहृत काव्यधारा पृ ५ ।  
 ४२ बल्कि इण्डेक्स (भाग १) अनुवादक रामकुमार राय पृ० ६१७ ।  
 ४३ हिंदी ऋग्वेद पृ० रामगोविंद शिवदा पृ० ६६६ ।  
 ४४ ऋग्वेदिक इण्डिया (भाग १) धविनाथचन्द्र दाग पृ १२१ १८० ।  
 ४५ भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास बी० एन० लूथिया पृ० ५१ ।  
 ४६ ऋग्वेदिक आद्य पृ० ३४ ।  
 ४७ हिन्दू सभ्यता राधाकुमर मुकुर्जी पृ० ७३ ।  
 ४८ ऋग्वेदिक आद्य पृ० २६ ।  
 ४९ बल्कि देवतासुत अनुवादक डा० सुयशान्त पृ १५५ ।  
 ५० ऋग्वेदिक इण्डिया (भाग १) पृ० १२१ ।  
 ५१ हिन्दू सभ्यता पृ० ८१ ।  
 ५२ ऋग्वेदिक इण्डिया (भाग १) पृ० ११८ ।  
 ५३ ऋग्वेदिक आद्य पृ० २७२ ।  
 ५४ वही ।  
 ५५ निबोदास पृ० २४ २७ ।  
 ५६ वही पृ० ४६ ५० ।  
 ५७ वही पृ ७६ ७८ ।  
 ५८ वही पृ० ७४ ७५ ।  
 ५९ वही पृ० ७६ ८६ ।  
 ६० वही पृ० ११८ १२३ ।  
 ६१ सिंह सेनापति भूमिका ।  
 ६२ वही ।  
 ६३ वही विषय प्रवेश ।  
 ६४ वही पृ ११ ।  
 ६५ वही पृ १३ ।  
 ६६ विस्मृत यात्री पृ ४ ।  
 ६७ सिंह सेनापति (प्रतीय संस्करण) भाषाव न की आर से ।  
 ६८ विचार और विवेचन पृ० १२७ १२८ ।  
 ६९ सम शक्ति द्वापदस भाषा ए०जीयट श्रुतिया पृ ७५ ७४ ।  
 ७० विमलमरी भाषा पापी प्रापर नेरुज (द्वितीय खण्ड) पृ० १६६५ ।  
 ७१ महामानव बद्ध पृ० ७८ ८० ।  
 ७२ प्राचीन भारत पृ० ४६ ।  
 ७३ प्राचीन भारत का इतिहास पृ ६७ ६८ ।  
 ७४ प्राचीन भारत पृ ४३ ।  
 ७५ प्राचीन भारत का इतिहास पृ ६६ ।  
 ७६ परिपत्र पत्रिका (अप्रैल १९६६ ई०) पृ० २६ ।  
 ७७ प्राचीन भारत का इतिहास पृ० ७२ ।  
 ७८ प्राचीन भारत राधाकुमर मुकुर्जी पृ ७५ ।  
 ७९ बौद्ध दर्शन मीमांसा-वस्तुव उपध्याय पृ १८ ।

- ८० प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास भा० राधकृष्ण रायच, पृ० ४२५, ४२७ ।  
 ८१ कारपोरेट साइक इन एंजोयट इन्फिन्पा पृ० २२३ से २३३ ।  
 ८२ नि डॉनलफोट रिन्गी डॉक इन्फिन्पा-वी० ए० रिन्ग पृ० ७२ ७४ ।  
 ८३ प्राचीन भारत का इतिहास पृ० ६६ तथा १०५ ।  
 ८४ प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास पृ० ४२७ ४२८ ।  
 ८५ बोट घम और बिहार-हूबलगर बिपली पृ० २४ २५ ८४ ।  
 ८६ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) डॉ० बामुन्नेव उपाध्याय पृ० ५६ ५७ ।  
 ८७ नि वाकानक गुप्त एज पृ० २८ २९ ३२ ३५ ।  
 ८८ रिन्गमार्गिन्ग डॉ० राबर्टसी पाण्डेय पृ० ८४ ।  
 ८९ बामुन्नेवगीन भारत-डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल पृ० ३२७ ।  
 ९० दि गुप्ता एम्पायर-डॉ० राधाकुमु मुरुजी पृ० ४५, ४७ ४८ ।  
 ९१ जय योयय (प्राक्कचन), पृ० १ ।  
 ९२ प्राचीन भारत का इतिहास, पृ० १८८ ।  
 ९३ बही, पृ० १८६ ।  
 ९४ गुप्त साम्राज्य का इतिहास, पृ० ७८ ।  
 ९५ बही, पृ० ४२ ।  
 ९६ नि एन डॉक इम्पारिन्गल गुप्ताड पृ० २६ ।  
 ९७ बही पृ० ६ ।  
 ९८ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० १३८ ।  
 ९९ बही पृ० १३६ ४० ।  
 १०० बही पृ० १४३ ।  
 १०१ जय योयय (प्राक्कचन) पृ० २ ।  
 १०२ भारत का प्राचीन इतिहास पृ० २७६ २८३ ।  
 १०३ नि गुप्ता एम्पायर, पृ० ५६ ६४ ।  
 १०४ जय योयय (प्राक्कचन), पृ० १ ।  
 १०५ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (भाग २) पृ० १ २ १०३ ।  
 १०६ प्राचीन भारत का इतिहास पृ० २०६ ।  
 १०७ प्राचीन भारत का इतिहास डॉ० एन० एन० चौध पृ० ३०५ ।  
 १०८ एन एंजोयट हिन्दी डॉक इन्फिन्पा (पार्ट १) पृ० १४६ ।  
 १०९ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (भाग २) पृ० १०२ १०३ ।  
 ११० कालिन्ग का भारत (भाग १) बामुन्नेव उपाध्याय पृ० २६ २७ ।  
 १११ कालिन्ग का भारत (भाग २) पृ० १ ३ २ ।  
 ११२ जय योयय पृ० ३३८ ।  
 ११३ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (भाग १) पृ० ६३ ।  
 ११४ भारत की सङ्गति और कथा पृ० १३१ ।  
 ११५ गुप्ता और ठारे डॉ० चाविन्नी रिन्ग पृ० ७७ ।  
 ११६ जय योयय (प्राक्कचन) पृ० २ ।  
 ११७ ईपन-मार० पिन्गमैन पृ० ३०२ ।  
 ११८ इनकार्पनीरीटिवा डॉक रिन्गीडन एन्ड गविन्ग (खण्ड ८) पृ० ५०८ ।  
 ११९ ईपन-मार० पिन्गमैन पृ० ३०२ ।  
 १२० बीपन रायम पृ० ४४ ।

- १२१ ईरान और विश्वमन पृ० ३०२।  
 १२२ इनसाइक्लोपीडिया आफ रिलीजन एण्ड एथिक्स, पृ० ५०८ ५ ६।  
 १२३ ए हिस्ट्री आफ परसिया (खण्ड प्रथम)-सर परसी स्पाईथ  
 पृ ४४१ ४४३ ४४६ ४५०।  
 १२४ वही।  
 १२५ ईरान पृ० ३०१ ३०२।  
 १२६ दि इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकना (खण्ड १८) पृ ४७२।  
 १२७ ईरान और पश्चिम पृ० ३०२।  
 १२८ औरान राहुल पृ० ४५।  
 १२९ ए हिस्ट्री आफ परसिया (प्रथम खण्ड) पृ ४४६ ४५०।  
 १३० औरान पृ० ४६।  
 १३१ हिन्दी के स्वच्छतावादी उपन्यास पृ० ४७४।  
 १३२ विस्मृत यात्री (दो जन्म) पृ० १।  
 १३३ अतीत से जनमान राहुल, पृ० ३ से १४।  
 १३४ वही पृ० १०।  
 १३५ वही पृ १४।  
 १३६ इण्डिया एण्ड चाइना प्रबोधचन्द्र शर्माजी पृ० २१६।  
 १३७ भारत की संस्कृति और कला राष्ट्राकमल मुखर्जी पृ २११ २१२।  
 १३८ चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास डॉ० चाऊ सियांग कुयांग पृ० १२८।  
 १३९ ज्ञान का हिन्दी साहित्य प्रकाशचन्द्र गुप्त पृ० ७६।  
 १४ हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास रामब्रह्मोदी मुक्त सभा भविरथ मिश्र, पृ० २८५।  
 १४१ विचार और विवेचन पृ० १२७।  
 १४२ राजस्थानी रनिवास प्राक्कथन।  
 १४३ हिन्दी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास पृ ३३१।  
 १४४ मुत्ता और तारे पृ० ५७।  
 १४५ विचार और विवेचन पृ० १२६।  
 १४६ हिन्दी उपन्यास मुपमा घवन पृ ३७५ ३७६।  
 १४७ जीने के लिए, पृ० ३३५।  
 १४८ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार पृ १४१।  
 १४९ आलोचना (जुलाई १९५२) पृ० १ ५।  
 १५० हिन्दी के स्वच्छतावादी उपन्यास पृ ४७७।  
 १५१ विचार और विवेचन पृ १२७।  
 १५२ हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास पृ० ३३२।  
 १५३ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण पृ १६८।  
 १५४ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार पृ १६३।  
 १५५ जय मौघय पृ २ ३५।  
 १५६ वही पृ० १०६ से ११३।  
 १५७ वही पृ० २ २२०७।  
 १५८ जीने के लिए पृ० १५३।  
 १५९ ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य-बी० एम चित्तामणि पृ ८५।  
 १६० आलोचना (जुलाई १९५२) पृ० १०४।

- १६१ मधुर स्वप्न पृ० ८ ॥ १० ८४ ८५ ७१ १४४ १४१, १२७ २३३ २३४ ।  
 १६२ जय योधेय, पृ० १५ ।  
 १६३ सिंह सेनापति पृ० २६ ३३ ।  
 १६४ आलोचना (निम्बूर १६६६) पृ० १२५ ।  
 १६५ विचार और विवेचन पृ० १२८ ।  
 १६६ आज का हिंदी साहित्य पृ० ७६ ।  
 १६७ जो लिखना पड़ा पृ० १०५ ।  
 १६८ जय योधेय पृ० ११ १७ ।  
 १६९ बगी पृ० ७४ ७५ ।  
 १७० वही पृ० २६१ २६४ ।  
 १७१ विचार और विवेचन पृ० १३० ।  
 १७२ भाषात्मिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान पृ० ३४५ ।  
 १७३ कुछ विचार मुन्सी प्रेमचंद पृ० ३८ ।  
 १७४ दि पोर्टेबल हेनरी जेम्स हेनरी जेम्स पृ० ३६३ ।  
 १७५ बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य नये सन्मर्ग के बीमार बागों के पृ० ३५३ ।  
 १७६ राइटिंग पार मग पीठक एम० एस राबिंसन पृ० १११ ।  
 १७७ एन इण्ट्राडक्शन टु दि स्टडी ऑफ लिटरेचर, पृ० १४५ ।  
 १७८ राहुल साह्यायन का कथा-साहित्य पृ० १३१ ।  
 १७९ दि हिस्टोरीकल नॉक्विल-नॉक्विन स्मू बाक्स, पृ० ३०१ ।  
 १८० वही पृ० ३०३ ।  
 १८१ आलोचना (निम्बूर १६६६) पृ० १२६ ।  
 १८२ जीने के लिए पृ० १५३ ।  
 १८३ वही पृ० १७० ।  
 १८४ वही पृ० २६० ।  
 १८५ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण पृ० १७१ ।  
 १८६ हिन्दी उपन्यास पृ० ३७५ ।  
 १८७ हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास पृ० ३४० ।  
 १८८ दि हिस्टोरीकल नॉक्विल पृ० ३८ ।  
 १८९ विचार और विवेचन पृ० १२५ ।  
 १९० स्टाट नवर शोक दि ऐबोलेयुशन आफ मच ठ परसलसिटा । इनस्टेट ह्य आलवेड  
 प्रकण्टम अस वि दि परसनेनिनी कम्पलीट दि हिस्टोरीकल नॉक्विल पृ० ३८ ।  
 १९१ दि स्ट्रक्चर ऑफ दि नॉक्विल एडविन म्यूर पृ० २४ २५ ।  
 १९२ सत्तुलन प्रभाकर माचवे पृ० १७३ ।  
 १९३ विचार और विवेचन पृ० १२६ ।  
 १९४ भाषात्मिक हिंदी कथा साहित्य और चरित्र विकास में विवेचन पृ० २४ ।  
 १९५ हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास पृ० ३०७ ।  
 १९६ निबोधन पृ० १३ ।  
 १९७ मधुर स्वप्न पृ० २१ ।  
 १९८ वही पृ० १२ ।  
 १९९ सिंह सेनापति, पृ० ३४ ।  
 २०० निबोधन पृ० १४५ ।  
 २०१ कुछ विचार पृ० ४८ ।

- २०२ हिन्दी उपन्यास-साहित्य का शास्त्रीय विवेचन पृ० १६० १६१ ।  
 २३ हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास पृ० ६६ ।  
 २०४ जाने के लिये पृ० १६२ ।  
 २५ मिह सेनापति पृ० ४१ ।  
 २०६ मिह सेनापति पृ० ५६ तथा निबोधन पृ० १४६ ।  
 २०७ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास पृ० ६४ ।  
 २०८ आनोचना (जनवरी १९५४) पृ० ३५ ।  
 २०९ हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास पृ० ७३ से उद्धृत ।  
 २१ विचार और विवेचन पृ० १२८ ।  
 २११ मि हिस्टोरिकल नावल्स पृ० ३१२ ।  
 २१२ विस्मृत यात्री पृ० ११३ ।  
 २१३ जीने के लिए पृ० ११ ।  
 २१४ हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास पृ० ८६ ।  
 २१५ जय योधय पृ० ११६ ।  
 २१६ विस्मृत यात्री पृ० ११३ ।  
 २१७ मिह सेनापति पृ० ४५ ।  
 २१८ जीने के लिए, पृ० १६० १६१ ।  
 २१९ वही पृ० १६२ १६३ ।  
 २२० जय योधय पृ० २१७ २१८ ।  
 २२१ जीने के लिए, पृ० ३१४ ३१५ ।  
 २२२ निबोधन पृ० २५ से २८ ।  
 २२३ हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास पृ० ५१८ ।  
 २२४ सन्तुलित प्रभाकर भाषणे पृ० १७१ ।  
 २२५ कुछ विचार (भाग १) प्रसन्न पृ० ५५ ।  
 २२६ मिह सेनापति पृ० १४ १५ ।  
 २२७ वही पृ० २४ ।  
 २२८ निबोधन पृ० २४ ।  
 २२९ जीने के लिए पृ० १६० १६१ ।  
 २३० मधुर स्वप्न पृ० ३०५ ।  
 २३१ जय योधय पृ० ५४ ।  
 २३२ जीने के लिए, पृ० ५६ ।  
 २३३ वही पृ० १७० १७१ ।  
 २३४ मधुर स्वप्न पृ० १६२ ।  
 २३५ जय योधय पृ० ११ १११ ।  
 २३६ वही पृ० १६४ १११ ११२ ।  
 २३७ मधुर स्वप्न पृ० ४६ ४७ ।  
 २३८ जय योधय पृ० १६२ ।  
 २३९ जीने के लिए पृ० ३२३ ।  
 २४ वही पृ० १६८ १७३ ।  
 २४१ जय योधय पृ० २६ ३२ ।  
 २४२ विस्मृत यात्री, पृ० ४६ ४७ ।





- २८४ ज्ञान व सिद्धि प २० ४३ ।  
 २८५ वही प १० ४७ ।  
 २८६ वही प ४३ ।  
 २८७ विवाह प ५२ ७८ ।  
 २८८ वही प ६७ ।  
 २८९ सिंह सेनापति प १७ ।  
 २९० वही प ३३ ।  
 २९१ जय योधय प ३१५ ।  
 २९२ मधुर स्नान प ८ १० ।  
 २९३ विस्मृत यात्री प ३६३ ।  
 २९४ जीने के नियम प ८ २६ ।  
 २९५ वही प ४३ ।  
 २९६ जय योधय प ४१२ ।  
 २९७ विस्मृत यात्री प ३ ६ १३ तथा जय योधय प ६३ ।  
 २९८ जय योधय प ४ तथा सिंह सेनापति प २४ तथा ज्ञानवी सती प ५ ।  
 २९९ मधुर स्नान प ११५ ।  
 ३०० वही प ४८ ।  
 ३०१ वही प २८ ।  
 ३०२ जय योधय प १२ ।  
 ३०३ विस्मृत यात्री प ६० ।  
 ३०४ मधुर स्नान प १४२ ।  
 ३०५ विवाह प ३८ ।  
 ३०६ मधुर स्नान प १ ।  
 ३०७ वही प ११ ।  
 ३०८ वही प ११५ ।  
 ३०९ वही प ७८ ।  
 ३१० यज्ञ प १ २ ।  
 ३११ विस्मृत यात्री प १ ३ ।  
 ३१२ जय योधय प ६१ ८२ ।  
 ३१३ सिंह सेनापति प २१४ ।  
 ३१४ अष्टम— विवाह प ३८ ४८ वन वन प ६४ ।  
 ३१५ अष्टम— विस्मृत यात्री प ३८ ४८ वन वन प २३८ ।  
 ३१६ राज्ञ माहत्याया का वध्या गान्धर्व प ३ ८ ।  
 ३१७ विवाह यात्रा पितृजन पन निटरेरा विटिसिम इन समरिखा  
 —जैरी जम्बर एम्बेड सम्पादक एल्बट जी वन नारस्टेन प १४१ ।  
 ३१८ उपजाय और विवाह पत्र फलम (भूमिका रामविनाम जर्म) प २ ।  
 ३१९ माहर्व का पत्र और प्रश्न प १६३ ।  
 ३२० माहर्व का पत्र पत्र—हृत्पत्र पत्र पत्र प ४ ।  
 ३२१ पत्र (सहायक प ५५) प ५ ।  
 ३२२ अनपत्ति (अपत्र प ६१) प १६५ ।  
 ३२३ माहर्व पत्र प ३१८ ।

- १२४ आलोचना (जुलाई १९३२) पृ ११।  
 १२५ विचार और विवेचन १३०।  
 १२६ हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्राय अध्ययन—डॉ० जगन्निवास झाशी पृ० ३६८।  
 १२७ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० २१२।  
 १२८ ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य प० ८४।  
 १२९ मनुस्मृत प्रभाव पर भाष्य प० ३७।  
 १३० भाष्य का हिन्दी साहित्य प० ८३।  
 ११ हिन्दी उपन्यास-सुषमा प्रबन्ध प० ८६५।  
 १२ हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास डॉ० जगन्निवास झाशी पृ० ८२५।  
 १३३ निबन्ध प० २०।  
 १४ वही प० ११६।  
 १५ भाष्य का हिन्दी साहित्य प० ८३।  
 १६ मधुर स्वप्न प० २६६।  
 १७ मार्क्सवाद और साहित्य-महेश्वर राय प० ३४।  
 १८ जय भीष्म पृ० १०४।  
 १९ विष्मय यात्री प० ३८५।  
 १४० वही प० १७२।  
 १४१ मधुर स्वप्न पृ० १६२०।  
 १४२ वही प० २६५।  
 १४३ विष्मय यात्री प० ३७ ३७३ ३७५।  
 १४४ मार्क्सवाद-समाधान प० ५३।  
 १४५ मधुर स्वप्न प० १८३।  
 १४६ वैज्ञानिक भौतिकवाद-राहुल प० ७६।  
 १४७ जय भीष्म प० ११२।  
 १४८ मधुर स्वप्न प० १८४।  
 १४९ वही प० १८५।  
 १५० जय भीष्म पृ० ११२ ११३।  
 १५१ वही प० ११० १११।  
 १५२ वही पृ० २०७।  
 १५३ वही पृ० १६२।  
 १५४ विचार और विवेचन प० ११।  
 १५५ आईगवा मनी पृ० १।  
 १६ वही प० ६ ४३ ५६ ७ १२६ १२७।  
 १७ वही प० १२७।  
 १८ मिह मेनापनि प० ३।  
 १९ वही पृ० ७।  
 २० वही पृ० ४१।  
 १६१ वही प० ७१ ७४।  
 १६२ मिह मेनापनि प० ७६।  
 १६३ वही प० १ ७ १३८ १४४ १४ १४३।  
 १६४ वही प० १२७।

- ३६५ जय योऽयं पृ० २० ।  
 ६६ भावा पृ० ५८ ।  
 २६७ टिप्पणी व. स. च. ट. न. रा. रा. उ. रा. रा. पृ० ६७५ ।  
 ३६८ मछर स्य न । ३१ ।  
 ३६९ वही पृ० ११८ ।  
 ७० वही ।  
 ७१ वही पृ० १२८ ।  
 ३७२ वही पृ० ११७ ।  
 ३७३ वही पृ० १३८ ।  
 ३७४ वही पृ० १४ ।  
 ३७५ जीन व. सि. पृ० १४३ १४१ १७०  
 ७६ भावा न. ट. कु. नि. रा. को. व. लो. पृ० ७३ ।  
 ३७७ म. टि. व. को. (जु. रा. सि. म. र. १६४२) पृ० ४ ।  
 ७८ बौद्ध दशन तथा अन्य भारतीय दशन भरतमिह उपाध्याय पृ० २७४ ।  
 ३७८ भारतीय ल. रा. वा. च. स. प. ग. रो. ला. पृ० १८८ ।  
 ३८० दशन वि. ज्ञान पृ० २१४ ।  
 ३८१ विस्मृत यात्री पृ० १६६ ।  
 ३८२ भारतीय दशन पृ० १६ ।  
 ३८३ बौद्ध दशन पृ० ३८ ।  
 ३८४ सिद्ध सनापति पृ० २७३ ।  
 ३८५ वही ।  
 २८६ विस्मृत यात्री पृ० ८३ ।  
 ३८७ भारतीय दशन न. रा. घा. कृ. ल. न. पृ० ४१८ ४१६ ।  
 ३८८ बौद्ध धर्म दशन धा. रा. रा. न. रे. ले. पृ० २४१ ।  
 ८६ जय योऽयं पृ० ११२ ।  
 ३९ भारतीय दशन न. वा. च. स. प. ग. रो. ला. पृ० १६२ ।  
 ६१ जय योऽयं पृ० १११ ।  
 ६२ बद्ध एण दि. ग. म. प. न. धा. क. बद्ध इ. रा. म. न. कुमार. र. रा. मी. पृ० ११७ ।  
 २८३ भारतीय दशन पृ० १८६ ।  
 ३९४ बौद्ध दशन तथा अन्य भारतीय दशन पृ० ४८७ ।  
 ६५ भारत व. रा. स. टि. नि. इ. ति. हा. स. म. ले. के. तु. वि. घा. न. कार. पृ० ६२ ६ ।  
 ३९६ जय योऽयं पृ० १११ ।  
 ६७ वही पृ० ११ ।  
 ३९८ वही पृ० २ ।  
 २८९ वही पृ० ३१ ।  
 ४ वही पृ० २ ।  
 ४१ विस्मृत यात्री पृ० ११३ ।  
 ४२ व. रा. पृ० ११२ ।  
 ४ बद्ध इ. रा. म. स. गि. रा. म. ग. रा. पृ० १८ ।  
 ४४ दा. घ. नि. रा. (१) व. रा. म. घ. म. नि. ल. ने. रा. (२) म. री. र. धी. रा. म. ल. ग. रा.

- ४०५ सिंह सेनापति प २७५ ।  
 ४०६ बुद्ध और बौद्ध धर्म अनुसन्धन शास्त्री प २७ ।  
 ४०७ बही प ३७ ।  
 ४०८ जय दीपय प २६ ।  
 ४०९ विष्मन् यात्री पु २७ ।  
 ४१० सिंह सेनापति प २६६ ।  
 ४११ मधुर स्वप्न प ४८ ।  
 ४१२ रेल का टिकट भ्रम का भाव कौमल्यामन प १५१ ।  
 ४१३ रामराय और भावतारा राहुत प ६३ ।  
 ४१४ माताबना (जुलाई १९३२) प १४ ।  
 ४१५ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण प १६६ ।  
 ४१६ हिन्दी उपन्यास प ३६७ ।  
 ४१७ जय दीपय पु ११० १११ ।  
 ४१८ विचार और विवेचन प १३१ ।  
 ४१९ जय दीपय प १११ ।  
 ४२० सिंह सेनापति प २३ ।  
 ४२१ जय दीपय प ११२ ।  
 ४२२ हिन्दी उपन्यास पु १७७ ।  
 ४२३ विस्मृत यात्री प २७२ ।  
 ४२४ बही प ७३ ।  
 ४२५ बही पु ७२ ।  
 ४२६ बही प ३७५ ।  
 ४२७ बही प ११२ ११३ ।  
 ४२८ जय दीपय प ३० ।  
 ४२९ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार प १११ ।  
 ४३० सिंह सेनापति पु १३३ ।  
 ४३१ जय दीपय प १५ ।  
 ४३२ रात्रस्थानी रनिवास प १५ ।  
 ४३३ जय दीपय प ७७ ।  
 ४३४ सिंह सेनापति प २५ ।  
 ४३५ बही प १३५ ।  
 ४३६ रात्रस्थानी रनिवास प १७८ ।  
 ४३७ मधुर स्वप्न पु ८८ ।  
 ४३८ बहा प १३८ ।  
 ४३९ सिंह सेनापति प ३१ ।  
 ४४० जय दीपय प १४६ ।  
 ४४१ मधुर स्वप्न पु ७७ ।  
 ४४२ सिंह सेनापति प १३८ ।  
 ४४३ मधुर स्वप्न प ३१ ।  
 ४४४ बही पु २८१ २८२ ।  
 ४४५ विचार और विवेचन प १ ।

- ४४६ ऐतिहासिक उपायान और उपायानकार पृ० ११२ ।  
 ४४७ आलोचना (जमा १८२२) पृ० १०३ ।  
 ४४८ मिहू सनापनि पृ० १३ ।  
 ४४९ जय घोष पृ० १६१ ।  
 ४५० बही पृ० १६४ ।  
 ४५१ रेल का विवरण पृ० १२ ।  
 ४५२ आलानना (विम्वर १८६६) पृ० १३१ ।  
 ४५३ आरक्षी समारोह पृ० ४४ ४८ ।  
 ४५४ जय घोष पृ० ३४१ ।  
 ४५५ ज्ञान का लिए पृ० २६ ।  
 ४५६ आरक्षी समारोह पृ० ६१ ।  
 ४५७ जीने के लिए पृ० २२ ।  
 ४५८ (क) मिहू सनापनि पृ० २४ २४ (घ) जय घोष पृ० २६४ १६२ १६४  
 (ग) जीने के लिए पृ० १७० १८६ १८७ (घ) मगर स्वप्न पृ० २८ १६ २० ।  
 ४५९ (क) जय घोष पृ० ३० २४ (ख) मिहू सनापनि पृ० ६८ १५ १६ ।  
 ४६० जय घोष पृ० १५७ ।  
 ४६१ जीने के लिए पृ० ६० ।  
 ४६२ बही पृ० २६८ ।  
 ४६३ बही पृ० ४४ ।  
 ४६४ ज्ञान का लिए पृ० २१ ।  
 ४६५ बही ।  
 ४६६ बही पृ० २६ ।  
 ४६७ जय घोष पृ० २४ ।  
 ४६८ बही पृ० ६२ ।  
 ४६९ राजस्थानी रनिमान पृ० २२० ।  
 ४७० मिहू सनापनि पृ० ७३ ।  
 ४७१ जीने के लिए पृ० १६१ ।  
 ४७२ बही पृ० ३१४ ।  
 ४७३ लिटरेचर एण्ड रीयनिटी हावर्ड पार्क पृ० १२ ।  
 ४७४ हिन्दी उपन्यास का अध्ययन डॉ० नयमान पृ० १३० ।  
 ४७५ जीने के लिए पृ० ६२ ११३ ।  
 ४७६ राहुन जी का कथा-साहित्य (टिप्पणियों के साथ) डॉ० मुकुटसाल मल्ल पृ० २१६ ।

## राहुल जी के अनूदित उपन्यास

अनूदिन रचनाएँ किसी भी भाषा के साहित्य की निधि होती हैं। राहुल साहू-यादव हिन्दी में अनूदित रचनाओं के विषय में चिन्तित हैं— अनुवाद या स्वतन्त्र अनुवाद में ही हमारे गद्य-साहित्य की सज्जि हुई है और जहाँ तक हमारा प्राचीन या आधुनिक साहित्य का सम्बन्ध है हमारी भाषा में काफी अनुवाद हैं। किन्तु उनमें भी अधिक मूलपेन्नी सरस अनुवादों की कमी है। और हमारे साहित्य में विषय की दृष्टि से प्रामाणिक अनुवाद तो अभी हुए ही नहीं हैं। 'इस दृष्टि से मौलिक साहित्य सज्जना के साथ राहुल जी की अनूदिन कृतियाँ का भी हिन्दी साहित्य में अनुपम महत्त्व है। संस्कृत पालि तिब्बती से बौद्ध धर्म एवं दार्शनिक सम्बन्धी ग्रन्थों के अनुवादों के अतिरिक्त राहुल जी ने अंग्रेजी तथा तान्त्रिक भाषा में अनेक औपन्यासिक कृतियाँ का अनुवाद भी किया है। हिन्दी के अनूदिन उपन्यासों में इनका विनिष्ट स्थान है। अंग्रेजी में अनूदिन उपन्यासों में राहुल जी ने पर्याप्त स्वच्छन्ना से काम लिया है और इन्हें अनुवाद के स्थान पर स्वातन्त्र्य कहना अधिक उपयुक्त होगा। तान्त्रिक भाषा से ऐसी के महत्त्वपूर्ण उपन्यासों के अनुवाद का श्रेय राहुल जी का ही प्राप्त है। अतः राहुल जी के अनूदिन उपन्यासों का वा भाषा में विमर्श किया जा सकता है— (क) अंग्रेजी से रूपान्तरित उपन्यास, (ख) तान्त्रिक से अनूदिन उपन्यास।

### (क) अंग्रेजी से रूपान्तरित उपन्यास

राहुल जी के रूपान्तरित उपन्यास हैं— 'गठान की धार', 'विस्मय के शम' में 'जादू का मुक्त' तथा 'मान की धार'। अंग्रेजी भाषा में दर्शना प्राप्त करने के अतिरिक्त उन्मेष से रचित जो न इन चार उपन्यासों का रूपान्तरण किया है। एक विशेषण राहुल जी का उक्त द्रष्टव्य है— '१९२० २४ २० में १४ वर्ष मुझे हजारों बार जेल में रहना पड़ा था। उस समय स्थान-मुक्त' में कुछ काम करता रहता था। 'गठान' में अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवादों का काम भी था। 'विस्मय' में मुझे अफमान है किन कारणों से अनुवाद है उनका प्रा. उन्मेष के अंग्रेजी का नाम मैंने नाम नहीं पर

रखा दूसरी तरह से प्रयत्न करने पर मुझे नाम नहीं मालूम हो सके। अनुमान में बहुत अधिक स्वतन्त्रता से काम लिया गया है।<sup>१</sup> जादू का मुक्त की भूमिका में भी राहुल जी की इसी प्रकार की स्वाक्ति है— गतान की छाँव विस्मृति के गर्भ में मोने की ढाल तथा जादू का मुक्त चारा उपयोग का स्वान्त मुपाय के गतिरिक्त अपने नवतरणा में साहस बना करने के अगल से भी १६२८ ई० में मन की विस्मृत अग्नेजी रखकर ये उपयोग में बहुत परिवर्तन के साथ अनुवातिन किया था।<sup>२</sup> राहुल जी के इन कथना में स्पष्ट है कि ये रूपांतरित उपयोग उहाँने स्वान्त मुपाय के साथ तरणा में उत्साह एवं मात्र के संचार के तत्त्व है। हिंदी में साहसिक उपयोग का कमी न भी उद्देश्य तरण का प्रेरणा दी है।<sup>३</sup> इन उपयोग के मूल दोष तथा मूल कृति का नाम अनात है। अनुवातिन ने अपने अग्नेजी भाषा सम्प्रदाय ज्ञान को विकसित करने के उद्देश्य से इन रूपांतरणा का प्रस्तुत किया है जहाँ उच्च नाटि के कलात्मक एवं भाषात्मक अनुवातिन की विवेकता इनमें उपलब्ध नहीं हो सकती।

गतान की छाँव में रहस्य रामाचरण कृति है। गतान की भाषा कथा का केन्द्र है यही उपयोग का रहस्य है। उपयोग के अंत में विवेकानंद द्वारा इसका रहस्य उद्घाटित किया जाता है कि 'मुने का गुफावासी गतान की छाँव' एक अमूल्य धर्ममणि थी। हरि माहन और माधव इस उपयोग में साहसी नाविक के रूप में चित्रित हैं। विस्मृति के गर्भ में का काय तत्र अफीका का अधमहाद्वीप है। मित्र की प्राचीन सम्यता से सम्बद्ध अनन्य विचित्रतापूर्ण तथ्या का उद्घाटन इस रामाचक कल्पना प्रधान उपयोग का प्रतिपाद्य है। मितनीहर्षी की सराफिम की समाधि उपयोग का रहस्य = और उससे भी बढ़कर रहस्य वह गावरला है जिसके लिए शिक्षनाय जीहरी की हत्या होती है तथा धनदास जीहरी प्रा० विद्याभवन को साथ लेकर मितनी हर्षी जाना चाहता है। इस उपयोग में कानान धीरद्वन्वाय महासय चाण प्रा० विद्याभवन तथा धनदास जीहरी की अफीका के तप्त मर्मस्थल की पदयाना एवं मित की विचित्रतापूर्ण सम्यता का वर्णन है। यह उपयोग लखन की कल्पनाशक्ति एवं सुविकसित ऐतिहासिक रचि का मा परिचायक है। इस उपयोग का घटनाचक्र अथवा कथानक काल्पनिक है परंतु संवेदन यथाय एवं इतिहास रस से युक्त प्रतीत होता है। जादू का मुक्त भाष्य अफीका के अग्रसारण्डन देश की विचित्रताओं का अन्वय करने वाला रोमांचक उपयोग है। पानी एक जादूगर बादशाह है जो तु गाला जाति पर राज्य करता है उसका प्रत्येक अवयव ही कुमार नरेंद्र से यंत्रण तथा वाचस्पति मिश्र का उत्प्रेक्ष्य है। इस प्रकार उपयोग में नूतन भौगोलिक परिदृश्य एवं नई सम्यता की आज प्रतिपाद्य है तथा अरुण भगवानियम जैसा प्रागतिहासिक पशुधरा का वर्णन अत्यधिक रोचक है। साने की ढाल घटना प्रधान माहति उपयोग है। इस उपयोग का सम्प्रदाय भी अफीका महात्मा के साथ है। पयत्न एवं रस्यो में पूर्ण यह उपयोग अत्यंत मर्म है। साने का ढाल के वास्तविक अग्रिकारी की आज

उप-यास का रहस्य है। नायन स्वयं वास्तविक अधिकारी है मोटियो इस रहस्य का जानता है। वह सधन 'नायन' का भाग में बाँधकर बनकर आता है। उप-यास के अंत में वह दान नायन को प्राप्त होती है जिसकी प्राप्ति में कष्टन प्रतापनारामण तथा उसके परिवार के लोग सहायक बनते हैं।

राहुन जी का स्थापित उप-यास में उनके मौखिक एतिहासिक एवं सामाजिक उप-यासों में निम्न प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं। इनमें सबसे एक रहस्यमय वातावरण बना रहता है जिसका अनावरण में नायन के साहसिक कृत्यों का भवन हुआ है। इनमें जामुंगी एवं तिलस्मी उप-यासों की तरह रहस्यमयता एवं कौतूहल जैसे सत्व विद्यमान हैं परंतु जामुंगी धनवा तिलस्मी उप-यास नहीं है। इन उप-यासों में उप-यासकार न पयटन मुंड गान्त और रोमाचक साहस का लेकर विस्मृत अतीत के गम में प्रवेश किया है तथा अपनी कल्पना में इन रोमाचक कथाओं को निमित्त किया है। कहीं-कहीं इनमें इतिहास का ना भी आमास होता है यद्यपि वह काल्पनिक ही है। अतः इन्हें 'रोमाचक' उप-यास का अभिधान देना ही सगन प्रतीत होता है। तिलस्मी जामुंगी साहसिक एवं एतिहासिक उप-यासों के समान ही कल्पना की अग्रज धारा इन उप-यासों की विनिष्टता है। ये रोमाचक उप-यास राहुन जी की हिंदी का नई देन है। रहस्य और साहसिकता इन रोमाचक उप-यासों की वस्तु के मुख्य तत्त्व हैं। वैज्ञानिक तथ्य अज्ञान एवं विचित्र स्थान यहाँ रहस्य एवं कौतूहल की सृष्टि करते हैं। आनारायण अग्निहोत्री 'जादू का मुल्क' आदि राहुन जी का स्थापित उप-यासों की वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण कथानक वाला उप-यास कहते हैं।<sup>१४</sup> 'साहसिकता' इन रोमाचक उप-यासों की वस्तु की दूसरी विनिष्टता है। इन उप-यासों के नायकों का साहस युद्ध में पराक्रम प्रदर्शन एवं पयटन प्रियता के रूप में प्रदर्शित है। इस प्रकार राहुन जी का 'रोमाचक' उप-यास विभिन्न वैज्ञानिक भाविष्कारों एवं अज्ञात प्रदेशों की खोज के लिए प्रेरक का काम करते हैं। इनका उद्देश्य सस्ता मनोरंजन मात्र नहीं है।

भाषा गली की दृष्टि से राहुन जी का ये स्थापित सफर ही कह जायेंगे। मुगलरा एवं लोकाविद्या से युक्त प्रवाहमयी भाषा 'जादू का मुल्क' तथा 'विस्मृति के गम में दगावीय' है। 'जादू का मुल्क' में तुंगला के रहस्यमय प्रदेश का सुंदर चित्रण है। प्रवाहमयी भाषा का एक उदाहरण 'विस्मृति के गम में' से ली जाती है— 'यह मेरे मन में स्वप्न के अति अति स्थिति' मैं अपना जीवन बिगड़ लाया मैं बिताया है। मैंने उल्टे दुख मुल्क उनकी आँखों निराला सबमे उत्तर साथ लिया है। मैंने उनके निम्न कोणों और कला चातुष्य को जाना है। मैंने उनकी विजया और सफलताओं का आनंद रूठा है। मैं दुष्काल विपुलिया और मृत्यु के समया की उनकी विपत्ति में भाँसू रहा हूँ। और अब जान पड़ता है किसी दबी चमत्कारों द्वारा यह मेरे अस्ति पार में है कि मैं इसी आँखा से उठ दूँ' इन्हीं वाता से उनके मनीष और स्तुति पार का सुनूँ।<sup>१५</sup> मान की ढाल में राहुन जी की भाषा वास्तव्य हास परिहास आदि



भाषा के चित्रण में सफल रही है। भावानुकूल गद्यावली तथा अलंकारमयी गद्य योजना 'गतान की भाषा' में मिलती है। राहुल जी भाषा के विषय में दुराग्रही नहीं हैं। वे मस्यून भरवो पारसी, अंग्रेजी तथा ग्रामीण शब्दा का भी स्वतंत्रता से प्रयोग करते हैं।\*

राहुल जी की भाषा में वही-वही वाक्य गठन एवं व्याकरण-सम्बन्धी भूलें भी हैं। मिहन्त कानबिस शवरिला आदि अशुद्ध प्रयोग गतान की भाषा में हैं। आन्ध्रिमी मिथिया आसू बहाया आदि व्याकरण-सम्बन्धी त्रुटियाँ विस्मृति के गम में भी हैं।<sup>15</sup> वही वही वाक्य गठन भी गिबिल है—'जब तक उसके पास गाबरेला मूर्ति रहेगी, वह कभी नहीं बिधाम' गति और मुख पायगा।' बचन लिंग एवं विभक्ति सम्बन्धी ऐसी भूलें गतान की भाषा में और भी अधिक हैं। इसमें मौगोलिक एवं अंग्रेजी नामों के उच्चारण भी अशुद्ध हैं।

राहुल जी की गली इन उपन्यासों में भी प्रधानतया वणनारमक है। 'गतान की भाषा' में आरम्भवात्मक गली का प्रयोग है। बीच-बीच में सवादामक एवं वणनारमक गली भी मिलती है। सोन की ढाल में भाषा शली वणनारमक एवं सम्भाषणमूलक है। 'जादू का मुक्क' भी वणनारमक गली में ही प्रस्तुत है। गली की दृष्टि से राहुल जी का विस्मृति के गम में एक सुन्दर रूपान्तरण है। 'सिंह सेनापति' की तरह यह उपन्यास आरम्भवात्मक गली में लिखा गया है। इस उपन्यास के उपोदघात की सिंह सेनापति के विषय प्रवेश से पर्याप्त समानता है। 'उपोदघात' यहाँ उपन्यास का अध्याय ही प्रतीत होता है।

सशपत राहुल जी के रूपांतरित उपन्यास हिंदी में रोमांचक उपन्यास की एक नई विधा के भाग दगक कहे जा सकते हैं। ये उपन्यास यायावर राहुल के व्यक्तित्व के अनुकूल हैं। वही वही भाषा उम्र की कुछ त्रुटियाँ होने पर भी अनुवाद की दृष्टि से ये उपन्यास अच्छे बन पड़े हैं। बिनापकर विस्मृति के गम में तो अत्यंत सुष्ठु रूपांतरण कहा जा सकता है।

### (ख) ताजिक से अनूदित उपन्यास

राहुल जी के अनूदित उपन्यास हैं—दाखु दा जो दास के अनाथ 'मैलीना', मूतवार की मौन तथा शाली। इन उपन्यासों का राहुल जी ने सन १९४७ व १९४८ के मध्य अनुवाद किया था। प्रथम पाँच उपन्यास सदरद्दीन ऐनी द्वारा लिखित हैं तथा गाली जलाल इकरामी द्वारा। सदरद्दीन ऐनी सावित्र ताजिक साहित्य के मस्यापक एवं प्रवक्ता हैं। ऐनी ताजिक जनता के जीवन का वास्तविक चित्रण करने वाले प्रथम उपन्यासकार हैं। राहुल जी उन्हें ताजिक भाषा तथा सावित्र मध्य एशिया का प्रेमचंद मानते हैं।<sup>16</sup> यदि प्रेमचंद की श्रुतियाँ भारतीय जनता के जीवन मध्या का प्रस्तुत करती हैं तो ऐनी की साहित्यिक कृतियाँ ताजिकिस्तान की जनता की वीरगाथाएँ हैं।<sup>17</sup> जलाल इकरामी ऐनी के पिछे एवं

ताजिक जनजीवन का चित्रण करने वाले दूसरे महत्वपूर्ण उपयासकार है। इन दोनों उपयासकारों ने ताजिक जनजीवन का अमीरा द्वारा गोपण एवं सोपण से मुक्ति के लिए जनता के शक्तिकारी प्रयत्न तथा जन जागृति का चित्रण अपने उपयास में किया है।

राहुल जी ने उनके उपयासों को अपनी साम्यवादी विचारधारा व अनुकूल पाया और भारतीय पाठकों को ताजिकिस्तान में हुए साम्यवादी क्रान्तिकारी परिवर्तनों से परिचित करवाने के लिए ही इन उपयासों का हिंदी में अनुवाद किया। राहुल जी भारत के गोपित समाज का स्थिति एवं अस्वस्थ जीवन-पद्धति का उपचार साम्यवाद द्वारा ही सम्भव मानते हैं। "अफिस्तान भी इहाँ स्थितियों से गुजर रहा है और वह समस्त क्रान्तिकारी परिवर्तनों का देख चुका है। मूदखोर की मौत' की भूमिका में राहुल जी लिखते हैं— वह मध्य एशिया व उस गायित जीवन का यथाय चित्रण करते हैं, जो कि क्रान्ति के बाद गमाए गए लेकिन हमारे यहाँ अंग्रेजों के हाथ जाने व बाँट भाग तब वह बसा ही बरारटाव चल रहा है। उनके चित्रित समाज की बहुत-सी प्रथाएँ तथा कमजोरियाँ हमारे समाज में भी मौजूद हैं इसका पता हम एनी के प्रयास से मिलता है।" इस प्रकार एनी तथा इकरामी के उपयासों की केन्द्रीय विचारधारा नवक व मनानुकूल साम्यवादी विचारधारा ही है। अतएव इन उपयासों का अनुवाद लेखक ने अपने निश्चित उद्देश्य एवं विचारधारा के प्रचार प्रसार के लिए किया है। इसमें साथ ही अनुवादक ताजिक भाषा को हिंदी के समीप समझना है। इस विषय में उसने कथन है— ताजिक भाषा बड़ी फारसी भाषा है, जिस से अब भी हमारे यहाँ के लाखों आदमी परिचित हैं और हमारी हिंदी व तिमाण में उसका हाथ है। हमारी भाषा पर जो प्रभाव पड़ा है उससे दखन से स्पष्ट मालूम होता है कि वह इरानी फारसी का नहीं बल्कि ताजिक फारसी का है।" इस प्रकार ताजिक व कई दशकों से भारतीय पाठक परिचित हैं तथा इन उपयासों में व परिचितता सा परिवर्तन अनुभव करते हैं।

दाबु दा एनी की यथायवादी औपन्यासिक दुनि है। इसमें बुखारा के अमीर के शासन में एनी अपने नायक यादगार और गुरनार के कठिन जीवन को दिखलाना है और उस स्वतंत्रता का भी चित्रित करता है जिस क्रान्ति के बाद उन्होंने प्राप्त किया। दयावाक व "दा" में दाबु दा का महत्व सबसे अधिक इस मान में है कि इसमें बुखारा और ताजिकिस्तान की बहुत-सी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ और वय-संघर्ष का चित्र लीचा गया है।" दाबु दा में सन् १८६८ से १९३० तक के ताजिकिस्तान के इतिहास का चित्रण है। जो दास थे एनी के बृहत् उपन्यास गुलामान का अनुवाद है। राहुल जी ने पहली इसे उर्दू में तथा बाद में हिन्दी में अनुवादित किया। इस उपन्यास में सन् १८४० से १९२३ ई० तक के ताजिकिस्तान के इतिहास का यथाय एवं कलात्मक अंकन हुआ है। इसमें दागा एवं वृषका की दयनीय स्थिति जदीनवाद (नवयुगवाद) के आखिलेखन अमीरगद्दी का

बिनाश वाला वैक प्रतीति वाचमचिया का उन्त्य अत्याचार एवं अवसान तथा ताजिकिस्तान में कलखोज की स्थापना आदि का यथार्थ वणन है।

अदीना 'अनाय तथा सूदखोर की मौत ऐनी के तीन तथु उप-यास है। 'अदीना ताजिक भाषा तथा ऐनी का प्रथम उप-यास है। इसमें एक अनाय ताजिक तथा उसकी मंगेतर गुनबीबी की कहानी का माध्यम से शोषित वर्ग की कथन किया कही गई है। यह उप-यास दुःखांत है। अनाय का घटनाकाल सन १९२१ से १९३१ तक है। इस समय ताजिकिस्तान में सबसे अत्याचार एवं गण-व्यवस्था थी। तत्कालीन जनता द्वारा अत्याचार-शील शासनियों का सामना किस प्रकार किया गया—यही उप-यास का प्रतिपाद है। सूखार की मौत (मर्मिमूखूर) में ऐनी ने सुखार के सूद खोरा का जीवन अंकित किया है। काली इस्लाम के रूप में लेखक ने कथन खसोट सूदखोर का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

गादी उप-यास में जलाल इबराहीम ने ताजिक सामूहिक कथन (कलखोज) का वणन किया है। सामूहिक श्रम के पत्र का दिखलाते हुए सामूहिक शक्तियों की उन्नति ताजिक ग्रामों के सुधार तथा उनके आधुनिकीकरण का यथार्थ वणन इस उप-यास में हुआ है। इस उप-यास में सन १९२६ से १९४६ के ताजिकिस्तान के आर्थिक विकास को प्रस्तुत किया गया है।

उक्त अनदिन औप-यासिक कथनों के आधार पर राहुल जी की अनुवाद कला की कतिपय प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(१) राहुल जी ने मूल ताजिक भाषा में सीधे हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किए हैं तथा मूल की मौलिकता एवं सरसता को हानि नहीं पहुँचने दी।

(२) गद्य भाषा के अनुवाद में ताजिक लेखकों की मूल विभिन्न शक्तियों की राहुल जी ने पूणतया रक्षा की है। यथा आत्म-दा में सामान्य वणनात्मक शक्ति के साथ कथोपकथन शक्ति, भावात्मक शक्ति चित्रात्मक शक्ति एवं आलंकारिक शक्ति का यथास्थान प्रयोग हुआ है।<sup>१५</sup> इसी प्रकार गादी में प्राकृतिक चित्रा पर्वतीय सौन्दर्य के चित्रण, मानवीय सौन्दर्य चित्रा को अंकित करते समय आकषक एवं मध्य व्यक्तित्व के प्रस्तुतीकरण तथा मुनतात्मक चित्र प्रस्तुत करने में राहुल जी ने विभिन्न शक्तियों का प्रयोग किया है। सूखार की मौत में भी व्यक्तित्व अंकन यथात्मक चित्रण प्रकृति के चित्रण का सूक्ष्म चित्रण तथा आलंकारिक एवं अनीकात्मक वणन में विभिन्न शक्तियों का सुन्दर निष्पन्न है।<sup>१६</sup>

(३) राहुल जी ने उप-यास तथा पद्य भाषा का अनुवाद समानांतर हिन्दी छन्द में करने का प्रयास किया है। अधिकांश अनुवाद मुक्त छन्द में हुए हैं। इस क्षेत्र में राहुल जी का विशेष सफलता नहीं मिली। वे भावग्राह्य में तो सफल रहे हैं, पर मूल में तो नाद सौन्दर्य एवं पद्य आत्मकता है उसकी रक्षा राहुल जी नहीं कर सके। एक-एक उदाहरण प्रस्तुत है।

दस्तवे मन दस्तन तू,  
दस्तन नीरस्तन तू ।  
वे भी गदग व गदनम  
हलवा गद दस्तवे तू । (दागु दा (मून) पृ० १६८)

राहुल जी का अनुवाद है —

तेरा हाथ भी मेरा हाथ  
तेरा हाथ सुंदर है यह ।

क्या हो अच्छा मेरे गने  
हान होण तेरा हाथ यह । (दागु दा पृ० १२५)

‘हाँ व भी’ के भाव की रक्षा नहीं हो सकी । वे भी का अर्थ है ‘तो क्या होगा ?’  
जैसम बीनूल है जो ‘क्या हाँ म नहीं आ सरा । इसी प्रकार हार कह व भी  
मूल के सौंदर्य की रक्षा नहीं हुई । भाव-सौंदर्य की रक्षा निम्न पद में मली भाँति  
हुई है —

चदमव मन चदमवे तू  
चदमवे पुखगमवे तू ।

वे भी दाग व सूय मन  
गमता कुनद चदमवे तू । (दागु दा (मून), प० १६८)

राहुल जी ने इसका अनुवाद किया है —

मेरी प्रतिमा तेरी अखिया  
गुस्ता मरी तेरी अखिया,

क्या अवस्था मरी होगी,  
घायल करें तेरी अखियाँ । (दागु दा, प० १२५)

चदमव चदमा का लघु रूप है और अनुवाद में उसके लिए अक्षरों का प्रयोग सायक  
है । इसी प्रकार ‘जा दास थ व पद्यानुवादा’ में भी सवो व अभाव है । यही स्थिति  
‘गाने व पद्यानुवादा’ की है । मेरा मस्त चित्र आया—फूल पर फूल रखा ॥  
साधारण अनुवाद है, न छंद है, न गीत । अग्रिमार्थ यह कि राहुल जी के पास कवि  
का हृदय नहीं है विचारक का मस्तिष्क है अतएव उनके पद्यानुवाद सरस नहीं  
बन पड़े ।

(४) राहुल जी के अनुवाद की गद्य भाषा रासक्त एवं सजीव है । मूढतोर  
की भीत से एक उदाहरण द्रष्टव्य है—‘घोड़े की नाग पर तीन चार कुत्ते भी थे जो  
एक दूसरे पर गुगन गोशत काट काट कर खा रहें थे । सभी सभी गोम के भारे जैसे  
साम्राज्यवादी एवं दूसरे पर दृष्ट है, वगैरह भी भूकृत हुए एक दूसरे के मिर पर दाँत  
और पंजा मारत और उसने बाद फिर शांति खाना शुरू करत । कौण भी चारा तरफ  
से आकर जा कुछ मिन जाता उस पकड़त, तबिन जब कुत्ते उनकी तरफ तपकत, ता  
बाय-बाय करत उन्न व लिंग मजबूर होत । माना यह छोटे उन्ने पूँजीपति थे, जो

किं विश्व के स्वामी साम्राज्यवादिया की अनुमति से कुछ और पाकर गुजारा कर रहे थे।<sup>२</sup> इस उदाहरण में साम्राज्यवाद की समीक्षा बड़ी सरल एवं प्रवाहमयी भाषा में की गई है। भाषा में 'यग्यात्मकता' एवं 'अलक्षित' है। 'व्यग्य अत्यंत सटीक'। 'जा दास थे' में युद्ध वर्णन में भी भाषा का यही रूप मिलता है।<sup>३</sup> कई स्थलों पर मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी गुंथर एवं सायक प्रयोग हुआ है।<sup>४</sup>

(५) राहुल जी ने अनुवाद की भाषा में रूसी, ताजिक, फारसी उद्ग्राहों के प्रचलित एवं अप्रचलित शब्दों का भी प्रचुर प्रयोग किया है। उदाहरण के लिये 'जा दास थे' के वाक्य में 'अथ भी' लिखा है परंतु इसमें स्वाभाविक वाचन में 'ता' नहीं आती होती है। फारसीनिष्ठ भाषा का एक उदाहरण देखिए - 'तुम दमल्ला जुजियात (गौण कार्य आदि) में डूब रहे हो तुमने मुख्य बातों को छोड़ रखा है। तुम गैरखानी और शेरगोई (कविता-भाण्ड) में बहुत मत फँसा। कौन सा गायर बाय (सेठ) हुआ कि तुम भी (सेठ) बनोगे।'<sup>५</sup> इस प्रकार की भाषा हिन्दी पाठकों के लिए कठिन एवं अरुचिकर है।

(६) राहुल जी ने अनुवृत्ति उपयासों में अध्यायों के शीर्षकों का भी अनुवाद किया है। यथा 'दाखु दा' शीर्षक में तो परिवर्तन नहीं लेकिन राहुल जी ने इस उपयास को पाँच शीर्षकों में विभाजित किया है। यथा प्रथम खण्ड (बचारे किसान), द्वितीय खण्ड (अमीर का बुखारा शरीफ), तृतीय खण्ड (अमीर भगा), चतुर्थ खण्ड (डाकुआ का राजा) तथा पंचम खण्ड (कमकरा का राजा)। इन खण्डों के शीर्षकों के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड आगे कई उपखण्डों में विभक्त है और राहुल जी ने उन सभी के शीर्षक भी दिये हैं। इसी प्रकार मूल गादी उपयास दो खण्डों में विभक्त है परंतु राहुल जी ने तृतीय अध्याय में विभक्त किया है और प्रत्येक अध्याय का शीर्षक भी दिया है। शीर्षक देने की यह प्रवृत्ति राहुल जी के मौलिक उपयासों में भी मिलती है। शीर्षक कहीं हिन्दी में हैं और कहीं ताजिक या फारसी में ही हैं। यथा 'दाखु दा' ताजिक भाषा का नाम है तब भी परिवर्तित हिन्दी में अनुवाद करके दिया गया है। शीर्षक देने के लिए राहुल जी ने किसी विशेष नियम का अनुसरण नहीं किया।

(७) कई स्थलों पर राहुल जी की भाषा व्याकरण के नियमों की अवहेलना करती चलती है। इससे लिए वचन, विभक्ति सम्बन्धी त्रुटियाँ पाई गई हैं।<sup>६</sup>

उक्त विवचन से स्पष्ट है कि राहुल जी के अनुवादों में भाषा-सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ अवश्य हैं फिर भी समष्टि रूप से उनके अनुवाद सहज एवं सुंदर हैं। विशेषकर 'दाखु दा' जो दास थे' मुखार की मौत तथा आगे के अन्तर्गत भीमा तक साहित्यिक अनुवाद की दृष्टि से गिन जा सकते हैं। सर्वोपरि राहुल जी ने जिस उद्देश्य के लिए यह अनुवाद कायम किया है उसमें उन्हें पूर्णतः सफलता मिली है। २० सुवाचक सफलता के कारण जिस व्यक्ति, व्यक्ति, सामाजिक धार्मिक मान्यताओं के समूल परिवर्तन का सपना अनुवाद हम उन त्रुटियों से दना चाहता है वह हम मिलता है और हम अपने देश की भीम प्रगति की तुलना

ताजिकिस्तान जैसे सोवियत प्रजातंत्रों की तीव्रगामी प्रगति से करने पर बाध्य होते हैं।<sup>१४</sup>

इस प्रकार राहुल जी न ताजिक भाषा के अनुवादों से हिंदी को समझ बनाया है। डा० नलिन विलोचन शर्मा के शब्दों में हम कह सकते हैं कि 'राहुल जी ने मध्य एशिया के एक ऐसे लेखक की कला से हमारा परिचय कराया है जो रूसी होने पर भी प्राचीन भाषा में लिखता है, पर जो रूस के शोलोकाव जैसे रूसी भाषा के लेखकों के समकक्ष है।'<sup>१५</sup> हिंदी में अनुदित उपमाओं की परम्परा में राहुल जी के अनुवाद एक स्वतंत्र अनुवाद (रूपांतरण) निश्चय ही महत्वपूर्ण स्थान व भूमिका हैं।

## सूचिका

- १ साहित्य निबन्धावलि प १६६।
- २ साने की ढाल (प्रानक्शन) प० ४।
- ३ जानू का मुल्क (भूमिका)।
- ४ दृष्टिकोण (जसाई सितम्बर १९५२) पृ ३।
- ५ जप-यास का रूप विधान प० २७।
- ६ विस्मृति न यम म प ३४।
- ७ वही पृ ३।
- ८ वही प० १९ ३४।
- ९ वही प २१।
- १० अनाथ (अनवादक की ओर से) प ४।
- ११ पूर्वी सागित सेवका की दस कहानियाँ प २७३।
- १२ सूदखोर की मौत प० ६।
- १३ वही प० ७।
- १४ लाख दा प ४४२।
- १५ मरी जीवन यात्रा (४) प १११।
- १६ लाख दा प० २८९ ३०५ ६ ५१ १ १७ १८ ७६।
- १७ शानी प० १ ४ ५ ८ ४८।
- १८ सूदखोर की मौत प ९ १ ७२ ७३ ७४।
- १९ शानी प ९०।
- २० सूदखोर की मौत प० ७३।
- २१ जो दास थे प० ३१९।
- २२ सूदखार की मौत प० २३।
- २३ वही प० ६४।
- २४ वही प ७७ ८ ८८।
- २५ राहुल का नया साहित्य प १७४।
- २६ दृष्टिकोण (जनवरी १९४८) प २९।

